Resource: बाइबल कोश (टिंडेल)

License Information

बाइबल कोश (टिंडेल) (Hindi) is based on: Tyndale Open Bible Dictionary, Tyndale House Publishers, 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

बाइबल कोश (टिंडेल)

प

पंचग्रन्थ, पंडुकी, पंथ, पंथ के अनुयायी, पंफूलिया, पकहयाह, पकानेवाला, पकोद, पक्षी, पक्षी, पगीएल, पटिया, पड़ोसी, पतमुस, पतरस की दूसरी पत्री, पतरस की पहली पत्री, पतरस, प्रेरित, पतरा, पतह्याह, पति, पतुलिमयिस, पतूएल, पतोर, पत्थर तराशने वाला, पत्थर मारना, पत्थरीला अरब, पत्नी, पत्र/ पत्री, पत्रुबास, पत्रूसी, पत्रोस, पदहेल, पदायाह, पदासूर, पद्दान, पद्दनराम, पद्मराग, पनसोख्ता, पनसोख्ता, पनिन्ना, पनीएल, पनीर, पनूएल (व्यक्ति), पनूएल (स्थान), पन्नग, पन्ना (मरकत), परखनेवाला, परदेशी, परदेशी, परदेशी, परमपवित्र स्थान, परमप्रधान, परमिनास, परमेश्वर का क्रोध, परमेश्वर का पुत्र, परमेश्वर का प्रबंध, परमेश्वर का भय मानने वाले, परमेश्वर का मेम्ना, परमेश्वर की इच्छा, परमेश्वर की उपस्थिति, परमेश्वर की छवि, परमेश्वर की मुहर, पशु का छाप, परमेश्वर की संतान, परमेश्वर के आदेश, परमेश्वर के गुण, परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियाँ, परमेश्वर के लोग, परमेश्ववर का आत्मा, परम्परा, पराजीम पर्वत, परिज्जी, परीक्षा, परीक्षा, प्रलोभन, परीदा, परूदा, परेस, परोश, परोश, पर्गेटरी, पर्दे, पर्नाक, पर्पर, पर्मशता, पर्वत, पहाड़, पर्वेम, पर्शन्दाता, पर्सियस, पलती, पलती, पलतीएल, पलत्याह, पलल्याह, पलाएस्ट्रा, पलायाह, पलिश्ती, पलिश्तीन, पलिश्तीन, पलेती, पलोनी, पल्लू, पल्लू, पल्लूइयों, पवित्र आत्मा, पवित्र आत्मा, पवित्र दीक्षांत सभा, पवित्र भोज, पवित्र युद्ध, पवित्र युद्ध, पवित्रता, पवित्रशास्त्र, शास्त्र, पवित्रस्थान, पवित्रस्थान, पवित्रीकरण, पवित्रीकरण, पशहूर, पशु, पश्चाताप, पश्चिमी पाठ, पसदम्मीम, पहत्मोआब, पहरुआ, पहरुओं का फाटक, पहरुओं के फाटक, पहरे का आँगन, पहरे के भवन का आँगन, पहला यहूदी विद्रोह, पहली फसलें, पहले और दूसरे शमूएल की पुस्तक, पहलौठा, पहलौठे का अधिकार, पहाड़ हेरेस, पहाड़, जैतून का, पहाड़ी उपदेश, पहारा देने का गुम्मट, पहिया, पहेली, पाई, पाउंड, पाऊ, पाठशाला, पात्र, पादरी, सेवा, पादोन, पानी का कुण्ड, पानी का पक्षी, पाप, पाप जिसका फल मृत्यु है, पापबलि, पापियास, पापों की क्षमा, पाफुस, पारा, पारान, पारुह, पारूसिया, पारै, पार्थिया, पारथी लोग, पालकी, पालन-पोषण, पाला, पालाल, पावदान, पासक, पासबानी पत्रियाँ, पासेह, पासेह, पिण्डुक, पिता (मनुष्य), पिता के रूप में परमेश्वर, पितोम, पित्त, पिन्तेकुस्त, पिम, पिरगमुन, पिरगा, पिरसिस, पिरातोन, पिराम, पिरामिड, पिलतै, पिलानेहार, पिलानेहारा, पिल्दाश, पिल्हा, पिसगा पहाड़, पिसिदिया, पिसिदिया का अन्ताकिया, पिस्ता, पिस्पा, पिस्पाह, पिस्सू, पीखोल, पीकोल, पीछे हटना, पीड़ा, पीड़ित सेवक, पीतल, पीतल, पीतल का सर्प, पीतल..., पीतल का साँप, पीतल का साँप, पीतोन, पीनहास, पीनोन, पीला, पीलातुस, पुन्तियुस, पीवेसेत, पीशोन, पीशोन, पीहहीरोत, पुआ, पुतियुली, पुत्र, पुत्री, पुनरुत्थान, पुन्तियुस पिलातुस, पुन्तुस, पुबलियुस, पुब्बा, पुरकियुस फेस्तुस, पुरवाई, पुरस्कार, पुरातत्व और बाइबल, पुराना नियम, पुराना नियम कालक्रम, पुराना नियम कैनन, पुराना पुरुष, पुराना फाटक, पुरालेख विद्या, पुरुषगामी (समलैंगिकता), पुरूर्स, पुरोहित का टोप, पुल्लतै, पुलतै, पुव्वा, पुव्वियों, पुव्वी, पुस्तक, पुस्तक, यशायाह की, पुस्तकालय, पुही, पूआ, पूत, पूत (व्यक्ति), पूत (स्थान), पूती, पूतीएल, पूदेंस, पूनोन, पूरीम, पूर्व ज्ञान, पूर्व में तारा, पूर्वनियति, पूर्वनिर्धारण, पूर्वी फाटक, पूर्वी ताल, पूर्वी ताल, पूर्वी लोग, पूर्वी लोग, पूल, पृथ्वी, पृथ्वी की छोर, पेकह, पेचिश, पेट्रा, पेड़, पेन्स, पेराया, पेरिया, पेरेश, पेरेस, पेरेस, पेरेसियों, पेरेसियों, पेरेसुज्जा, पेला, पेलिकन, पेलेग, पेलेत, पेलेत, पेलेती, पैट्रोक्लस, पैतृक अधिकार, पैतृक सम्पत्ति, पैराक्लीट, पैसे, पॉलीकार्प, पोकरेत-सबायीम, पोकरेत-सबायीम, पोतीपर, पोतीपेरा, पोदीना, पोर (देवता), पोर (स्थान), पोराता, पोलक्स, पोसिडोनियस, पौधे

पंचग्रन्थ

एक शब्द जो यूनानी मूल *पेंटे* (जिसका अर्थ है "पांच") और *टेउखोस* (जिसका अर्थ है "पुस्तक") से बना है। यह शब्द आमतौर पर पुराने नियम की पहली पाँच पुस्तकों को सन्दर्भित करने के लिए उपयोग किया जाता है: उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती, और व्यवस्थाविवरण। इन पाँच पुस्तकों को आमतौर पर एक ही पुस्तक के रूप में समूहित किया गया था। परमेश्वर के वचन का यह हिस्सा वह नींव है जिस पर पवित्रशास्त्र का शेष भाग निर्भर करता है। इसे पारम्परिक रूप से मूसा को समर्पित किया जाता है (निर्ग 17:14; 24:4; 34:27; गिन 33:1–2; व्य.वि. 31:9, 22)।

पंचग्रन्थ में कई महत्वपूर्ण कहानियाँ शामिल हैं, जिनमें शामिल हैं:

- जगत की सृष्टि
- अदन के बगीचे में परमेश्वर की मनुष्यों के साथ संवाद
- अब्राहम के लिए एक समृद्ध परिवार का निर्माण (कुलपिताओं की कथाएँ)
- इस्राएल देश की स्थापना

पंचग्रन्थ का अधिकांश भाग उन व्यवस्थाओं से बना है जो देश के धार्मिक और रोजमर्रा के जीवन का मार्गदर्शन करते हैं, जहाँ परमेश्वर को राजा माना जाता है।

*यह भी देखें*व्यवस्थाविवरण की पुस्तक; निर्गमन की पुस्तक; उत्पत्ति की पुस्तक; लैव्यव्यवस्था की पुस्तक; गिनती की पुस्तक; तोराह।

पंडुकी

छोटा कबूतर। *देखिए*पक्षी (कबूतर या पंडुकी)।

पंथ

पंथ

प्रारंभिक मसीही समुदाय के लिए प्रयुक्त नामों में से एक (प्रेरि 9:2)। यह नाम यहूदी और धर्मनिरपेक्ष समुदाय दोनों द्वारा प्रयोग किया गया था और कलीसिया के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों आकलनों में प्रकट हुआ (19:9, 23; 22:4; 24:14, 22)। फेलिक्स के सामने अपनी रक्षा में पौलुस का इस शब्द का उपयोग यह सुझाव देता है कि इस नाम को कम से कम अर्ध-आधिकारिक स्वीकृति प्राप्त थी (24:14, 22)। इस बात की बहुत संभावना है कि यह शब्द यीशु के अपने कथन, “मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ” (यूह 14:6) से आया।

पंथ के अनुयायी

प्रेरितों के काम की पुस्तक में मसीहियों के लिए पद (प्रेरि 9:2; 19:9, 23; 22:4; 24:22)। इसके प्रारम्भिक वर्षों में, मसीही मत को "पन्थ" कहा जाता था। *देखें*पन्थ।

पंफूलिया

पंफूलिया

एशिया के उपद्वीप (तुर्की) के दक्षिणी तट पर स्थित तटीय क्षेत्र, जो पश्चिम में लूसिया से पूर्व में किलिकिया तक 80 मील (128.7 किलोमीटर) और समुद्र तट से वृषभ पर्वत तक लगभग 20 मील (32.2 किलोमीटर) चौड़ा है। संकीर्ण तटीय मैदान, अत्यधिक गर्म और आर्द्र जलवायु से अधिक होने के कारण, इस प्रांत में कुछ ही महत्वपूर्ण शहर बने। यह, इसकी सामान्य दुर्गमता—जो अदल्या की खाड़ी के उत्तरी छोर पर गहराई में स्थित थी और दुर्गम पर्वत श्रृंखला द्वारा आसिया के बाकी हिस्सों से अलग थी—जिसने इसे समुद्री डाकुओं के लिए आश्रय स्थल बना दिया। 102 ईसा पूर्व में, रोमी महासभा ने पंफूलिया और पश्चिमी किलिकिया के तटों पर गश्ती स्टेशन स्थापित किए ताकि क्षेत्र की निगरानी की जा सके, लेकिन 67 ईसा पूर्व तक कोई प्रभावी नियंत्रण स्थापित नहीं किया गया था, जब पॉमपे को भूमध्य सागर को साफ करने के लिए असीमित सन्साधन दिए गए थे।

स्पष्ट रूप से प्रान्त में यहूदी आबादी थी क्योंकि लूका ने पंफूलिया का नाम 15 देशों में से एक के रूप में लिया है, जहाँ से यहूदी पिन्तेकुस्त के पर्व के लिए यरूशलेम आए थे (प्रेरितों के काम 2:10)। कुछ लोगों ने तर्क दिया है कि पंफूलिया के पास मसीहियों की कोई महत्वपूर्ण संख्या नहीं हो सकती है क्योंकि इसका और लूसिया का उल्लेख 1 पतरस 1:1 में नहीं है, जो एशिया के उपद्वीप के पूरे क्षेत्र का सारांश प्रतीत होता है। हालाँकि, यह तर्क विश्वसनीय नहीं है क्योंकि 1 पतरस की लिखाई की तारीख ज्ञात नहीं है, और यदि यह 43 ईस्वी से 74 के बीच की अवधि के दौरान लिखा गया था, जब पंफूलिया को गलातिया का हिस्सा माना जाता था, तो पंफूलिया को उस पदनाम में शामिल किया जा सकता था। हो सकता है कि पतरस ने लूसिया को गलातिया के व्यापक पदनाम में भी शामिल किया हो क्योंकि उनकी प्रस्तावना में केवल एशिया के उपद्वीप के बड़े राजनीतिक विभाजनों का उल्लेख है। फिर भी, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि पौलुस को पंफूलिया के शहर पिरगा में स्पष्टतः बहुत कम सफलता मिली, क्योंकि वहाँ उनके विरोध या किसी भी मन-परिवर्तन होने का कोई उल्लेख नहीं है। उन्होंने अपनी दूसरी यात्रा पर इस प्रांत का पुनः दौरा नहीं किया, भले ही उनकी योजना हर उस नगर में मसीहियों से मिलने की थी जहाँ उन्होंने उपदेश किया था (प्रेरितों के काम 15:36)। शायद पौलुस का बरनबास से अलग होना इसका कारण था, और यह हो सकता है कि बरनबास और यूहन्ना मरकुस ने साइप्रस के बाद पंफूलिया का दौरा किया हो (वचन 37–41)।

अत्तलिया; पिरगा *भी देखें*।

पकहयाह

मनहेम का पुत्र, इस्राएल का राजा पकहयाह (जिसके नाम का अर्थ है "यहोवा ने [उसकी आँखें] खोली हैं") उन 20 राजाओं में से एक थे जिन्होंने दसवीं शताब्दी ईसा पूर्व में सुलैमान के राज्य के विभाजन के कारण पतन के बाद सामरिया से इस्राएल पर राज्य किया। बाइबल में उनके बारे में संक्षिप्त विवरण (2 रा 15:22–26) उनके जीवन की अधार्मिकता की ओर इशारा करता है (वचन 24)। उनका पाप, उनके पिता (मनहेम) की तरह, यारोबाम की झूठी आराधना से जुड़ा था, जिसने यरूशलेम के मन्दिर में आराधना के विरोधी के रूप में दान और बेतेल में देवस्थान बनाए। ऐसी धार्मिक गतिविधियाँ बाइबल की अवधारणाओं को बाल की उर्वरता उपासना के साथ मिलाने का प्रयास करके परमेश्वर की सच्ची आराधना के लिए खतरा बन गईं, एक ऐसी गतिविधि जिसका परमेश्वर के वचन ने कठोर निन्दा की है (1 रा 13:1–5)। इस्राएल के कई राजाओं की तरह, पकहयाह ने कम समय के लिये राज्य किया और अपने राज्य के दूसरे वर्ष में मार डाला गया। उसके विरुद्ध विद्रोह का मुख्य सूत्रधार, पेकह नामक एक सरदार, गिलाद के 50 लोगों को लेकर सामरिया के गढ़ राज महल में राजा को दो सहायकों सहित मार डाला। उनके उत्तराधिकारी, पेकह, दुर्भाग्यवश पकहयाह के समान ही दुष्ट था और उसे पवित्रशास्त्र की आज्ञा अनुसार वही दण्ड मिला, जो लगभग सभी इस्राएली राजाओं के लिए सामान्य था: उसने "वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था" (2 रा 15:28)।

यह भी देखें पेकह।

पकानेवाला

पकानेवाला

जो भोजन तैयार करते हैं। बाइबल के समय में, पकानेवाला काम करता था:

- घर में (उत्पत्ति 19:3),
- सार्वजनिक रोटीवालों की दूकान में (यिर्मयाह 37:21), और
- राजाओं और रईसों के महलों में (उत्पत्ति 40:1–22; 41:10, 13; 1 शमूएल 8:13)

उन्होंने तेल और आटे की बुनियादी सामग्री से रोटी और केक बनाए। मिस्र से भाग रहे इस्राएलियों ने अपनी यात्रा के लिए अख़मीरी रोटी बनाईं (निर्गमन 12:39)। रोटी और केक को एक तवा या तंदूर में पकाया जाता था (लैव्यव्यवस्था 2:4; 26:26)। जैसे-जैसे इस्राएली समाज विकसित हुआ, पेशेवर पकानेवालों ने काम किया और सहकारी समितियों का गठन किया। कुछ लोगों ने तर्क दिया है कि होशे एक पकानेवाला था क्योंकि उन्हें पकाने की तकनीकों का ज्ञान था (होशे 7:4–8)।

यह भी देखें भोजन और भोजन की तैयारी।

पकोद

पकोद

दक्षिणी बेबीलोनिया में बाबेल और एलाम के बीच अरामी गोत्र के निवास स्थान के रूप में उल्लिखित स्थान अधिक सटीक रूप से आधुनिक कट-एल-अमारा और केर्खा के संगम के पास नीचेवाले हिद्देकेल के पूर्वी तट पर स्थित है (यिर्म 50:21; यहेज 23:23)। तिग्लत्पिलेसेर तृतीय (745–727), सर्गोन द्वितीय (722–705), और सन्हेरीब (705–681) ने जनसंख्या को अधीन कर लिया और पकोद से घोड़े, मवेशी, और भेड़ का कर वसूला।

पक्षी

एव्स वर्ग के पंखों वाले रीढ़दार प्राणी। पक्षियों की 8,000 से अधिक प्रजातियाँ ज्ञात हैं। लगभग 400 प्रजातियाँ पवित्र भूमि में पाई जाती हैं और लगभग 40 का उल्लेख पवित्रशास्त्र में किया गया है।

आधुनिक वैज्ञानिक जीवों को आंतरिक और बाहरी संरचना के आधार पर वर्गीकृत करते हैं, लेकिन बाइबिल के लेखकों ने आम तौर पर जीवों को उनके निवास स्थान के अनुसार वर्गीकृत किया है। इस कारण बाइबिल में चमगादड़ों को पक्षियों के साथ हवा में रहने वाले जीवों के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। (लैव्य 11:19; व्य.वि. 14:18)।

बाइबिल के पक्षियों की सटीक पहचान अक्सर मुश्किल या असंभव होती है। बाइबिल की भाषाएँ अत्यधिक विशिष्ट वैज्ञानिक भाषाएँ नहीं थीं। बाइबिल के समय में लोग आम तौर पर समान जानवरों के बीच अंतर जानते थे जिन्हें अब अलग-अलग प्रजातियों के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। हालांकि, पक्षियों के लिए, वे अक्सर काव्यात्मक, वर्णनात्मक शब्दों का उपयोग करते थे। बाइबिल के विद्वान इब्रानी शब्दों की तुलना संबंधित भाषाओं में समान शब्दों से करके और पवित्रशास्त्र में पक्षियों के लिए बताए गए आवास, आदतों और विशेषताओं पर ध्यान देकर पहचान में आने वाली कठिनाइयों को दूर करने का प्रयास करते हैं। फिर भी, कभी-कभी विभिन्न विद्वान अलग-अलग पहचान पर पहुँचते हैं।

पक्षियों के बाइबिल सन्दर्भ

बाइबिल में पक्षियों का उल्लेख शाब्दिक और रूपक दोनों अर्थों में किया गया है। बाइबिल के लेखक प्रकृति के गहन पर्यवेक्षक थे, पक्षियों और पक्षियों के जीवन के प्रति उनकी जागरूकता कई अंशों में झलकती है। उन्होंने कहा कि परमेश्वर सभी पक्षियों को जानते हैं (भज 50:11) और उनकी देखभाल करते हैं (मत्ती 10:29)। उन्होंने जल-प्रलय के बाद नूह के साथ परमेश्वर की वाचा को देखा, जिसमें जीवन को फिर से बाढ़ से नष्ट न करने का उनका वादा पक्षियों और जानवरों तक भी विस्तारित होता है (उत 9:10)।

मूसा के व्यवस्था ने कई पक्षियों को "अशुद्ध" घोषित किया, मुख्यतः वे प्रजातियाँ जो मांसाहारी या शिकारी थे, या जो बंजर जगहों पर रहते थे। सदियों बाद, प्रारंभिक मसीहीयों ने प्रेरित पतरस के दर्शन (प्रेरि 10:12) में प्रकट परमेश्वर के आदेश के अनुसार अशुद्ध प्रजातियों को शुद्ध मानना शुरू किया। अन्य पक्षी, जैसे बटेर, इस्राएलियों को उनके जंगल में भटकने के समय में सहारा दिया (निर्ग 16:13)। व्यवस्था ने पक्षियों को पहिलौठे बच्चे के लिए बलि के रूप में (लूका 2:24), नाज़ीर की मन्नत के लिए (गिन 6:10), कोढ़ी की शुद्धि के लिए (लैव्य 14:22), और होमबलि और पापबलि के रूप में (12:8) निर्धारित किया।

पक्षी आसानी से विलुप्ति के शिकार हो जाते हैं, विशेष रूप से यह मानव गतिविधियों के कारण होता है। परमेश्वर ने इस्राएलियों से पवित्र भूमि में किसी भी पक्षी के विलुप्त होने से बचने के लिए संरक्षण का अभ्यास करने की मांग की, ताकि पक्षियों की को सुरक्षा मिले और इस्राएलियों के पास भोजन का निरंतर स्रोत हो। व्यवस्था के अनुसार, भोजन की तलाश में निकले इस्राएलियों को पक्षी के घोंसले से अंडे या बच्चे लेने की अनुमति थी, लेकिन उन्हें मादा पक्षी और उसके बच्चे दोनों को मारने की अनुमति नहीं थी (व्य.वि.' 22:6)।

बाइबिल के लेखकों ने अक्सर ईश्वरीय सिद्धांतों या मानव विशेषताओं के उदाहरणों के लिए प्रकृति की ओर रुख किया करते थे। पक्षियों से मनुष्यों की तुलना कभी-कभी हीनता का भाव व्यक्ति करती है, जैसे कि जब राजा नबूकदनेस्सर के नाखून अपने पागलपन के दौरान चिड़ियाँ के पंजों के समान विकसित हुए (दानि 4:33), या जब अय्यूब ने कहा कि पक्षी ज्ञान के स्रोत को नहीं जानते (अय्यू 28:21)। यीशु के 'बोने वाले के दृष्टान्त' में, मार्ग के किनारे गिरे बीज को खाने वाले पक्षी उदासीनता और आध्यात्मिक समझ की कमी का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं (मत्ती 13:4)।

पवित्रशास्त्र में पक्षियों की दुर्दशा के बारे में सहानुभूतिपूर्ण चित्र भी हैं। एकांत में प्रार्थना करने वाले एक व्यक्ति की तुलना घर की छत पर बैठे एक अकेले पक्षी से की गई है (भज 102:7)। अगर किसी को उसके दुश्मनों द्वारा अन्यायपूर्ण तरीके से शिकार बनाया जाता है, तो वह शिकार किए गए पक्षी की दुर्दशा को समझेगा (विल 3:52)। कहा जाता है कि जब दुष्ट लोग यरूशलेम से या धरती पर से नाश हो जाते हैं, तो इसका प्रभाव पक्षी पर भी होता है (यिर्म 9:10; सप 1:3)।

ऐसी विपत्ति पक्षियों पर आने के बावजूद, पवित्रशास्त्र पुष्टि करता है कि, अन्य प्राणियों की तरह, उनकी भी परमेश्वर द्वारा देखभाल की जाती है और वे उनसे प्रसन्न होते हैं (भज 50:11; मत्ती 6:26; 10:29)। फ़िरौन और नबूकदनेस्सर दोनों की तुलना एक ऐसे वृक्ष से की गई थी जो पक्षियों को आश्रय देता है (यहेज 31:6; दानि 4:12; पुष्टि करें 2:38)। हालांकि, मानव शक्ति अंततः विफल हो जाती है जैसे कि जब नबूकदनेस्सर का प्रतिनिधित्व करने वाला वृक्ष काट दिया गया था, जिससे पक्षियों को भागना पड़ा (दानि 4:14)। इसके विपरीत, परमेश्वर की सुरक्षा अचूक है। यीशु ने परमेश्वर के राज्य की तुलना राई के बीज से किया, जो बढ़कर पक्षियों के लिए आश्रय बनता है (मत्ती 13:32)। परमेश्वर पक्षियों के लिए निवास प्रदान करते हैं (भज 104:12), हालांकि मनुष्य के पुत्र यीशु के पास सिर रखने के लिए कोई स्थान नहीं था (मत्ती 8:20)।

पक्षियों को परमेश्वर के हस्तकला का प्रमाण माना जाता था (अय्यू 12:7)। पक्षियों की कहानियों में गलती से सीखने में अच्छी समझ (नीति 1:17; 6:5) और अनैतिकता के फंदों से बचने में विफल होने में गलत निर्णय के उदाहरण दिए गए हैं (7:23)। पक्षियों और अन्य प्राणियों को वश में किया जा सकता था, जबकि दुष्ट मनुष्य के जीभ को नहीं किया जा सकता (याकू 3:7)। बिना बैठे लगातार उड़ते पक्षी एक अयोग्य श्राप की छवि थे (नीति 26:2)। परमेश्वर पर विश्वास के बिना, लोग बुराई के कारण पक्षी की तरह पहाड़ों की ओर भागने के लिए मजबूर हो सकते थे (भज 11:1)। पक्षियों का गीत आनंद देने वाला बताया गया (श्रे.गी. 2:12)। परमेश्वर के लोगों की प्रतिज्ञा की भूमि में वापसी पक्षियों की वापसी के समान होगी (होश 11:11)। यीशु ने यरूशलेम के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करते हुए कहा कि वह अपने लोगों को अपने पास इकट्ठा करने की लालसा रखते थे जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है (मत्ती 23:37)।

अंततः, पक्षियों को कभी-कभी अपशकुन के संकेत के रूप में माना जाता था। उदाहरण के लिए, फ़िरौन के पकानेहारों के प्रधान को आसन्न मृत्यु का पता चला क्योंकि एक सपने में पक्षियों ने उसके सिर पर रखी टोकरी से भोजन खा लिया (उत्प 40:17)। सुलैमान ने राजा को श्राप देने के खिलाफ चेतावनी दी, यहाँ तक कि निजी रूप में भी, क्योंकि "कोई उड़नेवाला जन्तु उस बात को प्रगट कर देगा" (सभो 10:20)। एक सुस्पष्ट बाइबिल छवि है कि मांसाहारी, मृत शरीर खाने वाले पक्षी दुष्टों के शरीर को खा रहे हैं। इस्राएलियों के लिए, मानवता का ऐसा अपवित्रीकरण परम भय का चित्र था (व्य.वि 28:26; 1 शमू 17:44; यशा 46:11; यिर्म 7:33; 12:9; यहेज 29:5; 39:4; प्रका 19:17, 21)।

व्यक्तिगत प्रजातियाँ

जुनबगला

लंबे पैरों वाला जलपक्षी *(बोटॉरस स्टेलारिस)* बगुले के समान होता है, लेकिन इसके पैर छोटे होते हैं और शरीर छोटा और अधिक सघन होता है। जुनबगला दलदलों में रहते हैं, जहाँ उनके लिए अपनी प्राकृतिक छलावरण के साथ छिपना आसान होता है। जुनबगला के धब्बेदार भूरे और काले रंग के पंख दलदली वनस्पतियों के रंग और आकार की नकल करते हैं, जिससे कई बार ऐसा लगता है कि पक्षी पर्यवेक्षक की आँखों के सामने ही गायब हो गया है। गर्दन लंबे, मुलायम पंखों से ढकी होती है, जिससे यह अनुपातहीन रूप से भारी दिखाई देती है। जुनबगला सतर्क और अकेले होते हैं। प्रजनन के मौसम में जुनबगला का कंठ एक रहस्यमय ध्वनि उत्पन्न करने के लिए परिवर्तित हो जाता है। स्वरों के साथ सामंजस्य बिठाने के लिए यह शरीर को असामान्य तरीके से मरोड़ता है। जुनबगला अकेले घास वाले दलदलों में घोंसला बनाते हैं। क्योंकि वे शर्मीले होते हैं, वे वीरानी और अकेलेपन के स्थानों के प्रतीक बन गए हैं।

इस बात पर कुछ सवाल है कि क्या बाइबिल में वास्तव में जुनबगला का उल्लेख किया गया है या नहीं। बाइबिल के अंग्रेजी अनुवाद केजेवी में तीन स्थानों पर "बिटर्न" या साही आया है (यशा 14:23; 34:11; सप 2:14)। कई बाइबिलीय विद्वान मानते हैं कि उन पदों में इब्रानी शब्द जुनबगला के बजाय कांटेदार जंगली चूहा (यशा 14:23; सप 2:14) या साही (यशा 34:11) का संदर्भ देता है। यह इब्रानी शब्द एक अरबी शब्द के समान है जिसका अर्थ "साही" होता है। अन्य विद्वान बताते हैं कि संदर्भ स्तनपायी के बजाय एक पक्षी का सुझाव देते हैं, विशेष रूप से सप 2:14, जो प्राणी के "उसके खम्भों की कँगनियों में बसेरा" करने की बात करता है (अर्थात, नीनवे के डेवढ़ियों के ऊपर)। जुनबगला विशेष रूप से हिद्देकेल नदी (नीनवे के पास) के दलदलों में प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। जुनबगला की विशेषताएँ कांटेदार जंगली चूहा की तुलना में तीन अंशों में संदर्भों के साथ बेहतर ढंग से मेल खा सकती हैं।

*यह भी देखें*कांटेदार जंगली चूहा; जानवर (साही)।

चील

बाज़ जैसा उड़ने वाला पक्षी *(ब्यूटियो वल्गोरिस या ब्यूटियो फेरोक्स)*। यह चील जैसा दिखता है, हालाँकि इसकी पूँछ सीधी होती है और फटी हुई नहीं होती। इसे अशुद्ध पक्षियों की सूची में उल्लेखित किया गया है (व्य.वि 14:13)। लेकिन अन्य अंग्रेजी अनुवाद इस शब्द को "ग्लेड" या "चील" के रूप में प्रस्तुत करते हैं। लैव्य 11 में समानांतर सूची, हालांकि, "चील" या "गिद्ध" के बजाय "बाज़" का इस्तेमाल किया गया है। इस प्रकार, यह निर्धारित करना मुश्किल है कि क्या वास्तव में बाइबिल में चील (बाजर्ड) का उल्लेख किया गया है, भले ही यह इस्राएल का एक आम निवासी है।

अन्य महान ऊँचाई पर उड़ने वाले पक्षियों की तरह, चील अपनी तीव्र दृष्टि के लिए जाना जाता है, और संभवतः अय्यू 28:7 में उस गुण के लिए उल्लेखित पक्षी है (विभिन्न रूप से अनुवादित शब्द "बाज़," "गरुड़," या "गिद्ध" है)। यह अपने शिकार का घंटों तक पीछा करता है, और इसमें किसी भी शव जिस पर यह भोजन करने के लिए उतरता है उस को देखने की असाधारण क्षमता होती है। साधारण चील से थोड़ा बड़ा और लंबी टांगों वाला एक और गिद्ध है, जो इस्राएल, पश्चिमी एशिया और सीरिया में पाया जाता है।

*यह भी देखें*खेरमुतिया; चील; गिद्द (नीचे)।

हाड़गील

बड़ा, काला हंस जैसा पक्षी *(फैलाक्रोकोरैक्स कार्बो)*, जिसे मिस्र और पवित्र भूमि की कला में बार-बार दर्शाया गया है। इसकी लंबाई 19 से 40 इंच (48.3 से 101.6 सेंटीमीटर) तक होती है। इसके पैरों के चारों पंजों के बीच जाल होते हैं। शरीर के बहुत पीछे लगे पैर नोदक का काम करते हैं जब हाड़गील मछली, कठिनी या उभयचरों के अपने भोजन को पकड़ने के लिए गोता लगाता है। हाड़गील के लंबी चोंच है जिसकी नोक मुड़ी हुई होती है और चोंच के नीचे एक थैली होती है जिसमें हाड़गील पकड़ी गई मछली को रखता है।

हाड़गील बड़े समूहों में रहते हैं, लकड़ियों और अन्य वनस्पतियों से घोंसले बनाते हैं जिन्हें वे पेड़ों पर या तटों के पास चट्टानों पर ले जाते हैं। यह चार अंडों तक को सेते हैं, और बच्चों को दोनों नर - मादा द्वारा खिलाया जाता है।

हाड़गील अक्सर गलील के झील, हुलेह झील (मेरोम का पानी), और भूमध्यसागरीय तट के आसपास के दलदलों में पाया जाता है। इसका इब्रानी नाम मूल रूप से पक्षी द्वारा अपने शिकार को “नीचे फेंकना” दर्शाता है। हाड़गील गहरे पानी में गोता लगाते हैं और कभी-कभी मछली के शिकार में सतह के नीचे तेजी से जाते हुए प्रतीत होते हैं। हाड़गील लालच के लिए प्रसिद्ध है। यह इस्राएलियों के लिए धार्मिक रूप से अशुद्ध था (लैव्य 11:17; व्य.वि 14:17)।

*यह भी देखें*धनेश (नीचे)।

सारस

लंबे जलचर पक्षी *(ग्रस ग्रस)* ढोक और बगुले जैसे होते हैं, लेकिन उनके पंजे छोटे होते हैं। पंखों पर चांदी जैसी चमक होती है और पूंछ के पंख लहरदार होते हैं। दिन के उजाले में पच्चर के आकार की संरचनाओं में उड़ने वाले सारसों के बड़े झुंड पवित्र भूमि के ऊपर से गुजरते हैं, प्रत्येक दिन यूरोप के उत्तरी देशों से अफ्रीका की ओर जाते हैं और फिर वसंत में प्रजनन के लिए उत्तर की ओर लौटते हैं। प्रवासी झुंडों की

संख्या 2,000 तक हो सकती है। यिर्म 8:7 सारस की प्रवासी आदतों का उल्लेख करता है।

सारस की सामान्य पुकार को सबसे अच्छा एक चीख के रूप में वर्णित किया जा सकता है, लेकिन प्रवासी उड़ान के दौरान वे चहचहाने वाली ध्वनि निकालते हैं जिसका उल्लेख यशा 38:14 में वर्णित माना जा सकता है। सारस की आवाज़ें असाधारण रूप से शक्तिशाली होती हैं, उनकी पुकार मीलों तक सुनाई देती है। प्रवासी झुंडों में आमतौर पर एक झुंड का अगुआ होता है जो पुकारता है।

एक सारस की ऊँचाई 40 से 60 इंच (101.6 से 152.4 सेंटीमीटर) तक हो सकती है। शुतुरमुर्ग के अलावा, पवित्र भूमि में रहने वाला अब तक का सबसे लंबा पक्षी सारस है। एक सारस के पंखों का फैलाव 90 इंच (228.6 सेंटीमीटर) से अधिक हो सकता है। कुल मिलाकर, इसका समग्र रंग इस्पात धूसर होता है; सिर और गर्दन काले रंग की होती है जिस पर एक लंबी सफ़ेद पट्टी होती है। सारस उथले पानी के बजाय ज़मीन पर भोजन करती है। यह मुख्य रूप से घास और अनाज खाती है, फिर भी यह कीड़े, साँप, छोटे मगरमच्छ, मेंढक और कीड़ा-मकोड़ा खा सकती है, ऐसे जीवों को मारने के लिए अपनी लंबी, शक्तिशाली चोंच को तेज़ हथौड़े की तरह इस्तेमाल करती है।

सारस आम तौर पर एकांत स्थानों पर घोंसला बनाती है, अक्सर उथले पानी में या आस-पास। इसका घोंसला वनस्पति का ढेर होता है, जिसमें दो या तीन अंडे होते हैं जो गहरे धब्बों वाले हल्के रंग के होते हैं।

जलकुक्कट

छोटा, मटमैला भूरा पक्षी जो अपनी परजीवी आदतों के लिए जाना जाता है। लैव्य 11:16 और व्य.वि 14:15 में इस्तेमाल किया गया शब्द या तो आम कोयल *(क्यूकुलस कैनोरस)* या बड़ी चित्तीदार जलकुक्कट *(क्लैमेटर ग्लैंडारियस)* को संदर्भित कर सकता है। यह पक्षी एक प्रजनन परजीवी के रूप में कार्य करता है, जो दूसरे प्रजाति के अंडों में से एक को बाहर निकालने के बाद उसके घोंसले में अपने अंडे देता है। नवजात जलकुक्कट मेजबान प्रजाति के नवजातों से पहले निकलता है और अन्य नवजातों को बाहर कर देता है। पालक नर - मादा इसे अपना मानकर पालते हैं।

जलकुक्कट, कीटभक्षी पक्षी होने के कारण पवित्रशास्त्र में अनुष्ठानिक रूप से अशुद्ध मानी जाती है, जिससे यह संकेत मिल सकता है कि यह एक शिकारी या मांसभक्षी पक्षी है। इसी कारण से कुछ लोगों का मानना है कि इब्रानी शब्द वास्तव में जलकुक्कट के बजाय समुद्री म्याऊँ को संदर्भित करता है। पवित्र भूमि के समुद्र तट और झीलों पर समुद्री पक्षी, दरियाई अबाबील और समुद्र काक सभी आम हैं।

अन्य विद्वान मानते हैं कि इब्रानी शब्द जलकुक्कट से नहीं बल्कि उल्लुओं में से एक से है, संभवतः लंबे कान वाला उल्लू।

यह भी देखें उल्लू; समुद्री पक्षी (नीचे)।

उकाब

बड़ा शिकारी पक्षी (*जीनस एक्विला*)। उकाबों को अक्सर गिद्धों के साथ भ्रमित किया जाता था, जिससे बाइबिल के पक्षियों की पहचान करना कठिन हो जाता था। उकाबों के सिर गिद्धों की तरह गंजे नहीं होते, लेकिन दूर से वे समान दिखाई देते हैं। यह संभव है कि इब्रानी शब्द जिसका अनुवाद "उकाब" किया गया है (जिसका शाब्दिक अर्थ है "चोंच से फाड़ना") सभी बड़े शिकारी पक्षियों, चीलों और उकाबों दोनों को संदर्भित करता हो। पवित्रशास्त्र में उकाब के कई संदर्भ वास्तव में नौसिकुआ उकाब के संदर्भ हैं (उदाहरण के लिए, होश 8:1; शायद मत्ती 24:28)। हालांकि, कुछ पदों में, असल चील ही हो सकता है।

पवित्र भूमि में कई प्रकार के उकाब पाए जाते हैं, जिनमें सम्राट उकाब *(एक्विला हेलियाका)* और कम सामान्य स्वर्ण उकाब *(एक्विला क्रिसेटोस)* शामिल हैं। ये पक्षी शक्तिशाली पंखों के साथ मजबूत होते हैं; उनकी गतिविधियाँ लचीलापन और शक्ति को प्रकट करती हैं। एक विशिष्ट मुड़ी हुई चोंच, जो उकाब की गरिमामय और कुछ हद तक भयंकर उपस्थिति को बढ़ाती है, इसे शिकार को फाड़ने और मारने के लिए एक प्रभावी उपकरण प्रदान करती है। छोटे, शक्तिशाली पैर और पकड़ने वाले पंजे एक उकाब को संघर्षरत शिकार पर लगभग अटूट पकड़ बनाने में सक्षम बनाते हैं। मजबूत पंजों में नुकीले सिरे और किनारे होते हैं। उकाब दिन में शिकार करता है।

यिर्मयाह और अन्य भविष्यद्वक्ताओं के लिए, उकाब तीव्रता का प्रतीक था। सुनहरा उकाब, जो दस मिनट में तीन या चार मील (5–7 किलोमीटर) उड़ सकता है, ने 2 शमू 1:23; यिर्म 4:13; 49:22; विल 4:19 और हब 1:8 में तुलना को प्रेरित किया हो सकता है। मूसा ने शत्रु की अचानक प्रहार करने की शक्ति को दर्शाने के लिए इसी तुलना का उपयोग किया (व्य.वि 28:49)। नीतिवचन के लेखक ने, उकाब की ऊँचाई पर उड़ान को देखकर, उस छवि को मानव स्थिति पर लागू किया (नीति 23:4–5; पुष्टि करें प्रका 12:14)।

शक्तिशाली जातियों द्वारा इस्राएल पर आक्रमण के संदर्भ में अक्सर उकाब की शक्ति और अजेयता का उल्लेख किया गया। भविष्यद्वक्ता यहेजकेल ने नबूकदनेस्सर को उकाब के रूप में वर्णित किया (यहेज 17:3)। बाबेलियों और अश्शूरियों दोनों ने अक्सर अपनी कला में उकाब को चित्रित किया, विशेष रूप से एक देवता के रूप में जिसके शरीर मानव का और सिर उकाब का था। नबूकदनेस्सर को अस्थायी पागलपन का अनुभव भी हुआ जिसमें "उसके बाल उकाब पक्षियों के परों से और उसके नाखून चिड़ियाँ के पंजों के समान बढ़ गए" (दानि 4:33)।

उकाब अपना घोंसला दुर्गम पर्वत शिखरों या सबसे ऊंचे पेड़ों के शीर्ष पर बनाती है, यह तथ्य यिर्मयाह द्वारा उल्लेखित है (यिर्म 49:16; पुष्टि करें अय्यू 39:27–28; ओब 1:4)। इसके दो या कभी-कभी तीन अंडे होते हैं। केवल मादा ही घोंसले पर बैठती है, लेकिन दोनों नर - मादा द्वारा बच्चे को खिलाया जाता है। उकाब अपने बच्चों के प्रति समर्पित होते हैं और उन्हें उड़ान की कला में बहुत सावधानी से प्रशिक्षित करते हैं। कुछ टिप्पणीकार निर्ग 19:4 और व्य.वि 32:11 की व्याख्या उकाब द्वारा अपने बच्चों को अपने पंखों पर पकड़ने की प्रथा के प्रमाण के रूप में करते हैं।हालांकि, अवलोकन से ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि कोई उकाब ऐसा कारनामा कर सकता है। कुछ संस्करणों में शब्दावली सीधे यह नहीं कहती कि उकाब अपने बच्चों को अपने पंखों पर उठाते हैं।

कुछ कैद में रहने वाले उकाब 100 वर्ष से अधिक की आयु तक जीवित रहे हैं। इस अद्भुत दीर्घायु ने भजनकार को उस उकाब के बारे में बोलने के लिए प्रेरित किया जिसकी जवानी नवीनीकृत होती है (भज 103:5)। इसकी प्रभावशाली विशेषताओं से सामना होने पर, बाइबिल के लेखकों ने उकाब को विस्मय और आश्चर्य के साथ देखा (अय्यू 39:27–30; नीति 30:18–19)। उन अद्भुत विशेषताओं ने कई भविष्यद्वाणी दृष्टांतों में भी योगदान दिया, जिनमें यहेजकेल की उस प्राणी का दर्शन शामिल है जिसका मुख उकाब पक्षी का था (यहेज 1:10) और प्रेरित यूहन्ना की उस पवित्र प्राणी का दर्शन जो उड़ते हुए उकाब के समान था (प्रका 4:7)।

*यह भी देखें*गिद्द (नीचे)।

घरेलू मुर्गी

पालतू मुर्गी *(गैलस गैलस डोमेस्टिकस)*, संभवतः भारत के लाल जंगली मुर्गे से उत्पन्न हुई है। ऐसा लगता है कि वे पुराने नियम के समय में ही ज्ञात थे (नीति 30:31)। याजन्याह की मुहर (देखें 2 रा 25:23), जो लगभग 600 ईसा पूर्व की है, पर एक लड़ाकू मुर्गे की छवि अंकित है। हालाँकि, नहेम्याह की मेज के लिए पक्षियों या मुर्गियों का संदर्भ जंगली शिकार मुर्गी के लिए हो सकता है न कि घरेलू मुर्गियों के लिए (नहे 5:18)।

मुर्गी प्रजनन क्षमता का प्रतीक थी, और यहूदी लोग शादी में दूल्हा-दुल्हन के सामने एक मुर्गा और मुर्गी लेकर चलते थे। मुर्गियों का अपने बच्चों को इकट्ठा करने की मातृत्वपूर्ण चिंता या देखभल यीशु के सुनने वालों के लिए परिचित थी (मत्ती 23:37; लूका 13:34)।

चूँकि मुर्गे आमतौर पर भोर से एक या दो घंटे पहले बाँग देते हैं, इसलिए रात के तीसरे पहर, आधी रात से 3:00 बजे तक को मुर्गे की बाँग के रूप में जाना जाता था। तालमुद (यहूदी व्यवस्था पर टिप्पणी) के अनुसार, मुर्गियों के विष्ठा में पनपने वाले कीड़ों और डिंभक को बलि के मांस को दूषित करने से रोकने के लिए नए नियम के समय में यरूशलेम में मुर्गियों को पालना मना था। इस कारण से, वह मुर्गा जिसे पतरस ने सुना (मत्ती 26:34, 74; लूका 22:34, 60–61) संभवतः वहाँ रहने वाले रोमियों या यहूदियों का था जो यहूदी नियमों का पालन नहीं करते थे।

तखमास या रात्रि बाज़

प्रवासी पक्षी, गहरे रंग का और छोटे पैरों वाला, अमेरिकी व्हिपरविल के समान एक पक्षी है। तखमास *(जीनस कैप्रिमुलगस)* उल्लू के समान होता है, जिसमें चपटी सिर, बड़ी आँखें, मुलायम पंख, और बिना आवाज़ की उड़ान होती है। यह रात में कीड़ों का शिकार करता है, उन्हें उड़ते समय पकड़ता है, और दिन में शाखाओं पर आराम करता है। तखमास का नाम इसलिए पड़ा क्योंकि प्राचीन लोग मानते थे कि वे बकरियों का दूध पीते हैं। लैव्य 11:16 और व्य.वि 14:15 के अनुसार, वे धार्मिक रूप से अशुद्ध थे। हालाँकि कुछ विद्वानों का मानना है कि तखमास से तात्पर्य उल्लू है, लेकिन "रात्रि बाज़" अनुवाद को स्वीकार करने के अच्छे कारण प्रतीत होते हैं।

हंस

लंबी गर्दन वाले, जलरोधक पंखों वाले जालनुमा पैरों वाले जल पक्षी *(जीनस एंसर)*। घरेलू हंस होमर के समय के यूनानियों को ज्ञात थे, क्योंकि उनका उल्लेख '*ओडिसी*' में किया गया है। उन्हें मिस्र में शायद पुरानी साम्राज्य (लगभग 2500 ईसा पूर्व) के समय से और निश्चित रूप से नए साम्राज्य (लगभग 1500–1100 ईसा पूर्व) के समय तक पालतू बनाया गया था। उनका उपयोग भोजन और बलिदान के लिए किया जाता था। बाइबिल के समय में कनान में हंसों का प्रजनन व्यापक था; 13वीं या 12वीं शताब्दी ईसा पूर्व के हाथीदांत की नक्काशी जिसमें हंस दिखाए गए हैं, इस्राएल के मेगिद्दो में खुदाई में मिली हैं।

कई प्रजातियों के हंस अपने जीवन का अधिकांश समय भूमि पर बिताते हैं, हालांकि वे जलपक्षी होते हैं; कुछ तो अपने घोंसले पेड़ों में भी बनाते हैं। जंगली हंस पर्वतीय इलाकों की बजाय समतल भूमि और घास के मैदानों में रहना पसंद करते हैं।

यह हो सकता है कि राजा सुलैमान की मेज पर हंसों ने शोभा बढ़ाई होगी।1 रा 4:23 में उन्हें "मोटे पक्षी" कहा गया है, जो बत्तख, हंस, गिनी मुर्गी, कबूतर, या अन्य घरेलू खाने योग्य पक्षियों के लिए भी प्रयुक्त हो सकता है।

बाज़

पवित्र भूमि में पाए जाने वाले छोटे शिकारी पक्षी। अधिकांश संदर्भ संभवतः गौरैया बाज़ *(एक्सिपटर निसस)* के हैं। यह पक्षी खेरमुतिया से थोड़ा बड़ा होता है, इसकी पीठ घूसर-भूरे रंग की होती है और पेट पर काले और भूरे रंग की पट्टियाँ होती हैं। इसके पर छोटे, लंबे, घुमावदार पंजे और चौड़े पंख होते हैं, जो बाहरी छोर पर गोल होते हैं, जो इसे ऊपर की ओर हवा में

उड़ने में सक्षम बनाते हैं। लंबी पूंछ, पतवार की तरह काम करती है, जिससे पक्षी को उड़ान में तेजी से अपना रास्ता बदलने में मदद मिलती है। इसलिए यह लड़ाकू पक्षी या अन्य छोटे पक्षियों का पीछा करते समय हवा में बहुत ही गतिशील होता है। यह छोटे बाज की तरह जमीन पर अपने शिकार को नहीं पकड़ता, बल्कि उड़ान में छोटे पक्षियों का शिकार करता है और उन पर हमला करता है। बाज़ दिन में शिकार करते हैं, उल्लुओं के विपरीत जो रात में शिकार करने के लिए अनुकूलित होते हैं। सिर के किनारे स्थित उनकी आँखों के साथ, बाज़ बहुत तेज़ दृष्टि वाले होते हैं। वे आम तौर पर ऊँचे पेड़ों में घोंसला बनाते हैं और उनके घोंसलों में अक्सर साल दर साल एक ही जोड़ा रहता है।

मिस्रवासी गौरैया बाज़ को संजोकर रखते थे और सभी बाज़ों को बहुत सम्मान देते थे। होरस देवता को बाज़ के सिर के साथ चित्रित किया गया था। बाज़ इस्राएलियों के लिए धार्मिक रूप से अशुद्ध था (लैव्य 11:16; व्य.वि 14:15)। यह इस्राएल का स्थायी निवासी नहीं था, लेकिन उत्तर से दक्षिण की ओर प्रवास करते समय रुक गया। इसके दक्षिण की ओर प्रवास का उल्लेख अय्यू 39:26 में किया गया है। यशा 34:11 में "बाज़" का संदर्भ अनिश्चित है। *देखें*खेरमुतिया या बाज; चील (नीचे)।

बगुला

लंबी, पतली गर्दन और लंबे पैरों वाला दलदली पक्षी *(जीनस आर्डिया)*। तीसरे पैर के अंगूठे के अंदरूनी हिस्से पर इसकी एक विशिष्ट कंघी जैसी वृद्धि होती है।

बगुले आम तौर पर सफ़ेद, नीले, हरे या भूरे रंग के होते हैं। वे एक साथ घोंसला बनाते हैं, और दोनों नर - मादा बच्चों के लिए भोजन लाते हैं। बगुले मछली, छोटे सरीसृप और कीड़ों को खाते हैं, उन्हें एक ही बार में निगल जाते हैं। वयस्क और बच्चे देर पतझड़ में गर्म दक्षिणी जलवायु की ओर प्रवास करते हैं। सफ़ेद बगुला 3 फीट (.9 मीटर) से अधिक लंबा होता है, जबकि बौना बगुला केवल 22 इंच (55.9 सेंटीमीटर) लंबा होता है।

पवित्र भूमि में बगुले की कम से कम सात किस्में पाई जाती हैं। सफ़ेद आइबिस या बफ़-बैक्ड बगुला *(बुफ़स रूसेटस)* शायद सबसे आम प्रजाति थी। बैंगनी बगुला *(अर्डिया पर्पुरियस)* ग्रीष्मकालीन प्रजनन करने वाला पक्षी है जो पवित्र भूमि के सभी भागों में पाया जाता है जहाँ स्थिर पानी है।

नील-धूसर बगुला *(अर्डिया सिनेरिया)* दक्षिणी यूरोप और उत्तरी अफ्रीका में सर्दियाँ बिताता है, और वसंत ऋतु की शुरुआत में उत्तरी यूरोप की ओर पलायन करता है। इस्राएल में यह पानी के पास, दलदलों में और नदी किनारों पर अपना शीतकालीन घोंसला बनाता है, जहाँ यह मछलियों और मेंढकों का शिकार करता है। यह घंटों तक पानी में सब्र से खड़ा रहता है, और फिर अचानक इसकी लंबी, नुकीली चोंच बिजली की गति से नीचे की ओर झपटती है ताकि यह अपने शिकार को पकड़ सके। अक्सर नील-धूसर बगुला एक ऊँचे पेड़ में अपना घोंसला बनाता है, जहाँ यह वर्ष दर वर्ष लौट सकता है।

लैव्य 11:19 और व्य.वि14:18 के अनुसार, बगुला इस्राएलियों के लिए धार्मिक रूप से अशुद्ध था। कुछ विद्वानों का मानना है कि ये संदर्भ हाड़गील के लिए हैं, लेकिन अधिकांश विद्वान सोचते हैं कि ये बगुलों में से किसी एक के लिए हैं।

*यह भी देखें*हाड़गिल (ऊपर)।

हुदहुद

पवित्र भूमि के सबसे सुंदर पक्षियों में से एक (*उपुपा एपोप्स*)। इसके पास चमकीले रंग के पंख होते हैं, एक सुंदर मुकुट के आकार का शिखर होता है जो पक्षी के चिंतित होने पर खड़ा हो जाता है, और एक लंबी, पतली घुमावदार चोंच होती है। गुलाबी-भूरे रंग का हुदहुद लगभग 11 इंच (27.9 सेंटीमीटर) लंबा होता है, जिसकी पीठ, पूंछ और पंखों पर काले और सफेद रंग की पट्टियाँ होती हैं। हुदहुद मूल रूप से रेगिस्तान में रहने वाले पक्षी होते हैं।

“हुदहुद” नाम पक्षी की पुकार की ध्वनि से लिया गया है। ध्वनि निकालने के लिए, पक्षी की गर्दन के पंख फूल जाते हैं और सिर हवा में उछल जाता है। जब वह जमीन पर होता है, तो यह पक्षी अपनी चोंच को जमीन में दबाता है।

फरवरी में हुदहुद पवित्र भूमि में आता है, गर्मियों में प्रजनन करता है, और सितंबर में चला जाता है। इसे मिस्रवासियों द्वारा धार्मिक श्रद्धा में रखा गया था। इस्राएलियों के लिए इसे धार्मिक रूप से अशुद्ध माना गया था (लैव्य 11:19; व्य.वि 14:18), शायद इसलिए कि यह गंदगी के ढेर जैसे अस्वच्छ स्थानों में कीड़े और छोटे कीटों की खोज करता है।

हबासिल

जलपक्षी *(थ्रेस्कीओर्निस एथियोपिका)* वर्तमान में पवित्र भूमि में अज्ञात है, लेकिन संभवतः बाइबिल के समय में वहाँ जाने जाते थे। यह प्राचीन मिस्र में अच्छी तरह से जाने जाते थे, जहाँ यह देवता ठोथ के लिए पवित्र थे। आज यह नील नदी के किनारे दलदलों के गायब होने के साथ व्यावहारिक रूप से विलुप्त हो गए हैं।

इस बात पर कुछ सवाल है कि क्या लैव्य 11:17 में हबासिल का उल्लेख है, जहाँ इसे औपचारिक रूप से अशुद्ध के रूप में वर्गीकृत किया गया है। वही इब्रानी शब्द व्य.वि 14:16 और यशा 34:11 में "महान उल्लू" के रूप में अनुवादित किया गया है, जो अधिकांश विद्वानों द्वारा पसंद किया जाता है।

*यह भी देखें*उल्लू, महान (नीचे)।

खेरमुतिया या बाज़

छोटा बाज़ *(फाल्को टिन्ननकुलस)* लगभग एक फुट (30.5 सेंटीमीटर) लंबा होता है, जिसके सीने पर भूरे, काले और पीले पंख होते हैं। यह पवित्र भूमि के गांवों और ग्रामीण इलाकों में बहुतायत में पाया जाता था, छतों और चट्टानों के बीच घोंसला बनाता था। अधिकांश बाज़ों की तरह, खेरमुतिया हवा में मंडराने और तैरने में सक्षम होता है और फिर अपने शिकार पर झपट्टा मारता है, उसे नुकीले बंसी जैसे पंजों से पकड़ लेता है। यह मुख्य रूप से चूहों, छोटे सरीसृपों और कीड़ों को खाता है।

प्राचीन मिस्र के कब्रों में शव-संरक्षित खेरमुतिया पाए गए हैं। मिस्रियों ने शिकार करने वाले खेरमुतिया *(फाल्को चेरुग)* को भी संरक्षित किए हैं, जिसे खरगोशों और अन्य छोटे जानवरों का शिकार करने के लिए प्रशिक्षित किया जा सकता है। बाज़ - शिकार (विभिन्न प्रजातियों के बाजों के साथ शिकार) प्राचीन लोगों के बीच अच्छी तरह से जाना जाता था और आज भी इसका अभ्यास किया जाता है। अश्शूरियों को बाज़ - शिकार से परिचित होने का प्रमाण अशर्बनिपाल के अभिलेखों में मिलता है। चूँकि खेरमुतिया शिकारी पक्षी है, इसलिए यह औपचारिक रूप से अशुद्ध था (लैव्य 11:14)। कुछ अनुवाद इस शब्द को "चील" के रूप में प्रस्तुत करते हैं (लैव्य 11:14; व्य.वि 14:13) जो बाइबिल के पक्षियों की पहचान करने में कठिनाई का उदाहरण है।

*यह भी देखें*चील या गरुड़ (नीचे)।

चील या गरूड़

बड़ा शिकारी पक्षी *(मिल्वस मिल्वस - लाल चील)*। यह चील की औसत लंबाई लगभग 19 इंच (48.3 सेंटीमीटर) होती है। ऊपरी भाग आमतौर पर काला होता है, लेकिन पेट सफेद होता है। यह चील पेड़ों पर ऊँचे घोंसले बनाते हैं और लकड़ियों सहित वनस्पतियों से घोंसले बनाते हैं। उनके पास शायद ही कभी दो या तीन से अधिक बच्चे होते हैं, जिन्हें वे साँप, टिड्डे आदि खिलाते हैं। कभी-कभी इन चीलों को सांप बाज़ भी कहा जाता है।

यह चील एक प्रवासी पक्षी है जो गर्मियों के दौरान इस्राएल में रहता है, विशेष रूप से दक्षिणी यहूदा के पहाड़, मृत सागर के पश्चिम के निर्जन स्थान, और बेर्शेबा के जंगल में रहता है।

लाल चील या गरूड़ मध्यम आकार का शिकारी पक्षी है। चोंच के ऊपरी हिस्से के किनारे निचले हिस्से के साथ परस्पर-व्याप्त करते हैं, जिससे तेज कैंची बनती है। पूंछ मछली की तरह कांटेदार या फटी हुई होती है। इसकी तेज चीख में अक्सर तीखी सीटी की आवाजें शामिल होती हैं। अन्य पवित्र भूमि प्रजातियों में काली चील *(मिल्वस माइग्रेंस)* और काले पंखों वाली चील *(एलनस कैर्यूलस)* शामिल हैं।

इस चील को मूसा के व्यवस्था में अशुद्ध पक्षियों में सूचीबद्ध किया गया है (लैव्य 11:14; व्य.वि 14:13), लेकिन वहाँ उल्लिखित पक्षियों की सटीक पहचान कुछ विद्वानों और अनुवादकों द्वारा विवादित है।

*यह भी देखें*चील; खेरमुतिया या बाज (ऊपर)।

गिद्ध (लैमर्जियर)

गिद्धों में सबसे बड़ा और परिवार के अन्य सदस्यों की तुलना में कम सामान्य है।यह सफ़ेद धारियों वाला धूसर भूरा रंग का होता है और इसके चेहरे पर काले रंग के कड़े बालों का गुच्छा होता है, जिसके कारण इसे "दाढ़ी वाला गिद्ध" नाम दिया गया है। इसका दूसरा नाम "मेमना गिद्ध" है।

लैमर्जियर *(जिपेटस बार्बेटस)* के पास अपने शिकार को मारने का एक अनोखा तरीका है; चूंकि इसकी चोंच विशेष रूप से शक्तिशाली नहीं होती, इसलिए यह अपने शिकार को हवा में ऊपर उठा लेता है और फिर उसे चट्टानों पर गिरा देता है।

लैमर्जियर को कछुओं और मज्जा की हड्डी से विशेष लगाव होता है। सियार और छोटे गिद्धों द्वारा शव को हड्डी में बदल देने के बाद, लैमर्जियर हड्डियों को कुचलकर मज्जा प्राप्त करता है, या टुकड़ों को पूरा निगल जाता है। इसलिए इसे '*ओसिफ्रेज* या "अस्थिभंजक" के नाम से भी जाना जाता है, जो लैटिन शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ है "हड्डी को कुचलने वाला।" लैमर्जियर मूसा के व्यवस्था में अशुद्ध है (लैव्य 11:13; व्य.वि 14:13; दोनों का अंग्रेजी अनुवाद 'एन.एल.टी' में "गिद्ध" और के.ज.वी में "अस्थिभंजक" किया गया है)।

*यह भी देखें*गिद्द (नीचे)।

शुतुरमुर्ग

दो पंजों वाला, तेज दौड़ने वाला, उड़ने में असमर्थ पक्षी *(स्ट्रथियो कैमेलस)* जो रेगिस्तानों में या छोटी झाड़ियों से ढके क्षेत्रों में रहता है।

बाइबिल के समय में शुतुरमुर्ग सीरिया के उत्तर में दूर तक फैले हुए थे और नेगेव रेगिस्तान के पूरे बंजर इलाके में पाए जाते थे, लेकिन तब से वे वहाँ विलुप्त हो गए हैं। इसके इब्रानी नाम का अर्थ है "रेगिस्तान की बेटी।" यह सभी जीवित पक्षियों में सबसे बड़ा है, जिसकी ऊँचाई लगभग 10 फीट (3 मीटर) और वजन 175 पाउंड (79.5 किलोग्राम) है, हालांकि कुछ नरों का वजन 300 पाउंड (136.4 किलोग्राम) तक हो सकता है। मादा काफी छोटी होती है। शक्तिशाली जांघें और लंबे पैर शुतुरमुर्ग को बहुत तेज़ गति देते हैं, जो 40 मील प्रति घंटे (64 किलोमीटर प्रति घंटे) तक बताई जाती है।

शुतुरमुर्ग सर्वाहारी होता है। यह घास, फल, छोटे स्तनधारी, पक्षी, साँप और छिपकलियाँ खाता है, साथ ही बड़े-बड़े कंकड़ भी खाता है जो इसके पेट में भोजन को पचाने में मदद करते

हैं। शुतुरमुर्ग का शिकार किया जाता है, लेकिन इसके अंडों की मांग आम तौर पर पक्षी से ज़्यादा होती है। इसके अंडों के छिलके का पूरे भूमध्यसागरीय क्षेत्र में बर्तनों के रूप में इस्तेमाल के लिए या मोतियों के लिए कच्चे माल के रूप में तोड़े जाने पर व्यापार किया जाता है। एक साथ क़रीब 25 अंडों को रेत के उथले घोंसले में रखे जाते हैं, जिनमें से कुछ खुले छोड़ दिए जाते हैं। वे दिन में उपेक्षित लग सकते हैं, लेकिन केवल इसलिए क्योंकि वे आमतौर पर रात में सेते हैं। नर शुतुरमुर्ग ज़्यादातर सेते हैं; मादा केवल ठंड के दिनों में भाग लेती है। मजबूत, मोटे अंडों का छिलका भ्रूण को रेगिस्तान की गर्मी से बचाता है।

कभी-कभी शुतुरमुर्ग की सवारी की जाती है या छोटे गाड़ियों को खींचने के लिए भी उपयोग किया जाता है। शुतुरमुर्ग के पंखों की बहुत मांग होती है। प्राचीन शाही दरबारों में शुतुरमुर्ग के पंख पंखे के रूप में शोभा बढ़ाते थे। फ़िरौन तुतनखामेन (राजा तुत) के हाथीदांत वाले पंखे में सुंदर शुतुरमुर्ग के पंख थे। नर में पंख सफेद होते हैं और मादा में धूसर-भूरे होते हैं। शुतुरमुर्ग की मूर्खता की प्रतिष्ठा उसके व्यवहार से आती है जब उसका शिकार किया जाता है और जब उसे घेर लिया जाता है; यह खुद के बचने के तरीके होने पर भी ऐसा करने में विफल हो जाता है। हालांकि खुले देश में, यह बहुत सतर्क होता है और बचने के लिए तेज गति से दौड़ता है। तीतर के विपरीत, जब पीछा किया जाता है तो शुतुरमुर्ग अपने अंडों और चूजों से दूर भाग जाता है।

बाइबिल में शुतुरमुर्गों का उल्लेख अक्सर उनके नकारात्मक गुणों पर जोर देते हुए किया गया है। यह यहूदी व्यवस्था में अशुद्ध माने जाते थे (लैव्य 11:16; व्य.वि 14:15)। कई संदर्भ शुतुरमुर्गों को जंगल और उजाड़ की छवियों से जोड़ते हैं (अय्यू 30:29; यशा 13:21; 34:13; 43:20; यिर्म 50:39)। उनकी रात की पुकार को मीक 1:8 में बैल के दर्द में रंभाने की आवाज़ से तुलना की गई है। बाइबिल लेखक शुतुरमुर्ग की अपने बच्चों के प्रति निर्दयी होने का भी उल्लेख करते हैं (अय्यू 39:13–18; विल 4:3)।

उल्लू

रात्रिचर पक्षी *(क्रम स्ट्रिगिफॉर्मेस)* बड़े सिर और बड़ी आगे की ओर देखने वाली आँखों वाले पक्षी होते हैं। उनके पंख और पूंछ के पंख मखमल की तरह मुलायम होते हैं, जो उनकी उड़ान को शोर रहित बनाने में मदद करते हैं। उल्लू का शरीर छोटा और पतला होता है, लगभग कबूतर के आकार का, लेकिन पंखों के मोटे आवरण के कारण यह भारी दिखाई देता है। उल्लुओं को दुर्भाग्य का वाहक और आपदा का शगुन माना जाता है। पश्चिमी एशिया में, उल्लू अब मिस्र में मन्दिर के खंडहरों और पिरामिडों में और इस्राएल में यरदन नदी के दोनों किनारों पर चट्टान से बनी कब्रों, खंडहरों और गुफाओं में रहते हैं। वे शायद ही कभी बसे हुए घरों के पास आते हैं।

उल्लुओं की रात में देखने की क्षमता बहुत अच्छी होती है, जिसका उपयोग वे कृंतकों या अन्य जानवरों को पकड़ने के लिए करते हैं। हालांकि असामान्य रूप से उल्लू की बड़ी आंखें दिन के उजाले में लगभग बेकार होती हैं क्योंकि प्रकाश उन्हें प्रभावित कर देता है। उल्लू अपने लचीले ग्रासनली के कारण अपने शिकार को पूरा निगलने में सक्षम होता है। अपचनीय बाल और हड्डियाँ छर्रों के रूप में बाहर निकल जाती हैं। इनके चोंच छोटी लेकिन नुकीली होती है।

उल्लू दस अंडे तक दे सकते हैं। उल्लुओं के बच्चों की देखभाल घोंसले पर दोनों मादा और नर द्वारा की जाती है। वयस्क और बच्चे दोनों ही उस क्षेत्र में रहते हैं जहाँ वे पैदा हुए थे। पवित्र भूमि में उल्लुओं की आठ प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जिनमें से पाँच बहुतायत में हैं। हालाँकि, पवित्रशास्त्र में "उल्लू" के रूप में अनुवादित चार इब्रानी शब्दों में से किसी एक के साथ किसी विशेष प्रजाति की पहचान करना मुश्किल है। "उल्लू" के रूप में अनुवादित पाँचवाँ शब्द शुतुरमुर्ग के साथ अधिक उपयुक्त रूप से पहचाना जाता है। उल्लू अपवित्र पक्षियों की सूचियों में दिखाई देते हैं (लैव्य 11:17; व्य.वि 14:16), और हालाँकि अनुवाद अलग-अलग हैं, वे इस बात पर सहमत हैं कि उल्लुओं की सभी प्रजातियाँ, शिकारी होने के कारण अशुद्ध हैं।

यह भी देखें शुतुरमुर्ग (ऊपर); उल्लू, खलिहान या सफेद; उल्लू, महान; उल्लू, छोटा; उल्लू स्कॉप्स (नीचे)।

उल्लू, खलिहान का या सफेद

बड़ा उल्लू *(टाइटो एलोआ)* जिसका चेहरा दिल के आकार का होता है। इसका इब्रानी नाम इसे घोंसले में सांस लेते समय निकलने वाली खर्राटों जैसी आवाज़ से मिला हो सकता है। उड़ान भरते समय यह एक भयावह चीख़ निकालता है, और इस प्रकार इसे कभी-कभी चीख़ने वाला उल्लू भी कहा जाता है। इसकी कुछ भयावह विशेषताएं जैसे बड़ा सिर और चौड़ी उभरी हुई आँखों ने कुछ लोगों को इसे शैतानी मानने के लिए प्रेरित किया है, इसके साथ साथ वे इसे बंदर-चेहरे वाला उल्लू, के नाम से बुलाने के लिए भी प्रेरित हुए हैं। हालाँकि, यह एक उपयोगी पक्षी है, जो खेतों में हमला करने वाले और संग्रहीत अनाज को नुकसान पहुँचाने वाले कृन्तकों को खा जाता है। अन्य उल्लुओं की तरह, यह दिन में सोता है और रात में सुनने और देखने की अच्छी तरह से विकसित संवेदी क्षमता के साथ शिकार करता है। इसका रंग हल्का भूरा पीला होता है और आँखों और गालों के चारों ओर एक सफ़ेद मुखौटा होता है। पूरा पैर पंखों से ढका होता है जो इसे अपने पंजों में संघर्षरत शिकार के काटने से बचाता है।

कुछ आधुनिक अनुवादों में खलिहान या सफेद उल्लू का नाम भी उल्लेखित है (लैव्य 11:17,11:18, व्य.वि 14:16)।

यह भी देखें उल्लू (ऊपर), उल्लू, स्कूप्स (नीचे)।

उल्लू, महान

यह बड़ा उल्लू, लगभग दो फीट (60.9 सेंटीमीटर) लंबा *(एसियो ओटस)* होता है। इसका रंग चूहे के समान धूसर होता है, जिसमें धूसर-भूरे धब्बे और काले धारियाँ होती हैं। जैसा कि इसके नामों में से एक इंगित करता है, इसके सिर पर गुच्छेदार "कान" होते हैं और इसे कभी-कभी महान सींग वाला उल्लू भी कहा जाता है। यह चूहों और चूहों जैसे कृन्तकों पर भोजन करता है। यह इस्राएल में खंडहरों और उपवनों में सर्दियाँ बिताता है।

यह महान उल्लू संभवतः बाइबिल में वर्णित वह उल्लू है जिसका उल्लेख उजाड़ने वाले पक्षियों में किया गया है जो तबाह हो चुके एदोम में निवास करेंगे (यशा 34:11)। इसे कुछ अनुवादों में धार्मिक रूप से अशुद्ध पक्षियों की सूचियों में नाम से भी उल्लेख किया गया है (लैव्य 11:17, व्य.वि 14:16)।

छोटा उल्लू

यह पक्षी सभी रात्रिचर शिकारी पक्षियों में सबसे छोटा है। मुख्य रूप से कीटभक्षी, छोटा उल्लू *(एथेन नोक्टुआ ग्लॉक्स)* कभी-कभी छोटे पक्षियों को भी खाता है। यह पवित्र भूमि में सबसे आम उल्लू है, जो खंडहरों, कब्रों, चट्टानों और झाड़ियों के बीच निवास करता है (शायद भज 102:6 का उल्लू)। इसकी आवाज़ किसी मरते हुए व्यक्ति की आवाज़ जैसी लगती है। कभी-कभी इसे चट्टान पर बैठे हुए देखा जा सकता है, जिसकी बड़ी आँखें दूर तक देखती हैं, एक ऐसी मुद्रा जिसे प्राचीन लोग बुद्धि का संकेत मानते थे। यूनानियों ने छोटे उल्लू को देवी एथेना के साथ जोड़ा। इसका नाम कई अनुवादों में उल्लेखित है (लैव्य 11:17; व्य.वि 14:16)।

*यह भी देखें*उल्लू (ऊपर)।

छोटे उल्लू (स्कॉप्स उल्लू)

छोटे उल्लू *(ओटस स्कोप्स)* की पहचान उसके सिर पर बालों जैसे पंखों की दो सींग जैसी शिखाओं से होती है। यह झुकी हुई मुद्रा में बैठता है और बकरी की तरह उछलता और नाचता है। अंडे सेने की अवधि के दौरान, नर की सीटी जैसी आवाज़ कराहने जैसी लगती है। स्कोप्स उल्लू कीड़ों, कृन्तकों और पक्षियों को खाता है। चूहों या टिड्डियों के आक्रमण के दौरान, ये उल्लू बड़े झुंड में दिखाई देते हैं और कीटों को नष्ट करने में मदद करते हैं। वे अपने घोंसलों पर घुसपैठ करने वाले मनुष्यों पर हमला करने के लिए जाने जाते हैं। वे यूरेशिया और अफ्रीका के जाने-माने निवासी हैं।

कुछ विद्वानों का सुझाव है कि स्कॉप्स असली चीख़ने वाला उल्लू है, क्योंकि इसकी सीटी की आवाज़ रात भर गूंजती रहती है। चीख़ने वाले उल्लू का उल्लेख पवित्रशास्त्र में केवल एक बार किया गया है (यशा 34:14), लेकिन वह अनुवाद विद्वानों के बीच विवाद का विषय है। पारंपरिक यहूदी पौराणिक कथाओं का अनुसरण करते हुए, कुछ अनुवाद इब्रानी शब्द (लिलिथ) को एक उचित नाम के रूप में उपयोग करते हैं। यहूदी परंपरा में लिलिथ एक चुड़ैल-राक्षस थी, जो हव्वा के सृष्टि से पहले, आदम की पत्नी थी। वह राक्षसों की माँ बन गई और माना जाता था कि वह रात के दौरान बच्चों पर हमला करती थी; इस प्रकार "लिलिथ" नाम का अनुवाद "रात की चुड़ैल" या "रात्रि राक्षस" किया गया है। हालाँकि, पौराणिक व्याख्या का समर्थन करने वाले अधिकांश विद्वान सुझाव देते हैं कि यशायाह एक लोकप्रिय किंवदंती का उपयोग उजाड़ की भावना को जगाने के लिए कर रहे थे और खुद लिलिथ के अस्तित्व में विश्वास नहीं करते थे। इसके नाम के उपयुक्त अनुवाद के रूप में "चीख़ने वाले उल्लू" के लिए बहुत कम समर्थन है।

*यह भी देखें*उल्लू; उल्लू, खलिहान या सफेद (ऊपर)।

तीतर

पवित्र भूमि में सबसे आम तौर पर शिकार किया जाने वाला पक्षी। तीतर अपनी मूल शारीरिक रचना में मुर्गी जैसा दिखता है, लेकिन इसका शरीर कम मोटा और पूंछ लंबी होती है। पवित्र भूमि में तीतर की दो प्रजातियाँ पाई जाती हैं: रेत तीतर *(अम्मोपेरडिक्स हेई)*, जो मृत सागर के पास, यरदन नदी की घाटी में, और सीनै रेगिस्तान में पाया जाता है; और चुक्कर तीतर *(एलेक्टोरिस ग्रेका)* / नर के पंख रेतीले-भूरे रंग के होते हैं, ऊपरी पूंछ के पंख भूरे रंग के होते हैं और भूरे रंग के होते हैं, और नीचे का भाग भूरा और सफेद होता है। मादा भूरे रंग की होती है। चुक्कर तीतर यूरोप के सामान्य फ्रेंच तीतर जैसा दिखता है, जिसका शरीर लगभग 16 इंच (40.6 सेंटीमीटर) लंबा होता है। यह सुंदर और चमकीले रंग के पंखों से ढका होता है।

बाइबिल का संदर्भ (1 शमू 26:20; शायद भौगोलिक संदर्भ के कारण रेत तीतर) पीछा करके इसे पकड़ने की सामान्य विधि का संकेत देता है। इसका शिकार फंदों से भी किया जाता था (पुष्टि करें भज 91:3) या शिकारी छिपकर शिकार करते थे। तेजी से दौड़ने वाला तीतर जल्दी थक जाता है, जिससे शिकारी इसे जमीन पर गिराकर मार सकते हैं। फिर भी, दौड़कर और कूदकर, यह बहुत खड़ी चट्टानों पर चढ़ सकता है। यह पक्षी झाड़ियों के बीच शरण पाता है, जिसमें इसके भूरे-हरे पंख सुरक्षात्मक रूप से मिल जाते हैं। यदि यह इतना अधिक प्रजनन करने वाला न होता, तो शायद भोजन के लिए शिकार किए जाने के कारण विलुप्त हो गया होता।

बाइबिल में तीतर के बारे में वर्णन है कि वह उन अंडों को इकट्ठा करती है जिन्हें उसने सेया नहीं है (यिर्म 17:11), यह इस तथ्य पर आधारित लगता है कि मादा तीतर कम से कम दो बार अंडे देती है, एक अपने लिए और एक नर के लिए जिसे वह सेता है।

मोर

बटेर, तीतर और तीतर परिवार का सदस्य, मोर *(पावो क्रिस्टेटस)* वास्तव में नर मोर है। इसकी साथी को सही रूप से मोरनी कहा जाता है। नर मोर अपनी भव्य, शानदार उपस्थिति के कारण ध्यान आकर्षित करता है, जो शानदार पंखों से सुसज्जित होता है। छाती चमकदार धात्विक नीले रंग की होती है, और प्रत्येक दुम के पंख की नोक के पास एक चमकदार आँख होती है। नीचे की ओर झुकने पर, असामान्य रूप से लंबे दुम के पंख जमीन पर मोर के पीछे एक पंक्ति बनाते हैं, जिससे इसकी कुल लंबाई छह फीट (1.8 मीटर) तक हो जाती है। पंक्ति को एक विशाल पंखे के रूप में भी उठाया जा सकता है, जो बहुरंगी आंखों से सुसज्जित होता है। प्रणय निवेदन के दौरान पंख उठाए जाते हैं और एक विशिष्ट सरसराहट की आवाज़ उत्पन्न करने के लिए कंपन किए जाते हैं। अपेक्षाकृत साधारण मोरनी के पास लंबी पूंछ नहीं होती है।

क्योंकि यह पवित्र भूमि का मूल निवासी नहीं है, 1 रा 10:22 और 2 इति 9:21 में संदर्भित मोरों को कुछ विद्वानों द्वारा पूर्वी अफ्रीका से लाए गए पुरानी दुनिया के बंदर या बबून, या ऊपरी नील नदी क्षेत्र से गिनी मुर्गियाँ माना जाता है। हालांकि, इस बात के प्रमाण हैं कि फिनीकियों ने शायद राजा सुलैमान के समय में मिस्र के फ़िरौन को मोरों से परिचित कराया। यह संभव है कि सुलैमान के व्यापार अभियान भारत तक फैले थे, जहाँ मोर मूल निवासी है। मोर यूनानियों और रोमियों के लिए भी अच्छी तरह से जाना जाता था। सिकंदर महान ने इसकी सुंदरता को सराहा और अपने सैनिकों को पक्षी को मारने से मना किया।

प्रारंभिक मसीही कलीसिया में मोर मसीह के पुनरुत्थान में वादा किए गए अमरता का प्रतीक बन गया। इसके अलावा, इसकी पूंछ की आंखें परमेश्वर की सर्वदर्शी दृष्टि का प्रतिनिधित्व करने लगीं।

धनेश

धनेश सभी जलीय पक्षियों में सबसे बड़ा, हंस से भी काफी बड़ा होता है। धनेश *(पेलिकनस ओनोक्रोटेलस)* आम तौर पर लगभग 50 इंच (127 सेंटीमीटर) लंबा होता है, जिसकी चोंच 16 इंच (40.6 सेंटीमीटर) की होती है, जिसका ऊपरी हिस्सा अंत में नीचे की ओर झुका होता है, जिससे मछली पकड़ना आसान होता है। चोंच का निचला हिस्सा गले के नीचे तक फैली एक पीली थैली को सहारा देता है। थैली में तीन गैलन (11.4 लीटर) तक भोजन (छोटी मछली) और पानी हो सकता है। धनेश के जालीदार पैर विशेष होते हैं क्योंकि इनमें सभी चार अंगुलियों के बीच जाल होते हैं। धनेश विशेषज्ञ तैराक होने के साथ-साथ कुशल उड़ान भरने वाले भी होते हैं। धनेश का विशाल शरीर, लंबी गर्दन और तुलनात्मक रूप से छोटा सिर इसे ऐसे आकार देते हैं जो पानी से ऊपर उठना मुश्किल बनाते हैं। उड़ान भरने के लिए, धनेश को पहले सतह पर अजीब तरह से फड़फड़ाना पड़ता है, अपने पैरों से पानी पर वार करना पड़ता है।

धनेश समूहों में उड़ते और घोंसला बनाते हैं। दोनों लिंग एक से चार अंडों से निकलने वाले बच्चों की देखभाल करते हैं। जबकि अधिकांश पक्षी अपने बच्चों को उनके मुंह में भोजन डालकर खिलाते हैं, धनेश इस प्रक्रिया को उलट देता है; युवा धनेश अपना सिर और अपने शरीर का अधिकांश भाग अपनी माँ के गले में डालता है और माँ के पेट से आंशिक रूप से पचा हुआ भोजन निकालता है। बच्चे की चोंच का माँ के गले में गहरा प्रवेश प्राचीन लोगों को यह विश्वास दिलाता था कि बच्चे माँ के स्तन के रक्त पर भोजन कर रहे थे, इस प्रकार मसीह के प्रायश्चित और सामान्य रूप से दान के प्रतीक के रूप में धनेश का व्यापक उपयोग हुआ।

गुलाबी धनेश सफ़ेद रंग का होता है, जिसमें कभी-कभी हल्का गुलाबी रंग होता है, और शरीर से दूर पंख के जोड़ से काले पंख उगते हैं। पैर, थैली और आंखों के आस-पास की त्वचा पीली होती है; चोंच का हुक लाल होता है। यह प्रजाति छह फीट (1.8 मीटर) तक लंबी हो सकती है और इसके पंखों का फैलाव आठ फीट (2.4 मीटर) तक हो सकता है। प्रजनन के मौसम में, गुलाबी धनेश के पैरों और चेहरे के खुले क्षेत्रों का रंग धूसर से चमकीले नारंगी या लाल में बदल जाता है। उसी समय सफेद पंख एक सुंदर गुलाबी रंग प्राप्त कर लेते हैं जो एक तेल-ग्रंथि स्राव से उत्पन्न होता है। धनेश जब अपनी सफाई करता है तो तेल को पूरे पंखों में फैला देता है।

कुछ विद्वान इस बात पर सवाल उठाते हैं कि क्या कई पदों में "धनेश" इब्रानी का उचित अनुवाद है, बल्कि उनका मानना है कि यह शब्द उल्लू, बाज या गिद्ध में से किसी एक को संदर्भित करता है। अधिकांश अनुवादों में धनेश को अनुष्ठानिक रूप से अशुद्ध पक्षियों की सूची में शामिल किया गया है (लैव्य 11:18; व्य.वि 14:17)। अन्य संदर्भों पर मत और अधिक विभाजित है। कुछ विद्वानों का मानना है कि पदों का मरुस्थलीय संदर्भ जल पक्षी जैसे धनेश की संभावना को निरस्त करता है (तुलना करें भज 102:6, गिद्ध; यशा 34:11,जलकाग; बाज; सप 2:14, जलकाग; गिद्ध)। दूसरी ओर, गुलाबी धनेश पवित्र भूमि की नदियों, झीलों और दलदलों में पाया जाता है। सतह के पास मछलियों पर झपट्टा मारने के लिए समुद्र में 20 मील (32.2 किलोमीटर) तक की उड़ान भरने के बाद, धनेश अक्सर अपने विशाल भोजन को पचाने के लिए एक निर्जन स्थान पर लौट आता है। इस प्रकार, धनेश उन पदों का अकेला जंगली पक्षी हो सकता है।

कबूतर या फाख्ता

कबूतर परिवार *(कोलंबिडे)* की प्रजातियाँ। आम उपयोग में "कबूतर" और "फाख्ता" नाम वस्तुतः एक दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल किए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, शहर के निवासियों के लिए परिचित सामान्य घरेलू कबूतर वास्तव में जंगली चट्टानी फाख्ता का वंशज है। दोनों नामों का इस्तेमाल

बाइबिल के अंग्रेजी अनुवादों में एक ही इब्रानी शब्द का अनुवाद करने के लिए किया जाता है। दूसरे इब्रानी शब्द का अनुवाद आमतौर पर "पंडुकी" के रूप में किया जाता है। फिर भी, यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि प्राचीन इब्रानियों ने कबूतर की प्रजातियों के बीच अंतर को पहचानते थे।

आधुनिक इस्राएल में कबूतर या फाख्ता की कम से कम छह प्रजातियाँ पाई जाती हैं: चट्टानी, वृत्त, और स्टॉक कबूतर *(जीनस कोलंबा)*, और पंडुक, पट्टेदार और ताड़ कबूतर *(जीनस स्ट्रेप्टोपेलिया)*। इन छह में से, चट्टानी कबूतर *(कोलंबा लिविया)* और पंडुकी कबूतर *(स्ट्रेप्टोपेलिया टर्टुर)* दो ऐसे हैं जिनका उल्लेख पवित्रशास्त्र में सबसे अधिक बार किया गया है।

कबूतरों का आकार 6 से 12 इंच (15 से 30 सेंटीमीटर) तक होता है। सबसे रंगीन इस्राएली प्रजाति चट्टानी कबूतर है, जो सुंदर चांदी जैसा धूसर हो सकता है, जिसके पंखों पर धूसर-हरे मेघधनुषी पंख होते हैं (जिसका उल्लेख दाऊद ने भज 68:13 में किए हैं)। छोटे कबूतर *(स्ट्रेप्टोपेलिया)* कम रंगीन होते हैं, जिनकी गर्दन के पीछे काले या चितकबरे वाले आधा गलपट्टा होता हैं। कबूतरों की गर्दन छोटी होती है और सिर छोटे होते हैं, शरीर मोटे होते हैं, और पंख छोटे होते हैं, जिन्हें मजबूत की मांसपेशियों के द्वारा नियंत्रित किया जाता है, जो उन्हें लंबी दूरी तक उड़ने में सक्षम बनाती हैं। छोटे कबूतरों की पूंछ लंबी होती है।

वर्तमान में, जंगली चट्टानी कबूतर मुख्य रूप से गलील के झील के आसपास के क्षेत्र में और दक्षिण में मृत सागर की ओर जाने वाली कई घाटियों में पाया जाता है। जंगली चट्टानी कबूतर चट्टानों और चट्टानों के किनारों पर अपने घोंसले बनाना पसंद करते हैं, एक तथ्य जो शास्त्र में सटीक रूप से वर्णित है (श्रे.गी 2:14; यिर्म 48:28)। सभी इस्राएली कबूतर वनस्पति के टुकड़ों से नाजुक घोंसले बनाते हैं। अंडे साल में दो बार फूटते हैं। कबूतर शायद ही कभी दो से ज़्यादा अंडे देते हैं। बच्चों की देखभाल घोंसले में दोनों नर और मादा करते हैं, जो खेतों में बीज और खरपतवार खाते हुए घूमते हैं। वयस्क के फसल में पचा हुआ भोजन एक दूधिया स्थिति में होता है, जिसे कबूतर का दूध कहा जाता है, जिसे उगलकर युवा को खिलाया जा सकता है।

प्रणय-प्रसंग के समय नर कबूतरों में बहुत अधिक प्रतिस्पर्धा होती है। फाख्ता का प्रणय नृत्य एक अद्भुत हवाई प्रदर्शन है। प्रणय-प्रसंग ध्यान, बच्चों की संयुक्त देखभाल, और एक-दूसरे के प्रति नर और मादा की चिंता, जो प्राचीन काल से ही देखी जाती रही है, इन सब बातों ने कबूतर को प्रेम और शांति के सबसे लोकप्रिय प्रतीकों में से एक बना दिया है (श्रे.गी 1:15; 2:14; 4:1; 5:2)।

प्राचीन लेखकों द्वारा कबूतरों (वृत्त कबूतर) और फाख्ता के बीच एक प्रमुख अंतर को पहचाना गया लगता है। कबूतर साल भर के निवासी होते हैं और आसानी से पालतू बनाए जा सकते हैं, जबकि फाख्ता प्रवासी होते हैं। फाख्ता को पालतू जानवर या बलिदान के लिए अकेले या जोड़े में पिंजरों में रखा जाता था। शायद नूह के समय से ही कबूतर संभवतः सबसे पहले पालतू बनाए जाने वाले पक्षी थे (उत्प 8:8–12)। उन्हें प्राचीन मिस्र के स्मारकों पर दर्शाया गया था, और उनके खाने योग्य होने का उल्लेख शुरुआती मिस्र के ग्रंथों में किया गया था। बहुत पहले, घरेलू कबूतरों को घर की समृद्धि का सबूत माना जाता था। अधिक समृद्ध घरों में वे जालीदार संरचनाओं में बने मिट्टी के बर्तनों के कबूतरखानों में घोंसला बनाते थे (इसलिए यशा 60:8 में "दरबों" का उल्लेख है)।

नए नियम के समय में यरूशलेम में हेरोदेस महान के महल के आसपास के उद्यानों में कई कबूतरखाने थे। कबूतर की लोकप्रियता न केवल उसकी विनम्रता के कारण थी, बल्कि उसे भोजन के रूप में और एक स्वीकार्य और अपेक्षाकृत सस्ते बलिदान के रूप में भी थी। पंडुकी कबूतर को उसके जंगलीपन और परिणामस्वरूप कम उपलब्धता के कारण बलि के रूप में अधिक माना जाता था। बलि के संदर्भ में नहीं बल्कि कबूतरों के दो बाइबिल संदर्भ उनकी प्रवासी आदतों और वसंत में इस्राएल में उनके आगमन को संदर्भित करते हैं (श्रे.गी 2:12; यिर्म 8:7; पुष्टि करें होश 11:11)।

बाइबिल में कबूतरों और पंछियों के अधिकांश संदर्भ बलिदान की प्रक्रियाओं के बारे में दिए कथनों में हैं (उत्प 15:7–10; लैव्य 1:14; 5:7; 12:6; गिन 6:10; लूका 2:24)। हालांकि, अन्य संदर्भों में कबूतर के विभिन्न अवलोकन और प्रतीकात्मक उपयोग शामिल हैं। इसका गले से कराहना अक्सर देखा गया था (यशा 38:14; 59:11; यहेज 7:16; नहूम 2:7)। इसकी उड़ान की शक्ति प्रसिद्ध थी (भज 55:6), साथ ही इसकी सुंदरता (श्रे.गी 1:15; 4:1; 5:12), इसकी कोमलता और अपने साथी के प्रति वफादारी (श्रे.गी 2:14; 5:2; 6:9), इसका स्नेह (भज 74:19), और इसका भोलापन (मत्ती 10:16)। कबूतरों के लिए एक नकारात्मक संदर्भ होश 7:11 में है, जहाँ उन्हें मूर्ख और बुद्धिहीन कहा गया है, संभवतः यह उनके अत्यधिक भरोसेमंद स्वभाव के संदर्भ में है।

नए नियम के संदर्भों में, शायद सबसे महत्वपूर्ण है मसीह के बपतिस्मा के समय पवित्र आत्मा का कबूतर के रूप में उतरने का वर्णन (मत्ती 3:16)। कबूतर के प्रेमपूर्ण स्वभाव ने प्रारंभिक मसीहीयों के लिए कबूतर की छवि को सांत्वना देने वाले की अवधारणा से जोड़ना स्वाभाविक था। तब से कबूतर पवित्र आत्मा का सबसे लोकप्रिय प्रतीक बना हुआ है।

बटेर

छोटे, मोटे पक्षी जिनकी चोंच और पैर मुर्गियों के समान होते हैं; इसलिए वे बीज या कीड़े खाने के लिए अनुकूलित होते हैं। बटेर *(कोटर्निक्स कोटर्निक्स)* मुर्गी के उपपरिवार का सबसे छोटा पक्षी है जिसमें तीतर और महूका भी शामिल हैं। बटेर (या "बटेरें" बहुवचन रूप) लगभग दस इंच (25.4

सेंटीमीटर) लंबे होते हैं और उनके छोटे, गोल पंख होते हैं। वे घास या झाड़ियों में अपने छिपने के स्थानों से घुरघुराहट की आवाज के साथ बाहर निकलते हैं। बटेर का पेट सफेद होता है। यह 18 अंडे तक दे सकता है, और यदि मादा की मृत्यु हो जाती है, तो नर को बच्चों की देखभाल करते हुए देखा गया है। भूमध्यसागरीय क्षेत्र के बटेर सर्दियों में सूडान में रहते हैं और वसंत में विशाल झुंडों में उत्तर की ओर प्रवास करते हैं। बटेर लंबे समय तक निरंतर उड़ान नहीं भर सकते, लेकिन हवा के बहाव का उपयोग करके वे हवा में उड़ते रहते हैं।

सीनै के जंगल में इस्राएलियों के लिए विशाल बटेरों के झुंड को दो बार भोजन के रूप में दिया गया, यहाँ पक्षियों को चमत्कारिक रूप से रेगिस्तान में हवाओं द्वारा नीचे लाया गया था (निर्ग 16:13; गिन 11:31–32; भज 105:40)। दूसरी बार वे शायद अकाबा की खाड़ी के साथ उड़ रहे थे और पूर्वी हवा द्वारा मार्ग से भटक गए थे (गिन 11:31; भज 78:26–28)। लंबी उड़ान को बनाए रखने में उनकी असमर्थता उनके कम उड़ान स्तर का कारण हो सकती है जो की दो हाथ, या लगभग 40 इंच (101.6 सेंटीमीटर) है। जब वे थक जाते थे, तो उन्हें आसानी से हाथ से पकड़ा जा सकता था (गिन 11:31–32)। बटेर को सभी शिकार पक्षियों में से सबसे साफ और सबसे नरम भोजन माना जाता था, और उन्हें धूप में सुखाकर संरक्षित किया जाता था।

कौवा

कौवा परिवार *(कोर्विडा)* का सदस्य। इब्रानी शब्द "कौवा" का अर्थ "काला" है। कौवा (*कोर्वस कोरैक्स*) का वजन लगभग तीन पाउंड (1.36 किलोग्राम) होता है और इसकी लंबाई 22 से 26 इंच (56 से 66 सेंटीमीटर) तक होती है। इसकी पूंछ बीच में चौड़ी होती है और दोनों सिरों पर संकरी होती है। इस्राएल में आठ प्रजातियाँ पाई जाती हैं: तीन कौवे, दो जैकडॉ कौआ, एक काला कौवा, एक रूक कौआ, और एक लाल पैरोंवाला कौआ। काला कौवा, जो लगभग 20 इंच (50.8 सेंटीमीटर) लंबा होता है, कौवे से छोटा होता है, और इसकी पूंछ की चौड़ाई समान होती है। कौवे की सबसे प्रमुख विशेषता इसका चमकदार काला मेघधनुषी पंख है।

कौवे और काले कौवे कई मनुष्यों की नापसंदगी के बावजूद जीवित बचे हैं। बेहतरीन उड़ान भरने वाले कौवे दिन में प्रवास करते हैं और कई सौ हज़ार तक के बड़े झुंडों में इकट्ठा होते हैं। घोंसले बनाने के मौसम के दौरान, वे लकड़ियों के घोंसले बनाते हैं जिसमें दो से सात अंडे दिए जाते हैं। कौवे जीवन भर संभोग करते हैं। मजबूत पंख, मजबूत चोंच, और मजबूत पैरों से सुसज्जित, कौवे अलग-थलग स्थानों में रह सकते हैं जहाँ से वे भोजन के लिए व्यापक रूप से घूमते हैं। यह कि वह जहाज पर वापस नहीं आया, नूह के लिए एक अच्छा संकेत था, यह दर्शाता है कि कौवा भोजन पा सकता है और संभवतः सूखी पहाड़ियों पर आराम करने के लिए जगह पा सकता है (उत्प 8:7)।

कौवा, जो मूल रूप से मुर्दाखोर है, धार्मिक रूप से अशुद्ध था (लैव्य 11:15; व्य.वि 14:14)। फिर भी, कौवों ने परमेश्वर के आदेश पर एलिय्याह को भोजन कराया (1 रा 17:4–6)। अय्यूब को बताया गया कि परमेश्वर ने कौवे को उसका भोजन दिया (अय्यू 38:41), जैसा कि भजनकार और यीशु ने दोहराया (भज 147:9; लूका 12:24)। कौवे के चमकदार काले पंखों ने दुल्हन को उसके प्रिय के बालों की तुलना करने के लिए प्रेरित किया (श्रे.गी 5:11)। वे सुनसान, निर्जन क्षेत्रों को अपने घर के क्षेत्र के रूप में पसंद करते हैं (यशा 34:11)। कौवे चालाक और सक्रिय पक्षी होते हैं। कुछ बोलने, पहेलियाँ सुलझाने और याददाश्त के करतब दिखाने में सक्षम होते हैं। साहसी और जिज्ञासु, वे कभी-कभी चोरी के लिए अपनी प्रतिभा का उपयोग करते हैं।

गंगा चिल्ली

मजबूत समुद्री पक्षी, मुख्य रूप से गिद्ध के परिवार का कसदस्य जो मुर्दाखोर है *(परिवार लारिडे)*। पवित्र भूमि के समुद्र तट पर समुद्री पक्षी की कई प्रजातियाँ रहती हैं। वे आम तौर पर भूरे रंग के होते हैं, जिनके सिर और निचले हिस्से सफ़ेद होते हैं और पंखों के सिरे काले होते हैं। पतली चोंच नीचे की ओर मुड़ी हुई होती है।

गंगा चिल्ली 8 से 30 इंच (20 से 76 सेंटीमीटर) लंबे हो सकते हैं। कई प्रजातियाँ अपनी शानदार उड़ान क्षमता के साथ लंबी दूरी तय करते हुए प्रवास करती हैं। जालदार पैरों की वजह से समुद्री पक्षी आसानी से तैर भी सकते हैं। उनकी आवाज़ कर्कश चीख या चीख़ जैसी होती है। घोंसले बनाने के मौसम में कई समुद्री पक्षी किसी भी उपलब्ध जगह, जैसे कि चट्टान या पेड़ पर एक साथ घोंसला बनाते हैं। नर और मादा दोनों ही बच्चों को पालते हैं और उनकी देखभाल करते हैं।

क्योंकि गंगा चिल्ली लगभग कुछ भी खा लेते हैं, उन्हें धार्मिक रूप से अशुद्ध पक्षियों के रूप में सूचीबद्ध किया गया है (लैव्य 11:16; व्य.वि 14:15, अंग्रेजी अनुवाद में "समुद्री म्याऊँ" एक सामान्य यूरोपीय समुद्री पक्षी है)। कुछ टिप्पणीकारों का मानना है कि ये अंश उल्लू या जलकुक्कट के बारे में हैं, गंगा चिल्ली के बारे में नहीं।

*यह भी देखें*जलकुक्कट (ऊपर)।

गौरैया

फिंच परिवार *(फ्रिंजिलिडे)* या वीवर फिंच परिवार *(प्लोसीडे)* का छोटा पक्षी, जिसे कम मूल्य का माना जाता है। "पक्षी" के लिए इस्तमाल किया गया इब्रानी शब्द सामान्य रूप से किसी भी छोटे पक्षी जैसे गौरैया, फिंच, थ्रश, या मैना को संदर्भित करता है। अनुवाद में, हालांकि, यह शब्द कभी-कभी सामान्य अंग्रेजी या घरेलू गौरैया (*पासर डोमेस्टिका;* भज 84:3; नीति 26:2) को संदर्भित करता है।

काले रंग के गले के साथ फीके रंग का, नर घरेलू गौरैया एक शोरगुल और ऊर्जावान प्राणी है। जब घोंसला खुले स्थानों में बनाया जाता है, तो इसका एक किनारे पर एक छेद होता है और यह लगभग किसी भी उपलब्ध सामग्री से बना होता है। गौरैया आश्रय वाले स्थानों, आवासों, बक्सों या पेड़ों के छेद में भी घोंसला बनाती हैं। वे चार से सात अंडे देती हैं।

साधारण या घरेलू गौरैया प्राचीन यूनान और मिस्र में जानी जाती थी। वहाँ इसे बड़े झुंडों में खेतों पर आक्रमण करने और उनसे बीज चुनने के लिए जाना जाता था। यह पवित्र भूमि का स्थायी निवासी है।

गौरैया बहुतायत से पाई जाती है और मनुष्यों के साथ निकट संबंध में रहती है। इसे धार्मिक रूप से शुद्ध माना जाता था। जिन देशों में गौरैया बेची जाती थीं, वहाँ उनकी कीमतें बहुत कम होती थीं (मत्ती 10:29; लूका 12:6)। आज पश्चिम एशिया के बाजारों में लड़के जीवित गौरैया बेचने के लिए पेश करते हैं। एक पैर में रस्सी से बंधे चार से छह के समूहों में एक साथ बंधे हुए, पक्षी लड़कों के सिर के ऊपर से उड़ते हैं। जाहिर है कि ऐसा नजारा नए नियम के समय में सामान्य दृश्य था।

सारस

लंबे पैरों वाला, सफ़ेद रंग का दलदली पक्षी *(जीनस सिकोनिया)* जिसके बड़े, शक्तिशाली पंख होते हैं, जिनमें चमकदार काले रंग के प्राथमिक और द्वितीयक पंख होते हैं। इसके पंखों के फड़फड़ाने से तेज़ दौड़ने की आवाज़ आती है। पंजों के बीच की संयोजी झिल्ली पक्षी को कीचड़ में डूबने से बचाती है। इसकी लाल चोंच नुकीली और लंबी होती है, जो अपने शिकार को पकड़कर पानी से बाहर निकालने का काम करती है। सारस मूक होते हैं, उनमें आवाज़ नहीं होती।

सारसों के झुंड सितंबर में अपने प्रवास के दौरान मध्य और दक्षिणी अफ्रीका के रास्ते पवित्र भूमि से होकर गुजरते हैं, और इसी प्रकार वसंत में वे उत्तरी इस्राएल, सीरिया और यूरोप में अपने घरों की ओर लौटते हैं। सारस दिन के समय विशाल झुंडों में यात्रा करते हैं, और आसमान की ओर फैल जाते हैं।

सारसों का अपने बच्चों की वफादारी से देखभाल करना लोक-प्रसिद्ध है, साथ ही इनके हर साल एक ही घोंसले में वापस लौटने की आदत भी प्रसिद्ध है। सारस को हर साल अपने घोंसलों में नए-नए बच्चे जोड़ने की आदत होती है, और ऐसे घोंसले मिलना संभव है जो 100 साल पुराने हों और जिनकी ऊंचाई तीन फीट (0.9 मीटर) से ज़्यादा हो।

पवित्र भूमि में दो प्रकार के सारस पाए जाते हैं। सफेद सारस *(सिकोनिया अल्बा)* जिसकी ऊंचाई 40 इंच (101.6 सेंटीमीटर) होती है, और इसके पंखों का फैलाव छह फीट (1.8 मीटर) होता है, जो इसे धीमी, निरंतर उड़ान भरने या ऊँचाई पर उड़ने में सक्षम बनाता है। लोककथाओं में सफेद सारस को कभी-कभी शुभ संकेतक माना जाता है।

मृत सागर घाटी के आस-पास आम तौर पर पाया जाने वाला काला सारस *(सिकोनिया निग्रा)* पेड़ों पर घोंसला बनाता है; इसलिए यह संभवतः भज 104:17 में उल्लिखित वृक्ष-निवासी प्रजाति हो सकती है। "सारस" के लिए इब्रानी नाम का अर्थ है "राजसी" या "वफादार", जो इसके बच्चों के प्रति पक्षी की देखभाल का संदर्भ है। बगुले की तरह, सारस भी अपने जलीय जीवों, कचरे, छोटे जानवरों, पक्षियों और सरीसृपों के आहार के कारण धार्मिक रूप से अशुद्ध था (लैव्य 11:19; व्य.वि 14:18)। यिर्मयाह ने सारस के प्रवास के समय की अद्भुत और स्वाभाविक जानकारी का उल्लेख किया (यिर्म 8:7)। इसके प्रभावशाली पंखों का उल्लेख जकर्याह के दर्शन में हुआ था (जक 5:9)।

शूपाबेनी या अबाबील

छोटे, लगभग काले, कांटेदार पूंछ वाले पक्षी जिसके लंबे, पतले पंख होते हैं, अपनी सुंदर उड़ान *(हिरुंडो रस्टिका)* के लिए जाने जाते हैं। इसके छोटे, कमजोर पैर चलने के लिए अच्छी तरह से अनुकूलित नहीं होते हैं। शूपाबेनी आकार और जीवन शैली में स्विफ्ट पक्षी के समान होते हैं लेकिन आकार में उनसे छोटे होते हैं।

शूपाबेनी का बड़ा मुंह इसे उड़ान के दौरान कीड़े पकड़ने में सक्षम बनाता है। रंग भूरा और नीला से लेकर सफेद तक होते हैं। शूपाबेनी अक्सर इमारतों में घोंसला बनाते हैं, भजनकार ने इस विशेषता को देखा, और मन्दिर में शूपाबेनी के घर का उल्लेख अपने भजन में देते हैं (भज 84:3)।

शूपाबेनी मूल रूप से इस्राएल में निवास करते हैं, जबकि स्विफ्ट पक्षी एक प्रवासी पक्षी है जो अपनी प्रवासी अनुसूची की नियमितता के लिए जाना जाता है। यशा 38:14 का "सूपाबेनी" संभवतः स्विफ्ट पक्षी को संदर्भित करता है, जैसा कि यिर्म 8:7 में है, जहाँ पक्षी की विश्वसनीयता की तुलना परमेश्वर की प्रजा की अव्यवस्था से की जाती है। नीति 26:2 सूपाबेनी या स्विफ्ट पक्षी में से किसी एक का संदर्भ हो सकता है।

*यह भी देखें*स्विफ्ट पक्षी (नीचे)।

राजहँस

बड़े, सुंदर जल पक्षी। हंस की दो प्रजातियाँ *(जीनस सिग्नस)* मध्य पूर्व में प्रवासी के रूप में पाई जाती हैं *(सिग्नस ओलोर और सिग्नस म्यूज़िकस)*। हंसों को पक्षियों में सबसे अच्छे संगीतकार के रूप में माना जाता है और यूनानियों द्वारा इन्हें देवता अपोलो के लिए पवित्र माना जाता था। उनकी आवाजें बांसुरी और वीणा जैसी लगती हैं।

लैव्य 11:18 और व्य.वि 14:16 में संदर्भ संभवतः हंस के लिए नहीं बल्कि जलमुर्गी या खलिहान उल्लू के लिए हैं, क्योंकि शाकाहारी हंस को अशुद्ध प्राणी घोषित करने का कोई कारण

नहीं दिखता। *यह भी देखें* उल्लू, खलिहान या सफेद (ऊपर); जलमुर्गी (नीचे)।

स्विफ्ट पक्षी

छोटे, मजबूत उड़ने वाले पक्षी *(जीनस एपस)*। शूपाबेनी की तरह, स्विफ्ट पक्षी के लंबे, मुड़े हुए पंख और एक कटा हुआ पूंछ होती है, जो इसे जमीन के पास से उड़ते हुए और हवा में तेजी से गति प्राप्त करने में सक्षम बनाती है। स्विफ्ट पक्षी उड़ान के दौरान अपने मुंह में कई हानिकारक कीड़ों को पकड़कर खा जाता है। कई स्विफ्ट पक्षी अपने घोंसले छतों और शहरपनाहों के कोनों और दरारों में अपने घोंसले बनाते हैं। उनके घोंसले मजबूत पंखों से बनाए जाते हैं जो लार के साथ जोड़े जाते हैं। अन्य स्विफ्ट पक्षी गुफाओं और चट्टानों की दरारों में रहते हैं।

साधारण स्विफ्ट पक्षी इस्राएल के मूल निवासी हैं, और यरदन घाटी में वे बड़े झुंडों में पाए जाते हैं। यशा 38:14 स्पष्ट रूप से स्विफ्ट पक्षी की करुणामय पुकार का संदर्भ प्रतीत होता है, क्योंकि शूपाबेनी की तीखी चहचहाहट एक व्याकुल राजा की चीख के लिए आकर्षक उपमा नहीं है। स्विफ्ट पक्षी की आवाज़ नरम, कोमल होती है, और इसकी चीख को आसानी से मधुर विलाप के रूप में समझा जा सकता है।

प्रवासी स्विफ्ट पक्षी पवित्र भूमि में देर सर्दियों में एक निश्चित समय पर आते हैं, और विशाल झुंड अपनी पुकारों से शहरों को भर देते हैं। इस रीति से यिर्म 8:7 में सूपाबेनी का संदर्भ, जो मुख्यतः स्थायी निवासी होते हैं, संभवतः स्विफ्ट पक्षी के लिए है।

यह भी देखें सूपाबेनी (ऊपर)।

गिद्ध

बाज़ परिवार *(एसिपिट्रिडे)* का उपपरिवार *(एजिपीनी)*। पुरानी दुनिया के गिद्धों की चार प्रजातियाँ पवित्र भूमि में पाई जाती हैं: मिस्री, नौसिकुआ, काला, और दाढ़ी वाला गिद्ध (दाढ़ी वाला गिद्ध लैमर्जियर के नाम से भी जाना जाता है)। ये पक्षी आकार में 24 इंच (61 सेंटीमीटर) के मिस्री गिद्ध से लेकर विशाल दाढ़ी वाले गिद्ध तक होते हैं, जो पवित्र भूमि में उड़ने वाले सभी पक्षियों में सबसे बड़ा है।

ज़्यादातर गिद्ध भूरे या काले रंग के होते हैं, जिनकी गर्दन छोटी होती है और एक छोटी, नुकीली चोंच होती है जिससे वे मरे हुए जानवरों के मांस को फाड़ते हैं, यह उन्हें पसंद हैं। दाढ़ी वाले गिद्धों को छोड़कर सभी गिद्धों के सिर और गर्दन नंगे या नीचे से ढके होते हैं, जिससे ये मृतभक्षी शव के पंखों को खराब किए बिना शव में गहराई तक घुस सकते हैं। बेहतरीन दृष्टि के कारण गिद्ध को ऊंचे स्थान से शव का पता लगाने में मदद मिलती है। अपने ज़्यादातर भोजन की सड़ी-गली हालत को देखते हुए, गिद्ध की गंध की कमज़ोर समझ एक भाग्यशाली निर्बलता हो सकती है। गिद्ध किसी भी सुविधाजनक जगह पर घोंसला बनाते हैं; दोनों नर - मादा बच्चों की देखभाल करते हैं।

पुराने नियम में आमतौर पर "उकाब" के रूप में अनुवादित इब्रानी शब्द संभवतः सभी बड़े शिकारी पक्षियों के लिए एक सामान्य शब्द था, जिसमें गिद्ध भी शामिल थे। इस प्रकार उकाब के बारे में कई संदर्भ या तो उकाब या गिद्ध का उल्लेख कर सकते हैं (पुष्टि करें लैव्य 11:13; व्य.वि 14:12)। ऐसे संदर्भों में घोंसला बनाने की आदतों का उल्लेख (अय्यू 39:27–28; यिर्म 49:16; ओब 1:4), नवजातों की देखभाल (व्य.वि 32:11), उड़ान की शक्तियाँ (निर्ग 19:4; व्य.वि 28:49; अय्यू 9:26; विल 4:19), और अत्यधिक ऊँचाई पर उड़ान भरना (नीति 23:5; 30:19; यशा 40:31) शामिल हैं। अनुवादों में भिन्नताओं के बावजूद, गिद्ध स्पष्ट रूप से अशुद्ध पक्षियों की सूची में शामिल है क्योंकि इसका भोजन गंदा होता है (लैव्य 11:13, 18; व्य.वि 14:12, 17)।

किंग जेम्स वर्जन में चील के कई संदर्भों को आधुनिक अनुवादों में "गिद्ध" में बदल दिया गया है। यह परिवर्तन गिद्ध के वर्तमान या आसन्न विनाश के संकेत के रूप में संदर्भों में उपयुक्त प्रतीत होता है (विल 4:19; होश 8:1)। इसी प्रकार नीति 30:17 का आंख निकालने वाला पक्षी संभवतः गिद्ध है। वाक्यांश "गिद्ध के समान गंजा" (मीक 1:16) स्पष्ट रूप से "गिद्ध की तरह गंजा" पढ़ा जाना चाहिए, क्योंकि इस्राएल में कोई गंजा चील नहीं है और अधिकांश गिद्ध गंजे होते हैं। चूंकि गिद्ध, चील की तरह, प्राचीन पश्चिम एशिया में संप्रभुता और प्रभुत्व का प्रतीक था, कुछ देवताओं को गिद्ध के रूप में दर्शाया गया था। इस प्रकार बाबेल और मिस्र के राजाओं की चील से तुलना करने की यहेजकेल की तुलना वैकल्पिक रूप से गिद्धों से तुलना के रूप में की जा सकती है (यहेज 17:3, 7)। यीशु के द्वारा बोले गए अंत समय में शवों के चारों ओर चीलों के इकट्ठा होने का संदर्भ (मत्ती 24:28) भी गिद्धों में संशोधित किया जाना चाहिए, क्योंकि चील आमतौर पर अकेले खाते हैं, जबकि गिद्ध आमतौर पर मांस के चारों ओर झुंड में इकट्ठा होते हैं।

अनेक अंग्रेजी संदर्भों में गिद्धों का उल्लेख आधुनिक अनुवादों में आमतौर पर "चील" या "बाज़" के रूप में किया जाता है (पुष्टि करें विभिन्न संस्करण लैव्य 11:14; व्य.वि 14:13; अय्यू 28:7; यशा 34:15)।

यह भी देखें उकाब; बाज; चील; लैमर्जियर; गिद्द, काला, या कूरर; गिद्द, मिस्री; गिद्द, नौसिकुआ।

गिद्ध, काला, या कुरर

दिन में एक बार मांस खाने वाला यह पक्षी तीन फीट (0.9 मीटर) से थोड़ा अधिक लंबा होता है और इसके पंखों का फैलाव तीन गज (2.7 मीटर) से अधिक होता है। काले या कुरर गिद्ध *(एजिपियस मोनाचस)* के पंख काले होते हैं और सिर और गर्दन का ऊपरी हिस्सा अन्य मांसाहारी गिद्धों की

तरह गंजा होता है। यह यरदन नदी के घाटी में घोंसला बनाता है और ऐसा लगता है कि बाइबिल के समय में यह बहुतायत में पाया जाता था। आज यह काफी दुर्लभ है। काला गिद्ध संभवतः लैव्य 11:13 और व्य.वि 14:12 का कुरर गिद्ध है।

*यह भी देखें*गिद्द (ऊपर)।

गिद्ध, मिस्री

इसे गीयर उकाब या फ़िरौन की मुर्गी के नाम से भी जाना जाता है। मिस्र के गिद्ध *(नियोफ्रोन पर्कनोप्टेरस)* का पंख मूल रूप से सफेद होता है, जिसका सिर गंजा और गर्दन पीली होती है। मिस्र का गिद्ध दूसरे गिद्धों द्वारा छोड़ी गई हड्डियों को तोड़ता है। इसकी उड़ान धीमी और आसान होती है, और इसकी आवाज़ कर्कश होती है। लगभग 24 इंच (61 सेंटीमीटर) की लंबाई वाला यह पवित्र भूमि में पाए जाने वाले सभी मांस खाने वाले पक्षियों में सबसे छोटा है। इसे अशुद्ध पक्षियों की सूची में शामिल किया जा सकता है (लैव्य 11:18; व्य.वि 14:17, "गीयर उकाब"; "मांसाहारी गिद्ध,"।

*देखें*गिद्ध (ऊपर)।

गिद्ध, नौसिकुआ

पवित्र भूमि में सबसे बड़े उड़ने वाले पक्षियों में से एक *(जिप्स फुलवस)*। एक पीढ़ी पहले तक, नौसिकुआ गिद्ध पवित्र भूमि में सबसे आम पक्षियों में से एक था। आज यह विलुप्त होने के कगार पर है। लोमड़ियों और सियारों के लिए रखे गए जहरीले चारे को खाने से कई गिद्ध मारे गए हैं। इसके अलावा, इसका प्रजनन सीमित है; मादा साल में केवल एक या दो अंडे देती है।

नौसिकुआ गिद्ध की लंबाई लगभग चार फ़ीट (121.9 सेंटीमीटर) होती है और पंखों के सिरे के बीच दस फ़ीट (3 मीटर) तक की दूरी होती है। इसकी चोंच बहुत मज़बूत होती है और इसके छोटे पंजे कुंद नाखूनों से सजे होते हैं। यह एक हल्के भूरे रंग का पक्षी है, जिसका सिर और गर्दन पीले रंग के होते हैं और लगभग नग्न होते हैं, और बहुत ही महीन पंखों से ढकी होती है।

नौसिकुआ गिद्ध मुख्य रूप से मरे हुए जानवरों का मांस खाता है, लेकिन टिड्डियों और छोटे कछुओं को भी खाता है। यह कई दिनों तक बिना खाए रह सकता है और इसका कोई बुरा असर नहीं होता, लेकिन जब यह अपना उपवास तोड़ता है, तो यह भरपूर मात्रा में खाता है। यह विशेष रूप से गलील के झील के क्षेत्र में पाया जाता है। बाइबिल में गिद्ध का अधिकांश उल्लेख संभवतः नौसिकुआ गिद्ध के लिए ही किया गया है।

*यह भी देखें*उकाब; गिद्द (ऊपर)।

जल मुर्गी (घुग्घू)

रेल परिवार का एक छोटा जल पक्षी। जल मुर्गी को अशुद्ध पक्षियों में सूचीबद्ध किया गया है (लैव्य 11:18; व्य.वि 14:16) और यह बाइबिल का वह पक्षी हो सकता है जिसे पहचानना सबसे कठिन है। कई विकल्प सुझाए गए हैं, जिनमें हंस, उल्लुओं में से एक, या दलदल मुर्गी शामिल हैं।अधिकांश विद्वान हंस को खारिज करते हैं, क्योंकि यह एक शाकाहारी पक्षी है और इसलिए इसे अशुद्ध नहीं माना जाना चाहिए। उल्लू एक संभावना बनी रहती है।

दलदली मुर्गी एक रेल पक्षी है, जिसकी कई प्रजातियाँ इस्राएल में निवास करती हैं। उन प्रजातियों में से एक बैंगनी गैलिन्यूल *(पोर्फिरियो पोर्फिरियो)* है। रेल पक्षी बहुत पतले पक्षी होते हैं जिनकी लंबाई 6 से 20 इंच (15 से 51 सेंटीमीटर) तक होती है। वे दलदल में रहते हैं, जहाँ वे कई तरह के जानवर और वनस्पति पदार्थ खाते हैं, इस प्रकार वे व्यवस्था के अशुद्ध जानवरों वाले सूची में शामिल होने के लिए उम्मीदवार बन जाते हैं।

*यह भी देखें*जानवर।

पक्षी

पक्षियों के लिए किंग्स जेम्स संस्करण का सामान्य अनुवाद। आधुनिक उपयोग में, यह शब्द उन घरेलू या जंगली पक्षियों के लिए प्रयुक्त होता है जिन्हें खाया जाता है। *देखें*पक्षी।

पगीएल

ओक्रान का पुत्र, आशेर के गोत्र से, जिसे मूसा द्वारा जंगल में लोगों की संख्या गिनने के लिए नियुक्त किया गया था। उसने उस समय अपने गोत्र के अगुवे के रूप में भी सेवा की (गिन 1:13; 2:27; 7:72, 77; 10:26)।

पटिया

देखें लेखन।

पड़ोसी

यह अवधारणा प्रतीत होती है कि पुराना नियम काल और उत्तरवर्ती यहूदी धर्म में केवल अपने इस्राएली साथी या वाचा के सदस्य तक सीमित थी, जिसे यीशु ने विस्तारित कर जीवन में मिलने वाले प्रत्येक व्यक्ति को शामिल किया।

पुराने नियम में

हालाँकि इसे कभी भी स्पष्ट रूप से सीमित नहीं किया गया है, पुराने नियम में "पड़ोसी" का प्रमुख अर्थ वाचा समुदाय के एक साथी सदस्य का है; अर्थात्, एक अन्य इस्राएली (देखें लैव्य 6:1–7; 19; व्य.वि. 15:2–3)। लैव्य 19:18 में, नए नियम में अक्सर उद्धृत एक अनुच्छेद में, इस्राएलियों को "अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करने" की आज्ञा दी गई है।" 19:34 में, यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि ऐसा प्रेम उस विदेशी (या "परदेशी") को भी दिखाया जाना चाहिए जो देश से गुजर रहा हो। यदि 'पड़ोसी' (पद 18) का तात्पर्य एक व्यापक अवधारणा, जैसे "मानव जाति" या "साथी मनुष्य" से होता, तो संभवतः पद 34 में आगे की शर्त को शामिल करने की आवश्यकता नहीं होती। "पड़ोसी" का मतलब शायद अपने निकटतम पड़ोसी, साथी इस्राएली से लिया गया था।

संविधान समुदाय के भीतर, पड़ोसी के प्रति प्रेम में कुछ जिम्मेदारियाँ शामिल थीं जो व्यवस्था में स्पष्ट रूप से निर्धारित थीं। पड़ोसी के साथ निष्पक्षता से व्यवहार किया जाना चाहिए (निर्ग 22:5–15; व्य.वि. 6:2–7; 19:9–18) और उसका (निर्ग 20:16) और उसकी वस्तुओं (निर्ग 20:17) का भी उतना ही सम्मान किया जाना चाहिए। वाचा समुदाय के भीतर ऐसे न्यायपूर्ण और दयालु रिश्तों को बढ़ावा देने के लिए, पड़ोसी को एक "भाई" के रूप में माना जाना चाहिए (लैव्य 25:25; व्य.वि. 22:1–4)। किसी ने अपने पड़ोसी के साथ जो किया, उसका प्रतिफल उसी रूप में दिया जाता था (लैव्य 24:19–23; व्य.वि.19:11–19)।

पड़ोसी के साथ व्यवहार को दिया जाने वाला गम्भीर महत्व तब समझ में आता है जब इसे परमेश्वर के साथ व्यक्ति के व्यापक सम्बन्ध के हिस्से के रूप में देखा जाता है और इसे ऐसा कुछ माना जाता है जो ईश्वरीय-मनुष्य सम्बन्ध को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकता है (लैव्य 6:1–7; 19; 25:17; व्य.वि. 24:10–13; भज 12)। इस्राएलियों को अपने पड़ोसियों के साथ उसी प्रेमपूर्ण तरीके से व्यवहार करना था जैसा कि परमेश्वर ने उनके साथ किया था (निर्ग 22:21; व्य.वि. 25:35–38)।

वाचा समुदाय में पड़ोसी सम्बन्धों के महत्व को इस तथ्य से भी प्रदर्शित किया गया है कि जब ऐसी ज़िम्मेदारियों की उपेक्षा की गई, तो इसके परिणाम स्वरूप समाज का पतन या राष्ट्रीय उथल-पुथल हुआ (व्य.वि. 28:15–68; होशे 4:1–3; आमो 2:6–7)। कि इस्राएलियों ने अक्सर पड़ोसी के प्रति प्रेम की उपेक्षा की, विशेष रूप से जरूरतमंद पड़ोसी की, यह बँधुआई के ईश्वरीय दण्ड का एक योगदानकारी कारण है (यिर्म 5:7–9; 7:1–15; 9:2–9; होशे 4:1–3; आम 2:6–7; 5:10–13; 8:4–6)। यह तथ्य कि पड़ोसी के प्रति उचित प्रेम भी आने वाले मसीही युग के लिए इस्राएल की आशा का हिस्सा था (यिर्म 31:34; जक 3:10) और यह पुराने नियम की वाचा के समुदाय में इसकी सामान्य उपेक्षा की ओर भी संकेत करता है।

प्राचीन यहूदी धर्म के उत्तरकाल में

बँधुआई के अनुभव से, इस्राएल ने पहचाना कि ईश्वरीय आशीष कुछ हद तक एक-दूसरे के प्रति न्याय और प्रेम पर निर्भर था (जक 8:14–17)। हालाँकि, "पड़ोसी" की पहचान पर बहस हो सकती है। कई कारक बताते हैं कि इस अवधि में "पड़ोसी" केवल साथी इस्राएली और धर्मांतरित (यहूदी धर्म में धर्मांतरित गैर-यहूदी) तक सीमित था। रब्बी सामग्री से प्राप्त प्रमाण सामरियों और उस भूमि में रहने वाले अन्यजातियों को 'पड़ोसी' माने जाने से बाहर रखते हैं, और इस प्रकार वे प्रेम के योग्य नहीं समझे जाते। कुमरान में यहूदी एस्सीन समुदाय के भीतर, 'पड़ोसी' जिसे सम्मान दिया जाना था और जिसके साथ न्यायपूर्ण व्यवहार करना था, केवल अपने समुदाय के सदस्यों तक सीमित था। अंत में, जब यीशु याद करते हैं, "तुमने सुना है कि कहा गया था, 'अपने पड़ोसी से प्रेम करो और अपने शत्रु से घृणा करो'" (मत्ती 5:43), तो वह केवल आंशिक रूप से पुराने नियम से उद्धृत कर रहे हैं (लैव्य 19:18—"तुम अपने पड़ोसी से प्रेम करो")। अंतिम वाक्यांश ("और अपने शत्रु से घृणा करो") बाहरी लोगों के प्रति समकालीन यहूदी भावना को दर्शाता है; अर्थात, परमेश्वर को "शत्रुओं" के प्रति प्रेम की अपेक्षा नहीं थी, बल्कि केवल साथी देशवासियों के प्रति थी।

नए नियम में

यीशु अपने यहूदी समकालीनों से काफी भिन्न थे क्योंकि उन्होंने प्रेम किए जाने वाले पड़ोसी पर सीमाओं को समाप्त कर दिया। अपने देशवासियों तक प्रेम को सीमित करने वालों के विपरीत, यीशु ने उस कर्तव्य को, जो पड़ोसी के लिए था, शत्रु तक भी बढ़ाने का समर्थन किया (मत्ती 5:43–48), और ऐसा करके, उन्होंने पड़ोसी और शत्रु के बीच के अन्तर को पूरी तरह से नष्ट कर दिया।

एक अन्य अवसर पर, एक शास्त्री ने यीशु से पूछा कि परमेश्वर द्वारा दी गई सबसे बड़ी आज्ञा क्या है (मर 12:28–31)। जवाब में यीशु ने व्य.वि. 6:5 का उल्लेख किया, जिसमें परमेश्वर की प्रकृति और मनुष्य के परमेश्वर से पूरे दय, आत्मा और मन से प्रेम करने के कर्तव्य के बारे में बताया गया है। महत्वपूर्ण बात यह है कि यीशु यहीं नहीं रुके, बल्कि इसके साथ उन्होंने दूसरी आज्ञा भी जोड़ दी कि "अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो" (लैव्य 19:18)। कुछ विद्वानों का सुझाव है कि परमेश्वर के प्रेम और पड़ोसी के प्रेम का यह नाटकीय और निकट सम्बन्ध यीशु से उत्पन्न हुआ।यदि यीशु पहले व्यक्ति थे जिन्होंने इन आज्ञाओं को एक साथ जोड़ा (देखें मत्ती 22:37; मर 12:29–31), यह इन दो दायित्वों के सम्बन्ध के बारे में हमारे प्रभु की अपनी समझ को प्रकट करता है; पड़ोसी के लिए उचित प्रेम परमेश्वर के प्रति प्रेम से उत्पन्न होता है, और इसके विपरीत, परमेश्वर के प्रति प्रेम पड़ोसी की आवश्यकताओं को प्रेम से पूरा करने से अविभाज्य है।

यीशु के समय में बहस इस बात पर नहीं थी कि पड़ोसी के साथ कैसे उचित व्यवहार किया जाए, बल्कि इस बात पर थी कि वास्तव में पड़ोसी कौन है। यीशु से यही सवाल व्यवस्था के एक विशेषज्ञ ने पूछा (लूका 10:29)। यीशु ने व्यवस्थापक की इस बात के लिए प्रशंसा की थी कि उसे अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिए क्या आवश्यक है, अर्थात परमेश्वर से प्रेम और पड़ोसी से प्रेम। लूका सुझाव देते है कि व्यवस्थापक ने "खुद को सही ठहराने" के लिए आगे का योग्यतापूर्ण प्रश्न पूछा, अर्थात, अपने साथी मनुष्य के प्रति सीमित प्रेम के अपने वास्तविक व्यवहार को सही ठहराने के लिए। यीशु ने सीधे जवाब देने के बजाय एक दृष्टांत के माध्यम से जवाब देने का विकल्प चुना, इस मामले में, अच्छे सामरी का परिचित दृष्टांत को यीशु ने चुना (पद 30–35)।

व्यवस्थापक की दृष्टि को उसकी दुखद तंगदृष्टि से खोलने के लिए, यीशु ने एक रोज़मर्रा की कहानी सुनाई, जिसमें एक व्यक्ति यरूशलेम से यरीहो जाने वाली खतरनाक सड़क पर यात्रा कर रहा था, जो विशेष रूप से लुटेरों से भरी थी। यात्री को लूटा गया, कपड़े उतार दिए गए, पीटा गया और अधमरा छोड़ दिया गया। इस बिंदु तक, व्यवस्थापक ने शायद सोचा होगा कि यीशु यह समझा रहे थे कि 'पड़ोसी' कौन है—सहायता की आवश्यकता में एक साथी यहूदी। हालाँकि, यीशु आगे बढ़कर दो पात्रों को पेश करते हैं, एक याजक और एक लेवी, जो एक शैक्षणिक चर्चा में यह अच्छी तरह से तर्क कर सकते थे कि वह पड़ोसी कौन है जिससे परमेश्वर प्रेम करने का आदेश देता है। व्यवस्थापक ने निस्संदेह अपेक्षा की होगी कि व्यवस्था के ऐसे विशेषज्ञ पीड़ित के प्रति सही ढंग से कार्य करेंगे। इसके विपरीत, याजक और लेवी, जब उन्होंने ज़रूरतमंद व्यक्ति को देखा, तो उन्होंने 'दूसरी ओर से गुजरने' का प्रतिउत्तर दिया। यह तय नहीं कर पाने पर कि पीड़ित मरा हुआ था या जीवित, और संभवतः अशुद्धता का जोखिम नहीं उठाना चाहते थे, व्यवस्था के विशेषज्ञ आगे बढ़ गए, इस प्रकार व्यवस्थापक द्वारा पहचानी गई सबसे बड़ी आज्ञा का उल्लंघन किया (10:25–28)।

तभी एक सामरी आता है—एक ऐसा व्यक्ति जिसे यहूदियों द्वारा विशेष रूप से तिरस्कृत किया जाता था। यहूदी धार्मिक अधिकारियों द्वारा सामरी लोगों को विधर्मी माना जाता था, और रब्बियों के अनुसार, उन्हें 'पड़ोसी' के रूप में गिना नहीं जाता था और इसलिए प्रेम के योग्य नहीं माना जाता था। वास्तव में, पिछली शताब्दियों में यहूदी शासकों द्वारा कई सामरी लोगों का वध किया गया था, और दोनों लोगों के बीच स्पष्ट रूप से द्वेष मौजूद था (देखें यूह 4:9)। जबकि दृष्टांत को सुनने वाले व्यवस्थापक ने पुजारी और लेवी से पीड़ित के प्रति न्यायपूर्ण व्यवहार की अपेक्षा की होगी, उसे आश्चर्य हुआ होगा कि एक घृणास्पद सामरी करुणा दिखाएगा और इस तरह सबसे बड़ी आज्ञा को पूरा करेगा। यीशु ने जानबूझकर सामरी की करुणा की सीमा को स्पष्ट किया (घावों पर पट्टी बांधने में तत्काल देखभाल, सराय में ले जाना, वहाँ पीड़ित की देखभाल करना और जब वह दूर रहता है तो दूसरों द्वारा देखभाल के लिए भुगतान करने में विस्तारित देखभाल, लूका 10:34–35) इस हद तक कि व्यवस्थापक को सामरी के प्यार की सच्चाई पर कोई संदेह नहीं होगा। कहानी की विडंबना यह है कि जिसे यहूदियों ने "पड़ोसी" कहलाने के योग्य नहीं समझा, वही वास्तव में पीड़ित का "पड़ोसी" बन गया (पद 36–37)।

यह दृष्टांत, मत्ती 5:43–48 में दिए गए कथन की तरह, यीशु के "पड़ोसी" की अपनी समझ और "पड़ोसी से प्रेम" की मांगों को प्रकट करते है। यीशु इस बात पर कोई सीमा नहीं लगाते कि किसे परमेश्वर द्वारा प्रेम करने के लिए पड़ोसी के रूप में योग्य ठहराया गया है।

पड़ोसी के प्रति प्रेम और परमेश्वर के प्रति प्रेम के सम्बन्ध में यीशु की शिक्षाओं की शक्ति और प्रभावशीलता प्रारम्भिक कलीसिया के भीतर इसी तरह के जोर द्वारा प्रदर्शित होती है। पौलुस ने दो अवसरों पर पड़ोसी के प्रति प्रेम को संपूर्ण व्यवस्था की पूर्ति कहा (रोम 13:8–10; गला 5:14), जबकि याकूब ने उसी आज्ञा को "राज व्यवस्था" कहा (याकू 2:8)।

पतमुस

पतमुस

एजियन सागर में एक छोटा द्वीप है, जो एशिया के उपद्वीप के तट से मीलेतुस नगर के लगभग 35 मील (56.3 किलोमीटर) पश्चिम में स्थित है। पतमुस लगभग दस मील (16.1 किलोमीटर) लम्बा है और इसके उत्तरी छोर पर छह मील (9.7 किलोमीटर) चौड़ा है, जिसमें चट्टानी ज्वालामुखीय पहाड़ियाँ शामिल हैं।

प्रकाशितवाक्य 1:9 में यूहन्ना बताते हैं कि वे पतमुस द्वीप पर थे "परमेश्वर के वचन, और यीशु की गवाही के कारण"। वे यह भी संकेत देते हैं कि वे उनके "क्लेशों" में सहभागी हैं। रोमी इतिहासकार टेसिटस हमें बताते हैं कि रोमियों ने पहली शताब्दी के दौरान कुछ एजियन द्वीपों का उपयोग निर्वासन और बँधुआई के स्थानों के रूप में किया (*एनल्स* 3.68; 4.30; 15.71)। इस प्रकार लेखक की भाषा और टेसिटस के प्रमाण, यूहन्ना के निर्वासन के बारे में दूसरी और तीसरी शताब्दी की मसीही परम्परओं के साथ मिलकर, इस सम्भावना का समर्थन करते हैं कि पतमुस बँधुआई या राजनीतिक बन्दीगृह का स्थान था।

एक समय जब एशियाई कलीसिया उत्पीड़न का सामना कर रहे थे, यूहन्ना ने इस द्वीप से उन्हें लिखा। उन्होंने प्रोत्साहन और चेतावनी के पत्रों के माध्यम से सात कलीसियाओं में से प्रत्येक को सम्बोधित किया। पत्रों की श्रृंखला के बाद लेखक द्वारा भेजे गए दिव्य दर्शन का वर्णन है, जो "शीघ्र पूरा होना अवश्य है" (प्रका 22:6)। पतमुस, तब, वह स्थान था जहाँ से यह नया नियम लेखन आरंभ हुआ।

*यह भी देखें*प्रकाशितवाक्य की पुस्तक।

पतरस की दूसरी पत्री

पतरस द्वारा लिखा गया दूसरी सामान्य पत्री।

पूर्वावलोकन

- लेखक
- तिथि, उत्पत्ति, गंतव्य
- पृष्ठभूमि
- उद्देश्य और धर्मशास्त्रीय शिक्षा
- विषयवस्तु

लेखक

लेखक को 1:1 में स्पष्ट रूप से शमौन पतरस के रूप में पहचाना गया है, जो यीशु द्वारा चुने गए 12 प्रेरितों में से एक हैं। हालाँकि, दो बातों पर ध्यान देना आवश्यक हैं। पहला, इस पत्री की शैली पहला पतरस से काफी भिन्न है। दूसरा, क्योंकि दूसरा पतरस स्पष्ट रूप से बाद की रचना है (नीचे तिथि देखें) और यहूदा की पत्री का सारांश शामिल करता है, इसलिए यह संभव है कि विश्वसनीय सहकर्मी (जैसे, यूहन्ना मरकुस) ने पतरस की अन्तिम चिन्ताओं को एकत्र किया हो, पतरस की मृत्यु के बाद यहूदा के पत्र का सारांश शामिल किया हो। इस प्रकार, दुसरे पतरस की पत्री पतरस के अन्तिम शब्द हैं, जो प्रेरितों के बाद के युग में कलीसिया का मार्गदर्शन करती है। यह भी संभव है कि पतरस इस कार्य के पीछे के वास्तविक लेखक हों, परन्तु लेखक नहीं, जैसा कि पहली पत्री के "लेखक" खण्ड में सुझाव दिया गया था। इस प्रकार, यह पत्री सिलास के बजाय किसी अन्य व्यक्ति द्वारा तैयार की गई हो सकती है, (जैसा कि पतरस की पहली पत्री के लिए किया गया था) और इसलिए दोनों पत्रियों के बीच शैली में अन्तर को समझा जा सकता है। इसके अलावा, वास्तविक लिखित दस्तावेज पतरस की मृत्यु के बाद प्रकाशित किया गया हो सकता है।

तिथि, उत्पत्ति, गंतव्य

परम्परा हमें बताती है कि पतरस लगभग 64 ईस्वी में रोम में शहीद हुए थे। यदि ऐसा है, तो यह रचना संभवतः 70 ईस्वी से पहले रोम में लिखी गई थी (इससे पहले कि उनकी अंतिम शिक्षाओं को भुला दिया जाता) और 60 ईस्वी के बाद (जब पतरस ने पौलुस की पत्रियों के बारे में जाना होगा)। इसके अलावा, यह यहूदा की पत्री के बाद लिखी गई थी, क्योंकि 2 पतरस 2, में यहूदा की पत्री का संक्षिप्त रूप शामिल है। रोमी मूल स्थान भी 96 ई. में 2 पतरस के बारे में 1 क्लेमेंट के स्पष्ट ज्ञान का प्रमाण है, जो पत्र का सबसे पहला उपयोग था। यदि 3:1 में वर्णित कलीसियाएँ वही हैं जो पहले पतरस में उल्लिखित हैं, तो यह पत्री उत्तर-पूर्वी एशिया के उपद्वीप के लिए लिखी गई थी। इन कलीसियाओं के समूह में वे भी शामिल हो सकती हैं जिन्हें पौलुस ने पत्रियाँ लिखीं (3:15)। परन्तु यह भी संभव है कि यह पत्री सभी कलीसियाओं के लिए हो, जिन्हें पतरस सामान्य संदेश भेज रहा था।

पृष्ठभूमि

कई आकर्षक और स्वच्छंद रीति-रिवाजों वाले पंथों के संदर्भ में, कलीसिया हमेशा उन शिक्षकों से खतरे में थी जो अनैतिकता को बढ़ावा दे रहे थे। कुरिन्थुस की कलीसिया को भी निश्चित रूप से इसी प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ा, और रोमियों 6 यह संकेत देता है कि पौलुस रोम तक पहुँची उनकी शिक्षा के इसी प्रकार के दुरुपयोग से अवगत थे। पौलुस का यह घोषणा करना कि मसीही लोग व्यवस्था से मुक्त हैं (देखें गल 3–5) हमेशा इस खतरे को लेकर आता था कि लोग आत्मा के अधीन होने के बजाय अपने पतित स्वभाव की इच्छाओं के अधीन हो जाएँगे। इस प्रक्रिया में वे पौलुस की इस चेतावनी को नजरअंदाज कर देंगे कि जो ऐसे कार्य करते हैं वे परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं होंगे। प्रारंभिक कलीसिया में यह प्रवृत्ति दुसरे पतरस के पीछे छिपे कारणों में से प्रतीत होती है।

उद्देश्य और धर्मशास्त्रीय शिक्षा

जैसा कि 1:12–15 स्पष्ट करता है, यह पत्र एक विधान है, झूठे शिक्षकों के कारण उत्पन्न विभाजनों के सामने सत्य की अन्तिम याद दिलाने के रूप में लिखा गया है। यह कलीसिया को स्थिर करने का अन्तिम प्रयास है।

तीन मुख्य धर्मशास्त्रीय विषय विशेष रूप से प्रकट होते हैं: (1) मसीही सद्गुण, विश्वासयोग्यता और उस प्रेरितीय परंपरा के प्रति आह्वान जिस पर कलीसिया स्थापित की गई थी; (2) इस आह्वान का आधार यीशु मसीह की महानता और न्याय में उनके पुनरागमन पर है, जो जीवन के अन्य सभी लक्ष्यों को तुच्छ बना देता है; और (3) उन लोगों की अन्तकालीन निंदा, जिन्होंने संसार के साथ समझौता किया और इस कारण मसीही नैतिकता से नीचे जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

विषयवस्तु

अभिवादन (1:1–2)

यह अभिवादन "प्रेरित" शीर्षक का उपयोग करके पतरस और उसकी शिक्षा के अधिकार को बल देता है, और "सेवक" शब्द को सम्मिलित कर तथा पाठकों के साथ "समान मूल्य के विश्वास" का उल्लेख करके उनके साथ एकता को प्रकट करता है।

पतरस की दूसरी पत्री

सद्गुण की ओर बुलाहट (1:3–21)

परमेश्वर ने पहले ही मसीहियों को अपने पास बुलाने के लिए कार्य किया है। उन्होंने, अपनी संप्रभु अनुग्रह द्वारा, उन्हें वह सब कुछ दिया है जो वास्तव में धर्मी जीवन जीने के लिए आवश्यक है। साथ ही, उन्होंने उनके सामने महान और अद्भुत प्रतिज्ञाएँ रखी हैं। मसीहियों को संसार के नैतिक दलदल में फिर से फंसने नहीं देना चाहिए, क्योंकि उन्हें बचाने का परमेश्वर का उद्देश्य यही था कि वे इस जाल से बच सकें। इसके बजाय, उन्हें मसीह के समान बनना चाहिए ("ईश्वरीय स्वभाव में सहभागी बनना") और इसलिए उन्हें मसीही गुणों में बढ़ना चाहिए। यदि वे इस बढ़ोतरी में असफल होते हैं, तो वे परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को खो देते हैं, परन्तु आगे बढ़ने की उत्सुकता उनके चुनाव और स्वर्ग में उनके भविष्य की पुष्टि करेगी (1:3–11)।

चूँकि पतरस की मृत्यु निकट थी, जैसा कि यीशु ने भविष्यद्वानी की थी (पुष्टि करें यूह 21:18–19), वे अपने पाठकों को अन्तिम प्रोत्साहन देना चाहते थे। पतरस का यह प्रोत्साहन दो कारणों से महत्वपूर्ण था। पहला, वे वास्तव में मसीह की महिमा के प्रत्यक्षदर्शी थे (अर्थात, रूपान्तरण, जो पतरस को गहराई से प्रभावित करने वाला एक अनुभव था, परन्तु यहाँ इसका उल्लेख इसलिए किया गया है क्योंकि इसने यीशु की महिमा, सामार्थ्य, और अधिकार को प्रकट किया और पुराना नियम और नया नियम को साथ जोड़ता है)। झूठे शिक्षकों के विपरीत, उनकी परम्परा परमेश्वर के वास्तविक कार्यों पर आधारित है, न कि मात्र अटकलों पर। दूसरा, उनका अनुभव पुराने नियम की भविष्यद्वानी की पुष्टि करता है। पतरस और उनके अनुयायियों की प्रेरितीय परम्परा की तरह, पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता भी पवित्र आत्मा से प्रेरित थे। इस प्रकार, आत्मा ही सच्चा अर्थ प्रदान करता है, और झूठे शिक्षकों की व्यक्तिगत व्याख्याएँ इसलिए गलत हैं (2 पत 1:12–21)।

झूठे शिक्षकों की निन्दा (2:1–22)

मसीहियों को सद्गुण में दृढ़ रहने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है क्योंकि कलीसिया में हमेशा से झूठे शिक्षक रहे हैं जो अपने आचरण को सही ठहराने के लिए पुराने नियम के शास्त्रों को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत करते हैं। यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि ये शिक्षक कौन थे, परन्तु उनके कुछ कार्य स्पष्ट हैं। पहला, वे अपने नैतिकता में स्वच्छंद थे, संभवतः पौलुस की व्यवस्था से स्वतंत्रता की शिक्षा को अपने कार्यों का समर्थन करने के लिए तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत करते थे (पुष्टि करें 3:15; 1 कुरि 6:12–20 में कुरिन्थुस की इसी प्रकार की समस्या को दर्शाया गया है)। दूसरा, वे अपने प्रति वफादार समूह बना रहे थे, इन लोगों का शोषण कर रहे थे और उन्हें पाप में ले जा रहे थे (पुष्टि करें 1 कुरि 1–3 जहाँ इसी प्रकार की विभाजनकारी गतिविधियों का उल्लेख है)। तीसरा, वे स्वर्गदूतों और दुष्टात्माओं की शक्तियों के बारे में शिक्षा दे रहे थे, जिनमें से कुछ को वे श्राप दे रहे थे, जो अधिकार के प्रति उनके सामान्य अनादर को प्रकट करता है (2 पत 2:10; पुष्टि करें कुलु 2:8)। चौथा, जबकि वे अंततः संप्रदायवादी थे, वे अभी भी कलीसिया के साथ प्रभु भोज मनाने में सम्मिलित हो रहे थे (जो उस समय अभी भी सामान्य भोजन था, जैसा कि यह और शताब्दी तक होता रहेगा) और इस प्रकार सम्पूर्ण उत्सव को अपवित्र कर रहे थे (2 पत 2:13)।

पतरस की सबसे बड़ी चिंता यह है कि ये लोग संप्रदायवादी हैं। ("विनाशकारी विधर्म" कलीसिया से अलग हुए समूहों को संदर्भित करता है, न कि सिद्धांतात्मक भिन्नताओं को, जिसका अर्थ "विधर्म" सदियों बाद लिया गया।) इन शिक्षकों ने अपने अनैतिक व्यवहार से चिह्नित समूह बनाए। उन्होंने मसीह के अधिकार को अस्वीकार किया, हालाँकि मसीह ने एक बार उन्हें पाप से छुड़ाया था। उन्होंने लोभ और अनैतिकता के खिलाफ मसीह की स्पष्ट शिक्षा को अस्वीकार कर दिया और दूसरों को अपने साथ बहका लिया, जिससे पूरे मसीही विश्वास को संसार के सामने बदनाम किया। उनके कार्यों का मुख्य उद्देश्य लोभ था, और उनका पूर्वनिर्धारित परिणाम न्याय था, हालाँकि यह उन लोगों के लिए स्पष्ट नहीं हो सकता जो शास्त्रों से अपरिचित हैं।

यह न्याय निश्चित है, जैसा कि पुराना नियम अनैतिक व्यक्तियों के न्याय के उदाहरणों से (धार्मिकों के उद्धार के साथ) स्पष्ट होता हैं: उदाहरण के लिए, स्वर्गदूतों का न्याय (उत 6:1–4), नूह के समय के लोगों का न्याय (पद 5–22), और सदोम का न्याय (अध्याय 18–19)। प्रत्येक मामले में, परमेश्वर ने कुछ धार्मिक व्यक्तियों को बचाया, भले ही उन्होंने दुष्ट बहुमत का कठोरता से न्याय किया; इसने पाठकों को नूह और लूत की तरह धार्मिक बनने के लिए प्रोत्साहित किया। इसके अलावा, पाठक अपनी कलीसिया में हो रही अनैतिकता के कारण अपनी पीड़ा में लूत के साथ पहचान कर सकते हैं (2 पत 2:4–10; पुष्टि करें यहू 1:6–7)।

जैसे पुराने नियम में न्याय किए गए लोग, वैसे ही ये झूठे शिक्षक भी घमण्डी और अज्ञानी थे, उन आत्मिक शक्तियों को श्राप देते थे जिन्हें वे वास्तव में नहीं समझते थे (शायद दुष्टात्माएँ, क्योंकि पतरस यहूदा का अनुसरण कर रहे थे, जिसने मूसा के स्वर्गारोहण की परम्परा से प्रेरणा ली थी)। यहाँ तक कि स्वर्गदूत, जो इन शिक्षकों से कहीं अधिक ज्ञान रखते हैं और अधिक शक्तिशाली हैं, भी इतने अनादरपूर्ण नहीं होते। यहाँ तक कि शैतान के विषय में भी पवित्रशास्त्र के अनुसार आदर के साथ बात की जानी चाहिए। ये शिक्षक न केवल घमण्डी थे बल्कि अनैतिक और लालची भी थे, यहाँ तक कि प्रभु की मेज पर भी ("जब वे तुम्हारे साथ भोज करते हैं तो अपनी भोग-विलास में आनंद मनाते हैं," 2 पत 2:13)। वे स्वतंत्रता सिखाने का दावा करते थे परन्तु स्वयं लालसा में फंसे हुए थे, इसलिए उनके वचन खोखले थे। उनकी शिक्षा प्रभावशाली प्रतीत होती थी, परन्तु यह सब ध्वनि और हवा थी। क्योंकि वे मसीह में पाप से स्वतंत्रता का अनुभव करने के बाद दुष्टता की ओर लौट गए

थे, वे पहले से भी बदतर स्थिति में हो गए थे जैसे कि उन्होंने कभी सुसमाचार नहीं सुना था। वे कुत्तों के समान थे (पुष्टि करें नीति 26:11) या सूअरों के समान थे (2:11–22; पुष्टि करें यहू 1:8–13)।

आने वाले न्याय की चेतावनी (3:1–16)

पुराना नियम और यीशु स्वयं आने वाले न्याय के बारे में बोलते हैं। झूठे शिक्षक इस विचार का उपहास कर सकते हैं, परन्तु नूह की कहानी दिखाती है कि परमेश्वर अंततः न्याय करते हैं। परमेश्वर ने उत्पत्ति में जल के द्वारा संसार का न्याय किया (वही जल जिससे उन्होंने एक बार भूमि को अलग किया था उत 1); यीशु फिर से न्याय करेंगे, परन्तु इस बार अग्नि से (2 पत 3:1–7)।

न्याय अभी तक नहीं हुआ है, क्योंकि परमेश्वर अत्यंत धैर्यवान हैं; उनके लिए समय का उनके लिए वही अर्थ नहीं है जो मनुष्यों के लिए है। झूठे शिक्षकों का उपहास केवल उनकी परमेश्वर के प्रति अज्ञानता को प्रकट करता है। और वे यह भी नहीं जानते कि परमेश्वर के विलंब के पीछे का उद्देश्य क्या है—यानी, परमेश्वर लोगों को क्षमा करना चाहते हैं, न कि उन्हें दोषी ठहराना। उन्हें लोगों को नरक में भेजने में कोई आनन्द नहीं मिलता, बल्कि वह चाहते हैं कि हर कोई उद्धार पाए; हालाँकि, हर कोई परमेश्वर के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करेगा, और अंततः उनका न्याय आएगा और सारी सृष्टि जलकर नष्ट हो जाएगी। जो कुछ भी अब दिखाई दे रहा है वह अस्थायी है (3:8–10)।

इसलिए, मसीहों को झूठे शिक्षकों की तरह इस अस्थायी, नाशवान दुनिया की इच्छाओं में लिप्त होने के बजाय, पवित्र जीवन जीना चाहिए, उस नई और स्थायी दुनिया की तैयारी करनी चाहिए जिसका वादा परमेश्वर ने उनसे किया है (3:11–16; पुष्टि करें यहू 1:20–21)।

समापन (3:17–18)

अन्त में, पतरस मसीहीयों को झूठी शिक्षा से सावधान रहने की चेतावनी देते हैं। झूठे शिक्षकों के जीवन की नकल करने के बजाय, उन्हें यीशु के जीवन का अनुकरण करना चाहिए। पत्री का समापन मसीह के लिए स्तुति-गान से होता है जो मसीह की महिमा का बखान करता है।

यह भी देखें प्रेरित पतरस।

पतरस की पहली पत्री

पतरस द्वारा लिखी गयी दो सामान्य पत्रियों में से पहली।

पूर्वावलोकन

- लेखक
- गंतव्य स्थान, उत्पत्ति, समय
- पृष्ठभूमि
- उद्देश्य और धर्मवैज्ञानिक शिक्षा
- विषय-वस्तु

लेखक

लेखक कहतें है कि वह प्रेरित पतरस (1 पत 1:1) है, जो मसीह के दुःखों के गवाह (5:1)—अर्थात यीशु द्वारा आधिकारिक प्रवक्ता के रूप में चुने गए (मर 3:14–19) मूल प्रेरितों में से एक थे। शमौन और कैफा के नाम से भी जाने जाने वाले, पतरस ने संभवतः यीशु के दुख के अंतिम घड़ी को अन्य किसी भी प्रेरित की तुलना में अधिक गहराई से देखा और महसूस किया (14:54) क्योंकि उन्होंने यीशु का तीन बार इंकार किया था (वचन 66–72)। 1 पतरस में यीशु के दुःखों का उल्लेख कम से कम चार बार किया गया है (1 पत 1:11; 2:23; 4:1; 5:1)।

पतरस यहूदियों के लिए प्रेरित के रूप में जाने जाते थे, जैसे पौलुस अन्यजातियों लिए के प्रेरित थे (गला 2:7)। चूंकि पतरस एक यात्रा करने वाले मिशनरी थे (1 कुरि 1:12; 9:5), वह वास्तव में आसिया माइनर की उन कलीसियाओं में गए होंगे, जिन्हें यह पत्री भेजी गयी थी।

यह कि पतरस यीशु की सांसारिक सेवकाई के दौरान उनके साथ थे, 1 पतरस में यीशु की शिक्षा के मजबूत प्रभाव को समझने में मदद कर सकता है। याकूब को छोड़कर, 1 पतरस संभवतः किसी भी अन्य नये नियम की पत्रियों की तुलना में यीशु के शब्दों को अधिक प्रतिध्वनित करता है। नीचे दी गयी सारणी पतरस के वचनों और सुसमाचार में यीशु के वचनों के बीच समानताएँ प्रस्तुत करता है:

कुछ विद्वानों का मानना है कि इस पत्री की यूनानी भाषा इतनी अच्छी है कि इसे किसी पूर्व मछुआरे द्वारा नहीं लिखा जा सकता जिसकी मूल भाषा अरामी थी; इसके सिद्धांत पौलुस के सिद्धांत से इतने मिलते-जुलते है कि इसे किसी ऐसे प्रेरित द्वारा नहीं लिखा जा सकता जिसका पद पौलुस से भिन्न था; और उनका यह भी मानना है कि यह पत्री पतरस की मृत्यु के बाद किसी अन्य ने लिखा और इसे प्रेरितीय महत्व देने के लिए उनके नाम का उपयोग किया।

अन्य विद्वानों का कहना है कि यदि लेखक किसी ऐसी पत्री को अधिकार देना चाहता, जिसकी शिक्षा पौलुस से मिलती-जुलती हों, तो वह पतरस का नहीं, बल्कि पौलुस का नाम इस्तेमाल करता। उनका यह भी तर्क है कि अधिकांश गलीली लोग बचपन से ही अरामी के साथ-साथ यूनानी भी सीखते थे। साथ ही, पतरस और पौलुस के शिक्षाओं में कोई मौलिक अंतर होने का प्रमाण नहीं है। जब पौलुस ने पतरस को फटकार लगाई (गला 2:11–14), तो यह उनके आचरण में अस्थायी चूक के कारण था, न कि किसी मूलभूत शिक्षा के

मतभेद के कारण। इसके अलावा, 1 पतरस में पौलुस की कुछ मुख्य शिक्षाएँ (जैसे कि धर्मी ठहराए जाने की शिक्षा) नहीं पाई जातीं, और जो शिक्षाएँ समान हैं, वे प्रारंभिक कलीसिया की साझा धरोहर थीं। इसलिए यह निष्कर्ष निकालना उचित होगा कि इस पत्र के लेखक स्वयं प्रेरित पतरस ही थे। हालांकि, यह भी स्पष्ट है कि सीलास (जिन्हें सिलवानुस के नाम से भी जाना जाता है) ने पतरस की इस पत्री को लिखने में मदद की थी (1 पत 5:12), इसका मतलब हो सकता है कि (1) उन्होंने पतरस के लिए लिपिकार (सचिव) का कार्य किया, (2) उन्होंने पतरस की पत्री को (अरामी से यूनानी में) अनुवाद किया जैसा कि पतरस ने बताया, या (3) उन्होंने पतरस के विचारों पर आधारित एक पत्र तैयार किया।

गंतव्य स्थान, उत्पत्ति, समय

जिन लोगों को पतरस की पहली पत्री लिखी गयी थी, वे पुन्तुस, गलातिया, कप्पदूकिया, आसिया, और बितूनिया में रहते थे। ये रोमी प्रांत आसिया माइनर के दक्षिणी भाग को छोड़कर बाकी सभी क्षेत्रों में फैले हुए थे, जो आधुनिक तुर्की का बड़ा हिस्सा है।

यह संभव है कि मसीहत उन यहूदी तीर्थयात्रियों द्वारा वापस लाया गया हो जो पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में मन फिराए थे (विचार विमर्श करें प्रेरि 2:9) । लेकिन अधिक संभावना यह है कि इन कलीसियाओं में से कुछ पौलुस ने अपनी पहली और दूसरी मिशन यात्रा के दौरान स्थापित की थीं, और कुछ अन्य अज्ञात प्रचारकों ने। पतरस स्वयं को स्पष्ट रूप से उनके साथ शामिल नहीं करते जिन्होंने सुसमाचार उनको सुनाया (1 पत 1:12)।

पाठक मसीही यहूदी थे या मन फिराए गैर-यहूदी जाति के लोग थे यह बात अज्ञात है। पहले पतरस 1:1 में लिखा है: "जो यीशु मसीह का प्रेरित है, उन परदेशियों के नाम, जो पुन्तुस, गलातिया, कप्पदूकिया, आसिया, और बितूनिया में तितर-बितर होकर रहते हैं।" पाठक किसी न किसी प्रकार से परदेशी है उसकी पुष्टि 1:17 और 2:11 में की गई है। ये वचन यहूदी लोगों की पलिश्तीयों के नगर के बाहर की वास्तविक निर्वासन को, या संसार में सभी विश्वासियों की आत्मिक निर्वासन को संदर्भित कर सकते हैं, क्योंकि उनका वास्तिविक घर स्वर्ग में है। कोई भी इस बात से इनकार नहीं करता कि वहाँ एक शाब्दिक यहूदी प्रवास (डायस्पोरा) था (और है)। पतरस ने कलीसिया को वास्तविक इस्राइल के रूप में देखा (विचार विमर्श करें रोम 2:29; गला 6:16; फिलि 3:3), और संभवतः उन्होंने इस भाषा को इस्राइल देश से कलीसिया पर स्थानांतरित कर दिया। पतरस द्वारा 1 पतरस 2:11 में उपयोग किया गया वाक्यांश लगभग इब्रानियों 11:13 में उपयोग किए गए वाक्यांश के समान है (विचार विमर्श करें उत 23:4; भज 39:12)।

1 पतरस 1:1 में प्रवास को सिर्फ यहूदियों के बजाय मसीहियों (यहूदी और गैर-यहूदी) के रूप में समझने के विरुद्ध, यह तर्क किया जा सकता है कि पतरस विशेष रूप से यहूदियों के लिए प्रेरित थे (गला 2:7) और 1 पतरस में इतना अधिक पुराने नियम का उपयोग यहूदी पाठकों की आवश्यकता को दर्शाता है। लेकिन इस बात के प्रमाण हैं कि पतरस ने अपनी सेवकाई को सिर्फ यहूदियों तक सीमित नहीं रखा (1 कुरि 1:12; गला 2:12), और यदि पाठक यहूदी नहीं भी थे, तब भी पुराने नियम का उपयोग आश्चर्यजनक नहीं है, क्योंकि बहुत से गैर-यहूदी परमेश्वर भय मानने वाले (जैसे कि कुरनेलियुस, प्रेरि 10:2) पुराने नियम से परिचित थे।

पाठकों का यहूदी होना या मुख्यतः गैर-यहूदी होना कई वचनों द्वारा निर्धारित किया जाता है, जो पाठकों की गैर-यहूदी पृष्ठभूमि को दर्शाते हैं। पतरस 1 पतरस 2:10 में कहते हैं कि उनके पाठक एक समय "कुछ भी नहीं थे," जो होश 2:23 का संदर्भ है (विचार विमर्श करें रोम 9:25) । फिर 1 पतरस 4:3 में पतरस उनके अतीत का वर्णन करते हैं, जिसमें "लुचपन की बुरी अभिलाषाओं, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा, पियक्कड़पन, और घृणित मूर्तिपूजा"(एनएलटी) शामिल हैं । यह अविश्वासी यहूदियों का वर्णन नहीं करता है, जिनकी समस्या गहन अनैतिकता नहीं बल्कि पाखंड और कानूनीवाद थी। इसलिए, इस पत्री के प्राप्तकर्ताओं में आसिया माइनर के कई गैर-यहूदी मसीही शामिल रहे होंगे, जो दुनिया में परदेशी और अजनबी के रूप में वर्णित हैं।

अधिकांश विद्वानों का मानना है कि पतरस की पहली पत्री रोम से लिखी गयी थी। इसका संकेत 5:13 में पाया जाता है: "जो बाबेल में तुम्हारे समान चुने हुए लोग हैं, वह तुम्हें नमस्कार कहते हैं" (एनआईवी)। बाबेल (जो एक बड़े, शक्तिशाली, बुरे शहर का प्रतीक बन गया था) को प्रारंभिक मसीह साहित्य में रोम के लिए एक कोड नाम के रूप में इस्तेमाल किया गया (उदाहरण के लिए, प्रका 14:8; 16:19; 17:5; 18:2, 10, 21; पुष्टि करें सिबिलीन 5:143, 159)।

1 पतरस की तिथि शायद 64 ईस्वी या 65 ईस्वी है (अगला अनुभाग देखें)।

पृष्ठभूमि

अन्य नए नियम के लेखन कभी-कभी मसीही पीड़ा का उल्लेख करते हैं, लेकिन 1 पतरस इस विषय पर पूरी तरह से केंद्रित है। जब मसीहियों को प्रताड़ित किया जाता है, तो उन्हें कैसे व्यवहार करना चाहिए, यह अक्सर चर्चा का विषय है (1 पत 1:3–7; 2:12, 20–23; 3:13–17; 4:12–19; 5:9–10)। आधिकारिक राज्य के सताव की स्पष्ट रूप से पुष्टि नहीं की जा सकती है; दुर्व्यवहार सभी मसीहियों के लिए हर जगह आम बात है (5:9)। क्रूर स्वामी कभी-कभी अपने मसीही सेवकों का सताव कर सकते हैं (2:18–20); मसीही पत्नियों को कठोर और अविश्वासी पतियों को सहना पड़ सकता है (3:1–6); और सामान्य रूप से, लोग मसीहियों को गलत

काम करने वालों (2:12; 3:9, 16; 4:15–16) के रूप में निंदा करने के लिए तैयार रहते हैं।

यद्यपि कोई आधिकारिक राज्य के सताव स्पष्ट रूप से दृष्टिगत नहीं है, पत्री यह संकेत देती है कि भविष्य में कुछ और भी बुरा हो सकता है (4:12–19) । ऐसा अभाव है कि पतरस को यह आभास था कि वर्तमान में विश्वासियों और उनके समाज के बीच का तनाव और भी अधिक गंभीर रूप ले सकता है।

प्रारंभिक कलीसिया की परंपरा कहती है कि पतरस को रोम में नीरो के सताव के दौरान क्रूस पर चढ़ाया गया था, और इसमें संदेह करने का कोई विशेष कारण नहीं है। इसके अतिरिक्त, चूंकि 1 पतरस रोम से लिखा गया था और 4:12 और 17 एक आसन्न संकट का संकेत देते हैं, जो 65 ईस्वी में रोम के मसीहियों पर आया था, हम यह मान सकते हैं कि यह पत्री उसी समय लिखी गयी थी जब नीरो ने रोम में मसीहियों पर सताव करना शुरू किया था। इतिहासकार टासिटस के अनुसार, नीरो ने रोम को जलाने का आरोप मसीहियों पर लगाया ताकि यह अफवाह दबाई जा सके कि उसने खुद ऐसा किया था (ताकि वह एक बड़ा शहर बना सके)। जब 1 पतरस लिखा (विचार विमर्श करें 2:14; 3:13) गया था, तब तक मसीहियों के प्रति उसका निर्दय सताव शुरू नहीं हुआ था, लेकिन पतरस ने इसकी आहट महसूस की हो सकती है और शायद वह रोम के बाहर की कलीसियाओं को तैयार करना चाहते थे, अगर कहीं प्रलय उन तक पहुंचे। नीरो का सताव शायद रोम के बाहर के प्रांतों में मसीहियों को प्रभावित नहीं करता था, लेकिन इससे पतरस के पत्री का महत्व कम नहीं होता, क्योंकि यह मुख्य रूप से इस बात से संबंधित है कि मसीहियों को अपने समाज से कैसे संबंध रखना चाहिए और जब अत्याचार और दुख आएं तो उन्हें कैसे प्रतिक्रिया करनी चाहिए।

यदि 1 पतरस के पृष्ठभूमि का यह चित्रण सही है, तो इसकी तिथि 60 के दशक के आरंभ से मध्य तक होगी, क्योंकि रोम में आग 19 जुलाई, 64 ईस्वी में लगी थी और सताव उसी वर्ष के बाद या 65 ईस्वी के वसंत में आया था।

उद्देश्य और धर्मवैज्ञानिक शिक्षा

1 पतरस का मुख्य उद्देश्य मसीहियों को विश्वासियों की संगति में (3:8; 5:1–7) और विशेष रूप से गैर-मसीही समाज में (2:12) उचित व्यवहार करने के लिए प्रेरित करना है, ताकि वे मसीह में अपनी आशा की स्पष्ट गवाही दें (3:1, 15) और परमेश्वर की महिमा हो सके। इस पत्री का उद्देश्य मसीहियों को अक्सर गैर-मसीहियों के साथ संबंध रखने के कारण होने वाले दुर्व्यवहार को समझाना और सहन करने में मदद करना है (1:6–7; 2:12, 18–25; 3:9, 14–17; 4:1–5, 12–19; 5:8–10)।

पतरस का उपदेश मसीह की मृत्यु, पुनरुत्थान और दूसरे आगमन के माध्यम से परमेश्वर के उद्धार के सुसमाचार पर आधारित है। परमेश्वर दयालु हैं (1:3; 2:10), "परमेश्वर जो सारे अनुग्रह का दाता है" (5:10; 5:12), और मसीह के आगमन पर अनुग्रह के अंतिम प्रदर्शन में आशा है (1:13)। परमेश्वर ने पहले से जान लिया और ठहराया (1:2, 20; 2:8) कि वह एक छुटकारे की योजना द्वारा एक पवित्र प्रजा का सृजन करेंगे, जो उनकी अपनी संपत्ति होगी (2:9–10) । इसी उद्देश्य के अनुसार, मसीह को परमेश्वर के चुने हुए लोगों के उद्धार के लिए संसार में भेजा गया (1:20) । यद्यपि वह परमेश्वर के लिए "चुने हुए और बहुमूल्य" थे, फिर भी उन्हें "मनुष्यों ने तो निकम्मा ठहराया" (2:4) जिन्होंने उन पर विश्वास नहीं किया (वचन 7)। लेकिन उनके दुःख (1:11; 4:1, 13; 5:1) अर्थहीन त्रासदी नहीं थे; वे उनके लोगों (2:21, 24; 3:18) के लिए थे, ताकि वे उन्हें उनके व्यर्थ जीवन से अपने अनमोल लहू से छुड़ा सकें (1:18–19)।

शरीर के भाव से तो मारे गए, उन्हें "आत्मा के भाव से जिलाया गया" (3:18), मरे हुओं में से जिलाया और महिमा दी गई (1:21; 2:7), और वह परमेश्वर के दाहिनी ओर विराजमान है (3:22)। इसके अतिरिक्त, हमें परमेश्वर के उद्धारपूर्ण कार्य का सुसमाचार और हमारे अच्छे आचरण के बीच के संबंध को समझाने का प्रयास करना चाहिए। यदि किसी के जीवन को बदलना है तो सुसमाचार का प्रचार किया जाना चाहिए। यह घोषणा परमेश्वर की पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से होती है (1:12)। यह केवल एक "समाचार प्रसारण" नहीं है बल्कि "परमेश्वर के जीविते और सदा ठहरनेवाले वचन" है (1:23; विचार विमर्श करें 4:11), जिसके द्वारा परमेश्वर अपने लोगों को अस्तित्व में लाते हैं और उन्हें "अंधकार से अपनी अद्भुत ज्योति में" (2:9; विचार विमर्श करें 1:15), "मसीह में अपनी अनन्त महिमा में" (5:10) बुलाते हैं। इस परिवर्तन को 1 पतरस में "नया जन्म" (1:3, 23) के रूप में वर्णित किया गया है; एक नया जन्म पाए हुए व्यक्ति को जो चीज़ विशिष्ट बनाती है, वह है मसीह में उसकी "जीवित आशा"(1:3, 13)।

यह आशा, मसीह के पुनरुत्थान और उनके निश्चित वापसी पर आधारित, व्यवहार को बदल देती है (1:13–15)। अब हमें हानिकारक, अप्रिय तरीकों से संतुष्टि और तृप्ति की तलाश नहीं करनी होगी, बल्कि अपनी आत्माओं को एक विश्वासयोग्य सृष्टिकर्ता को सौंपकर (4:19; 5:7), हम अन्यायपूर्ण पीड़ा को धैर्यपूर्वक सहन कर सकते हैं (2:20), बुराई का बदला बुराई से नहीं देंगे (3:9), और दूसरों के प्रति परमेश्वर की दया को अच्छे कार्यों में बढ़ाने का प्रयास करेंगे (2:12, 15; 3:11, 16; 4:19)।

जीवंत मसीही आशा हमें गैर-मसीही समाज से *बाहर* नहीं ले जाती, बल्कि हमारे आचरण को उसमें बदल देती है। मसीहियों को राज्य के नागरिकों के रूप में संबोधित किया गया है (2:13–17), निर्दयी स्वामियों के दासों के रूप में (वचन 18–25), और अविश्वासी पतियों की पत्नियों के रूप में (3:1–6) । समाज की संस्थाओं में नए और आशावादी व्यक्तियों के रूप में जीकर, अन्य लोग हमारे अच्छे कर्मों को

देखते हैं और हमारे स्वर्गीय पिता की महिमा करते हैं (2:12; विचार विमर्श करें मत्ती 5:16)।

विषय-वस्तु

1:1–2

यह खंड परमेश्वर द्वारा अपने लोगों के चुनाव का वर्णन करता है, जिसका अनुवाद अक्सर तीन पूर्वसर्गिक वाक्यांशों का उपयोग करके किया जाता है।

पहला, यह "परमेश्वर पिता के पूर्वज्ञान के अनुसार" है (एनआईवी)। इसका अर्थ केवल यह नहीं है कि परमेश्वर को पहले से पता था कि वह किसे चुनेगें। 1:20 में, पूर्वज्ञान संभवतः परमेश्वर के उद्देश्य को भी शामिल करता है (विचार विमर्श करें आमो 3:2; प्रेरि 2:23; रोम 8:28–30; 11:2; 1 कुरि 8:3; गला 4:9) ।

दूसरा, चुनाव "पवित्र आत्मा के पवित्र करने के द्वारा" (एनएएसबी) है। चुनाव में सुसमाचार के प्रति एक व्यक्ति को आज्ञाकारी बनाने में आत्मा के प्रभावी कार्य शामिल होते हैं (देखें रोम 1:5) । इफिसियों 1:4 में चुनाव को "जगत की उत्पत्ति से पहले" (केजेवी) के रूप में वर्णित किया गया है।

तीसरा, हमारा चुनाव "यीशु मसीह के लहू के छिड़के जाने के लिये" (आरएसवी) है। उत्तरार्द्ध संभवतः हमारे विवेक और हमारे व्यवहार को शुद्ध करने में मसीह की मृत्यु के नैतिक प्रभाव को संदर्भित करता है क्योंकि हम उस पर भरोसा करते हैं (देखें इब्रा 9:13–14)।

इस प्रकार, परमेश्वर के चुने हुए लोग अपनी उत्पत्ति परमेश्वर की अनंतता और उद्देश्यपूर्ण पूर्वज्ञान में रखते हैं; अपनी बुलाहट और परिवर्तन को पवित्र आत्मा के कार्य के लिए मानते हैं; और उनके जीवन का लक्ष्य परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना होता है (विचार विमर्श करें 1 पत 1:14)।

1:3–12

यह भाग उद्धार की असीम मूल्यवानता का वर्णन करता है — एक विशाल विरासत, जो पूर्णतः उत्तम है, जिसकी सुंदरता या मूल्य कभी कम नहीं होती (वचन 4), हमारे विश्वास का लक्ष्य (वचन 9), ऐसे आनन्दित होते हो जो वर्णन से बाहर है (वचन 6–8)। प्राचीन पवित्र भविष्यद्वक्ताओं द्वारा खोजा और चाहा गया यह इतना अद्भुत है कि स्वर्गदूत भी ध्यान से देखने की लालसा रखते हैं। (वचन 10–12)।

यह उद्धार परमेश्वर की बड़ी दया से उत्पन्न हुआ है और यीशु के मृतकों में से पुनरुत्थान के द्वारा लोगों को उपलब्ध कराया गया है (वचन 3)। हालांकि *भविष्य* की विरासत अंतिम समय में प्रकट होने के लिए तैयार है (वचन 5), यह उन लोगों के लिए कई *वर्तमान* आत्मिक लाभ प्रदान करती है जो मसीह पर विश्वास करते हैं। उनमें से एक परमेश्वर की वर्तमान सामर्थ्य का वादा है जो विश्वास करने वाले को विश्वास में दृढ़ रहने के लिए प्रेरित करता है (वचन 5)। इसका मतलब यह नहीं है कि मसीही कठिनाइयों से बच सकते हैं; यह आवश्यक हो सकता है कि उन्हें दुःख सहना पड़े (वचन 6)। यदि ऐसा होता है, तो उन्हें कुड़कुड़ाना नहीं चाहिए बल्कि दुःख को अपने भले के लिए एक आग से ताए हुए के रूप में देखना चाहिए, क्योंकि यह झूठी निर्भरताओं को जला देती है और केवल सच्चे विश्वास के शुद्ध सोने को छोड़ देती है (वचन 7)। इस प्रकार, दुःख पूर्ण उद्धार के अनुभव के लिए एक महत्वपूर्ण तैयारी हो सकता है, क्योंकि अंत में केवल विश्वास ही है जो आशीषित होगा।

विश्वास दृश्य के समान नहीं है, क्योंकि विश्वासियों ने कभी यीशु को नहीं देखा, फिर भी वे उन पर विश्वास करते हैं और उन्हें प्रेम करते हैं (वचन 8) । आशा के लिए ठोस आधार हैं (3:15), जो मुख्य रूप से यीशु के पुनरुत्थान पर आधारित हैं (1:3)— जो एक वास्तविक ऐतिहासिक घटना है।

1:13–25

अब पतरस एक आदेश देते है: मसीह के प्रकाशन पर आपके पास आने वाले अनुग्रह पर पूरी तरह से आशा रखें (वचन 13), और परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता का एक नया जीवन जीएं (वचन 14–15)। आशा किसी चीज़ के लिए एक तीव्र इच्छा और विश्वास है कि वह पूरी होगी। इसलिए, पतरस कलीसियाओं को आदेश दे रहे थे कि वे मसीह की प्रबल *इच्छा* करें और उनके महिमा और आगमन के प्रति आश्वस्त रहें। इस प्रकार, विश्वासियों को अपनी बुद्धि का उपयोग करना चाहिए और जीवन में वास्तव में क्या महत्वपूर्ण है, इसके बारे में स्पष्ट (संयमित) रहना चाहिए (वचन 13)। मसीह में पूर्ण आशा हमेशा जीवन की पवित्रता का परिणाम होती है। यदि हम परमेश्वर की संतान होने में प्रसन्न हैं (वचन 14), तो हम निश्चित रूप से अपने पिता का अनुकरण करेंगे (वचन 15–16; विचार विमर्श करें लैव्य 19:2)।

लेकिन अच्छे आचरण के लिए एक और प्रेरणा है: परमेश्वर का भय, जो हर एक के काम के अनुसार न्याय करता है (1 पत 1:17)। जबकि पतरस भय के साथ प्रेरित करते हुए, वे हमें यह भी आश्वस्त करते हैं कि हम मसीह के बहुमूल्य लहू के द्वारा हमारे निकम्मे चाल-चलन से छुटकारा पाए हैं (वचन 18–19)। हम विश्वास से बचाए जाते हैं, अच्छे कार्यों से नहीं। संभवतः पतरस का तात्पर्य है कि हमें अविश्वास के कारण परमेश्वर के अप्रसन्नता से डरना चाहिए। जब पत्री में कहा गया है कि वह हमारे कामो का न्याय करेगा, तो इसका मतलब शायद यह है कि वह आज्ञाकारी और प्रेमपूर्ण आचरण के प्रमाणों को देखेंगे, जो आशा और विश्वास का पुख्ता संकेत है। यदि हम इसमें कमी पाते हैं, तो उनके न्याय का भय हमें वापस परमेश्वर की दया की ओर ले जाना चाहिए, जहाँ हमें शांति और आनंद प्राप्त हो सकता है, जो अंततः प्रेम की ओर ले जाता है।

इस प्रेम की आज्ञा विश्वासियों के लिए वचन 22 में दी गई है। वचन 22–25 में आशा का उल्लेख नहीं है, लेकिन यह उस समय निहित होती है जब पतरस कहते हैं कि हम परमेश्वर के

स्थायी वचन के माध्यम से नए सिरे से उत्पन्न हुए हैं। चूंकि "प्रभु का वचन युगानुयुग स्थिर रहता है" (वचन 25 = यशा 40:6–8), इसलिए वे लोग जिनका जीवन इस पर निर्भर है, सदा के लिए स्थिर रहेंगे।

2:1–10

यह गद्यांश पुराने नियम के उद्धरणों और कल्पनाओं से भरा हुआ है, जैसा कि निम्नलिखित सारणी में दिखाया गया है:

वचन 9 और 10 यह संकेत देते हैं कि पतरस ने मसीही कलीसिया को एक नए इस्राएल के रूप में माना। उन्होंने संभवतः कलीसिया के अनुभव को संसार में यहूदियों के बाबेल की बंधुआई (1:1, 17; 2:11) के समान एक *निर्वासन* के रूप में देखा, और परिवर्तन को पुराने व्यर्थ जीवन के अंधकार से परमेश्वर की ज्योति की ओर एक प्रकार के *निर्गमन*के रूप में माना, जैसे कि यहूदी मिस्र से बाहर निकले थे।

वचन 6–8 दर्शाता है कि यीशु कुछ लोगों के लिए एक बहुमूल्य पत्थर हैं, लेकिन अविश्वासियों के लिए ठोकर खाने की चट्टान। उसके पीछे परमेश्वर की अकल्पनीय पूर्वनियति (वचन 8) खड़ी है। जो लोग उस पर विश्वास करते हैं वे (वचन 9; विचार विमर्श करें 1:1) राज-पदधारी याजकों का समाज (नीचे देखें 2:5), एक ऐसी जाति के रूप में जिसके पास परमेश्वर का पवित्र स्वभाव है (विचार विमर्श करें 1:14–15), और परमेश्वर की विशेष संपत्ति के रूप में संजोए गए लोगों के रूप में चुने हुए हैं। यह सब हमारे गुण के कारण नहीं बल्कि परमेश्वर की दया के कारण है (वचन 10)।

वचन 1–3 में फिर से एक आज्ञा दी गई है — कि हम वचन के दूध के माध्यम से मसीह की उस कृपा की लालसा करें, जिसका हमने स्वाद चखा है, ताकि हम विश्वास में और अधिक बलवान बन सकें या मसीह की कृपा में पूरी तरह आशा रखें।

वचन 4–5 एक जटिल, मिश्रित रूपक को चित्रित करते हैं जो मसीह को एक जीविता पत्थर के रूप में और कलीसिया को दोनो आत्मिक घर और एक याजकों का समाज के रूप में चित्रित करते है। एक ओर, कलीसिया परमेश्वर का निवास स्थान है (पुष्टि करें 1 कुरि 3:16; इफि 2:21–22), और दूसरी ओर, उस निवास स्थान में सेवक हैं, जो परमेश्वर को आज्ञाकारिता के बलिदान चढ़ाते हैं (पुष्टि करें रोम 12:1–2)।

2:11–12

यही इस पत्र का मुख्य मुद्दा है। चूँकि मसीही इस संसार में परदेशी हैं, इसलिए उन्हें अविश्वासियों की तरह अभिलाषायें नहीं रखनी चाहिए। ऐसी शारीरिक अभिलाषाएँ क्षणिक होती हैं और उन पर चलनेवाली आत्मा को नष्ट कर देती हैं। इसके विपरीत, परमेश्वर की नई प्रजा को अच्छे कामों में समर्पित होना चाहिए, भले ही लोग उनकी निंदा करें, क्योंकि अंततः इससे लोग परमेश्वर की महिमा करेंगे। क्रम, फिर से बदली हुई इच्छाएँ, बदला हुआ व्यवहार, परमेश्वर की महिमा है (पुष्टि करें मत्ती 5:16)।

2:13–17

मसीहियों को सभी के प्रति उचित आदर दिखाना चाहिए (वचन 13–14) । मसीह का पापियों के लिए मरना एक बहुत ही विनम्र सत्य है जो मसीहियों को अहंकारी होने या यह सोचने से रोकता है कि उन्हें दूसरों से प्रेम करने का कोई दायित्व नहीं है (विचार विमर्श करें रोम 13:8–10) । बल्कि, उन्हें दूसरों को अपने से बेहतर मानने की सलाह दी जाती है (मर 10:44; फिलि 2:3) ।

इसलिए, पतरस ने घोषणा की कि विश्वासियों को राजा और उसके अधीन नागरिक अधिकारियों के अधीन रहना चाहिए। उन्हें सकारात्मक रूप से खुद को अच्छे कामों में समर्पित करना चाहिए ताकि जो लोग कहते हैं कि मसीहत जीवन में कोई फर्क नहीं डालता है, वे चुप हो जाएँ।

हालाँकि, राज्य के अधीन होना पूर्ण नहीं है, क्योंकि मसीही लोग सबसे पहले और मुख्य रूप से परमेश्वर के दास हैं। यह उनकी स्वतंत्रता से है कि वे परमेश्वर द्वारा स्थापित राज्य को व्यवस्थित जीवन बनाए रखने के लिए उचित मानते हैं। क्योंकि मसीही लोग पहले परमेश्वर की सेवा करते हैं, और राजा केवल परमेश्वर की सृष्टि है, इसलिए राजा के प्रति आज्ञाकारिता प्रभु के लिए होती है, न कि राजा के लिए।

2:18–25

मसीही दासों का विवेक परमेश्वर की ओर उन्मुख और उनके द्वारा आकारित होता है (वचन 19) । उन्होंने उनके अनुग्रह का अनुभव भी किया है और उन्हें यहाँ पर अन्यायपूर्ण कष्ट को धैर्यपूर्वक सहन करने के द्वारा उन पर भरोसा करने के लिए कहा गया है। उन्हें प्रतिशोध नहीं लेना चाहिए: उन्हें इस प्रकार जीने के लिए बुलाया गया था क्योंकि यीशु ने *उनके लिए* दुख उठाया और क्योंकि उन्होंने *एक उदाहरण* के रूप में दुख सहा। वचन 21–23 इस उदाहरण का वर्णन करते हैं। वचन 24–25 मसीह के उद्धार और उनके प्रभावों का वर्णन करते हैं। अर्थात्, यीशु ने न केवल प्रतिशोध न करने के जीवन का आदर्श प्रस्तुत किया, बल्कि अपने अनुयायियों को उनके लिए मरकर इस तरह जीने में सक्षम बनाया ताकि वे धार्मिकता के लिए जी सकें (वचन 24)। केवल तब जब मसीही लोग उस आशा में सुरक्षित और संतुष्ट होते हैं, जो मसीह ने उनके लिए पूरी की, वे उनके महंगे उदाहरण का पालन करने के लिए स्वतंत्रता और प्रवृत्ति रख सकते हैं। जब विश्वासियों को अपने हाथों में प्रतिशोध लेने का प्रलोभन होता है, तो उन्हें स्मरण करना चाहिए कि यीशु ने भी स्वयं को परमेश्वर के हाथों सौंप दिया था, जो न्यायपूर्वक न्याय करते है (वचन 23; पुष्टि करें रोम 12:19–20)।

पतरस की पहली पत्री

3:1–7

यहाँ पत्नियों के लिए छह वचन और पतियों के लिए एक वचन दिया गया हैं। एक विश्वास करने वाली पत्नी अपने अविश्वासी पति को कैसे जीत सकती है (वचन 1)? पतरस शरीर को अधिक आकर्षक बनाने के लिए अत्यधिक ध्यान देने के प्रति चेतावनी देते हैं (वचन 3)। इसके बजाय, वे हृदय को एक नम्र और शांत आत्मा से सजाने पर जोर देते हैं (वचन 4), जो शुद्ध, प्रेमपूर्ण आचरण (वचन 2) के साथ होती है, जिससे पत्नी अपने पति को "बिना कहे" (वचन 1) जीत सकती है। यह बिना सोचे-समझे अधीनता की बुलहट नहीं है, बल्कि प्रेम में संयम, स्वतंत्र और आत्मविश्वास से भरी सेवा की बुलहट है। पत्नी को दुर्व्यवहार करने वाले पति से भी नहीं डरना चाहिए (वचन 6)। लेकिन कैसे? परमेश्वर पर *आशा* रखने के लिए सारा के उदाहरण का अनुसरण करके (वचन 5)। इसलिए यह फिर से कहा गया है कि आशा जीवन को बदल देती है और विश्वासियों को दूसरों के अधीन रहने में सक्षम बनाती है। पत्नी सबसे पहले प्रभु से और उसके बाद अपने पति से बंधी होती है। दास की तरह, मसीही पत्नी अपने परमेश्वर-उन्मुख विवेक (2:16) का उपयोग यह तय करने के लिए करेगी कि कब, मसीह के लिए, वह अपने पति के अगुवाई का पालन नहीं कर सकती है।

पतियों को 7 में यह चेतावनी दी गई है कि वे अपनी पत्नियों के साथ अपने संबंधों को प्राकृतिक और प्रकट सत्य के अनुरूप बनाएँ। *प्राकृतिक* सत्य यह है कि महिलाएं शारीरिक रूप से कमजोर होती हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि वे मानसिक या भावनात्मक रूप से हीन हैं। यह केवल एक देखे गए तथ्य का सीधा कथन है: महिलाओं के शरीर पुरुषों के जितने शक्तिशाली नहीं होते। एक ऐसी संस्कृति में जहां सभी प्रकार के स्वचालित उपकरण नहीं थे, शारीरिक शक्ति आज की तुलना में जीवित रहने और आराम के लिए कहीं अधिक महत्वपूर्ण थी। इसलिए पुरुष को अपनी पत्नि के लाभ के लिए अपनी श्रेष्ठ ताकत का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया गया है। प्रकट सत्य यह है कि पत्नी "परमेश्वर के नये जीवन की भेंट में एक समान भागीदार" है, जिसे सम्मान और आदर के साथ देखा जाना चाहिए।

3:8–12

यह भाग 2:13–3:12 को समाप्त करता है और पूरी कलीसिया को पहले भाईचारे से प्रेम करने (3:8) और फिर शत्रुतापूर्ण बाहरी व्यक्ति से प्रेम करने (वचन 9–12) की सलाह देता है। वचन 9 यीशु के व्यवहार और उनके आदेशों (लूका 6:27–36) की याद दिलाता है। न केवल मसीहियों को दुर्व्यवहार को धैर्यपूर्वक सहन करना चाहिए (1 पत 2:19–20), बल्कि उन्हें सकारात्मक रूप से प्रतिक्रिया देनी चाहिए और उन लोगों को "आशीष" देना चाहिए जो उनका अपमान करते हैं (3:9)। आशीष देने का मतलब है उनकी भलाई की कामना करना और इस कामना को एक प्रार्थना में बदलना। विश्वासियों की वास्तविक इच्छा अपने शत्रुओं के लिए यह है कि वे मन फिराए और उस आशीष में भाग लें जिसे मसीही विरासत में प्राप्त करेंगे (वचन 1, 9)। वचन 9 की तर्कसंगतता का समर्थन करने के लिए भजन संहिता 34:12–16 को उद्धृत किया गया है। यदि मसीही लोग उद्धार की आशीष प्राप्त करना चाहते हैं (1:4–5; 3:9), तो उन्हें उन लोगों को आशीष देना होगा जो उनका अपमान करते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि वे अपने उद्धार को *अर्जित* कर रहे हैं, बल्कि यह कि उद्धार विश्वास का लक्ष्य है (1:9), और सच्चा विश्वास हमेशा व्यक्ति को प्रेमपूर्ण बनाता है।

3:13–17

सामान्यत: जब मसीही लोग अच्छा करते हैं, तो उन्हें इसके लिए कोई नुकसान नहीं होगा (वचन 13) । फिर भी, यह परमेश्वर की इच्छा हो सकती है कि मसीही लोग अच्छा करने के लिए दुःख उठाएं (वचन 17) और यह बुराई करने के लिए दुःख सहने से कहीं बेहतर है। यह बेहतर है न केवल इसलिए कि उन्हें कभी भी बुराई नहीं करनी चाहिए बल्कि इसलिए भी कि वे "धन्य" होते हैं जब वे धार्मिकता के लिए दुःख उठाते हैं (वचन 14; पुष्टि करें 4:14; मत्ती 5:10–12)। इसलिए लोगों से डरने के बजाय, विश्वासियों को मसीह को अप्रसन्न करने से डरना चाहिए और उनकी विश्वासयोग्यता में शांति में रहना चाहिए (पुष्टि करें 1 पत 3:14–15 के साथ यशा 8:12–13)। इस प्रकार, उनका विवेक शुद्ध हो जाएगा और विश्वासियों को आज़ाद कर दिया जाएगा ताकि जब वे अपनी आशा का कारण बताएं, तो उनका व्यवहार भी इसकी सच्चाई की गवाही देगा (1:3 के साथ 1 पत 3:15 पर विचार विमर्श करें)। मसीही लोगों को अपमानीत करने वाले लज्जित हो सकते है (वचन 16) और उनको जीता जा सकता है (3:1) और वे परमेश्वर की महिमा कर सकते है (2:12)।

3:18–22

2:21–25 और 1:18–21 के समान, यह इकाई पतरस की धैर्यपूर्वक कष्ट सहने की बुलाहट की पुष्टि करता है। चूंकि मसीह मानवता के पापों के लिए एक ही बार मरे और इस प्रकार सभी को दोष से मुक्त किया और दयालु परमेश्वर की संगति का मार्ग खोला, विश्वासियों को अन्यायपूर्ण कष्ट को नम्रता से सहन करने में सक्षम होना चाहिए। अनुचित दुःख को सहन करने से इनकार करना सर्व-विश्वासयोग्य सृष्टिकर्ता (4:19) में अविश्वास का प्रतीक होगा, जो अपनी सन्तानो की परवाह करते है और उनके लिए उनकी चिंताओं को अपने ऊपर लेने की इच्छा करते है (5:7)।

जैसे नूह के दिनों में, केवल कुछ ही लोग बचाए गए थे (विचार विमर्श करें 3:1, 20; 4:17), वैसे ही पतरस की शत्रुतापूर्ण पीढ़ी में भी केवल कुछ ही लोग बपतिस्मा के माध्यम से बचाए जा रहे थे (3:18–21) पतरस ने बहुत सावधानी से परिभाषित किया कि उन्होंने किस अर्थ में कहा कि बपतिस्मा उद्धार

करता है—यह पानी की स्वच्छता की क्रिया के द्वारा नहीं, बल्कि यीशु मसीह के पुनरुत्थान और परमेश्वर के प्रति शुद्ध विवेक की प्रतिज्ञा द्वारा है (वचन 21)।

4:1–6

मसीहियों को परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जीना चाहिए (विचार विमर्श करें 1:14; 2:1–2, 11–12, 15)। इसका मतलब होगा अपने अविश्वासी मित्रों के व्यवहार से अलग होना और इससे संभवतः अपमानित होने की संभावना हो सकती है (4:4)। लेकिन इससे विश्वासियों को खुद से बदला लेने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, क्योंकि परमेश्वर न्याय का ध्यान रखेगें (वचन 5)।

विश्वासियों के पास यह आज्ञा है (वचन 1): "इसलिए जबकि मसीह ने शरीर में होकर दुःख उठाया तो तुम भी उसी मनसा को हथियार के समान धारण करो, क्योंकि जिसने शरीर में दुःख उठाया, वह पाप से छूट गया" (एनएलटी)। कुछ लोगों ने इसका अर्थ यह निकाला है कि दुःख की प्रक्रिया के माध्यम से हम धीरे-धीरे पवित्र होते जाते हैं; हालाँकि, यदि यहाँ दुःख का अर्थ मृत्यु है (जैसा कि 3:18 और 4:1 के "इसलिए" के साथ समानता से पता चलता है), तो संभवतः वचन 1 को रोम 6:6, 10–11 के अनुसार समझा जाना चाहिए।

पहला पतरस 4:6 कठिन है। कुछ लोग सोचते हैं कि यह उसी उपदेश का उल्लेख करता है जिसका उल्लेख 3:19 में किया गया है। एक और, शायद बेहतर, व्याख्या यह है कि यहाँ मृतकों को उपदेश नहीं दिया जा रहा है बल्कि सुसमाचार का उपदेश उन लोगों को दिया जा रहा है जो बाद में मर गए। अर्थात्, जिन्होंने सुसमाचार सुना, विश्वास किया, और फिर मर गए, उन्होंने सुसमाचार को व्यर्थ नहीं सुना। उपदेश का उद्देश्य यह था कि, जबकि मात्र एक मानवीय दृष्टिकोण से इन विश्वासियों का न्याय शरीर में हुआ है (अर्थात, वे मर चुके हैं), ईश्वरीय दृष्टिकोण से वे आत्मा में जीवित हैं। इसलिए, वचन 6 का उद्देश्य इस प्रकार परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जीने के लिए एक महान प्रोत्साहन है, भले ही पुराने मित्र मसीही लोगों की आशा का उपहास करें यह कहते हुए कि मसीही लोग भी मरते हैं।

4:7–11

कलीसिया में विश्वासियों के बीच की गतिविधियाँ यहाँ फिर से मुख्य विषय हैं। पतरस ने समकालीन घटनाओं को अंत की शुरुआत के रूप में देखा (वचन 7, 17)। इससे उनकी इस प्रेरणा में गंभीरता आई कि विश्वासियों को अपनी प्रार्थनाओं के लिए मन को स्पष्ट और संयमित रखना चाहिए।

प्रार्थना में लगातार परमेश्वर पर निर्भर रहते हुए, मसीही लोग वह सहायता पाते हैं जो उन्हें एक-दूसरे से प्रेम करने और कई आपत्तिजनक बातों को अनदेखा करने के लिए आवश्यक होती है (पुष्टि करें इफि 4:1–3)। यह प्रेम आनंदपूर्ण अतिथि-सत्कार में प्रकट होना चाहिए जो विशेष रूप से सताव के समय महत्वपूर्ण होता है (1 पत 4:9), और विश्वासियों को अपने सभी विविध वरदानों और प्रतिभाओं का उपयोग करके एक-दूसरे को विश्वास में बढ़ाने के लिए प्रेरित करना चाहिए (वचन 10)। दो उदाहरण दिए गए हैं: वचन प्रचार करना और सेवा करना (उपदेशक का कार्य और सेवक का कार्य)। वचन प्रचार और सेवा में सबसे महत्वपूर्ण है यह समझना कि इन वरदानों का उद्देश्य क्या है और उस उद्देश्य तक कैसे पहुँचा जाए। उद्देश्य यह है कि "जिससे सब बातों में परमेश्वर की महिमा प्रगट हो" (वचन 11)। यह तब संभव है जब हम यह मानें कि वही सेवा के लिए सामर्थ्य और प्रेरणादायक वचन देते है।

4:12–19

यहाँ मसीही होने के कारण कष्ट और कलंक सहने की स्थिति फिर से ध्यान में है। एक “दुःख रूपी अग्नि” (वचन 12) की संभावना निकट है (पुष्टि करें 1:6–7) ।पतरस ने इन दुःखों को (संभवत: शत्रुतापूर्ण साथियों द्वारा, न कि आधिकारिक राज्य के सताव द्वारा) विश्व पर परमेश्वर के न्याय के रूप में देखा, जो कलीसिया से शुरू होता है (वचन 17–18; विचार विमर्श करें नीति 11:31)। लेकिन कलीसिया पर परमेश्वर का न्याय दंडात्मक नहीं बल्कि शुद्धिकरक है (1 पत 4:14; पुष्टि करें 1:6–7)।

पतरस याद दिलाते हैं कि दुःख एक सामान्य मसीही अनुभव है (वचन 19; पुष्टि करें 3:14; प्रेरि 14:22; 1 थिस्स 3:3) और मसीह स्वयं भी इतने सताए गए थे (1 पत 2:21–25; मत्ती 10:25)। मसीहियों को एक विश्वासयोग्य सृष्टिकर्ता को अपनी आत्माओं को सौंपने (1 पत 4:19), आनन्दित होने के लिए (वचन 13), और अच्छे कार्यों में दृढ़ रहने के लिए (वचन 19) प्रोत्साहित किया जाता है, इस प्रकार परमेश्वर की महिमा होती है (वचन 16)। जब विश्वासियों ने इस प्रकार दुःख का सामना किया, तो वे आशीषित हुए (वचन 14), क्योंकि परमेश्वर खुद को उनके लिए एक घनिष्ठ और आश्वस्त करने वाले तरीके से प्रकट करते है।

5:1–7

फिर से (जैसा कि 3:8; 4:7–11 में है) पतरस कलीसिया के भीतर के संबंधों पर चर्चा करते हैं। वह पुरनियों को बताते हैं कि झुंड के अच्छे चरवाहे कैसे बनें (5:1–4), नवयुवकों को बताते हैं कि अपने वृद्ध पुरुषों के साथ कैसे व्यवहार करें (वचन 5), और सभी को एक-दूसरे के प्रति विनम्र रहने की सलाह देते हैं।

पतरस विश्वासियों को याद दिलाते हैं कि परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करते है लेकिन दीनों पर अनुग्रह करते है (वचन 5; विचार विमर्श करें मत्ती 23:12; याकू 4:6), जिन्हें वह आने वाले युग में ऊँचा उठाएगें (1 पत 5:6; विचार विमर्श करें लूका 14:11; 18:14; याकू 4:10)। सबसे महत्वपूर्ण, परमेश्वर

अपने लोगों को आमंत्रित करते हैं कि वे अपनी सभी चिंताओं को उन पर डाल दें क्योंकि वह उनको ध्यान रखते हैं (1 पत 5:7; विचार विमर्श करें भज 55:22; मत्ती 6:25–30)।

इस प्रकार जो नवयुवक विनम्र बनते हैं, वे अपने वृद्ध पुरुषों के अधीन होंगे और उनका आदर करेंगे (1 पत 5:5)। जो वृद्ध पुरुष विनम्र बनते हैं, वे झुंड पर अधिकार नहीं जताएंगे (वचन 3) या अपनी सेवा में लालची या ईर्ष्यालु नहीं होंगे (वचन 2), बल्कि विनम्र उदाहरण द्वारा झुंड का अगुवाई करेंगे।

5:8–11

पतरस पीड़ा को लेकर अपनी चिंता पर लौटता है। दुख विश्वासियों की सार्वभौमिक स्थिति है (वचन 9; विचार विमर्श करें 4:12)। हालांकि एक अर्थ में यह परमेश्वर की इच्छा द्वारा होती है (1:6; 3:17; 4:19), इसका उपयोग शैतान द्वारा उनके विश्वास को नष्ट करने के लिए किया जाता है। इसलिए पतरस कलीसिया से गुहार लगाते हैं कि वे सचेत और जागरूक रहें (5:8; विचार विमर्श करें 1:13; 4:7) ताकि वे विश्वास के द्वारा सिंह का प्रतिरोध कर सकें।

5:12–14

अंत में, पतरस अपने "संक्षिप्त" लेखन को परमेश्वर के सच्चे अनुग्रह के संबंध में एक उपदेश और गवाही के रूप में वर्णित करते हैं। इसलिए यह पत्र परमेश्वर के लिए कठिन परिश्रम करने की बुलाहट नहीं है; बल्कि, यह उस कठिन परिश्रम को पहचानने, आनंद लेने, और उसके अनुसार जीने की बुलाहट है जो परमेश्वर ने अपनी कृपा से अपने सन्तानो के लिए किया है और करेंगे। जैसा कि ऊपर उल्लेखित किया गया है, पत्र सीलास द्वारा लिखा गया था (यूनानी में सिलवानुस, शायद वही व्यक्ति जो प्रेरि 16:25; 1 थिस्स 1:1; 2 थिस्स 1:1 में है) द्वारा लिखा गया था। यह रोम से लिखा गया था, और मरकुस (संभवतः सुसमाचार लेखक और पौलुस के पूर्व मिशनरी साथी—प्रेरि 13:13; 15:37; 2 तिमु 4:11) और पूरी कलीसिया की ओर से अभिवादन भेजे गए थे। पतरस का अंतिम वचन कलीसियाओं पर शांति की कामना करना और उनसे आपस में स्नेह बनाए रखने का आग्रह करना है।

यह भी देखें दुःख; प्रेरित पतरस; कैद में आत्माएं।

पतरस, प्रेरित

12 चेलों में से एक; यीशु की सेवकाई के दौरान और बाद में प्रेरितों के बीच प्रमुखता प्राप्त की।

नए नियम में पतरस के नाम के वास्तव में चार रूप हैं: इब्रानी से यूनानी में अनुवादित, "शिमोन" से "शमौन" और अरामी से यूनानी में अनुवादित, "कैफा" से "पतरस" (जिसका अर्थ "चट्टान" है)। उनका दिया गया नाम शमौन, योना के पुत्र था (मत्ती 16:17; विचार विमर्श करें यूह 1:42), "यूहन्ना का पुत्र शमौन," जो सामान्य सामी नामकरण था। यह सबसे अधिक संभावना है कि "शमौन" केवल "शिमोन" का यूनानी समकक्ष नहीं था, बल्कि, द्विभाषी गलील में उनका घर होने के कारण, "शमौन" वह वैकल्पिक रूप था जिसका उन्होंने गैर-यहूदियों के साथ व्यवहार में उपयोग किया। वास्तव में, एक महानगरीय यहूदी के लिए अवसर के आधार पर अपने नाम के तीन रूपों का उपयोग करना काफी आम था: अरामी, लातिनी और यूनानी। दोहरा नाम "शमौन पतरस" (या "शमौन जिसे पतरस कहा जाता है") दर्शाता है कि दूसरा नाम बाद में जोड़ा गया था, जो "यीशु, मसीह" के समान है। अरामी समकक्ष "कैफा" का उपयोग जितनी बार किया गया है (एक बार यूहन्ना में, चार बार गलातियों और 1 कुरिन्थियों में), साथ ही साथ इसका यूनानी में अनुवाद (जो योग्य नामों के साथ आम नहीं है), द्वितीयक नाम के महत्व को संकेत करता है। दोनों अरामी और यूनानी रूपों का अर्थ है "चट्टान," जो प्रारंभिक कलीसिया में पतरस की प्रतिष्ठा का स्पष्ट संकेत है (नीचे देखें मत्ती 16:18)। यह स्पष्ट है कि यीशु की सेवकाई के दौरान उन्हें "शमौन" कहा जाता था, लेकिन प्रेरितों के युग में उन्हें "पतरस" के नाम से अधिक जाना जाने लगा।

पूर्वावलोकन

- पतरस की पृष्ठभूमि
- पतरस का मन फिराना और बुलाहट
- बारह के बीच पतरस का स्थान
- पतरस चट्टान
- प्रेरित पतरस
- पतरस की भविष्य की सेवकाई

पतरस की पृष्ठभूमि

पतरस का पालन-पोषण द्विभाषी गलील में हुआ था। यूह 1:44 कहता है कि अन्द्रियास (उनका भाई) और पतरस का घर बैतसैदा था, जिसका पुरातात्विक रूप से पता लगाना मुश्किल है। एकमात्र स्थल जिसके बारे में हम जानते हैं वह यरदन के पूर्व में गोलन नामक जिले में है। फिर भी यूह 12:21 बैतसैदा को गलील में बताता है; हालांकि, यह संभव है कि यूहन्ना कानूनी रूप से सही शब्द के बजाय लोकप्रिय उपयोग को दर्शा रहे हो। पतरस और अन्द्रियास का मछली पकड़ने का व्यवसाय था जो कफरनहूम में केन्द्रित था (मर 1:21, 29) और शायद वे याकूब और यूहन्ना के साझेदार थे (लूका 5:10)। यह भी संभावना है कि चेले रहते हुए भी वे बीच-बीच में अपना व्यवसाय करते रहे हों, जैसा कि यूह 21:1–8 में मछली पकड़ने के दृश्य में संकेत मिलता है।

इसमें एक कठिनाई यह है कि कथनों की श्रृंखला कहती है, "हम तो सब कुछ छोड़ के तेरे पीछे हो लिये हैं" (मत्ती 19:27; मर 10:28; लूका 18:28, एनकेजेवी)। अधिकांश व्याख्याकारों ने इसे "बेच दिया" या "अपना व्यवसाय छोड़ दिया" का पूर्ण अर्थ दिया है। हालांकि, लूका 18:28 उनके घर-बार छोड़ने के संदर्भ में आता है लेकिन ज़ाहिर तौर से इसका मतलब पूर्ण रूप से नहीं है। ऐसा लगता है कि चेलों ने मसीह का अनुसरण करने के लिए अपने मछली पकड़ने के व्यवसायों का अभ्यास छोड़ दिया, लेकिन अपने व्यापार के उपकरण रखे और आवश्यक होने पर अपने व्यापार में लौट आए।

उन्होंने निश्चित रूप से अपने परिवारों को नहीं छोड़ा, जैसा कि पतरस द्वारा प्रमाणित है, जो प्रत्येक दौरे के अंत में अपने घर लौटते थे। नया नियम हमें बताता है कि पतरस विवाहित थे। मर 1:29–31 में यीशु उनकी सास को चंगा करते हैं, जो शायद पतरस के साथ रह रही थी।वास्तव में, यह संभव है कि उनका घर गलील में यीशु का मुख्यालय बन गया हो। (मत्ती 8:14 यह संकेत दे सकता है कि यीशु वहां रहते थे।) पहला कुरिन्थियों 9:5 कहता है कि पतरस, अन्य विवाहित प्रेरितों के साथ, अक्सर अपनी पत्नी को अपने सेवकाई यात्राओं पर साथ ले जाते थे। बाद की परंपराएँ उनके बच्चों का उल्लेख करती हैं (क्लेमेंट ऑफ़ अलेक्ज़ांड्रिया का स्त्रोमेटीस 2.6.52) और यह कहती हैं कि पतरस अपनी पत्नी के शहादत के समय उपस्थित थे (यूसेबियस का सभोपदेश्य इतिहास 3.30.2)।

पतरस का मन फिराना और बुलाहट

पतरस के भाई, अन्द्रियास, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के चेले थे, यूह 1:35–40 के अनुसार। यह 1:29–34 में यूहन्ना की गवाही का अनुसरण करता है और अध्याय एक में यूहन्ना के चेलेपन का दूसरा चरण है—अर्थात, गवाही देने के बाद अब वह अपने अनुयायियों को यीशु के पास भेजते है। अन्द्रियास और अज्ञात चेला (शायद फिलिप्पुस जैसा कि यूह 1:43 में या "प्रिय चेला," जिसे कई लोग स्वयं यूहन्ना मानते है) फिर यीशु का "अनुसरण" करते हैं (एक शब्द जो यूहन्ना में अक्सर चेलेपन के लिए उपयोग किया जाता है)। अगले दिन अन्द्रियास बपतिस्मा देने वाले के उदाहरण का पालन करते है और अपने भाई शमौन को पाते है और कहते है, "हमको मसीह मिल गया।" (यूह 1:41, एनकेजेवी)। पतरस का मन फिराना यूह 1:42 में पूर्वानुमानित है, जहां शमौन को अन्द्रियास द्वारा यीशु के पास लाया जाता है और वहां एक नया नाम दिया जाता है।

सुसमाचारों में तीन अलग-अलग घटनाएं हैं जिनमें शमौन को बुलाया जाता है, और ये तीनों घटनाएँ उस समय से मेल खाती हैं जब उन्हें यीशु द्वारा "कैफा" ("पतरस", जिसका अर्थ है "चट्टान") नाम दिया गया था। यूहन्ना ने इस घटना को यहूदिया में स्थित किया जहाँ यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले बपतिस्मा दे रहे थे। समदर्शी सुसमाचारों में दो अलग-अलग दृश्य हैं। पहली बुलाहट गलील झील के किनारे होती है (मर 1:16–20; मत्ती 4:18–22)। यीशु किनारे पर चल रहे हैं और पतरस और अन्द्रियास को याकूब और यूहन्ना के साथ समुद्र में जाल डालते हुए देखते हैं। इस समय वह उन्हें "मनुष्यों के पकड़नेवाले बनाऊँगा" बनने के लिए कहते हैं। लूका फिर इसे मछली पकड़ने के दृश्य में विस्तारित करते है (लूका 5:1–11), जिसमें चेले सारी रात मेहनत की और कुछ न पकड़ा लेकिन यीशु के आदेश पर उन्होंने अपने जाल नीचे डाले और इतनी अधिक मछलियाँ पकड़ीं कि नाव डूबने लगी। यह घटना मरकुस के संक्षिप्त रूप की तरह ही समाप्त होती है: यीशु कहते हैं कि अब से वे "मनुष्यों को पकड़ेंगे," और परिणामस्वरूप वे सब कुछ छोड़कर उनके पीछे हो लेते हैं।

पतरस की बुलाहट (और उनके नए नाम) से संबंधित दूसरा समदर्शी प्रकरण पहाड़ पर बारहों का आधिकारिक चयन है (मर 3:13–19 और समानांतर); नामों की सूची में हमारे पास "शमौन जिसे उन्होंने पतरस उपनाम दिया" नाम है। पतरस के नए नाम से संबंधित अंतिम घटना मत्ती 16:17–19 में मिलती है, जो कैसरिया फिलिप्पी में पतरस के अंगीकार से संबंधित है।

इन घटनाओं को सही ढंग से एक साथ लाना थोड़ा मुश्किल है। क्या तीन अलग-अलग घटनाएँ थीं जिनमें शमौन को बुलाया (यूह 1:42; मर 1:20; 3:16) और तीन अलग-अलग घटनाएँ जिनमें उन्हें कैफा/पतरस नाम दिया गया (यूह 1:42; मर 3:16; मत्ती 16:18)? यह व्यापक शैक्षणिक दृष्टिकोण के लिए आकर्षक है कि यह मान लिया जाए कि एक ही घटना, जो यीशु की सेवकाई की शुरुआत में किसी अनिश्चित समय पर हुई थी, बाद में इन विविध परंपराओं में विस्तारित हो गई। हालांकि, सुसमाचार के विवरणों का निकटतम परीक्षण ऐसी निष्कर्ष की आवश्यकता नहीं करता है। यूहन्ना 1:35–42 हालांकि, सुसमाचार के विवरणों का निकटतम परीक्षण ऐसी निष्कर्ष की आवश्यकता नहीं करता है। यूहन्ना 1:35–42 एक औपचारिक बुलाहट का संकेत देने वाला संस्थागत दृश्य नहीं है। बल्कि, यह यीशु के साथ पहली मुलाकात और उनके महत्व के प्रति जागरूकता का वर्णन करता है। "नाम बदलना" भविष्य काल में है और एक बाद की घटना की ओर संकेत करता है। इसके अलावा, यूहन्ना ने जानबूझकर यीशु के जीवन की अधिकांश संकटपूर्ण घटनाओं (बपतिस्मा, बारह का चुनाव, रूपांतरण, अंतिम भोज में संस्थापन के शब्द, गतसमनी) को छोड़ दिया है और उनकी जगह अत्यधिक धार्मिक दृश्य रखे हैं जो घटनाओं के आत्मिक महत्व को सिखाते हैं। यही उन्होंने यहाँ किया है।

पहले समदर्शी बुलावे के साथ भी यही सत्य है, यानी मछली पकड़ने के दृश्य के साथ। फिर से, किसी आधिकारिक पद की नियुक्ति का कोई संकेत नहीं है, बल्कि भविष्य की सेवकाई का पूर्वाभास या भविष्यवक्ताई संकेत है। यह विशेष रूप से लूका के उच्च धार्मिक दृश्य के लिए सत्य है, जो भरपूर परिणामों का वादा करता है। फिर से, सभी तीन वर्णनों में

भविष्य काल का उपयोग किया गया है: "मैं तुम्हें मनुष्यों का पकड़ने वाला बनाऊंगा" (मत्ती और मरकुस), "तुम मनुष्यों को पकड़ोगे" (लूका, एनकेजेवी)। मर 1:20 और मत्ती 4:21 में बुलाहट और उनकी प्रतिक्रिया (सब कुछ छोड़कर यीशु के पीछे हो लेना) वह प्रारंभिक कदम है जिसे मर 3:13–19 और समानांतर में वास्तविक संस्थागत दृश्य में अंतिम रूप दिया गया है। शब्दों से यह संकेत नहीं मिलता कि ये दोनों घटनाएं दोहरे हैं, क्योंकि चेलों का वास्तविक नियुक्ति दूसरे गद्यांश में होती है। हमें एक खंड मूल बुलाहट (जो बारह का तथाकथित "भीतरी मंडली" बन गया) के लिए और सभी चेलों की अंतिम चुनाव के बीच अंतर करना चाहिए।

बारह के बीच पतरस का स्थान

सुसमाचार और प्रेरितों के काम में शमौन पतरस की प्रमुखता पर विवाद नहीं किया जा सकता। जबकि कुछ लोगों ने इसे बाद के कलीसिया में उनकी अगवाई की भूमिका के लिए जिम्मेदार ठहराने का प्रयास किया है, नए नियम के लेख में इसके लिए कोई आधार नहीं है। शुरू से ही शमौन ने दूसरों से श्रेष्ठता प्राप्त की। जैसे उल्लेखित है बारह की सूचियों में, शमौन का नाम हमेशा पहले आता है, और मत्ती 10:2 में उनका नाम "पहला" के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसके अलावा, बारह चेलों को अक्सर "पतरस और उसके साथी" (मर 1:36; लूका 9:32; 8:45, एनकेजेवी) के रूप में निर्दिष्ट किया जाता है।

सम्पूर्ण विवरणों में, पतरस ने अन्य चेलों की ओर से कार्य किया और बात की। रूपांतरण के समय, यही पतरस थे जिन्होंने मण्डप बनाने की इच्छा जताई (मर 9:5), और वही अकेले थे जिन्होंने पानी पर चलने का प्रयास करने के लिए पर्याप्त विश्वास दिखाया (मत्ती 14:28–31)। पतरस ही वह है जिन्होंने प्रभु से क्षमा के बारे में उनके उपदेश (मत्ती 18:21) और दृष्टान्तों (मत्ती 15:15; लूका 12:41) को समझाने के लिए कहा, और जिसने मत्ती 19:27 में चेलों के विचारों को व्यक्त किया, "देख, हम तो सब कुछ छोड़ के तेरे पीछे हो लिये हैं तो हमें क्या मिलेगा?" (सारांशित)। मंदिर के लिए कर लेने वाले पतरस के पास समूह के अगुवे के रूप में आते हैं (मत्ती 17:24)। भीतर मंडली के सदस्य के रूप में (याकूब और यूहन्ना के साथ, संभवतः मर 13:3 में अन्द्रियास के साथ) वह अक्सर यीशु के साथ अकेले रहते थे (याईर की बेटी के जी उठने के समय, मर 5:37 और समांतर; रूपांतरण के समय, मर 9:2 और समांतर; गतसमनी में, मर 14:33 और मत्ती 26:37 में)। यीशु लूका 22:8 में पतरस और यूहन्ना से फसह का भोज तैयार करने को कहा, और मर 14:37 (और मत्ती 26:40) में वे पतरस को अन्य लोगों का प्रतिनिधित्व करते हुए फटकारते हैं ("तू सो रहा है? क्या तू एक घंटे भी न जाग सका?")। अंत में, कब्र पर स्वर्गदूत का संदेश मर 16:7 में दर्ज है, "तुम जाओ, और उसके चेलों और पतरस से कहो," निश्चित रूप से पतरस बारहों में एक बहुत ही विशेष स्थान रखते थे।

यह विशेष रूप से कैसरिया फिलिप्पी प्रकरण में स्पष्ट था (मर 8:27–33 और समांतर)। यह पतरस ही थे जिनका अंगीकार सुसमाचार के वृत्तांतों का मुख्य बिंदु बन गया, "तू मसीह है" (लूका ने "परमेश्वर का"; मत्ती ने "जीवित परमेश्वर का पुत्र" जोड़ा)। इसके बाद यीशु ने मनुष्य के पुत्र के कष्टों के बारे में बताया, तो पतरस ने उन्हें डांटा, और मरकुस के वर्णन में यीशु ने फिरकर, और अपने चेलों की ओर देखकर पतरस को डाँटकर कहा, "हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो: क्योंकि तू परमेश्वर की बातों पर नहीं, परन्तु मनुष्य की बातों पर मन लगाता है।" (v 33, केजेवी)। यह स्पष्ट रूप से पतरस के माध्यम से उन सभी पर निर्देशित था।

सभी चारों सुसमाचारों में जो पतरस का चित्रण मिलता है, वह उन्हें एक उत्साही और अकसर उतावला व्यक्ति के रूप में दिखाता है; वह सबसे पहले कार्य करने वाले और अपने विचार व्यक्त वाले है और हर उस चीज़ के प्रति अपने उत्साह के लिए जाने जाते है जिसमें उनका हिस्सा होता है। जब उन्होंने यीशु को पानी पर चलते हुए देखा, तो उन्होंने प्रभु से उन्हें भी ऐसा करने का आदेश देने के लिए कहा, और फिर तुरंत नाव से कूदकर वही करने लगे।

रूपांतरण के समय, जबकि अन्य लोग मूसा और एलिय्याह के प्रकट होने से आश्चर्यचकित होकर चुप हो गए थे, क्रियाशील व्यक्ति पतरस ने कहा, " यदि तेरी इच्छा हो तो मैं यहाँ तीन तम्बू बनाऊँ;" (मत्ती 17:4, केजेबी)। मरकुस और लूका दोनों यह भी जोड़ते हैं कि पतरस नहीं जानते थे कि वह क्या कह रहे है। पतरस की असुरक्षित और बिना सोचे-समझे यीशु के बयानों का विरोध करने की प्रवृत्ति न केवल कैसरिया फिलिप्पी में बल्कि यूह 13:4–11 में पैर धोने के दृश्य में भी दिखाई देती है जब उन्होंने पहले कहा, "तू मेरे पाँव कभी न धोने पाएगा!"; और फिर यीशु के कड़े प्रत्युत्तर के बाद, "यदि मैं तुझे न धोऊँ, तो मेरे साथ तेरा कुछ भी भाग नहीं।," उन्होंने पूरी तरह से अपना विचार बदल लिया, यह कहते हुए, "हे प्रभु, तो मेरे पाँव ही नहीं, वरन् हाथ और सिर भी धो दे।" (13:8–9, एनकेजेवी)। अंत में, कब्र की ओर दौड़ के विवरण में (यूह 20:2–10), प्रिय चेले, पहले कब्र तक पहुँचते हैं और रुक जाते हैं, जबकि पतरस तुरंत और बिना सोचे-समझे कब्र में प्रवेश कर जाते हैं। पतरस निश्चित रूप से उनमें से एक थे जो "जहाँ स्वर्गदूत भी पैर रखने से डरते हैं, वहाँ दौड़ते हुए गये।" हालाँकि, यही विशेषता उन्हें हम सभी के साथ जोड़ती है और शायद यही एक मुख्य कारण है कि वह पूरे सुसमाचार में प्रतिनिधि चेले क्यों बन जाते है।

पतरस चट्टान

शमौन पतरस के महत्व की कुंजी स्पष्ट रूप से कैसरिया फिलिप्पी प्रकरण के लिए विवादास्पद परिशिष्ट है, जो केवल मत्ती 16:17–19 में पाया जाता है, जो कि पतरस के लिए यीशु की गवाही है। इस कथन के कई महत्वपूर्ण पहलू हैं। इस

अध्ययन के लिए सबसे महत्वपूर्ण आयात 18 है, "और मैं भी तुझ से कहता हूँ, कि तू पतरस है, और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊँगा" (केजेवी)। इतिहास में इसके कई व्याख्याएँ की गई हैं: (1) यह पतरस को "चट्टान" या कलीसिया के पहले बिशप के रूप में संदर्भित करता है। यह तीसरी शताब्दी से रोमन कैथोलिक व्याख्या थी और प्रेरितिक उत्तराधिकार के प्रमाण के रूप में इसका उपयोग किया गया था, लेकिन इसके संदर्भ में या पत्रियों में कहीं भी इसका संकेत नहीं मिलता है: यह पहली सदी की अवधारणा नहीं थी। (2) सुधार आंदोलन के बाद से अधिकांश प्रोटेस्टेंट्स ने इसे पतरस के बजाय पतरस के विश्वास की घोषणा के संदर्भ में माना है; लेकिन इससे शब्दों का खेल नज़रअंदाज़ हो जाता है, जो अरामी में और भी अधिक स्पष्ट है, जहाँ "कैफा" (चट्टान) के लिए केवल एक ही रूप है। (3) एक विकल्प "इस चट्टान" को स्वयं यीशु के संदर्भ के रूप में लेना रहा है, लेकिन यह कल्पनाशील है और संदर्भ में शायद ही उपयुक्त है। अंत में, "यह पत्थर" का संदर्भ लगभग निश्चित रूप से पतरस के लिए है, लेकिन इसे दो तरीकों से समझना चाहिए। पहला, पतरस वह नींव बनने वाले थे जिस पर मसीह अपनी कलीसिया की स्थापना करेंगे, जैसा कि प्रेरितों के काम में स्पष्ट रूप से प्रमाणित है। इसका मतलब यह नहीं है कि पतरस के पास दूसरे प्रेरितों से ज़्यादा अधिकार था। पौलुस द्वारा पतरस को गला 2:11–14 में फटकारना यह दर्शाता है कि वह उनसे ऊपर नहीं थे, और यरूशलेम की सभा में प्रेरि 15 में यह याकूब है जो अगुवे के स्तर पर है। दूसरा, यहाँ पतरस को सिर्फ़ एक व्यक्ति के रूप में नहीं बल्कि चेलों के प्रतिनिधि के रूप में देखा गया है। आजकल यह दृष्टिकोण बढ़ती प्रमुखता प्राप्त कर रहा है। यह यहूदी अवधारणा "सामूहिक पहचान" को मान्यता देता है जिसमें अगुवों को सामूहिक निकाय के साथ पहचाना जाता था (उदहारण के लिए, राजा या महायाजक, जो परमेश्वर के सामने देश का प्रतिनिधित्व करते थे)। यह अवधारणा मत्ती 18:18–20 के अनुरूप भी है, जिसमें कलीसिया को वही अधिकार दिया गया है जो यहाँ पतरस को दिया गया है। इस दृष्टिकोण में, पतरस चट्टान के रूप में निर्माण के पहले चट्टानों में से एक बन जाते है, जिस पर मसीह, मुख्य कोने का पत्थर (रूपक को जारी रखते हुए), अपनी कलीसिया का निर्माण करेंगे (देखें इफि 2:19–20)।

यहाँ दो अन्य पहलू ध्यान देने योग्य हैं। पहले, आयत 18 कहता है, "अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।" "अधोलोक के फाटक" मृत्यु की अपरिहार्य और अपरिवर्तनीय शक्ति के लिए एक सामान्य यहूदी उपमा है। यीशु कह रहे हैं कि शैतान कलीसिया पर विजयी नहीं होगा, और उसके कार्यक्षेत्र, मृत्यु को पराजित किया जाएगा (विचार विमर्श करें 1 कुरि 15:26, 54–55)। कलीसिया सताव और शहादत का सामना करेगी, लेकिन कलीसिया विजयी होगी।

दूसरा, आयात 19 प्रतिज्ञा करता है, "मैं तुझे [एकवचन] स्वर्ग के राज्य की कुँजियाँ दूँगा,"एक और कथन जिसे मध्यकालीन कलीसिया ने प्रेरित उत्तराधिकार के लिए उपयोग किया।

फिर से, इसे सामूहिक पहचान के प्रकाश से समझा जाना चाहिए; पतरस, जो आरंभिक कलीसिया में प्रमुख व्यक्ति थे, यहाँ अपनी अगुवाई भूमिका में समुदाय का प्रतिनिधित्व करते हैं। "स्वर्ग के राज्य की कुँजियाँ" सीधे "अधोलोक के फाटक" के विपरीत हैं (विचार विमर्श करें प्रका 1:18, “मृत्यु और अधोलोक की कुँजियाँ” और प्रका 3:7, “दाऊद की कुँजी”), और यह उस चट्टान पर देखी गई इमारत की कल्पना का अनुसरण करती है, जिस पर मसीह अपनी कलीसिया का निर्माण करेंगे। यहाँ पतरस को कुंजियाँ दी गई हैं जो परमेश्वर के समुदाय, कलीसिया को बनाने के लिए परमेश्वर के राज्य की सामर्थ को खोलेंगी। भविष्य काल ("देगा") निःसंदेह पुनरुत्थान के बाद की अवधि की ओर संकेत करता है, जब उस सामर्थ को प्रकट किया गया और कलीसिया की स्थापना हुई।

प्रेरित पतरस

दो घटनाओं ने उस नए पतरस को जन्म दिया, जो प्रेरितों के काम की पुस्तक के पन्नों को भरते हैं: उनकी पुनर्स्थापना का वर्णन यूह 21:15–17 में किया गया है और प्रभु के पुनरुत्थान के प्रकटन, जिसका वर्णन लूका 24:34 और 1 कुरि 15:5 में कभी नहीं किया गया लेकिन इसका संकेत दिया गया है। उनका इनकार निश्चित रूप से इस बात का प्रमाण था कि वे अभी तक कलीसिया के चट्टान के रूप में अपनी भविष्यवाणी की गई स्थिति को ग्रहण करने के योग्य नहीं थे। लूका और पौलुस दोनों ही यह कहते हुए प्रतीत होते हैं कि पुनर्जीवित प्रभु दूसरों से पहले शमौन पतरस के सामने प्रकट हुए, जो प्रारंभिक कलीसिया में उनकी प्रमुखता के प्रकाश में उपयुक्त होगा। पलिश्तियों के युग के दौरान, गैर-यहूदी सेवकाई से पहले पंद्रह साल की अवधि में, पतरस प्रमुख व्यक्ति थे। प्रेरि 1–12 में उल्लेखित अन्य सभी पात्र पतरस के बाद हैं, जो कलीसिया की नीतियों के प्रमुख संचालक थे। इनमें यूहन्ना शामिल हैं, जो पतरस के साथ मंदिर में (3:1), बंदीगृह में (4:13), और सामरिया में (8:14) थे; स्तिफनुस, जो उन सात में से एक थे और जिनके क्रांतिकारी उपदेशों के कारण उनको प्राण त्यागने पड़े (अध्याय 6–7); फिलिप्पुस, सात में से एक और जिन्होंने सामरिया और कूश देश के खोजे को सुसमाचार सुनाया (अध्याय 8); बरनबास, जिन्होंने सामुदायिक साझेदारी का उदाहरण स्थापित किया (4:36–37) और अन्ताकिया के लिए आधिकारिक प्रतिनिधि थे (11:20–30); पौलुस, जो एक चमत्कारी रूप से परिवर्तित व्यक्ति और गवाह थे (9:1–30; 11:25–30; 12:25); और याकूब, जो पहले प्रेरितिक प्राण देने वाले बने (12:2)। पतरस ही हैं जिन्होंने 12वें (1:15–17) चेले के चयन का प्रस्ताव रखा,

जो पिन्तेकुस्त पर सुसमाचार की घोषणा करते है (2:14–40), जो चंगाई का वचन बोलते है (3:6), और महासभा के सामने सुसमाचार का बचाव करते है (4:8–12, 19–20; 5:29–32)। हनन्याह और सफीरा के बारे में प्रकरण विशेष रूप से हृदयस्पर्शी है, क्योंकि यहाँ पतरस परमेश्वर के बदला लेने वाले दूत के रूप में कार्य करते हैं; कहीं भी उनका अधिकार अधिक स्पष्ट नहीं है। हम सामरिया में जादूगर शमौन द्वारा करिश्माई शक्ति (8:18–24) खरीदने के प्रयास के दृश्य में भी उनके अधिकार को देख सकते हैं। फिर से, यह पतरस ही है जिनका प्रभाव स्थिति को नियंत्रित करता है। इन दोनों घटनाओं में हम निश्चित रूप से "बाँधने और खोलने" के अधिकार-क्षेत्र (विचार विमर्श करें मत्ती 16:19) को पतरस में प्रदर्शित होते हुए देखते हैं।

फिर भी पतरस और कलीसिया अभी भी अपनी यहूदी विरासत की सख्ती के अधीन थे। साक्ष्य प्रारंभिक कलीसिया के हिस्से पर एक यहूदी मत में आने वाले आत्म-जागरूकता की ओर इशारा करता है। उन्होंने खुद को धार्मिक अवशेष के रूप में देखा, जो मसीही पूर्ति के युग में जी रहे थे, लेकिन फिर भी उन्होंने खुद को यहूदी दृष्टिकोण में समझा और अपने प्रचार को यहूदी विशेषता के रूप में किया (अर्थात, गैर-यहूदी केवल यहूदी मत के माध्यम से परिवर्तित हो सकते थे)। दो घटनाओं ने इसे बदल दिया। सबसे पहले, कलीसिया की यूनानी भाष्य यहूदी शाखा ने इब्रानी मसीहियों के खिलाफ विद्रोह किया, जिसके परिणामस्वरूप सात सेवकों की नियुक्ति हुई और पलिश्तियों की कलीसिया की रूढ़िवादी नीति में बदलाव आया। दूसरा, इसके बाद एक नए प्रचार की सेवकाई की शुरुआत हुई, पहले स्तिफनुस द्वारा, जिनकी अन्तरज्ञान उनकी प्राण बलिदान करने और अध्याय 8 में यूनानी भाष्य शाखा के फैलाव में समाप्त हुई; फिर फिलिप्पुस और अन्य लोगों द्वारा, जिन्होंने सुसमाचार को और भी आगे बढ़ाया, सामरियों और ईश्वर-भक्तों तक। इसके परिणामस्वरूप, पतरस और यूहन्ना सामरिया आये (8:14), जो गैर-यहूदी सेवकाई की ओर अगला महत्वपूर्ण कदम था। इस प्रकार, आगे की कहानी में यरूशलेम की केंद्रीयता समाप्त हो गई।

प्रेरि 9:32–42 में, लुद्दा (लकवाग्रस्त) और याफा (मृत महिला को जीवित करना) में पतरस के दो चमत्कार संभवतः लूका की पहली रचना (लूका 5:18–26; 8:49–56) में यीशु के समान चमत्कारों के समानांतर हैं। यह प्रेरितों के काम में एक प्रमुख विषय का हिस्सा है जिसके द्वारा यीशु के जीवन और सेवकाई को कलीसिया के माध्यम से आत्मा के कार्य में समानांतर और जारी रखा जाता है। फिर से पतरस को एक प्रतिनिधि भूमिका में देखा जाता है।

नए संबंधों को आगे दो और दृश्यों में विस्तारित किया गया है। पहले, पतरस याफा में "शमौन, चमड़े का काम करने वाले" के साथ रहते है, जो एक अशुद्ध व्यापार है; कोई भी धर्मनिष्ठ यहूदी जानबूझकर ऐसे व्यक्ति के साथ सामाजिक संपर्क नहीं रखेगा। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण, परमेश्वर एक स्वप्न (10:10–16) के माध्यम से पतरस को सिखाते हैं कि शुद्ध और अशुद्ध के बीच की पुरानी विभाजन रेखा को समाप्त कर दिया गया है। यह फिर पतरस को एक बिना खतना किए हुए गैर-यहूदी के घर ले जाता है, जो यहूदी के लिए सबसे गंभीर सामाजिक प्रतिबंध है। इसके बाद की घटनाएँ पतरस को यह स्वीकार करने के लिए मजबूर करती हैं कि गैर-यहूदियों को यहूदी मत में शामिल होने की आवश्यकताओं के बिना ही कलीसिया में शामिल किया जा सकता है। इसके गंभीर परिणाम यरूशलेम में हुई बहस (प्रेरि 11:2–3) और बाद में परिषद में (प्रेरि 15:1–21) देखे जाते हैं। इस घटना की केंद्रीयता इस बात से प्रदर्शित होती है कि लूका ने पतरस के वचन को किस हद तक दोहराया है, जो अध्याय 10 की पुनरावृत्ति प्रतीत होता है, लेकिन इसका उद्देश्य इस महत्वपूर्ण प्रकरण को उजागर करना है। प्रारंभिक कलीसिया के लिए इसकी महत्वता में अक्सर यह तथ्य भुला दिया जाता है कि लूका के लिए गैर-यहूदी सेवकाई की शुरुआत पतरस से होती है, न कि पौलुस से। वही वह व्यक्ति थे जिन पर परमेश्वर का उद्धारकारी कार्य प्रकट हुआ; और कलीसिया के अगवे के रूप में, वह इसके पहले महत्वपूर्ण साक्षी थे।

हेरोदेस अग्रिप्पा का सताव (प्रेरि 12:1–4) संभवतः गैर-यहूदियों के साथ इस मुक्त संभोग के कारण उत्पन्न क्रोध के कारण हुआ था; और यह यरूशलेम में पतरस के अगुवाई की अवधि को समाप्त करता है। यहूदी लोग नए मसीहत के प्रभाव से बहुत नाराज थे; और प्रेरितों के काम में लूका के अनुसार, लोकप्रियता का सुखद दौर, जिसमें आम लोग कलीसिया का समर्थन करते थे, इस समय प्रभावी रूप से समाप्त हो गया। पतरस की चमत्कारिक रिहाई और मरियम के घर का नाटकीय दृश्य पतरस के विशेष स्थान को दर्शाता है, लेकिन गति बदल जाती है। पतरस को यरूशलेम से भागने के लिए मजबूर होना पड़ता है, और इस बीच याकूब अगुवाई के लिए उठते है (प्रेरि 12:17); यरूशलेम परिषद में याकूब ही अध्यक्षता करते है और परिषद का निर्णय प्रस्तुत करते है (प्रेरि 15:6–29)।

पतरस और अन्य चेलों के बीच, विशेष रूप से तथाकथित "स्तंभ"—याकूब और यूहन्ना—और प्रेरित पौलुस के साथ संबंध का सटीक निर्धारण नहीं किया जा सकता। प्रमाण बहुत अस्पष्ट हैं। कई लोगों का मानना है कि वास्तव में कोई सार्वभौमिक अगुवे नहीं थे, क्योंकि आरंभिक कलीसिया बहुत विविध थी। हालांकि, यह संभावना नहीं है, और प्रेरितों के काम में लूका का चित्रण पौलुस के गला 2:8 में किए गए कथन के अनुरूप है कि पतरस "खतना किए हुओं" के लिए, और पौलुस "अन्यजातियों" के लिए श्रेष्ठ प्रेरित थे। वे सार्वभौमिक अगुवे थे, जबकि याकूब यरूशलेम के पुरनियों के स्थानीय अगुवे बन गए। हालांकि, न तो पतरस और न ही पौलुस को प्रभुत्व की वह स्थिति प्राप्त थी जो बाद के पोपों के समान थी (यानी, दोनों ही कलीसिया के पूर्ण प्रवक्ता नहीं थे और

आलोचना से परे थे)। याकूब के तथाकथित दूत पतरस पर इतना प्रभाव डाल सकते थे कि वह गैर-यहूदियों के सामने अपना व्यवहार कपटपूर्ण ढंग से बदल लेते (गला 2:12), और पौलुस उन्हें ऐसा करने के लिए सार्वजनिक रूप से फटकार सकते थे (गला 2:11–14)। पौलुस ने कभी अन्य चेलों पर अधिकार का दावा नहीं किया और यहाँ तक कि गैर-यहूदियों के प्रति अपने सेवकाई के लिए उनकी स्वीकृति और "संगति का दाहिने हाथ" की भी तलाश की (गला 2:1–10)।

पतरस की भविष्य की सेवकाई

पतरस के अन्य आंदोलनों के बारे में हमारे पास ठोस प्रमाण बहुत कम हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि पतरस ने धीरे-धीरे अगुवाई से मिशनरी कार्य की ओर मुड़ गये हो। हालाँकि, यह एक अत्यधिक सरलीकरण है। यह सबसे अधिक संभावना है कि, पौलुस के समान तरीके का अनुसरण करते हुए, उन्होंने दोनों को एक साथ जोड़ दिया। कोरिंथ में "कैफा के दल" की उपस्थिति (1 कुरि 1:12; 3:22) यह संकेत दे सकती है कि पतरस ने वहां कुछ समय बिताया था। यह तब और भी अधिक संभावना बन जाती है जब पौलुस पतरस को मिशनरी अभियानों पर अपनी पत्नी को ले जाने के लिए मुख्य उदाहरण के रूप में उपयोग करते है (1 कुरि 9:5)। "कैफा का दल" संभवतः उन लोगों से बना था जो पतरस की सेवकाई के तहत मन फिराए थे; यह संभव है कि वे यहूदी मसीही थे और 1 कुरिन्थियों में अन्यत्र परिलक्षित यहूदी-गैर यहूदी बहसों पर "पौलुस पार्टी" का विरोध करते थे।

पतरस की पहली पत्री उत्तरी आसिया माइनर की कलीसिया—पुन्तुस, गलातिया, कप्पदूकिया, आसिया और बितूनिया के प्रांत को भेजा गयी थी। समस्या यह है कि इस पत्री में ऐसा कोई संकेत नहीं है कि पतरस वहां गये थे, और न ही इसमें कोई व्यक्तिगत उल्लेख है जो इन कलीसियाओं के साथ उनकी परिचयता को दर्शाता है। हालाँकि, यह दिखाता है कि वह उनमें बहुत रुचि रखते थे। वास्तव में, कुछ का मानना है कि प्रेरि 16:7–8 के अनुसार पौलुस को इन क्षेत्रों में जाने की अनुमति नहीं थी, क्योंकि पतरस पहले से ही वहाँ सेवा कर रहे थे। संक्षेप में, आसिया माइनर में पतरस की संलिप्तता का प्रश्न अभी भी अनिश्चित ही रहता है।

इस बात का नये नियम में कोई अंतिम प्रमाण नहीं है कि पतरस रोम गए थे। पहला पतरस 5:13 कहता है कि पत्री "बाबेल" से भेजी गयी थी, और यह संदेहपूर्ण है कि यह वास्तविक बाबेल था, क्योंकि ऐसी कोई परंपरा नहीं है जो बताती हो कि पतरस कभी वहाँ गए थे, और उस समय बाबेल में बहुत कम आबादी थी। यह संभवतः रोम, "पश्चिम का बाबेल" का एक रहस्यमय प्रतीक है। यह सबसे अधिक संभावना है कि प्रका 14:8 और 16:19 का "बाबुल" भी रोम का प्रतीक है। यह प्रारंभिक कलीसिया की इस प्रबल परंपरा के अनुकूल होगा कि पतरस ने वास्तव में वहां सेवा की थी।

पतरस की मृत्यु के बारे में चार प्रारंभिक बाहरी गवाह हैं। यूह 21:18 केवल पतरस के शहादत का उल्लेख करता है, लेकिन स्थान के बारे में कोई संकेत नहीं देता। पहला क्लेमेंट पहली शताब्दी के अंत में लिखा गया था और इसमें पतरस और पौलुस की प्राण त्यागने का उल्लेख अन्य लोगों के साथ किया गया है। जबकि 1 क्लेमेंट 5:4 केवल पतरस के प्राण त्यागने के तथ्य की गवाही देता है, न कि स्थान की, दो पहलुओं के अध्ययन से रोम की संभावना की पुष्टि होती है—प्राण त्यागने की एक "बड़ी भीड़" का उल्लेख, जो नीरोनियन सताव के साथ सबसे अच्छा मेल खाता है, और "हमारे बीच एक गौरवपूर्ण उदाहरण" वाक्यांश, जो दिखाता है कि क्लेमेंट की अपनी कलीसिया (रोम) के लोग इसमें शामिल थे। इग्नेशियस का रोमियों को पत्र (4:3) भी आम तौर पर पतरस और पौलुस प्राण त्यागने की गवाही देता है, और फिर से संदर्भ रोम को स्थान के रूप में समर्थन करता है। वह कहता है, "मैंने तुम्हें वैसे आदेश नहीं दिए जैसे पतरस और पौलुस ने दिए थे," जो यह दिखाता है कि उनकी रोम में सेवकाई थी। यशायाह 4:2–3 का अधिरोहण, उसी अवधि का एक यहूदी मसीही कार्य, बेलियार (संभवतः नीरो) की बात करता है जो "बारह में से एक" का प्राण लेता है, लगभग निश्चित रूप से पतरस का। इसलिए सबसे शुरुआती सबूत स्पष्ट रूप से पतरस की मृत्यु के स्थान के रूप में रोम की ओर इशारा नहीं करते हैं, लेकिन यह सबसे संभावित परिकल्पना है।

इस प्रभाव के निश्चित बयान दूसरी सदी के अंत की ओर दिखाई देते हैं। कोरिंथ के बिशप डायोनिसियस ने लगभग 170 के एक पत्र में (जो यूसीबियस के कलीसिया संबंधी इतिहास 2.25.8 में संरक्षित है) कहा है कि पतरस और पौलुस ने इतालिया में एक साथ उपदेश दिए थे। उस शताब्दी के अंत में इरेनियस (झूठी शिक्षाओं विरोध में 2.1–3 में) कहते हैं कि पतरस और पौलुस ने रोम में उपदेश दिया था, और उसी सामान्य अवधि में टर्टुलियन ने कहा कि पतरस को "प्रभु की तरह" मृत्यु दी गई (स्कॉर्पियस 15)। सिकन्दरिया के क्लेमेंट और ओरिगन दोनों ने रोम में पतरस की उपस्थिति का संकेत दिया है, और बाद में यह विश्वास जोड़ा गया है कि उन्हें "सिर के बल क्रूस पर चढ़ाया गया था" (यूसेबियस का कलीसियाई इतिहास 2.15.2; 3.1.2)। पतरस को क्रूस पर चढ़ाए जाने की परंपरा का समर्थन यूह 21:18 में किया जा सकता है: "जब तू बूढ़ा होगा, तो अपने हाथ लम्बे करेगा, और दूसरा ... जहाँ तू न चाहेगा वहाँ तुझे ले जाएगा।"(केजेवी)।

यह तथ्य कि रोमियों के नाम पौलुस पत्री (लगभग 55–57) में पतरस का उल्लेख नहीं है, हमें बताता है कि वह उससे पहले वहाँ नहीं जा सकते थे। यदि 1 पतरस नीरोनियन सताव के दौरान लिखा गया था, जैसा कि पतरस को लेखक मानने वाले मानते हैं, तो वह 50 के दशक के अंत या 60 के दशक की शुरुआत में कभी भी वहाँ गए होंगे। बेशक, रोम में उनके सेवकाई की सीमा भी ज्ञात नहीं की जा सकती है। कुछ ने वास्तव में यह माना है कि उनका रोम में बहुत कम या कोई

विस्तृत प्रवास नहीं था। तथ्यों को, पुनः प्राप्त किया जा सकता है, वे कुछ अस्थायी निष्कर्षों की ओर इशारा करते हैं। पतरस ने रोम में किसी प्रकार की सेवकाई की थी, हालांकि इसके विस्तार की जानकारी नहीं हो सकती। हालाँकि, वहाँ उनके प्रचार सेवकाई की प्रारंभिक गवाही के प्रकाश में, यह संदेहपूर्ण है कि वह केवल रोम से गुजर रहे थे जब नीरो के प्रकोप में पकड़े गए। इसलिए उन्होंने संभवतः अपनी सेवकाई के अंतिम वर्ष रोम में बिताए और वहाँ नीरो के अधीन मृत्युदंड का सामना किया, शायद क्रूस पर चढ़ाकर।

शमौन पतरस, पौलुस के साथ, प्रारंभिक कलीसिया में अगुवाई करने वाले व्यक्ति थे। उनका प्रभाव रोमन कैथोलिक-प्रोटेस्टेंट मंडलियों के कटु विवादों के कारण दुखद रूप से धूमिल हो गया है, लेकिन बाइबल प्रमाण स्पष्ट हैं।वह यीशु के प्रमुख चेले थे और वास्तव में वह "पत्थर" थे जिन्होंने कलीसिया की नींव रखी। प्रतिनिधि चेले के रूप में, उनके उत्साह और यहाँ तक कि उनकी कमज़ोरियों ने उन्हें विकासशील चले का सर्वोच्च उदाहरण बना दिया है, जिसने पुनर्जीवित प्रभु की शक्ति के माध्यम से अपनी गलतियों से ऊपर उठकर कलीसिया के दृश्य पर एक विशाल व्यक्ति बन गए।

पतरा

यह प्राचीन लूसिया क्षेत्र का बन्दरगाह, जो अब आधुनिक तुर्की में स्थित है। यह प्राचीन नगर, उस क्षेत्र के सबसे बड़े और समृद्ध नगरों में से एक था, यह व्यापार और वाणिज्य का केन्द्र था। अपोलो का एक मन्दिर पतरा में स्थित था। वहां एक नाटकशाला और स्नानघर के अवशेष अभी भी देखे जा सकते हैं। प्रचलित हवाओं के कारण पतरा पूर्वी भूमध्य सागर की ओर जहाजों के लिए यात्रा शुरू करने का एक सुविधाजनक स्थान था। प्रेरित पौलुस ने अपनी अन्तिम यात्रा पर यरूशलेम जाते समय पतरा में जहाज बदला था (प्रेरि 21:1–2)।

पतह्याह

1. एक लेवी और बँधुआई के बाद के याजकीय परिवारों में से एक का पूर्वज (1 इति 24:16)।

2. एक लेवी, जिन्होंने बँधुआई के बाद एज्रा की शिक्षा का पालन करते हुए अपनी अन्यजाति पत्नी को तलाक दिया (एज्रा 10:23)।

3. एक लेवी, जिन्होंने एज्रा की झोपड़ियों के पर्व में सहायता की थी (नहे 9:5)।

4. यहूदा के गोत्र से मशेजबेल का पुत्र, जो फारस राजा के सलाहकार के रूप में सेवा करता था (नहे 11:24)।

पति

*देखें*परिवारिक जीवन और संबंध।

पतुलिमयिस

पतुलिमयिस

उत्तरी फिलिस्तीन में स्थित एक शहर अक्को के लिए वैकल्पिक नाम जो प्रेरि 21:7 में है। *देखें*अक्को, अको।

पतूएल

पतूएल

भविष्यद्वक्ता योएल के पिता (योए 1:1)।

पतोर

बिलाम का गृहनगर (गिन 22:5)। पतोर ऊपरी मेसोपोटामिया में स्थित है, जहां साजुर और फरात नदियाँ मिलती हैं। व्य.वि. 23:4 में कहा गया है कि बओर के पुत्र बिलाम मेसोपोटामिया के पतोर से था।

राजा शल्मनेसेर तृतीय के शिलालेख, जिसने 859–824 ई.पू. तक शासन किया, पतोर को *पि-इत/ति-रु* के रूप में पहचानते हैं, जो साजुर नदी पर स्थित एक स्थल है। हित्ती शिलालेख (सीरियाई या अरामी) इस शहर को पतोर के रूप में जानते थे। इस क्षेत्र पर पहले अश्शुरियों का शासन था, और बाद में अरामियों का। बाद में, शल्मनेसेर ने इसे फिर से कब्जा कर लिया और इसे अश्शुरियों के साथ पुनः बसाया।

पत्थर तराशने वाला

एक राजमिस्त्री जिसने खदान से पत्थर निकाला और महलों, मन्दिर, प्रशासनिक भवनों और बड़े घरों जैसी बड़ी इमारतों में उपयोग के लिए इसे चौकोर किया (1 रा 5:18, 2 रा 12:12; 1 इति 22:2, 15)। शुरुआत में, इस्राएलियों ने फोनीशियन कारीगरों का उपयोग किया, लेकिन उन्होंने जल्द ही स्वयं यह कला सीख ली और कई शानदार भवन बनाए जैसे की सामरिया में। हेरोदेस के पत्थर काटने वाले अपने पीछे यरूशलेम, हेब्रोन, सामरिया और अन्य जगहों पर सुंदर चिनाई छोड़ गए। इन कारीगरों में से कुछ ने खिड़कियों, दरवाजों, चौखटों और स्तंभों के शीर्षों में उपयोग के लिए इमारतों के आन्तरिक भाग के लिए उत्कृष्ट काम किया। पत्थर

काटने वालों की एक विशेष श्रेणी, उत्कीर्णक (निर्ग 28:11), ने मुहरें, सजावटी टुकड़े और आभूषण बनाने के लिए कीमती पत्थरों के साथ काम किया।

पत्थर मारना

*देखें*आपराधिक व्यवस्था और दण्ड।

पत्थरीला अरब

अरब का एक क्षेत्र, जिसे पत्थरीला अरब भी कहा जाता है। *देखें*अरब, अरबी।

पत्नी

*देखें*परिवारीक जीवन और संबंध।

पत्र/ पत्री

*देखें*प्राचीन पत्र लेखन।

पत्रुबास

पत्रुबास

रोम में उन मसिहियों में से एक जिन्हें पौलुस ने अभिवादन भेजा था (रोम 16:14)।

पत्रूसी

पत्रूसी

पत्रोस क्षेत्र के निवासी, जो दक्षिणी मिस्र का भाग है (उत 10:14; 1 इति 1:12)। *देखें*पत्रोस।

पत्रोस

पत्रोस

ऊपरी मिस्र का क्षेत्र, इब्री पुराने नियम में पाँच बार उल्लेखित है (यशा 11:11; यिर्म 44:1, 15; यहेज 29:14; 30:14)। हर बार इसका उल्लेख नीचेवाले मिस्र के एक नगर के साथ होता है (नोप = मेम्फिस, या सोअन = तानिस)। इब्री में इसे पत्रोस, और मिस्री में *पा तो रेसी* (“दक्षिणी भूमि”) कहा जाता है। मिस्रविज्ञानी मानते हैं कि इब्री रूप *पेथोरिस* या *पेथोरेस* का विकृत रूप है। यशायाह 11:11 सुझाव देता है कि मिस्रायिम को नीचेवाले और मध्य मिस्र के साथ समकक्ष माना जाता है, और पत्रोस इसका दक्षिणी क्षेत्र है जो कूश की सीमा तक फैला है (अर्थात, ऊपरी मिस्र)। यहेजकेल 29:14 के अनुसार, पत्रोस मिस्रियों का मूल निवास स्थान है। भविष्यवक्ताओं ने परमेश्वर के पत्रोस पर न्याय के बारे में कहा: “मैं पत्रोस को उजाड़ूँगा, और सोअन में आग लगाऊँगा, और नो को दण्ड दूँगा।” (यहेज 30:14)। बँधुआई के बाद, यहूदी मिस्र में प्रवास कर गए और कुछ पत्रोस में बस गए। यिर्मयाह ने चेतावनी दी कि मिस्र पर परमेश्वर का न्याय आने वाला है और वे इससे नहीं बचेंगे: “जितने यहूदी लोग मिस्र देश में मिग्दोल, तहपन्हेस और नोप नगरों और पत्रोस देश में रहते थे, उनके विषय यिर्मयाह के पास यह वचन पहुँचा “इस्राएल का परमेश्वर, सेनाओं का यहोवा यह कहता है: जो विपत्ति मैं यरूशलेम और यहूदा के सब नगरों पर डाल चुका हूँ, वह सब तुम लोगों ने देखी है। देखो, वे आज के दिन कैसे उजड़े हुए और निर्जन हैं” (यिर्म 44:1–2)।

पदहेल

नप्ताली के गोत्र से अम्मीहूद के पुत्र को इस्राएलियों के बीच यरदन के पश्चिम में कनानी क्षेत्र को बांटने के लिए यहोशू और एलीआजर के साथ काम करने के लिए नियुक्त किया गया (गिन 34:28)।

पदायाह

1. यहूदा के राजा यहोयाकीम के नाना पदायाह रूमावासी थे (2 रा 23:36)।

2. यकोन्याह का तीसरा पुत्र (1 इति 3:18–19)।

3. योएल के पिता मनश्शे के आधे गोत्र से थे (1 इति 27:20)।

4. परोश के पुत्र ने मन्दिर के सेवक के साथ मिलकर यरूशलेम की शहरपनाह की मरम्मत की, जो जलफाटक के सामने थी (नहे 3:25)।

5. जो व्यवस्था के सार्वजनिक रूप से पढ़ने के समय एज्रा के समीप खड़ा था (नहे 8:4)।

6. कोलायाह का पुत्र और योएद का पिता (नहे 11:7)। वे बिन्यामीन के गोत्र के सदस्य थे और बँधुआई से लौटने के बाद यरूशलेम में रहते थे।

7. नहेम्याह द्वारा भण्डारों के अधिकारी के रूप में नियुक्त लेवियों ने उन याजकों को अनाज, दाखमधु, और तेल बाँटा जो मन्दिर में सेवा करते थे (नहे 13:13)।

पदासूर

पदासूर

मनश्शे के गोत्र से गमलीएल का पिता (गिन 1:10; 2:20; 7:54, 59; 10:23)।

पद्दान, पद्दनराम

उत्तर-पश्चिमी मेसोपोटामिया का क्षेत्र जिसका नाम "अराम का मैदान" के रूप में जाना जाता है, जो इस समतल भूमि को उत्तर और पूर्व के पहाड़ी क्षेत्रों से अलग करता है। पद्दनराम को उत्पत्ति 48:7 में पद्दान, होश 12:12 में "अराम की भूमि", और उत्पत्ति 24:10 में अरम-नहरैम कहा गया है, जिसका अर्थ है "दो नदियों का अराम"। ये दो नदियाँ संभवतः फरात और बलिह नदियाँ थीं, जिनके बीच यह भूमि स्थित थी।

यह भी देखें अरम-नहरैम।

पद्मराग

देखें मणि, अनमोल।

पनसोख्ता

पनसोख्ता

मध्यम से मजबूत वार्षिक घास जो छह फीट (1.8 मीटर) से अधिक लंबी होती है; संभवतः "हिसोप" जिस पर यीशु के क्रूस पर चढ़ने के दौरान सिरके का स्पंज चिपकाया गया था (मत्ती 27:48; मर 15:36; यूह 19:29)। पौधे (हिसोप) *देखें*

पनसोख्ता

देखें जानवर।

पनिन्ना

एल्काना की दो पत्नियों में से एक, दूसरी और अधिक पसंदीदा हन्ना थी (1 शमू 1:2–6)। पनिन्ना की सन्तान उत्पन्न करने के भाग्य ने सन्तानहीन हन्ना के लिए घरेलू तनाव का कारण बना दिया, विशेषकर शीलो में प्रतिवर्ष बलिदानचढ़ाने के समय। रब्बी परम्परा पनिन्ना के निन्दा को हन्ना को गर्भधारण के लिए उकसाने का प्रयास मानती है, लेकिन बाइबल का वर्णन इन स्त्रियों को प्रतिद्वंद्वियों के रूप में प्रस्तुत करता है।

पनीएल

पनीएल

पनूएल का वैकल्पिक रूप है, वह फिलीस्तीनी नगर जहाँ याकूब ने परमेश्वर के "स्वर्गदूत" के साथ उत्पत्ति 32:30 में कुश्ती की। *देखें* पनूएल (स्थान)।

पनीर

दूध को दही जमाकर, मट्ठा निकालकर, दही को दबाकर और मोटे चपाती का आकार दे कर और सुखाकर बनाया गया उत्पाद। पनीर का सबसे प्रारंभिक बाइबिल संदर्भों में से एक अय्यूब 10:10 में है: "क्या तूने मुझे दूध के समान उण्डेलकर, और दही के समान जमाकर नहीं बनाया?" (आरएसवी)। *देखें* भोजन और भोजन की तैयारी।

पनूएल (व्यक्ति)

1. हूर का वंशज (सम्भवतः पुत्र) और यहूदा के गोत्र से गदोर के पिता (पूर्वज के अर्थ में) (1 इति 4:4)।

2. बिन्यामीन के गोत्र से शाशक का पुत्र (1 इति 8:25)।

पनूएल (स्थान)

वह स्थान जिसका नाम यब्बोक नदी के पास दिया गया था, जहाँ याकूब ने पूरी रात परमेश्वर के साथ संघर्ष किया (उत 32:31); इसे पद 30 में पनीएल भी कहा गया है। न्यायियों के समय में, गिदोन ने पनूएल के मीनार को नष्ट कर दिया और नगर के पुरुषों को मार डाला क्योंकि उन्होंने मिद्यानियों के खिलाफ युद्ध में उनके साथ शामिल होने से इनकार कर दिया था (न्या 8:8–9, 17)। बाद में, राजा यारोबाम ने इस नगर को फिर से बनाया (1 रा 12:25)। यह सुक्कोत के पास यरदन के पूर्व में स्थित था, हालाँकि इसका सही स्थान अनिश्चित है।

पन्नग

पन्नग

केजेवी अनुवाद में बाजरा (यहेज 27:17), जो एक वार्षिक घास है जिसके बीज रोटी बनाने के लिए उपयोग किए जाते हैं। *देखें*पौधे (बाजरा)।

पन्ना (मरकत)

पन्ना (मरकत)

फीरोज़ा की क़ीमती हरी किस्म, जिसे एक बहुमूल्य रत्न माना जाता है। *देखें* बहुमूल्य रत्न।

परखनेवाला

देखें शैतान।

परदेशी

परदेशी

किसी देश में रहने वाला विदेशी, अजनबी या गैर-मूल निवासी।

*देखें*विदेशी।

परदेशी

एक व्यक्ति जो स्वदेशी नहीं है। एक परदेशी अस्थायी अतिथि, अस्थायी निवासी, या विदेशी हो सकता है।

इब्रानी शब्द जिसका अर्थ "परदेशी" है, उसे रिवाइज़्ड स्टैण्डर्ड वर्जन में सभी अवसरों पर सही रूप में अनुवादित किया गया है। हालाँकि, किंग जेम्स वर्जन इसे इसके वास्तविक अर्थ में केवल दो बार प्रयोग किया गया है (व्य.वि. 15:3; ओब 1:11)। अधिकांश स्थानों में, किंग जेम्स वर्जन इस शब्द का अनुवाद "विदेशी" के रूप में करता है (व्य.वि. 14:21; अय्यू 19:15; भज 69:8; विल 5:2) या "अजनबी" के रूप में (उत् 15:13; निर्ग 2:22; लैव्य 25:35)। एक अन्य इब्रानी शब्द का अर्थ "यात्री" या "परदेशी यात्री" है (लैव्य 25:35; 1 इति 29:15; भज 39:12)। हालाँकि, इसे कई बार "परदेशी" के रूप में अनुवादित किया जाता है।

एक अस्थायी अतिथि या परदेशी यात्री आमतौर पर वह व्यक्ति होता था जो अस्थायी निवास लेना चाहता था या एक गोत्र से दूसरे गोत्र में स्थानांतरित हो गया था और फिर वहाँ रहने वाले स्वदेशी लोगों के कुछ लाभ या अधिकार प्राप्त करने का प्रयास करता था। एक पूरा गोत्र इस्राएल में परदेशी हो सकता था। यह गिबोन के निवासियों के साथ हुआ था (यहो 9) और बेरोती लोग के साथ भी (2 शमू 4:3; तुलना करें 2 इति 2:17)। इस्राएली मिस्र देश में (उत् 15:13; 23:4; 26:3; 47:4; निर्ग 2:22; 23:9) और अन्य देशों में भी (रूत 1:1) परदेशी होकर रहें।

परदेशियों या अस्थायी निवासियों को इस्राएल में रहते हुए कुछ अधिकार प्राप्त थे। लेकिन उनके लिए कुछ सीमाएँ भी थीं। वे बलिदान चढ़ा सकते थे (लैव्य 17:8; 22:18) लेकिन खतनारहित पवित्रस्थान में प्रवेश नहीं कर सकते थे (यहेज 44:9)। उन्हें तीन बड़े यहूदियों के पर्व में भाग लेने की अनुमति थी (व्य.वि. 16:11, 14) लेकिन खतना किए बिना फसह का भोजन नहीं कर सकते थे (निर्ग 12:43, 48)। परदेशियों को इस्राएली धर्म का पालन करने के लिए बाध्य नहीं किया गया था, लेकिन वे इसके कुछ लाभों में सहभागी थे (व्य.वि. 14:29)। उन्हें सब्त या प्रायश्चित के दिन काम नहीं करना था (निर्ग 20:10; 23:12; लैव्य 16:29; व्य.वि. 5:14) और परमेश्वर के नाम की निन्दा या अनादर करने पर पत्थरवाह किया जा सकता था (लैव्य 24:16; गिन 15:30)। परदेशियों को लहू खाने की मनाही थी (लैव्य 17:10–12) लेकिन वे प्राकृतिक रूप से मरे हुए जानवर खा सकते थे (व्य.वि. 14:21)। इस्राएल की यौन नैतिकता की व्यवस्था परदेशियों पर भी लागू होती थी (लैव्य 18:26)। इस्राएलियों के परदेशियों से ब्याह शादी करना निषेध था, लेकिन फिर भी यह एक सामान्य घटना थी (उत् 34:14; निर्ग 34:12, 16; व्य.वि. 7:3–4; यहो 23:12)।

स्वदेशियों के अधिकार परदेशियों के लिए व्यवस्था द्वारा प्रदान किए गए थे (निर्ग 12:49; लैव्य 24:22)। वे समान व्यवस्था प्रक्रियाओं और दण्डों के अधीन थे (लैव्य 20:2; 24:16, 22; व्य.वि. 1:16)। उन्हें शिष्टता से व्यवहार किया जाना था (निर्ग 22:21; 23:9)। उन्हें परमेश्वर के प्रेम के अधीन अपने ही समान प्रेम किया जाना था (लैव्य 19:34; व्य.वि. 10:18–19)। और उन्हें उदारता से व्यवहार किया जाना था (लैव्य 19:10; 23:22; व्य.वि. 24:19–22)। वे संकट के समय में शरण (छाया या मण्डप) प्राप्त कर सकते थे (गिन 35:15; यहो 20:9)। परदेशी मजदूर को इब्री मजदूरों के समान व्यवहार प्राप्त होना था (व्य.वि. 24:14)। एक परदेशी जनजातीय विचार-विमर्श में भाग नहीं ले सकता था और न ही राजा बन सकता था (17:15)। भविष्यद्वक्ता यहेजकेल उस भविष्यकाल के समय की प्रतीक्षा कर रहे थे जब मसीहा राज्य करेंगे। तब परदेशी परमेश्वर की अपनी प्रजा के साथ देश की सभी आशीषों में सहभागी होगा (यहेज 47:22–23)।

नए नियम में, "परदेशी" का कई बार प्रतीकात्मक रूप से उपयोग किया जाता है। एक ओर, मसीह के काम ने सभी परदेशियों को (उदाहरण के लिए, जो मसीह से अलग थे) परमेश्वर के घराने के सदस्य बनने की अनुमति दी (इफि

2:11–19)। दूसरी ओर, मसीहियों को इस संसार में स्वयं को परदेशी मानना चाहिए (इब्रा 11:13; 1 पत 2:11)।

*यह भी देखें*जंगली; पड़ोसी।

परदेशी

*देखें*विदेशी।

परमपवित्र स्थान

परमपवित्र स्थान

तम्बू और मन्दिर का आंतरिक कक्ष जिसमें वाचा का संदूक रखा जाता था। *देखें*पवित्र तम्बू; मन्दिर।

परमप्रधान

परमेश्वर का प्राचीन नाम (भजन 21:7; प्रेरि 7:48)। *देखें* परमेश्वर का नाम।

परमिनास

परमिनास

यरूशलेम की कलीसिया द्वारा विधवाओं की सेवा करने के लिए चुने गए सात पुरुषों में से एक, जो आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण थे (प्रेरि 6:5)।

परमेश्वर का क्रोध

क्रोध एक ऐसा शब्द है जो मनुष्य और उनके पापपूर्ण कार्यों के प्रति परमेश्वर की तीव्र अस्वीकृति का वर्णन करता है। बाइबल की मूल भाषाओं में, क्रोध के बारे में बात करने के लिए कई अलग-अलग शब्दों और वाक्यांशों का उपयोग किया जाता है। ये सभी शब्द अन्यायपूर्ण कार्यों के जवाब में उचित क्रोध के भावना को व्यक्त करते हैं।

पुराने नियम में

पुराने नियम में, परमेश्वर को राष्ट्रों, पापियों और यहाँ तक कि अपने वाचा के लोगों से भी नाराज़ बताया गया है। परमेश्वर का क्रोध सबसे पहले इस्राएल पर दिखा जब उन्होंने प्रतिज्ञा किए गए देश में प्रवेश करने के बारे में उसके वचन पर विश्वास करने से इनकार कर दिया। मिस्र से बचाए जाने, दस आज्ञाएँ और वाचा प्राप्त करने और परमेश्वर की महिमा को देखने के बाद भी, उन्होंने विश्वास नहीं किया (गिन 11:10; 12:9; 22:22; 32:10–14)। इसलिए, परमेश्वर ने इस्राएलियों को जंगल में भटकने की सजा दी जब तक कि वे मर नहीं गए। पुराने नियम में परमेश्वर के क्रोध का मुख्य कारण यह था कि उनके लोग लगातार वाचा तोड़ते रहे। उन्होंने उसे इस तरह से भड़काया:

- अन्य देवताओं की आराधना करना (व्य.वि. 2:15; 4:25; 9:7–8, 19; न्या 2:14; 1 रा 11:9; 14:9, 15; 2 रा 17:18)
- अपनी आराधना में गैर-यहूदी प्रथाओं का सम्मिश्रण करना (यशा 1:10–17; यिर्म 6:20; होश 6:6; आमो 5:21–27)
- उनका विद्रोह (1 रा 8:46)
- उनका अविश्वास (गिन 11:33; 14:11, 33; भजन 95:10–11)
- प्रेम, न्याय, धार्मिकता और पवित्रता के प्रति परमेश्वर की परवाह की उन्होंने उपेक्षा की (निर्ग 22:22–24; यशा 1:15–17; आमो 5:7–12; मीक 3:1)

परमेश्वर का क्रोध भी पूरी मानवता पर लागू होता है (नहू 1:2)। भविष्यवक्ताओं द्वारा आनेवाले प्रभु के दिन की अवधारणा चेतावनी दिया गया है कि कोई भी परमेश्वर के धार्मिक क्रोध से बच नहीं सकता (आमो 5:18–20)। प्रभु का दिन उसके क्रोध का दिन है (सप 1:15)।

पुराना नियम परमेश्वर के क्रोध को उनके धैर्य, प्रेम और क्षमा करने की तत्परता के साथ संतुलित करता है।

1. परमेश्वर धीरजवन्त है। "धैर्यवान" के लिए इब्रानी शब्द "क्रोध" के लिए शब्द से संबंधित है और इसका अर्थ है "क्रोध की अवधि"; परमेश्वर जल्दी क्रोधित नहीं होता। वह धीरजवन्त है (निर्ग 34:6)।
2. परमेश्वर करुणा और विश्वासयोग्यता से भरा हुआ है (निर्ग 34:6)। जब उसके बच्चे पाप करते हैं, तब भी वह एक पिता की तरह करुणा और प्रेम से भरा हुआ होता है। वह हमेशा अपने बच्चों के प्रति वफादार रहता है।

परमेश्वर का पुत्र

3. परमेश्वर उन लोगों को क्षमा करने के लिए तैयार है जो अपने पापों का प्रायश्चित करते हैं और उन्हें छोड़ देते हैं (निर्ग 34:6)। उसका प्रेम उसके क्रोध से कहीं अधिक महान है (भजन 30:5)। मीका ने प्रार्थना की कि प्रभु जल्द ही अपने लोगों को क्षमा कर देगा और उन्हें बहाल कर देगा, यह विश्वास करते हुए कि वह हमेशा क्रोधित नहीं रह सकता (भजन 7:18; तुलना करें भजन 89:46; यिर्म 3:5)। भजन सहिंता 103:8–13 में, भजनकार परमेश्वर के प्रेम और क्षमा की तुलना एक ऐसे पिता से करता है जो अपने बच्चों पर क्रोधित नहीं रहता या उन्हें कठोर अनुशासन नहीं देता क्योंकि वह उनसे बहुत प्यार करता है जो उसका भय रखते हैं।

परमेश्वर के क्रोध का उद्देश्य मानवता को नष्ट करना नहीं है (होश 11:9)। उसका क्रोध प्रतिशोधी, भावनात्मक अति प्रतिक्रिया नहीं है, न ही यह अप्रत्याशित है। अपने क्रोध में, वह राष्ट्रों (जैसे बाबेल और अश्शूर) को नियंत्रित करता है और अपने लोगों को अनुशासित करता है ताकि वे उसके पास लौट आएं (योए 2:13–14)। पुराने नियम का प्रभु का दिन परमेश्वर के क्रोध के साथ समाप्त नहीं होता; यह पृथ्वी के पुनःस्थापन के साथ समाप्त होता है जब यह परमेश्वर के ज्ञान से भर जाएगी (यशा 11:9; इब्रा 2:14), और दुष्टता नहीं रहेगी (यशा 65:25)।

नए नियम में

नया नियम परमेश्वर के क्रोध के साथ-साथ उसके अनुग्रह, प्रेम और धैर्य के बारे में भी सिखाता है (मत्ती 3:7; लूका 21:23; यूह 3:36; रोम 1:18; इफि 5:6; प्रका 14:10)। जो लोग जीवित हो उठे मसीह में विश्वास नहीं करते, वे अपने पापों में बने रहते हैं और परमेश्वर के क्रोध का सामना करेंगे। जो लोग विश्वास करते हैं, वे इससे बचाए जाते हैं (इफि 2:3; 1 थिस्स 1:10)। नए नियम का सुसमाचार यह है कि यीशु हमें परमेश्वर के क्रोध से बचाने के लिए आए (रोम 5:9)। जो लोग बचाए जाते हैं, वे परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कर लेते हैं क्योंकि वे अब दण्ड की आज्ञा के अधीन नहीं हैं (रोम 5:10; 8:1)।

*यह भी देखें*मृत्यु; नरक; न्याय; अंतिम न्याय; प्रेम।

परमेश्वर का पुत्र

अद्वितीय दिव्य पुत्र यीशु नासरी के ईश्वरत्व को व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त शब्द।

यीशु का अद्वितीय पुत्रत्व, प्राचीन काल के लोकप्रिय पुत्रत्व की अवधारणाओं के विपरीत है।यूनानवाद में, लोग मानते थे कि मनुष्य कई तरीकों से "देवताओं का पुत्र" बन सकता है: पौराणिक कथाओं में, देवता का महिला के साथ सहवास से जो पुत्र उत्पन्न होता है, वो अलौकिक माना जाता था; राजनीति में, जनरलों और सम्राटों को रोमी सम्राट आराधना के पंथ में उच्च सम्मान देकर; चिकित्सा में, डॉक्टर को "एस्क्लेपियस का पुत्र" कहकर; और अंततः किसी भी व्यक्ति को रहस्यमय शक्तियों या गुणों के साथ "ईश्वरीए पुरुष" का खिताब या प्रतिष्ठा दिया जाता था।

पुराने नियम में यह शब्द

पुराने नियम में, कुछ पुरुष जो नूह के समय से पहले रहते थे (उत 6:1–4), "स्वर्गदूत" (जिसमें शैतान भी शामिल है, अय्यू 1:6; 2:1), और अन्य स्वर्गीय प्राणियों (भज 29:1; 82:6; 89:6) को "परमेश्वर के पुत्र" कहा जाता है। इस्राएली प्रजा परमेश्वर का चुना हुआ पुत्र था। यह सामूहिक पुत्रत्व मिस्र से इस्राएल के छुटकारे का आधार बन गया: "इस्राएल मेरा पहिलौठा पुत्र है" (निर्ग 4:22; पुष्टी करें यिर्म 31:9)। सामूहिक पुत्रत्व दाऊद को राजा के रूप में ईश्वरीय स्वीकृति में व्यक्तिगत पुत्रत्व पर ध्यान केंद्रित करने का संदर्भ था: "मैं उसका पिता ठहरूँगा, और वह मेरा पुत्र ठहरेगा" (2 शमू 7:14)। दाऊद से "गोद लिया हुआ " पुत्रत्व ईश्वरीय आदेश द्वारा था : "मैं वचन की घोषणा करूंगा: . . . 'तू मेरा पुत्र है; आज मैं ही ने तुझे जन्माया है' " (भजन 2:7); और यह दाऊद के राजकीय वंशज मे यीशु की "मूल" पुत्रता का भविष्यवाणीपूर्ण प्रारूप था (मत्ती 3:17; मर 1:11; लूका 3:22; प्रेरि 13:33; इब्रा 1:5; 5:5)। अन्य मसीही भविष्यवाणियाँ दाउदी मसीहा को दिव्य नाम देती हैं: "इम्मानुएल" (यश 7:13–14) और "पराक्रमी परमेश्वर, अनंत पिता" (यश 9:6–7)। ये यीशु में पुरे होते हैं (मत्ती 1:23; 21:4–10; 22:41–45)।

सुसमाचारों में

यीशु की पहचान परमेश्वर के पुत्र के रूप में सुसमाचारों में तीन अलग-अलग तरीकों से प्रकट होती है।

पहला है उनका *अनंत, व्यक्तिगत पुत्रत्व*।यीशु का व्यक्तिगत पुत्रत्व पतरस के अंगीकार में प्रकट होता है, "तू जीविते परमेश्वर का पुत्र मसीह है" (मत्ती 16:16) और उनके परीक्षण में यीशु की अपनी पहचान में: " 'क्या तू उस परमधन्य का पुत्र मसीह है?' यीशु ने कहा, . . . हाँ मैं हूँ (मरकुस 14:61–62)। दोनों उदाहरणों में, मुद्दा उनकी व्यक्तिगत अस्तित्व या सार का है , जो उनकी अनंतकालीन पहचान है।

सृष्टि से बहुत पहले, यहां तक कि अनंत काल से, पिता और पुत्र एक-दूसरे के साथ संगति का आनंद लेते थे। हम यह जानते हैं क्योंकि बाइबल हमें बताती है—लेकिन बहुत विस्तार से नहीं।अधिकांश भाग के लिए, पवित्रशास्त्र

सांसारिक दृश्य के बारे में चुप हैं। और फिर भी कुछ पद ऐसे हैं जो थोड़ा खुलासा करते हैं और हमें उस उच्च, ईश्वरीय संबंध की झलक देते हैं जो हमेशा पिता और पुत्र के बीच मौजूद था।

बाइबल की सभी पुस्तकों में से, यूहन्ना का सुसमाचार पिता और पुत्र के बीच संबंध के बारे में सबसे अधिक कहता है। यह यूहन्ना की प्रेरित शब्दों से है कि हम शुरुआत से ही पढ़ते हैं, "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।" यह बहुत अस्पष्ट है । यूनानी कुछ अधिक चित्रमय व्यक्त करता है: "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ आमने-सामने था, और वचन स्वयं परमेश्वर था।" कल्पना कीजिए, वचन, जो परमेश्वर का अवतार से पहले का पुत्र था, परमेश्वर के साथ आमने-सामने था। अभिव्यक्ति "सामना करना" यूनानी पूर्वसर्ग पेशेवरों का अनुवाद है (प्रोसोपोन प्रोस प्रोसोपोन, "सामना करना," कोइन यूनानी में सामान्य अभिव्यक्ति)। यह अभिव्यक्ति निकटता का संकेत देती है। पिता और पुत्र ने अनंत काल से इतनी घनिष्ठ संगति का आनंद लिया। वे एक-दूसरे में कितने प्रसन्न हुए होंगे!

जब परमेश्वर का पुत्र मनुष्य बन गया और पृथ्वी पर अपनी सेवा शुरू की, तो उसने उस संबंध का उल्लेख किया जो उसने संसार की स्थापना से पहले पिता के साथ आनंद लिया था। यीशु ने पृथ्वी पर आने से पहले पिता के साथ जो देखा और सुना था, उसके बारे में बात की (देखें यूह 3:13 और 8:38)। यीशु उस महिमामय क्षेत्र में लौटने के लिए तरस रहे थे। अपने क्रूस पर जाने से पहले अपनी प्रार्थना में (अध्याय 17 में), उन्होंने पिता से कहा कि वह उन्हे उस महिमा से सम्मानित करे जो जगत की सृष्टि से पहले, उनकी पिता के साथ थी (आयत 5)। यीशु अपने पिता के साथ अपनी प्रारंभिक समानता को पुनः प्राप्त करना चाहते थे—कुछ ऐसा जिसे उन्होंने अपने पिता की योजना के लिए स्वेच्छा से त्याग दिया था (देखें फिल 2:6–7)। जैसे ही उन्होंने पिता से प्रार्थना की, उनके होंठों से अद्भुत उच्चारण निकला: "हे पिता, ... तूने जगत की उत्पत्ति से पहले मुझसे प्रेम रखा" (Jn 17:24)। परमेश्वर का पुत्र, अद्वितीय पुत्र, पिता के प्रेम का एकमात्र उद्देश्य था।

यीशु के पुत्रत्व का दूसरा पहलू उनका जन्मसिद्ध *पुत्रत्व* है। यीशु का जन्मसिद्धत्व परमेश्वर की प्रत्यक्ष, आध्यात्मिक पितृत्व से जुड़ा है। यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं क्योंकि उनका अवतार और मानव जाति में जन्म पवित्र आत्मा द्वारा हुआ था। मत्ती में, यीशु का गर्भाधान "पवित्र आत्मा से है" (मत्ती 1:20)। उनका नाम "यीशु" रखा जाना चाहिए (जिसका अर्थ है यहोवा उद्धार है) "क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों से बचाएगा" (वचन 21), और "इम्मानुएल" (परमेश्वर हमारे साथ) क्योंकि वह स्वयं मानव रूप में परमेश्वर का पुत्र है (वचन 23)। लूका में, यीशु का गर्भाधान पवित्र आत्मा और परमप्रधान की शक्ति से हुआ था (लूका 1:31, 35), इसलिए यीशु को "परमेश्वर का पुत्र" कहा गया (वचन 35)। यदि यीशु के पिता यूसुफ नामक व्यक्ति होते , तो उन्हे "यूसुफ का पुत्र यीशु" कहा जाता। लूका की शिक्षा का स्पष्ट अर्थ है कि चूँकि परमेश्वर का आत्मा यीशु का पिता था, इसलिए कुंवारी मरियम के इस पुत्र को उचित रूप से "परमेश्वर का पुत्र यीशु" कहा जाना चाहिए।

तीसरा पहलू उनका *मसीही पुत्रत्व* है। यीशु पिता के पुत्र और प्रतिनिधि हैं, जिनका सांसारिक उद्देश्य परमेश्वर के राज्य की स्थापना करना है। अपने बपतिस्मा के समय, उन्होंने पिता के राज्याभिषेक के साथ अपना उद्देश्य शुरू किया: "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ" (मत्ती 3:17; पुष्टी करें भज 2:7)। यीशु को अपने रूपांतरण के समय स्वर्ग से समान घोषणा प्राप्त हुई (लूका 9:35)। मसीहा पुत्र के रूप में, यीशु ने अपने पिता द्वारा दिए गए उद्धार कार्य को पूरी तरह से पूरा किया।

नए नियम की पत्रियों में

पौलुस ने यीशु की आवश्यक, अस्तित्वगत पुत्रता के बारे में बात की - न कि एक अलग तथ्य के रूप में, बल्कि उनके उद्धार कार्य के संदर्भ में। यह परमेश्वर के पुत्र के रूप में था कि यीशु ने मानव रूप धारण किया (रोम 1:3) और "परमेश्वर के पुत्र" के रूप में वह पुनर्जीवित हुए और शक्ति में सिंहासन पर बैठे (मत्ती 28:18; रोम 1:4; 1 कुरिं 15:28)। अवतार को "परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा" (रोम 8:3; गल 4:4) मानवता के उद्धार के लिए कहा गया है, उद्धार जो "उनके पुत्र की मृत्यु के माध्यम से" पूरा हुआ (रोम 5:10; 8:29, 32)। परिणामस्वरूप, विश्वासियों को "हमारे प्रभु यीशु मसीह के पुत्र के साथ संगति" मे रह सकते है (1 कुरि 1:9), और वे "परमेश्वर के पुत्र" (गल 2:20) में विश्वास द्वारा जी सकते हैं। पौलुस का पहला उपदेश था "कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है" (प्रेरि 9:20); इसे बाद में पौलुस ने भज 2:7 के प्रकाश में समझाया (देखें प्रेरि 13:33)।

इब्रानियों में, यीशु "पुत्र" हैं, जो परमेश्वर के "पहिलोठे" और व्यक्तिगत "उत्तराधिकारी" हैं, जो सृष्टि के रचयिता और पालनकर्ता हैं, और जो "परमेश्वर की महिमा के प्रकाश" हैं (इब्रा 1:2–12; 3:6; 5:5)। पुत्र के रूप में, वह अंतिम और अनंतकाल के महायाजक है जो स्वर्ग में उठा लिए गए और जिनका मध्यस्थता का कार्य हमेशा के लिए परिपूर्ण रहता है (4:14; 6:6; 7:3, 28)। 1 यूह 4 और 5 में, यीशु में विश्वास करना जो परमेश्वर का अवतरित पुत्र है, जो उद्धार के लिए आवश्यक है; और अविश्वास मसीह-विरोधी की आत्मा से आता है।

*यह भी देखें*मसीहशास्त्र; यीशु मसीह, शिक्षाएँ; मसीहा; मनुष्य का पुत्र।

परमेश्वर का प्रबंध

परमेश्वर का प्रबंध

परमेश्वर का प्रबंध

जिस प्रकार परमेश्वर ने इतिहास में मनुष्य जाति की सहायता की है, विशेष रूप से उन लोगों की जो उन पर विश्वास करते हैं।

परमेश्वर के प्रबंध का महत्व

इतिहास के दौरान, कई लोगों ने परमेश्वर की देखभाल में आराम पाया है। परमेश्वर सृष्टि में पृथ्वी को अकेला नहीं छोड़ते हैं और न ही मनुष्यों को एक पल के लिए भूलते हैं। परमेश्वर हमारे जीवन में आते हैं, संवाद करते हैं, नियंत्रित करते हैं, और हस्तक्षेप करते हैं और हमारी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। परमेश्वर का प्रबंध आभारी होने का एक कारण है।

परमेश्वर के प्रबंध के बारे में गलत धारणाएँ

परमेश्वर के प्रबंध के बारे में कई गलत धारणाएँ हैं, जो दर्शाती हैं कि यह एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। जब लोग परमेश्वर के व्यक्तित्व को नकारते हैं तो परमेश्वर के प्रबंध के बारे में विचारों में त्रुटियां उत्पन्न होती हैं जो बाइबल की शिक्षाओं पर आधारित नहीं होती हैं। जो कुछ बचता है वह एक अमित्रतापूर्ण शक्ति है जो हम पर हावी होती है और सब कुछ नियंत्रित करती है। इन गलत धारणाओं में कई विरोधाभास हैं, जिनमें शामिल हैं:

1. **भाग्य**: कुछ लोग सोचते हैं कि जीवन एक ऐसे भाग्य द्वारा नियंत्रित होता है जिसे पूर्वानुमानित नहीं किया जा सकता, और कहते हैं, "जैसा कि भाग्य ने चाहा।"
2. **किस्मत**: अन्य लोग "तकदीर" या "किस्मत" के बारे में बात करते हैं। लेकिन चूँकि किस्मत कोई व्यक्ति नहीं है, इसलिए ज्योतिषी इसे समझने का प्रयास करते हैं, और कुछ "लेडी लक" जैसे विचार बनाते हैं (किस्मत को एक जादुई स्त्री के रूप में देखने का विचार जो घटनाओं को नियंत्रित करती है)।
3. **सौभाग्य**: गलती से अच्छी चीजें खोजने का श्रेय लेना। यह परमेश्वर की भूमिका को नजरअंदाज करता है और धन्यवाद नहीं देता।
4. **इतिहास**: कुछ समूहों ने माना है कि इतिहास उनके विचारों का समर्थन करता है। उदाहरण के लिए:
   - मार्क्सवाद के समर्थकों (कार्ल मार्क्स के विचारों के अनुयायी) ने कहा है, "इतिहास हमारे पक्ष में है।" वे मानते थे कि भविष्य की घटनाएँ अनिवार्य रूप से एक ऐसे संसार की ओर ले जाएँगी जो साम्यवाद द्वारा शासित होगा।
   - कुछ अमेरिकी अगुवे "प्रकट भाग्य" में विश्वास किया। इस विचार का दावा था कि संयुक्त राज्य अमेरिका अपने क्षेत्र या यहाँ तक कि संसार में सबसे शक्तिशाली देश बनने के लिए नियत था।
1. **प्रगति**: विज्ञान, प्रौद्योगिकी, शिक्षा, और समाज में प्रगति कुछ लोगों को प्रगति को एक महान शक्ति के रूप में विश्वास करने के लिए प्रेरित करती है। एक तरह से, यह प्रगति को परमेश्वर की कृपा के रूप में देखता है लेकिन परमेश्वर से महिमा छीन लेता है।
2. **प्रकृति**: कुछ व्यक्तित्व, जैसे राल्फ वाल्डो इमर्सन और हेनरी दाऊद थोरो, प्रकृति को परमेश्वर की कृपा मानते थे। लेकिन प्रकृति उदासीन है।
3. **प्राकृतिक चयन**: चार्ल्स डार्विन की जैविक विकास पर क्लासिक पुस्तक, *द ओरिजिन ऑफ द स्पीशीज,* ने प्राकृतिक चयन को लोकप्रिय बनाया। कई लोगों के लिए, "प्राकृतिक चयन" के पीछे की शक्ति परमेश्वर के प्रबंध से अधिक महत्वपूर्ण हो गई। यह विचार कि "योग्य जीवित रहते हैं" परमेश्वर के प्रबंध को अनावश्यक बना देता है।

ये विचार सभी सत्य नहीं हो सकते। ये उन लोगों को भी संतुष्ट नहीं करते जो अपनी विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने वाली एक दिव्य योजना की खोज करते हैं। परमेश्वर के प्रबंध का केवल मसीही सिद्धांत ही यह प्रदान करता है।

परमेश्वर के प्रबंध का बाइबलीय अर्थ

परमेश्वर का प्रबंध वह सहायता है जो परमेश्वर लोगों की आवश्यकताओं के लिए देते हैं।

अब्राहम की विश्वास की परीक्षा एक उत्कृष्ट उदाहरण है। परमेश्वर ने उनसे अपने पुत्र का बलिदान करने के लिए कहा—एक भेंट जिसे वह वहन नहीं कर सकते थे। अब्राहम

ने इस निर्णय के साथ संघर्ष किया, न तो अपने पुत्र को खोना चाहते थे और न ही परमेश्वर की मित्रता। जब इसहाक ने बलिदान के बारे में पूछा, तो अब्राहम ने उत्तर दिया, "मेरे पुत्र, परमेश्वर स्वयं होमबलि के लिए मेम्ना प्रदान करेंगे" (उत 22:8)। परमेश्वर ने वास्तव में एक उपयुक्त बलिदान प्रदान किया, "एक मेढ़ा जो झाड़ी में अपने सींगों से फँसा हुआ था" (उत 22:13)।

शब्द "परमेश्वर का प्रबंध" का अर्थ है "पहले से देखना," और स्थिति के बारे में कुछ करना। अब्राहम के लिए, यह स्पष्ट था कि परमेश्वर ने बलिदान के स्थान पर मेमने को उनके उपयोग के लिए रखा। "प्रबंध" और "परमेश्वर का प्रबंध" शब्द "प्रबंध करना" से संबंधित हैं। हालाँकि, प्रबंध का अर्थ परमेश्वर का प्रबंध हो गया है।

नए नियम में, पौलुस ने फिलिप्पियों के उनके धर्म-प्रचारक काम में सहायता की प्रशंसा की। उन्हें विश्वास था कि परमेश्वर का प्रबंध उन्हें सहायता प्रदान करेगी: "और मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा" (फिलि 4:19)। यीशु का बलिदान परमेश्वर के प्रबंध की पुष्टि करता है। परमेश्वर ने अब्राहम से उनके पुत्र की मांग की लेकिन बलिदान स्वीकार नहीं किया। दो हजार वर्ष बाद, उन्होंने अपने पुत्र को बलिदान के रूप में दिया। यह परमेश्वर की प्रकृति है कि वह मनुष्य की आवश्यकताओं को पहले से देख लेते हैं और उनके लिए प्रबंध करते हैं।

परमेश्वर का प्रबंध और प्रकृति

फिलिप्पियों को उनके शब्दों के बाद ("उनकी महिमा में उस धन के अनुसार"—फिलि 4:19), पौलुस ने "हमारे परमेश्वर और पिता" के लिए एक स्तुति-गान लिखा (वचन 20)। परमेश्वर के प्रबंध एक पिता की तरह है जो प्रदान करता है और मार्गदर्शन करता है। परमेश्वर हमारे पिता हैं, और उनकी परमेश्वर की प्रबंध उसी का अभिव्यक्ति है। पिता अपने संतान को अवसर देते हैं बिना उनकी स्वतंत्रता छीने। वे अपने बच्चों का ध्यान रखते हुए उनका मार्गदर्शन करते हैं। परमेश्वर का प्रबंध परमेश्वर की पितृसुलभ प्रकृति से स्वाभाविक रूप से प्रवाहित होती है।

यह भी देखें पूर्वनियति; परमेश्वर का अस्तित्व और गुण I

परमेश्वर का भय मानने वाले

कोई व्यक्ति जो परमेश्वर के प्रति गहरी श्रद्धा, आदर, या भय रखता है। यह भय हो सकता है:

- सम्मान का एक शब्द
- भय की एक भावनात्मक प्रतिक्रिया
- परमेश्वर के दण्ड का भय

पुराने नियम में, परमेश्वर का भय मानने वाले का वर्णन करने वाले वाक्यांश अक्सर "आदर में खड़ा होना" या "आदर में रखना" जैसे शब्दों के साथ जोड़े जाते हैं। प्रभु के प्रति भय कम सामान्य है, लेकिन इसका उपयोग तब किया गया जब ओबद्याह ने नबियों को ईजेबेल से बचाने के लिए छिपाया (1 राजाओं 18:3–4, 12)। एक परमेश्वर का भय मानने वाले शासक से न्याय प्रदान करने की अपेक्षा की जाती थी (2 शमूएल 23:3; 2 इतिहास 19:7)। जो प्रभु का भय मानते थे, उन्हें बढ़ती आयु का वचन किया गया था (नीतिवचन 10:27; 14:27; 19:23)। एक यहोवा का भय माननेवाला घराना संकट के समय सहायता के लिए प्रभु पर भरोसा करेगा (2 राजाओं 4:1; नीतिवचन 14:26)। प्रभु का भय पाप को दूर भगाने में शक्तिशाली था और यह ज्ञान की शुरुआत थी (सुलैमान की बुद्धि 10:13)।

नए नियम में, परमेश्वर का भय अक्सर प्रभु से प्रेम करने और उनकी सेवा करने के निर्देशों के साथ होता है (कुलुस्सियों 3:22; 1 पतरस 2:17)। लूका 1:50 में, मरियम का कथन "उसकी दया उन पर, जो उससे डरते हैं, पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है" का अर्थ है आदर करना और आज्ञा का पालन करना। प्रेरितों के काम में, "परमेश्वर का भय मानने वाले" शब्द उन अन्यजातियों के लिए प्रयुक्त होता है जो आराधनालय में जाते थे। पौलुस उन्हें अलग से सम्बोधित करते हैं: "हे इस्राएलियों, और परमेश्वर से डरनेवालों, सुनो" (प्रेरितों के काम 13:16)। कुरनेलियुस एक परमेश्वर का भय रखनेवाले रोमी सेनापति थे, जिसे प्रभु के लिए स्वीकार्य जीवन जीने वाला माना जाता था, भले ही वह यहूदी नहीं थे (प्रेरितों के काम 10:2, 35)।

परमेश्वर का भय परमेश्वर की सामर्थ और न्याय का डर या भय भी दर्शाता है, जैसा कि पुराने और नए नियम में देखा गया है (उत्पत्ति 3:10; व्यवस्थाविवरण 9:19; अय्यूब 6:4; 9:28–29; भजन संहिता 76:8; मत्ती 17:7; 28:10; लूका 5:10; 12:5; प्रेरितों के काम 5:5, 11; 1 तीमुथियुस 5:20)।

यह भी देखें भय; धर्मांतरित I

परमेश्वर का मेम्ना

परमेश्वर का मेम्ना

सामान्य शब्द का उपयोग यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने दो बार किया (यूह 1:29, 36), पहले अवसर पर जोड़ते हुए "जो जगत के पाप हरता है!" वे इस शब्द का अर्थ नहीं समझाते। मसीही लोग इस शब्द का स्वतंत्र रूप से उपयोग करते हैं, लेकिन वे

इससे क्या अर्थ निकालते हैं? किसी को "परमेश्वर का मेम्ना" क्यों कहा जाएगा?

कुछ लोग मानते हैं कि यूहन्ना ने यीशु को फसह के सभी अर्थों को पूरा करते हुए देखा और यह फसह के मेम्ने का उल्लेख करने का एक तरीका है। यह सत्य है कि चौथा सुसमाचार यीशु की मृत्यु को, उस समय को बताता है जब फसह के बलिदानों को मारा गया था। लेकिन "फसह का मेम्ना" एक आधुनिक अभिव्यक्ति है; प्राचीन काल में इसके उपयोग का एक भी उदाहरण नहीं मिलता है। जब लोग इस बलिदान के लिए मारे गए पशुबलि का उल्लेख करना चाहते थे, तो वे इसे बस "फसह" कहते थे (निर्ग 12:21, पुष्टि करें 1 कुरि 5:7)। फसह का बलिदान अनिवार्य रूप से एक मेम्ना नहीं था; यह हो सकता था और अक्सर एक बच्चा होता था। इस अभिव्यक्ति में फसह को देखने का कोई कारण नहीं है।

कुछ विद्वान सोचते हैं कि यह छवि यशायाह 53 से आती है। वे वध के लिए ले जाए गए मेम्ने (वचन 7) को मसीह का संदर्भ मानते हैं।

अन्य विद्वान सोचते हैं कि यहाँ अन्तकालिक ग्रन्थ के विजयी मेम्ने का संकेत है। अन्तकालीन साहित्य के लेखकों ने अपनी बात को दीक्षितों के लिए प्रकट करने और बाहरी लोगों से छिपाने के लिए जीवंत चित्रण का उपयोग किया। उन्होंने कभी-कभी मेम्ने का उपयोग विजेता के प्रतीक के रूप में किया (पुष्टि करें प्रकाशितवाक्य में "पराक्रमी" के लिए "मेम्ना" का उपयोग)। ये विद्वान सोचते हैं कि यूहन्ना यीशु को मसीह, इस्राएल के राजा के रूप में इंगित कर रहे थे। कई लोग इस दृष्टिकोण को आकर्षक पाते हैं। यीशु को जो राजसत्ता यह दृष्टिकोण प्रदान करता है, वह निश्चित रूप से यूहन्ना के अनुकूल है, लेकिन इसके विरुद्ध यह गंभीर विचार है कि यूहन्ना एक मेम्ना के बारे में बात कर रहे थे जो पाप को हरता है, जबकि अंतकालीन मेम्ना सामान्यतः एक विजेता होता है। भूमिकाएँ भिन्न हैं। इसके अलावा, यह सहज नहीं है कि जब यह सुसमाचार लिखा गया था, उस समय के गैर-यहूदी पाठक अंतकालीन चित्रण के बिंदु को कैसे पहचान पाते।

अन्य सुझाव भी हैं। "कोमल मेम्ना" (यिर्म 11:19), मन्दिर में प्रतिदिन की जाने वाली बलि, बलि का बकरा और दोषबलि को कुछ विश्वास के साथ प्रस्तुत किया गया है, लेकिन किसी ने भी इस बात का सबूत नहीं दिया है कि इनमें से किसी को कभी "परमेश्वर का मेम्ना" कहा गया हो।

पुराने नियम में मेम्ने का उल्लेख करने वाले अंशों में से लगभग सभी बलिदान की बात करते हैं (कुल 96 में से 85)। पाप को हरने के संदर्भ के साथ मिलकर, यह देखना कठिन है कि बलिदानात्मक प्रायश्चित के संदर्भ को कैसे अस्वीकार किया जा सकता है। पवित्रशास्त्र में मेम्ने का विशेष रूप से पाप को बलिदान के माध्यम से दूर करना होता है। "परमेश्वर का मेम्ना" का अर्थ है कि यह प्रावधान स्वयं परमेश्वर द्वारा किया गया है। बलिदान के संदर्भ को नकारा नहीं जा सकता, लेकिन किसी एक विशेष बलिदान के साथ संबंध बनाना कठिन है। पुराने नियम के सभी बलिदानों ने जो पूर्वाभास दिया था, मसीह ने उसे पूर्ण रूप से पूरा किया। परमेश्वर का मेम्ना पाप को अंततः हरता है।

यह भी देखें इस्राएल के पर्व और त्योहार; प्रेरित यूहन्ना; यूहन्ना का सुसमाचार I

परमेश्वर की इच्छा

नये नियम का एक महत्वपूर्ण शब्द जो परमेश्वर की पसंद और संकल्प को दर्शाता है, जो लालसा से उत्पन्न होता है।

पौलुस ने इफिसियों 1:5, 9, और 11 में एक यूनानी शब्द का प्रयोग किया जो लालसा के विचार को व्यक्त करता है, यहाँ तक कि हृदय की लालसा भी। इस शब्द का आमतौर पर अनुवाद "इच्छा" के रूप में किया जाता है—"परमेश्वर की इच्छा।" लेकिन "इच्छा" शब्द प्राथमिक अर्थ को कम कर देता है। यूनानी शब्द *(थेलेमा)* मुख्य रूप से एक भावनात्मक शब्द है और केवल द्वितीय रूप से यह इच्छा का अर्थ देता है। "परमेश्वर की इच्छा" का अर्थ उतना ज्यादा "परमेश्वर का इरादा" नहीं जितना कि "परमेश्वर के हृदय की लालसा" है। परमेश्वर का एक इरादा, एक उद्देश्य, एक योजना है। इसे यूनानी में प्राथिसिस कहा जाता है (देखें इफि 1:11), और इसका शाब्दिक अर्थ है "पहले से योजना बनाना" (जैसे एक नक्शा)। यह योजना परमेश्वर की सलाह से बनाई गई थी (यूनानी में बोउले कहा जाता है, इफि 1:11)। हालांकि, योजना और सलाह के पीछे सिर्फ एक योजना बनाने वाला व्यक्ति नहीं था बल्कि एक हृदय था—प्रेम और भले अभिप्राय का हृदय। इसलिए, पौलुस ने "परमेश्वर के हृदय के भले अभिप्राय" के बारे में बात की (इफि 1:5)। पौलुस ने यह भी कहा, "उन्होंने हमें अपने हृदय की लालसा के रहस्य को प्रकट किया, अपने भले अभिप्राय के अनुसार जो उन्होंने उसमें निर्धारित किया" (v 9)। वास्तव में, परमेश्वर ने सभी चीजों को अपने हृदय की लालसा या इच्छा की सलाह के अनुसार संचालित किया (v 11)।

परमेश्वर के अनन्त उद्देश्य की प्रेरणा उनके हृदय की लालसा से उत्पन्न हुआ, और उनके हृदय की लालसा यह थी कि उनके एकमात्र पुत्र के समान कई पुत्र और पुत्रियाँ हों (देखें रोम 8:26–28)। प्रेम में, उन्होंने कई लोगों को इसमें भाग लेने के लिए पूर्वनिर्धारित किया—उनकी अपनी योग्यता के कारण नहीं, बल्कि पुत्र के आधीन होने के कारण (इफि 1:4–5)। ध्यान दें कि इफिसियों 1 में पौलुस कितनी बार विश्वासियों की स्थिति "मसीह में" के बारे में चर्चा करते हैं। उसके (पुत्र) बाहर, कोई भी परमेश्वर का पुत्र या पुत्री नहीं हो सकता और कोई भी पिता को मनभावन नहीं हो सकता। कई पुत्र और पुत्रियाँ अपने सभी ईश्वरीय विशेषाधिकार अपने प्रिय को समर्पित करते है, क्योंकि वे उसमें अनुग्रहित और उसमें चुने

हुए हैं (v 6)। इस प्रकार, पूर्वनिर्धारण और चयन परमेश्वर की इच्छा के विषय है।

यह भी देखें चुने हुए, चुनाव; पूर्वनिर्धारण।

परमेश्वर की उपस्थिति

परमेश्वर की आत्मिक सत्ता का प्रकट होना। चूँकि परमेश्वर आत्मा हैं, विश्वासियों को उनकी अदृश्य उपस्थिति का अनुभव होता है। परमेश्वर स्वयं को अन्य तरीकों से भी प्रकट करते हैं। वे प्रकृति में प्रकट होते हैं, विशेष रूप से विनाशकारी शक्तियों में—आग, ज्योति, और भूकम्प में (1 रा 19:11–13)। वे मनुष्य रूप में भी प्रकट होते हैं (उत 18; 32:22–32)। इसलिए परमेश्वर, जिन्हें देखा नहीं जा सकता, उन्होंने स्वयं को प्रकट करने के तरीके चुने हैं।

पुराने नियम में

प्रभु का दूत

प्रभु का दूत परमेश्वर का प्रतिनिधि और इस्राएल का विशेष सहायक था, यद्यपि ऐसा नहीं कहा गया है कि प्रत्येक प्रसंग में एक ही दूत अभिप्रेत है (निर्ग 14:19; 23:20; 33:2)।

दूत के गायब होने के बाद, हागर ने जोर देकर कहा कि उसने स्वयं परमेश्वर को देखा था (उत 16:13)। याकूब के अनुभव में दूत खुद को परमेश्वर के साथ पहचाना (31:11–13); जबकि उत 21:18, 22:11, गिन 22:35 में, परमेश्वर की उपस्थिति दूत में "मैं" के रूप में प्रकट होती है। निर्ग 12:23 और उत 48:15–16 में भी परमेश्वर और दूत के बीच भी उतार-चढ़ाव है। यहाँ परमेश्वर अस्थायी रूप से दूत के रूप में खुद को अवतरित कर रहे थे, अपने लोगों को आश्वस्त करते हुए कि वे तुरन्त उनके साथ उपस्थित हैं।

परमेश्वर की महिमा

महिमा वह है जो परमेश्वर अपने अधिकार में रखते हैं, उनके स्वभाव का एक दृश्यमान विस्तार, उनकी ईश्वरीय उपस्थिति का एक "ठोस" रूप। आकाश परमेश्वर की उपस्थिति का एक दृश्य रूप हैं (भज 8; 19:1–6; 136:5), क्योंकि वे उसकी महिमा हैं। वह महिमा जो इस्राएल को सीनै पर भस्म करने वाली अग्नि के रूप में दिखाई दी (निर्ग 29:43), उसने मिलाप वाले तम्बू को भर दिया (40:34–38)। इसके द्वारा परमेश्वर ने मिलाप वाले तम्बू को अपनी उपस्थिति का स्थान के रूप में पवित्र किया। यशायाह 6 में महिमा ईश्वरीय उपस्थिति की सामान्य अभिव्यक्ति के रूप में प्रकट होती है। यहेजकेल में महिमा परमेश्वर के समान है (यहेज 9:3–4)। सम्पूर्ण पुराने नियम में परमेश्वर की महिमा वह है जो परमेश्वर की उपस्थिति और निकटता को उनके अपने लोगों के लिए दृश्यमान बनाती है।

परमेश्वर का मुख

पुराने नियम में "उपस्थिति" का उपयोग इब्रानी शब्द "चेहरे" के लिए किया जाता है; जब "चेहरा" को एक पूर्वसर्ग के साथ जोड़ा जाता है, तो इसका अर्थ होता है "उपस्थिति में।" उत्पत्ति 32:30 में याकूब ने परमेश्वर को "आमने-सामने" देखा। एक पुरुष का व्यक्तित्व और चरित्र उसके चेहरे पर प्रकट होते हैं। इस अर्थ में, एक पुरुष का चेहरा ही पुरुष होता है। इसलिए, "उसकी उपस्थिति [चेहरे] का दूत" (यशा 63:9) का अर्थ हो सकता है "दूत जो उनका चेहरा है," क्योंकि भविष्यद्वक्ता ने यह पहचान करने का इरादा किया हो सकता है। परमेश्वर का चेहरा परमेश्वर के अनुग्रह का प्रकाशन है। इसलिए, जब वे अपना चेहरा छुपाते हैं, तो वे अपना अनुग्रह रोक रहे होते हैं। लेकिन जब वे अपना चेहरा चमकाते हैं (भज 31:16), तो आशीष होता है (भज 44:3)। परमेश्वर का चेहरा, तब, परमेश्वर की उपस्थिति है (निर्ग 33:14)। परमेश्वर के पवित्रस्थान में प्रार्थना करना "परमेश्वर का चेहरा खोजना" था (भज 24:6), उनकी व्यक्तिगत उपस्थिति। वास्तव में, यह इस्राएल में मन्दिर की आराधना और निजी प्रार्थना का सार है (भज 63:1–3; भज 100:2)। परमेश्वर की आशीष इस में थी कि उनका मुख उन पर चमकता था (गिन 6:25; भज 80:3, 7, 19)।

परमेश्वर का नाम

सेमियों के मध्य, नाम और व्यक्ति का समानता करना एक सामान्य धारणा थी। इसी प्रकार, परमेश्वर का नाम स्वयं परमेश्वर के लिए प्रयुक्त होता था, जो उसके प्रकाशन में उसकी सक्रियता का प्रतीक था। मनुष्य की परमेश्वर की आराधना को परमेश्वर के दिव्य नाम से जोड़ना उनके संचालन का माध्यम था (भज 44:5; 89:24; यशा 30:27), परमेश्वर की शक्ति के लिए एक पदनाम जो सार्वभौमिक रूप से सहायता और ऊर्जा का विकिरण करता है। परमेश्वर अपने नाम के द्वारा कार्य कर सकते थे। प्रभु के अधिकार और शक्ति के दूत ने कार्य किया क्योंकि परमेश्वर का नाम उसमें था (निर्ग 23:20–21)। ईश्वरीय नाम के धारक के रूप में, उन्होंने परमेश्वर की छिपी उपस्थिति को वास्तविक बनाया। मन्दिर नाम का निवास स्थान था (1 रा 11:36), न केवल इसलिए कि वहाँ परमेश्वर का नाम पुकारा जाता था बल्कि इसलिए भी कि परमेश्वर की उपस्थिति—परमेश्वर स्वयं—वहाँ निवास करते थे।

परमेश्वर का आत्मा

पवित्र आत्मा में, सर्वोत्कृष्ट परमेश्वर अपने लोगों के निकट आते हैं। आत्मा वह माध्यम हैं जिनके द्वारा परमेश्वर की उपस्थिति उनके लोगों के बीच वास्तविक बनती है (यशा 63:11–14; जक 7:12) और जिनके द्वारा परमेश्वर के भेंट और शक्तियाँ उनके बीच कार्य करती हैं (2 इति 15:1; 20:14; 24:20; जक 4:6; 6:1–8)। आत्मा परमेश्वर की

उपस्थिति और शक्ति थे उनके लोगों के साथ—परमेश्वर स्वयं अपनी मौलिक प्रकृति के अनुसार कार्य करते हुए। बिना परमेश्वर के पवित्र आत्मा की सहायता के पापी परमेश्वर की उपस्थिति में नहीं रह सकता; पवित्र आत्मा से अलग होना परमेश्वर की उपस्थिति से अलग होना है (भज 51:11)। आत्मा के बिना, परमेश्वर और मनुष्यों के बीच संवाद संभव नहीं है।

नए नियम में

नए नियम में परमेश्वर की उपस्थिति का एक नया तरीका प्रकट होता है। यह यीशु मसीह, जो देहधारी वचन में हैं, कि परमेश्वर अपने लोगों के बीच उपस्थित हैं (यूह 1:14–18; 17:6, 26)। यीशु का उद्देश्य मानवता पर परमेश्वर को मानवता के सामने प्रकट करना था। उन्होंने यह अपने पूरे जीवन के कार्यों के साथ-साथ अपने शब्दों के माध्यम से किया। परमेश्वर के नाम का उनका प्रकटीकरण उनके अपने नाम में व्यक्त हुआ—यीशु ("प्रभु उद्धार है")। और यीशु के व्यक्ति में परमेश्वर के नाम का कार्य पूरा हुआ। मसीह नया मन्दिर था (यूह 1:14; 2:21; कुल 2:9)। वह परमेश्वर की तंबूवासी उपस्थिति का केंद्र था। लेकिन यह परमेश्वर की उपस्थिति के अनावरण की केवल पहली किस्त थी।

अब कलीसिया नए नियम में परमेश्वर का मन्दिर है। मसीहत मूल रूप से परमेश्वर की उपस्थिति और परमेश्वर के साथ संगति का धर्म है। मसीह का देह, "आत्मिक मन्दिर" (इफि 2:22), "जीवित पत्थरों" से बना है (1 पत 2:5), जो तेजस्वी परमेश्वर की उपस्थिति का निवास स्थान है।

और अब, एक व्यक्तिगत मसीही भी परमेश्वर का मन्दिर हैं (1 कुरि 3:16–17; 6:19; 2 कुरि 6:16)। परमेश्वर विशेष रूप से मसीही की आत्मा में उपस्थित हैं; वहाँ परमेश्वर राज्य करते हैं, क्योंकि वहाँ उनका राज्य है; वहाँ उनकी आराधना होती है, क्योंकि वहाँ उनकी महिमा और उनकी उपस्थिति ने आंतरिक अस्तित्व को मन्दिर में पवित्र किया है (देखें यूह 14:23)।

*यह भी देखें*परमेश्वर का अस्तित्व और गुण।

परमेश्वर की छवि

परमेश्वर से समानता, मसीही दृष्टिकोण से मनुष्य की प्रकृति के संबंध में की जाने वाली सबसे बुनियादी पुष्टि है। मनुष्य प्राणियों में अद्वितीय हैं क्योंकि वे परमेश्वर के समान हैं, इसलिए परमेश्वर के साथ संगति और सहभागिता कर सकते हैं।

उत्पत्ति 1:26–27 सिखाता है कि परमेश्वर ने मनुष्य और स्त्री को अपने "स्वरूप" और "समानता" में बनाने का निर्णय लिया और उन्हें जंतुओं की सृष्टि पर अधिकार दिया। सृष्टि के इस विवरण में प्रयुक्त दोनों शब्दों का उल्लेख नए नियम में भी मिलता है और वे आपस में जुड़े हुए अर्थों की झलक देते हैं, हालांकि अब उनके बीच का अंतर धर्म-शास्त्रीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं माना जाता।

क्योंकि उत्पत्ति 2:7 स्पष्ट रूप से कहता है कि *मनुष्य* एक जीवित प्राणी बन गया, बाइबल यह दृष्टिकोण प्रस्तुत नहीं करती कि पहले से जीवित प्राणी ने मानव रूप धारण किया और न ही यह सुझाव देती है कि परमेश्वर की छवि किसी निम्न जीवन रूप से विकसित हुई। जिस क्षण पुरूष और महिला जीवित प्राणी बने, वे परमेश्वर की छवि थे। पुरूष और स्त्री दोनों ही इस समानता को परमेश्वर के साथ साझा करते हैं (उत 1:27)।

अन्य पद जिसमें बताया गया है कि मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया है, वे हैं उत्पत्ति 5:1, 9:6, 1 कुरिन्थियों 11:7, और याकूब 3:9। इफिसियों 4:24 और कुलुस्सियों 3:10, जो मानवता के उद्धारात्मक पुनः सृजन का उल्लेख करते हैं, लेकिन इन पदों को सामान्य रूप से मानवता की परमेश्वर के साथ मूल समानता की समझ के लिए सीधे प्रासंगिक माना जाता है। यद्यपि बाइबल में मनुष्यों को परमेश्वर के स्वरूप में व्यक्त करने के स्पष्ट संदर्भ अपेक्षाकृत कम हैं, परंतु यह सत्य स्वयं परमेश्वर और मनुष्यों के बीच के पूरे संबंध का आधार है इसलिए यह पूरी बाइबल के विवरण की पूर्वधारणा है।

उत्पत्ति 1 में यह पुष्टि की गई है कि पुरूष और स्त्री को परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया था, यह अन्य किसी भी जीवित प्राणी के लिए नहीं की गई है। पशु, मछलियाँ और पक्षी इस विशेषाधिकार को साझा नहीं करते हैं। यह विवादित है कि क्या स्वर्गदूत परमेश्वर के स्वरूप में हैं, लेकिन कुछ धर्मशास्त्री ऐसा मानते हैं क्योंकि वे स्वरूप को नैतिक धार्मिकता में स्थित मानते हैं। हालांकि, इस संदर्भ में कोई स्पष्ट बाइबल कथन नहीं है।

भूमि की मिट्टी से हुई रचना के कारण, मानवजाति का पृथ्वी से एक स्पष्ट संबंध है। इसलिए यह अजीब नहीं है कि शरीर अपनी संरचना और कार्यों में, पृथ्वी के अन्य प्राणियों के साथ समानताएँ दिखाता हो, लेकिन मनुष्य अपने अस्तित्व के हर पहलू में अद्वितीय है; यह केवल मनुष्य का कोई भाग या मनुष्य की कोई क्षमता नहीं, बल्कि मनुष्य अपनी संपूर्णता में परमेश्वर का स्वरूप है। बाइबल की अवधारणा यह नहीं है कि छवि पुरूष और स्त्री के भीतर है, बल्कि यह है कि पुरूष और स्त्री परमेश्वर के स्वरूप *हैं*।

हालाँकि, जैसे मनुष्य का पृथ्वी के साथ संबंध उसके शरीर में सबसे स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, वैसे ही परमेश्वर का स्वरूप भी मनुष्यों को आत्मिक दृष्टिकोण से देखने पर सबसे अच्छी तरह से दिखाई देता है। इस बिंदु पर धर्मशास्त्रियों ने उन आत्मिक पहलुओं को गिनाने का प्रयास किया है जो मनुष्यों को परिभाषित करते हैं और उन्हें पशु सृष्टि से अलग करते हैं। तब परमेश्वर की छवि कुछ गुणों या गुणों के संयोजन में पाई

जाती है, जैसे- तर्कशीलता, इच्छा, स्वतंत्रता, ज़िम्मेदारी या इसी तरह। समकालीन धर्मशास्त्री गुणों को गिनाना पसंद नहीं करते और बाइबल इस तरह से परमेश्वर के स्वरूप को प्रस्तुत नहीं करती। फिर भी यह मनुष्यों का व्यक्तित्व है जो उन्हें पशुओं से अलग करता है और परमेश्वर के व्यक्तित्व का प्रतिबिंब है। पशुओं का अस्तित्व परमेश्वर *से* है, लेकिन मनुष्यों का अस्तित्व परमेश्वर *में* है, और वे उसकी संतान हैं (प्रेरि 17:28–29)।

परमेश्वर के स्वरूप के सिद्धांत का एक और प्रमुख पहलू इफिसियों 4:24 और कुलुस्सियों 3:10 से विकसित होता है। ये पद विश्वासियों की परमेश्वर की समानता में पुनः सृष्टि का वर्णन करते हैं—धार्मिकता, सत्य की पवित्रता और सच्चे ज्ञान में। दूसरे शब्दों में, पौलुस घोषणा करता है कि उद्धार पाए हुए मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप में पुनः सृजित होते हैं क्योंकि वे मसीह के स्वरूप में परिवर्तित होते हैं, जो परमेश्वर की निर्मल छवि को धारण करते हैं। जिस प्रकार पाप में गिरना परमेश्वर के स्वरूप पर प्रभाव डाले बिना नहीं था, वैसे ही पाप से उद्धार का प्रभाव भी मनुष्य को परमेश्वर के स्वरूप में प्रभावित करता है। इफिसियों और कुलुस्सियों में सृष्टिकर्ता परमेश्वर के स्वरूप में नवीनीकरण की बात होती है, लेकिन अन्य ग्रंथ मसीह के मध्यस्थीय पद के दृष्टिकोण से और भी अधिक विशिष्ट हो जाते हैं।

यीशु मसीह सर्वोपरि रूप से परमेश्वर का स्वरूप है (2 कुरि 4:4; कुल 1:15; इब्रा 1:3)। अक्सर इसे केवल मसीह की दिव्यता के संदर्भ के रूप में समझा जाता है। मसीह को देखना पिता को देखना है (यूह 14:9)। हालांकि, उद्धृत किए गए पदों में, यह अवतारित मध्यस्थ, अंतिम आदम है, जो कम से कम वह सब कुछ है जो पहले आदम के लिए परमेश्वर का उद्देश्य था। अवतार का अर्थ यह है कि यीशु वास्तव में मनुष्य है और मनुष्य होने के नाते वह वास्तव में परमेश्वर का स्वरूप है।

अंतिम आदम और नए वाचा के मध्यस्थ के रूप में, यीशु अपने लोगों को अपने ही स्वरूप, परमेश्वर के पुत्र के स्वरूप में ढालता है (रोम 8:29)। वह जो अपने भाइयों के समान पापी शरीर के स्वरूप में होकर, पाप का नाश करता है ताकि उसके भाई उसकी महिमा को प्रतिबिंबित कर सकें। वह प्रभु की आत्मा द्वारा महिमा से महिमा में उसी स्वरूप में बदल दिया जाता है (2 कुरि 3:18)। विश्वासियों को "मसीह को धारण करना" है (रोम 13:14; गला 3:27; पुष्टि करें इफि 4:24; कुल 3:10, "परमेश्वर के स्वरूप में नया मनुष्यत्व")। एक क्रिया जिसे विश्वासियों में मसीह की रचना के रूप में भी वर्णित किया गया है (गला 4:19)।

यीशु मसीह के स्वरूप के अनुरूप होना, पवित्रीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से प्राप्त होता है, जो अंततः पुनरुत्थान में पूर्ण होती है। केवल तभी बदल जाता है जब तक कि वह मसीह के महिमामय शरीर के समान न हो जाए (फिलि 3:21)। मसीह के स्वरूप में पुनर्स्थापन, परमेश्वर के स्वरूप में सृजन से परे जाता है, क्योंकि तब सांसारिक स्वरूप को स्वर्गीय स्वरूप में बदल दिया जाता है (1 कुरि 15:49)।

यह भी देखें पुरूष; स्त्री।

परमेश्वर की मुहर, पशु का छाप

परमेश्वर की मुहर, पशु का छाप

लोगों पर परमेश्वर या मसीह विरोधी द्वारा लगाया गया प्रतीक चिन्ह। हालांकि यह वाक्यांश प्रकाशितवाक्य की पुस्तक तक सीमित है, एक चिन्ह का उपयोग यहेजकेल 9:4–6 में किया गया था। अपने दर्शन में यहेजकेल ने यरूशलेम के निवासियों को उनकी दुष्टता के लिए मारा गया देखा, सिवाय उनके जिनके माथे पर परमेश्वर ने एक चिन्ह रखा था। यह चिन्ह पहचान के लिए था ताकि सुरक्षा प्रदान की जा सके।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में इसका प्रयोग काफी हद तक समान है। यह विचार प्रकाशितवाक्य 7:3 में शुरू होता है (हालांकि यहाँ शब्द नहीं आता), जहाँ परमेश्वर के 144,000 सेवकों के माथे पर मुहर लगाई जाती है ताकि उन्हें परमेश्वर के आने वाले क्रोध से बचाया जा सके। इस मुहर का फिर से उल्लेख प्रकाशितवाक्य 9:4 में किया गया है, जहाँ यह बताया गया है कि पांचवीं तुरही के शैतानी टिड्डियाँ उन लोगों को नुकसान नहीं पहुंचाएंगे जिनके पास परमेश्वर की मुहर है।

प्रकाशितवाक्य 13 में विशेष वाक्यांश "पशु के छाप" का उपयोग किया गया है। संदर्भ यूहन्ना के दो पशुओं के दर्शन का है। समुद्र से आने वाला पशु (13:1–10) पृथ्वी के निवासियों पर राजनीतिक शक्ति रखने वाले मसीह विरोधी का प्रतीक है। पृथ्वी से आने वाला पशु (पद 11–18) मसीह विरोधी के सहायक का प्रतीक है, जो मसीह विरोधी की सार्वभौमिक आराधना को सुनिश्चित करने के लिए समर्पित धार्मिक नेतृत्व है। यह झूठे धार्मिक अगुवे सभी को उनके दाहिने हाथ या माथे पर चिह्न (मसीह विरोधी का), या नाम (पुष्टि करें, पद 12), या मसीह विरोधी के नाम की संख्या (पद 16–17) प्राप्त करने का कारण बनते है। यह पशु के छाप को किसी व्यक्ति के लिए भौतिक अस्तित्व में व्यापार या आर्थिक लेन-देन में शामिल होने के लिए आवश्यक है। शायद यह ऐसे लोगों की पहचान शहादत के लिए भी करता है (पद 7–10)। यह परमेश्वर की मुहर के विपरीत है जो परमेश्वर के सेवकों को अध्याय 7:1–8 में चिह्नित करता है (14:1)। इस प्रकार इस दर्शन में मानव जाति को दो वर्गों में विभाजित किया गया है—जो मसीह के हैं और जो मसीह विरोधी के हैं।

प्रकाशितवाक्य 13:18 कलीसिया के लिए एक चुनौती प्रस्तुत करता है कि उसमें बुद्धि हो और यह पहचान सके कि वह छाप या पशु की संख्या क्या है। दो बातें कही गई हैं। पहला, यह किसी पुरुष का है या किसी पुरुष को संदर्भित करता है।

दूसरा, उसकी संख्या 666 (या कुछ पांडुलिपियों के अनुसार 616) है।

इस संख्या की व्याख्या पर बाइबल विद्वानों द्वारा विस्तार से चर्चा की गई है, लेकिन किसी भी विद्वान ने सर्वसम्मति नहीं बनाई है। कई लोगों का मानना है कि यह पहले शताब्दी का एक गुप्त (इब्रानी) संदर्भ था जो नीरो से संबंधित था। प्रारंभिक पूर्ति के उस संदर्भ में, यह बस मसीहीयों के लिए नास्तिक नीरो के वास्तविक स्वभाव को पहचानने का आह्वान होगा जो मसीह विरोधी जैसा था ताकि उन्हें अपनी निष्ठा देने से इनकार करने के लिए प्रेरित करे। संभवता यह पहचान इंगित करती है कि पशु की संख्या या छाप मसीह विरोधी के प्रति किसी की निष्ठा की अभिव्यक्ति है जैसा कि सम्राट की आराधना के पंथ में व्यक्त किया गया है। इस प्रकार, इसका उद्देश्य आराधना की क्रियाकलाप करना होगा, न कि किसी के शरीर पर कोई वास्तविक संख्या अंकित करना।

जब भविष्यद्वाणी पूरी तरह से मसीह-विरोधी द्वारा पूरी हो जाती है, तो विश्वासियों को बुद्धिमान होना चाहिए और किसी भी प्रकार की परीक्षा या निष्ठा के माध्यम से उन्हें अपनी वफादारी देने से इनकार करना चाहिए।

विश्वासियों की दृढ़ता का महत्व प्रकाशितवाक्य 14 में दिखाया गया है, जहां 144,000 विश्वासयोग्य, जिनके माथे पर मसीह और परमेश्वर का नाम है, मेमने के साथ सिय्योन पर्वत पर विजयी खड़े दिखाई देते हैं। इस दृढ़ता को परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने और यीशु के विश्वास को बनाए रखने के रूप में बताया गया है (14:12)। पशु पर विजय पाने वालों का ऐसा ही दर्शन15:2–4 में दिया गया है। यहां उन्हें परमेश्वर के सामने खड़े होते हुए, मूसा का गीत और मेमने का गीत गाते हुए दिखाया गया है।

प्रकाशितवाक्य में पशु के चिन्ह के चार और संदर्भ हैं। स्वर्गदूत चेतावनी देते हैं कि जो कोई उस पशु और उसकी मूर्ति की पूजा करे, और अपने माथे या अपने हाथ पर उसकी छाप ले, वे परमेश्वर के क्रोध के कटोरे से पिएंगे (14:9–11)। जब पहला स्वर्गदूत क्रोध का कटोरा उंडेलता है, तो यह उन पर गिरता है जिन पर पशु की छाप थी, और जो उसकी मूर्ति की पूजा करते थे (16:2)। पशु और झूठे भविष्यद्वक्ता के विनाश के समय, बाद वाले को उन लोगों को धोखा देने वाला बताया गया है जिन्होंने पशु का छाप लिया और उसकी मूर्ति की पूजा की (19:20)। अंत में, जो लोग मसीह के साथ हजार वर्ष तक राज्य करेंगे,ये वे हैं जिन्होंने न उस पशु की, और न उसकी मूर्ति की पूजा की थी, और न उसकी छाप ली थी (20:4)।

सारांश में, वाक्यांश "पशु के छाप," या संख्या 666, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में मसीह विरोधी के अनुयायियों की पहचान को संदर्भित करने का एक तरीका है। विश्वासियों को चेतावनी दी जाती है कि वे धोखा खाने वालों का हिस्सा न बनें बल्कि मेमने के प्रति दृढ़ और विश्वासयोग्य बने रहें और अपने माथे पर उनका नाम धारण करें।

*यह भी देखें*मसीह-विरोधी; पशु #4।

परमेश्वर की संतान

*देखें*परमेश्वर के पुत्र और पुत्रिया।

परमेश्वर के आदेश

*देखें*पूर्वनिर्धारण।

परमेश्वर के गुण

परमेश्वर के गुण, उत्कृष्टताएँ और पूर्णताएँ। *देखें*परमेश्वर का अस्तित्व और गुण।

परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियाँ

यह अभिव्यक्ति उन मनुष्यों को दर्शाती है जो परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं और उनके परिवार का हिस्सा बन गए हैं। जब बाइबल परमेश्वर के पुत्रों की बात करती है, तो इसका उद्देश्य महिलाओं को बाहर करना नहीं है। "पुत्र" शब्द सभी विश्वासियों को शामिल करता है। लेकिन वचन में लगभग हमेशा "पुत्र" शब्द का उपयोग आया है—नए नियम में एक अपवाद के साथ, 2 कुरिन्थियों 6:18, जिसमें परमेश्वर के लोगों को "बेटे और बेटियाँ" कहा गया है।

शुरुआत से ही, परमेश्वर पिता की इच्छा थी कि उसके प्रिय पुत्र की छवि और समानता को साझा करने वाले कई पुत्र और पुत्रियाँ हों। यह कहा जा सकता है कि उसके एक पुत्र ने उन्हें इतनी संतुष्टि दी कि उन्होंने और अधिक की लालसा की। यह ब्रह्मांड की सृष्टि और विशेष रूप से मनुष्य प्राणियों की सृष्टि के लिए प्रेरणा हो सकती है (देखें उत 1:26–27)। नीतिवचन 8 इंगित करता है कि परमेश्वर मनुष्यों के पुत्रों से प्रसन्न थे। यह फिर से नए नियम में व्यक्त किया गया है, विशेष रूप से इफिसियों की पुस्तक में। इफिसियों के आरंभिक पद इस बात को प्रतिध्वनित करते हैं: परमेश्वर के हृदय की लालसा थी कि वे अपने पुत्र के माध्यम से और उसमें कई पुत्र प्राप्त करें। ये कई पुत्र, अद्वितीय पुत्र के साथ मिलकर, पिता को महान महिमा और संतुष्टि प्रदान करेंगे।

पौलुस ने इफिसियों 1:5, 9, और 11 में एक यूनानी शब्द का उपयोग किया जो लालसा का विचार व्यक्त करता है, यहां तक कि हृदय की लालसा भी। इस शब्द का सामान्यतः अनुवाद "इच्छा" के रूप में किया जाता है—"परमेश्वर की इच्छा।" लेकिन अंग्रेजी शब्द "इच्छा" प्राथमिक अर्थ को छुपा देता है। यूनानी शब्द (थेलेमा) मुख्यतः एक भावनात्मक शब्द

है और द्वितीयक रूप से इच्छाशक्ति से संबंधित है। परमेश्वर की इच्छा उतनी परमेश्वर की मंशा नहीं है जितनी कि परमेश्वर के हृदय की लालसा है। परमेश्वर की एक मंशा, एक उद्देश्य, एक योजना है। इसे यूनानी में प्रॉथेसिस कहा जाता है (देखें इफि 1:11), और इसका शाब्दिक अर्थ है "पहले से बाहर रखना" (जैसे एक योजना)। यह योजना परमेश्वर की सलाह से बनाई गई थी (यूनानी में इसे बोले कहा जाता है, इफि 1:11)। लेकिन योजना और सलाह के पीछे निर्दोष एक योजना बनाने वाला वक्ती नहीं था बल्कि प्रेम और अच्छे आनंद का एक हृदय था। इसलिए, पौलुस "यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों" के बारे में बात करते हैं (वचन 5)। पौलुस यह भी कहते हैं, "उसने अपनी इच्छा का भेद, अपने भले अभिप्राय के अनुसार हमें बताया, जिसे उसने अपने आप में ठान लिया था," (वचन 9)।

परमेश्वर के अनन्त उद्देश्य की प्रेरणा एक हृदय की लालसा से आई, और उस हृदय की लालसा यह थी कि उनके इकलौते पुत्र के समान कई पुत्र हों (देखें रोम 8:26–28)। प्रेम में, उन्होंने कई लोगों को इस "पुत्रत्व" में भाग लेने के लिए पूर्वनियत किया—उनकी अपनी योग्यता से नहीं, बल्कि पुत्र के साथ एकीकृत होने के कारण (इफि 1:4–5)। ध्यान दें कि इफिसियों 1 में पौलुस कितनी बार विश्वासियों की स्थिति "उसमें" के रूप में बोलते हैं। उनके (पुत्र) के बाहर, कोई भी परमेश्वर का पुत्र नहीं हो सकता और कोई भी पिता को मनभावनी नहीं हो सकता। कई पुत्र और पुत्रियाँ अपने सभी ईश्वरीय विशेषाधिकार प्रियतम के कारण पाते हैं, क्योंकि उन्हें उनके माध्यम से अनुग्रह दिया गया है (वचन 6)। यदि परमेश्वर को अपने प्रिय पुत्र से संतुष्टि न होती, तो मनुष्य की सृष्टि की प्रेरणा ही न मिलती। मनुष्य इसलिए अस्तित्व में हैं क्योंकि परमेश्वर अनेक पुत्र और पुत्रियाँ प्राप्त करना चाहता था, जिनमें से प्रत्येक परमेश्वर के अद्वितीय पुत्र की छवि धारण करता हो। लोग परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं और उसे संतुष्ट करते हैं क्योंकि वे उससे जुड़ जाते हैं जिसने हमेशा उसे संतुष्ट किया है। पुत्र के बिना, किसी का भी पहुँच पिता तक नहीं है। लेकिन पुत्र के छुटकारे के कारण, सभी विश्वासियों को परमेश्वर का पुत्र बनने का अधिकार है (यूह 1:12) और अब पुत्र के माध्यम से पिता तक पहुँच सकते हैं (14:6)।

परमेश्वर के लोग

परमेश्वर में विश्वास रखने वाले सामूहिक दल के लिए उपाधि। यह इस्राएल के विश्वास की एक सामान्य धारा है कि वे परमेश्वर के लोग बने क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें अपनी संपत्ति के रूप में चुना (निर्ग 6:6–7; 19:5; व्य.वि. 7:6; 14:2; 26:18)। वाचा का विचार इससे जुड़ा हुआ है (लैव्य 26:9–12)। भविष्यद्वक्ताओं के प्रचार में, जहाँ परमेश्वर का न्याय अक्सर पूर्ण विनाश की ओर ले जाता है, वहाँ परमेश्वर के लोगों की पुनःस्थापना और पुनःसृजन का दर्शन भी है (यिर्म 32:37; होश 2:1, 23; यहेज 11:20; 36:28)। बँधुआई के बाद यहूदी धर्म के विकास में यह विचार उभरता है कि केवल भविष्य का इस्राएल, अंतिम मसीहाई समुदाय, ही उस शब्द के पूर्ण अर्थ में "परमेश्वर के लोग" होंगे।

यह नए नियम में कई अंशों से स्पष्ट है कि कलीसिया स्वयं को परमेश्वर के भविष्य के लोगों के रूप में जानती थी। सबसे स्पष्ट अंश 1 पतरस 2:9 है: "पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज पदधारी, याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और परमेश्वर की निज प्रजा।" "याजकों का समाज" और "पवित्र जाति" के वाक्यांश निर्गमन 19:6 से लिए गए हैं, जो परमेश्वर के राज्य में सहभागिता और संसार में परमेश्वर के लोगों की याजकीय सेवा को प्रबलता से व्यक्त करते हैं। जैसे मूल परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर के पराकर्मी उद्धार के कार्यों का प्रचार करने के लिए बुलाया गया था (यशा 43:20–21), वैसे ही नए लोगों, परमेश्वर की निज प्रजा को "परमेश्वर के अद्भुत कार्यों की घोषणा करने के लिए बुलाया गया है, जिसने तुम्हें अंधकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया" (1 पत 2:9)।

यह भी देखें मसीह की देह I

परमेश्ववर का आत्मा

क्रियाशील परमेश्वर का वर्णन, गति में परमेश्वर। शब्द "आत्मा" (इब्रानी, रूआख ; यूनानी, न्यूमा) प्राचीन काल से लोगों में, उनके ऊपर और उनके आसपास काम करने वाली ईश्वरीय शक्ति के अनुभव का वर्णन और व्याख्या करने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है।

पुराने नियम में

प्रारंभिक इब्रानी लेखन में "आत्मा" के उपयोग में तीन मूलअर्थ स्पष्ट हैं: यह परमेश्वर की ओर से एक हवा थी, यह जीवन की सांस थी, और यह उत्साह की आत्मा थी।

पहला, यह परमेश्वर की ओर से श्वास थी (वही इब्रानी शब्द जिसका अनुवाद उत 1:2 में "आत्मा" के रूप में किया गया है) जिसने बाढ़ के पानी को कम कर दिया (8:1)। मिस्र पर टिड्डियों को भेजने के लिए परमेश्वर की ओर से हवा चली (निर्ग 10:13) और इस्राएल के शिविर पर बटेरों को उड़ाया। उसके नथनों की फूंक से निर्गमन के समय लाल समुन्द्र दो भाग हो गया (14:21)।

दूसरा, यह परमेश्वर की श्वास थी जिसने मनुष्य को जीवित प्राणी बनाया (उत 2:7)। यह यहूदी विश्वास की सबसे प्रारंभिक धारणाओं में से एक है कि मनुष्य केवल उनके भीतर ईश्वरीय श्वास या आत्मा की हलचल के कारण ही जीवित रहते हैं (उत 6:3; अय्यू 33:4; 34:14–15; भज 104:29–30)। बाद में, ईश्वरीय आत्मा और मानव आत्मा के बीच एक स्पष्ट अंतर बनाया गया। लेकिन शुरुआती अवस्था में यह सभी

ईश्वरीय शक्ति के विभिन्न रूपों मे देखे गए थे। जो सभी जीवन का स्रोत है—पशु के साथ-साथ मानव भी (उत 7:15, 22; देखें सभो 3:19–21)।

तीसरा, ऐसे अवसर थे जब यह ईश्वरीय शक्ति किसी व्यक्ति को पूरी तरह से अपने अधीन कर लेती और उस पर कब्जा कर लेती थी, जिससे उसके शब्द या कार्य सामान्य व्यवहार से बहुत अधिक हो जाते थे। ऐसे व्यक्ति को स्पष्ट रूप से परमेश्वर के उद्देश्य के प्रतिनिधि के रूप में चिह्नित किया जाता था और उसे सम्मान दिया जाता था। ऐसा प्रतीत होता है कि पूर्व राजशाही काल में अगुवो को इसी प्रकार पहचाना जाता था—ओत्नीएल (न्याय 3:10), गिदोन (6:34), यिप्तह (11:29), और पहले राजा, शाऊल (1 शम 11:6), भी। इसी तरह, प्रारंभिक भविष्यवक्ता वे थे जिनकी प्रेरणा परमानंद में आई थी (1 शमू 19:20–24)।

इब्रानी विचार के प्रारंभिक चरणों में, परमानंद अनुभव को ईश्वरीय शक्ति का सीधा प्रभाव के रूप में माना जाता था। यह तब भी सच था जब परमानंद को स्वभाव में बुरा माना गया था, जैसा कि आत्मा द्वारा शाऊल के जब्त होने के मामले में था (1 शमू 16:14–16)। परमेश्वर की ओर से आत्मा बुराई के लिए भी हो सकती है और अच्छाई के लिए भी हो सकती है (देखें न्या 9:23; 1 रा 22:19–23)।

भविष्यवक्ताओं के लेखों में

यशायाह के लिए, आत्मा वह थी जो परमेश्वर की विशेषता थी और उसे और उसके कार्यों को मानवीय मामलों से अलग करती थी (यशा 31:3)। बाद में, विशेषण "पवित्र" उस आत्मा को दर्शाने के लिए आया जो किसी भी अन्य आत्मा, मानव या ईश्वरीय से परमेश्वर की आत्मा को अलग करता था (भज 51:11; यशा 63:10–11)।

झूठी भविष्यवाणी की समस्या ने इस खतरे को उजागर किया कि हर संदेश जो परमानंद में दिया गया था, वह प्रभु का वचन था। इस प्रकार, भविष्यवाणी के परीक्षण में संदेश की सामग्री या भविष्यवक्ता के जीवन के स्वभाव का मूल्यांकन किया गया, न कि प्रेरणा की डिग्री या गुणवत्ता का (देखें व्य. वि. 13:1–5; 18:22; यिर्म 23:14; मी 3:5)। सच्ची और झूठी प्रेरणा के बीच भेदभाव करने की आवश्यकता और परमेश्वर के वचन को केवल परमानंद भविष्यवाणी से अलग करने की भावना आठवीं और सातवीं शताब्दी ईसा पूर्व के प्रमुख भविष्यवक्ताओं ने अपनी प्रेरणा को आत्मा के रूप मे माना।

बंधुआई और बंधुआई के बाद के लेख

बंधुआई और बंधुआई के बाद साहित्य में, आत्मा की भूमिका दो प्रमुख कार्यों तक सीमित है: भविष्यवाणी करने वाली आत्मा और आने वाले युग की आत्मा।

बाद के भविष्यवक्ताओं ने फिर से आत्मा के बारे में स्पष्ट रूप से भविष्यवाणी की प्रेरणा के रूप में बात की (देखें यहे 3:1–4, 22–24; हाग 2:5; जक 4:6)। जैसे ही उन्होंने पूर्व-बंधुआई काल की ओर देखा, तो इन भविष्यवक्ताओं ने स्वतंत्र रूप से "पूर्व भविष्यवक्ताओं" की प्रेरणा को भी आत्मा से जोड़ा (जक 7:12)।

भविष्यवाणी के प्रेरक के रूप में आत्मा की भूमिका को बढ़ाने की यह प्रवृत्ति पुराने नियम और नए नियम के बीच के समय में लगातार मजबूत होती गई, जब तक कि रब्बीय यहूदी धर्म में आत्मा लगभग विशेष रूप से उन भविष्यवाणी लेखों की प्रेरक मानी जाती थी जिन्हे अब पवित्रशास्त्र माना जाता है।

बंधुआई और उसके युगों के दौरान आत्मा की भूमिका की दूसरी समझ यह थी कि आत्मा आने वाले युग में परमेश्वर की शक्ति का प्रकटीकरण होगी। दिव्य शक्ति की अंतिम शुद्धिकरण और एक नए सिरे से सृष्टि की वह भविष्यवाणी मुख्य रूप से यशायाह की भविष्यवाणियों में निहित है (यशा 4:4; 32:15; 44:3–4)। यशायाह आत्मा द्वारा अभिषिक्त व्यक्ति के बारे में बोलते हैं जो पूर्ण और अंतिम उद्धार को पूरा करेगा (11:2; 42:1; 61:1)। अन्यत्र, वही लालसा आत्मा को पूरे इस्राएल में स्वतंत्र रूप से वितरित किए जाने के संदर्भ में व्यक्त की गई है (यहे 39:29; यो 2:28–29; जक 12:10) नए वाचा में (यिर्म 31:31–34; यहे 36:26–27)।

यीशु से पहले के काल में, आत्मा की समझ जैसे भविष्यवाणी की आत्मा और आने वाले युग की आत्मा के रूप में समझ व्यापक रूप से इस सिद्धांत के रूप में विकसित हो गई थी कि आत्मा अब वर्तमान में अनुभव नहीं की जा सकती। आत्मा को पहले भविष्यवाणी लेखों का प्रेरक माना जाता था, लेकिन हाग्गै, जकर्याह, और मलाकी के बाद, आत्मा ने अपना प्रभाव वापस ले लिया था (1 मक 4:44–46; 9:27; 2 बार 85:1–3; भज 74:9; जक 13:2–6 भी देखें)। आत्मा को मसीहा के युग में फिर से जाना जाएगा, लेकिन इस बीच आत्मा इस्राएल से अनुपस्थित थी। यहाँ तक कि महान हिल्लेल (विद्वान यहूदी नेता और शिक्षक, 60? ईसा पूर्व-20? ईस्वी), जो यीशु के समकालीन थे, ने भी आत्मा को प्राप्त नहीं किया था—हालाँकि यदि कोई आत्मा के योग्य था, तो वे वही थे। एक परंपरा है कि हिल्लेल और अन्य बुद्धिमान पुरुषों की बैठक में, स्वर्ग से आवाज आई, "यहां उपस्थित लोगों में से एक ऐसा है जो पवित्र आत्मा के विश्राम का हकदार होता, यदि उसका समय इसके योग्य होता।" सभी बुद्धिमान पुरुषों ने हिल्लेल की ओर देखा। आत्मा की इस स्वीकृत कमी का परिणाम यह हुआ कि आत्मा वास्तव में व्यवस्था के अधीन हो गई।आत्मा व्यवस्था का प्रेरक था, लेकिन चूंकि आत्मा को अब सीधे अनुभव नहीं किया जा सकता था, इसलिए व्यवस्था आत्मा की एकमात्र आवाज बन गया। यह व्यवस्था और इसके आधिकारिक व्याख्याताओं का बढ़ता प्रभुत्व था जिसने यीशु के मिशन और प्रारंभिक मसीहीयत के प्रसार की पृष्ठभूमि प्रदान की।

नए नियम में

यदि हमें आत्मा पर नए नियम की शिक्षा को समझना है, तो हमें पुराने नियम के साथ इसकी निरंतरता और असंगति दोनों को पहचानना होगा। कई बिंदुओं पर नए नियम का उपयोग पुराने नियम की अवधारणाओं या अंशों की पृष्ठभूमि के बिना पूरी तरह से समझा नहीं जा सकता है। उदाहरण के लिए, यूह 3:8 ("हवा," "आत्मा"), 2 थिस्स 2:8 ("सांस"), और प्रका 11:11 ("जीवन की सांस") हमें "आत्मा" के मूल इब्रानी अर्थों की ओर ले जाती है। प्रेरि 8:39 और प्रका 17:3 और 21:10 में वही आत्मा की अवधारणा को दर्शाते हैं जो हमें 1 राजा 18:12, 2 राजा 2:16, और यहे 3:14 में मिलती है। नए नियम के लेखक आमतौर पर रब्बी के दृष्टिकोण को साझा करते हैं कि पवित्रशास्त्र के पीछे आत्मा का अधिकार है (देखें मर 12:36; प्रेरि 28:25; इब्रा 3:7; 2 पत 1:21)। मुख्य निरंतरता यह है कि नया नियम वह पूरा करता है जिसकी पुराने नियम लेखकों ने प्रतीक्षा की थी। उसी समय, मसीहीयत केवल यहूदी धर्म की पूर्ति नहीं है। यीशु का आगमन और उनके आत्मा का उनके विश्वासियों के भीतर निवास करना नए विश्वास को कुछ नया औरअलग रूप में दर्शाता है।

नए युग की आत्मा

यीशु की सेवकाई और प्रारंभिक मसीहीयों के संदेश की सबसे उल्लेखनीय विशेषता यह थी कि उनका यह दृढ़ विश्वास और घोषणा थी कि नए युग की आशीषें पहले से ही मौजूद थीं, कि अंतकालिक-आत्मा पहले ही उंडेल दी गई थी। कुमरान के सिद्धांत को छोड़कर, उस समय के यहूदी धर्म के भीतर किसी अन्य समूह या व्यक्ति ने ऐसा साहसिक दावा करने का साहस नहीं किया था। भविष्यवक्ताओं और रब्बियों ने आने वाले मसीही युग की प्रतीक्षा की, और सर्वनाशकारी के लेखकों ने इसके निकट आगमन की चेतावनी दी, लेकिन किसी ने इसे पहले से मौजूद नहीं माना। यहां तक कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने भी केवल एक आने वाले के बारे में और निकट भविष्य में आत्मा के कार्य के बारे में बात की (मर 1:8)। लेकिन यीशु और पहली सदी के मसीहीयों के लिए, जिस आशा की लालसा थी, वह जीवित वास्तविकता थी, और यह दावा अपने साथ "अंतिम दिनों" में होने का रोमांचक अनुभव जुड़ा हुआ था। मसीहीयों के विश्वास और जीवन के उस अंतकालिक विचारधारा की कुछ पहचान के बिना, हम आत्मा पर इस शिक्षा और उसके अनुभव को नहीं समझ सकते।

यीशु ने स्पष्ट रूप से अपने शिक्षाओं और चंगाईयों को भविष्यवाणी की आशा की पूर्ति के रूप में सोचा (मत्ती 12:41–42; 13:16–17; लूका 17:20–21)।विशेष रूप से, उन्होंने खुद को आत्मा द्वारा अभिषिक्त के रूप में देखा जो उद्धार प्रदान करने वाला था (मत्ती 5:3–6; 11:5; लूका 4:17–19)। इसी तरह, यीशु ने दुष्टात्मा निकालने को परमेश्वर की शक्ति का प्रभाव और परमेश्वर के अंतिम समय के शासन की अभिव्यक्ति के रूप में समझा (मत्ती 12:27–28; मर 3:22–26)। सुसमाचार लेखक, विशेष रूप से लूका, ने यीशु के जीवन और सेवकाई के अंतकालिक स्वभाव पर जोर दिया है, उनके जन्म (मत्ती 1:18; लूका 1:35, 41, 67; 2:25–27), उनके बपतिस्मा (मर 1:9–10; प्रेरितों के काम 10:38), और उनकी सेवकाई (मत्ती 4:1; 12:18; मर 1:12; लूका 4:1, 14; 10:21; यूह 3:34) में आत्मा की भूमिका पर जोर दिया है।

मसीही कलीसिया की शुरुआत मसीह के पुनरुत्थान के दिन पवित्र आत्मा के श्वास लेने से हुई थी, (यूह 20:22), उसके बाद पिन्तेकुस्त के दिन पर आत्मा का उंडेला जाना "अंतिम दिनों" में हुआ। दर्शन और प्रेरित वाणी का भारी अनुभव यह प्रमाणित करता था कि योएल द्वारा भविष्यवाणी किया गया नया युग अब आ चुका है (प्रेरि 2:2–5, 17–18)। इसी प्रकार, इब्रानियों में आत्मा के वरदान को "आने वाले युग की शक्तियों" के रूप में वर्णित किया गया है (इब्रा 6:4–5)। इससे भी अधिक आश्चर्यजनक बात यह है कि पौलुस ने आत्मा को परमेश्वर के पूर्ण उद्धार की गारंटी के रूप में समझा (2 कुर 1:22; 5:5; इफ 1:13–14), और परमेश्वर के राज्य का पहला भाग विश्वासियों को विरासत के रूप मे मिलता है (रोम 8:15–17; 1 कुर 6:9–11; 15:42–50; गल 4:6–7; 5:16–18, 21–23; इफ 1:13–14)। आत्मा को यहाँ फिर से आने वाले युग की शक्ति के रूप में माना गया है, उस शक्ति के रूप में (जो समय के अंत में परमेश्वर के शासन की विशेषता होगी) जो पहले से ही विश्वासियों के जीवन को आकार दे रही है और बदल रही है।

पौलुस के लिए, इसका अर्थ यह भी है कि आत्मा का वरदान केवल जीवनभर की प्रक्रिया की शुरुआत है जो तब तक समाप्त नहीं होगी जब तक कि विश्वासियों का पूरा व्यक्तित्व आत्मा की शक्ति के अधीन नहीं हो जाता (रोम 8:11, 23; 1 कुर 15:44–49; 2 कुर 3:18; 5:1–5)। इसका यह भी अर्थ है कि विश्वास का वर्तमान अनुभव विश्वासियों के जीवन मे परमेश्वर द्वारा दिए गए कार्यों और अभी तक अधूरे कार्यों के बीच जीवनभर का संघर्ष है जो परमेश्वर ने पहले ही विश्वासी के जीवन में लाना शुरू कर दिया है (फिल 1:6)। यह "आत्मा में" जीवन और "शरीर में" जीवन (गला 2:20 देखें) के बीच का तनाव है जो रोमियों 7:24 और 2 कुरिन्थियों 5:2–4 में भावपूर्ण अभिव्यक्ति में आता है।

नए जीवन की आत्मा

चूंकि आत्मा नए युग का चिह्न है, यह आश्चर्यजनक नहीं है कि नये नियम के लेखकों ने आत्मा के वरदानों को वह समझा जो किसी व्यक्ति को नए युग में लाता है।यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने वर्णन किया कि आने वाला पवित्र आत्मा आग से बपतिस्मा देगा (मत्ती 3:11)। प्रेरि 1:5 और 11:16 के अनुसार, इस कल्पना को यीशु ने अपनाया था, और यह वादा पिन्तेकुस्त के दिन पूरा होता हुआ देखा जाता है—यहाँ आत्मा के उंडेले जाने

को नए युग में अपने शिष्यों को लाने के लिए जी उठे मसीह की कार्रवाई के रूप में समझा जाता है (प्रेरि 2:17, 33)।

ऐसा प्रतीत होता है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में लूका का एक उद्देश्य रूपांतरण-आरंभ में आत्मा के वरदान की केंद्रीय महत्वता को उजागर करना है —यह वह निर्णायक "पवित्र आत्मा का वरदान " है जो किसी को मसीही बनाता है (प्रेरि 2:38–39)। लोग पृथ्वी पर यीशु के अनुयायी हो सकते थे, लेकिन केवल तब जब उन्होंने आत्मा का वरदान प्राप्त किया, यह कहा जा सकता था कि उन्होंने "प्रभु यीशु मसीह में विश्वास किया" (प्रेरि 11:16–17)। जब आत्मा की उपस्थिति किसी व्यक्ति के जीवन में और उसके ऊपर प्रकट होती थी, तो पतरस ने इसे इस बात का प्रमाण माना कि परमेश्वर ने उस व्यक्ति को स्वीकार कर लिया है, भले ही उसने अभी तक विश्वास का कोई औपचारिक अंगीकार न किया हो या बपतिस्मा न लिया हो (प्रेरि 10:44–48; 11:15–18; 15:7–9)। इसी प्रकार अपुल्लोस, जो पहले से ही आत्मा से प्रज्वलित था (18:25), भले ही "परमेश्वर के मार्ग" के बारे में उसका ज्ञान थोड़ा दोषपूर्ण था (वचन 24–26), जाहिर तौर पर उसे "यूहन्ना के बपतिस्मा" के अलावा मसीही बपतिस्मा की आवश्यकता नहीं थी। हालांकि, इफिसुस में माने गए 12 चेले अपनी आत्मा की अज्ञानता से साबित करते हैं कि वे अभी तक प्रभु यीशु के शिष्य नहीं थे (19:1–6)। पौलुस ने इन 12 पुरुषों से पूछा, "क्या तुमने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा प्राप्त किया?"(19:2)।

यह पौलुस के अपने पत्रियों में दिए गए जोर के अनुरूप है। विश्वास और आत्मा को ग्रहण करना साथ-साथ चलते हैं: आत्मा को प्राप्त करना मसीही जीवन की शुरुआत करना है (गला 3:2–3); आत्मा में बपतिस्मा लेना मसीह की देह का सदस्य बनना है (1 कुरि 12:13); "मसीह की आत्मा" होना मसीह से संबंधित होना है (रोम 8:9–11); आत्मा को प्राप्त करना परमेश्वर की संतान बनना है (रोम 8:14–17; गला 4:6–7)। आत्मा नए युग और नए युग के जीवन को इस प्रकार दर्शाता है कि केवल आत्मा का वरदान ही किसी व्यक्ति को नए युग के जीवन का अनुभव करने के लिए नए युग में ला सकता है। क्योंकि आत्मा विशेष रूप से और विचित्र रूप से जीवन-दाता है; आत्मा वास्तव में नए युग का जीवन है (रोम 8:2, 6, 10; 1 कुर 15:45; 2 कुर 3:6; गल 5:25)।

ठीक उसी तरह जैसे यूहन्ना के लेखो में, आत्मा विशेष रूप से जीवन देने वाली आत्मा है (यूह 6:63), ऊपर से शक्ति, ईश्वरीय जीवन का बीज जो नए जन्म को लाता है (यूह 3:3–8; 1 यूह 3:9), और जीवन जल की नदी जो मसीह में विश्वास करने पर जीवन लाती है (यूह 7:37–39; इसी प्रकार 4:10, 14)। या फिर, यूहन्ना 20:22 में आत्मा की प्राप्ति को उत्प 2:7 के समान एक नई सृष्टि के रूप में दर्शाया गया है। परिणामस्वरूप, 1 यूह 3:24 और 4:13 में, आत्मा का अधिकार और अनुभव उस पत्री में सूचीबद्ध "जीवन के परीक्षणों" में से एक के रूप में माना जाता है।

आत्मा का प्रकटीकरण

यह पहले से कही गई बातों से स्पष्ट होगा कि जब पहले मसीही, प्राचीन इब्रानियों की तरह, आत्मा की बात करते थे, तो वे ईश्वरीय शक्ति के अनुभवों के बारे में सोच रहे थे। नए नियम में, पुराने नियम की तरह, "आत्मा" शब्द का उपयोग नए जीवन और ऊर्जा के अनुभव को समझाने के लिए किया जाता है (ऊपर देखें), व्यवस्थावाद से मुक्ति के लिए (जैसे, रोम 8:2; 2 कुरिं 3:17), आत्मिक ताजगी और नवीनीकरण के लिए (पुष्टी करें जैसे, यश 32:15; यहे 39:29 के साथ यूह 7:37–39; रोम 5:5; 1 कुरिं 12:13; 1 तिम 3:5–6)। यह समझना महत्वपूर्ण है कि आत्मा को कितने व्यापक अनुभवों का श्रेय दिया गया: परमानंद अनुभव (प्रेरि 2:24; 10:43–47; 19:6; तुलना करें 10:10; 22:17—“परमानंद में”; 2 कुर 12:1–4; प्रका 1:10), भावनात्मक अनुभव (जैसे, प्रेम—रोम 5:5; आनंद—प्रेरित 13:52; 1 थिस 1:6; देखें गल 5:22; फिल 2:1–2), प्रबोधन के अनुभव (2 कुर 3:14–17; इफ 1:17–18; इब्रा 6:4–5; 1 यूह 2:20–21), और नैतिक परिवर्तन की प्रक्रिया मे महत्वपूर्ण अनुभव (1 कुर 6:9–11)। इसी प्रकार, जब पौलुस आध्यात्मिक वरदानों की बात करते है, जिसे करिश्मा (ऐसे कार्य या शब्द जो दिव्य अनुग्रह को ठोस रूप में प्रकट करते हैं) कहा जाता है, तो उनके मन में स्पष्ट रूप से वास्तविक घटनाओं की एक विस्तृत श्रृंखला होती है: प्रेरित भाषण (1 कुर 12:8–10; 1 थिस 1:5), चमत्कार और चंगाई (1 कुर 12:9; गल 3:5; पुष्टी करें इब्रा 2:4), और सेवा और सहायता के कार्य, परामर्श और प्रशासन, और सहायता और दया के विभिन्न कार्य (रोम 12:7–8; 1 कुरिं 12:28)।

अनुभव के संदर्भ में आत्मा की बात करते समय, हमें विशेष अनुभवों या प्रकटीकरण पर अधिक जोर नहीं देना चाहिए, जैसे कि प्रारंभिक मसीहीयत मे केवल ऊंचे आध्यात्मिक अनुभव की महत्वपूर्ण थे। यह वास्तव में ऐसे अनुभव थे, और वास्तव में अनुभवों की एक श्रृंखला थी, लेकिन कोई भी अनुभव सभी के द्वारा अलग से नहीं चुना जाता (सिवाय भविष्यवाणी के)। नए नियम में आत्मा का कोई विशेष दूसरा (या तीसरा) अनुभव नहीं है, और पौलुस ने आत्मा के विशेष प्रकट होने को अधिक महत्व देने के खिलाफ चेतावनी दी है (1 कुरि 14:6–19; 2 कुरि 12:1–10; पुष्टी करें मर 8:11–13)। जहां विशेष अनुभवों को महत्व दिया जाता है, यह अधिक स्थायी अनुभव की प्रकटीकरण के रूप में होता है, एक अंतर्निहित संबंध की विशेष अभिव्यक्तियों के रूप में (पुष्टी करें प्रेरि 6:3–5; 11:24—“आत्मा से परिपूर्ण”; इफि 5:18). हम यहां जिस चीज के संपर्क में हैं, वह प्रारंभिक मसीहीयत के अनुभवात्मक परिमाण की ऊर्जा है। यदि आत्मा मसीह में नए जीवन की श्वास है (पुष्टी करें यहे 37:9–10, 14; यूह 20:22; 1 कुरि 15:45), तो संभवतः यह तुलना और आगे बढ़ती है, और आत्मा का अनुभव श्वास लेने के अनुभव जैसा है: व्यक्ति हर समय इसके प्रति सचेत नहीं रहता

है, लेकिन यदि व्यक्ति इसके प्रति सचेत नहीं है, और कभी नहीं सोचता तो कुछ गलत है।

आत्मा की संगति

आत्मा के इस साझा अनुभव से प्रारंभिक मसीही समुदाय का विकास हुआ, क्योंकि यही "आत्मा की संगति [कोइनोनिया]" का सही अर्थ है: एक ही आत्मा में सामान्य भागीदारी (फिलि 2:1; तुलना करें प्रेरि 2:42; 1 कुरि 1:4–9). यह आत्मा का वरदान था जिसने सामरिया, कैसरिया और अन्य जगहों में लोगों को प्रभावी रूप से आत्मा के समुदाय में लाया (प्रेरि 8,10)। इसी प्रकार, यह आत्मा का अनुभव था जिसने पौलुस के मिशन के चर्चों में एकता का बंधन प्रदान किया (1 कुर 12:13; इफ 4:3–4; फिल 2:1–2)। यहाँ हम देखते है कि आत्मा के ईश्वरीय प्रकटीकरण पौलुस के लिए कितना महत्वपूर्ण है: यह इन विशिष्ट अभिव्यक्तियों की विविधता से है कि मसीह का शरीर एकता में बढ़ता है (रोम 12:4–8; 1 कुर 12:12–17; इफ 4:4–16)।

परम्परा

मसीही युग की शुरुआत के समय यहूदियों के बीच परम्परा के प्रति सम्मान विशेष रूप से मजबूत था। इन परम्पराओं में, सबसे महत्वपूर्ण संग्रह *पीरके अबोत* (पितरों की परम्पराएं) था। इसमें लिखित व्यवस्था की व्याख्या में प्रसिद्ध रब्बियों की टिप्पणियाँ शामिल थीं। यह और अन्य रब्बी परम्पराओं का बढ़ता संग्रह जो व्यवस्था की व्याख्या करता था, लिखित संहिता पर एक प्रामाणिक टिप्पणी बन गया। इस संग्रह को लिखित व्यवस्था के बराबर माना जाता था।

फरीसियों ने यीशु से हाथ धोने के बारे में बात करते समय "पुरनिए की परम्परा" शब्द का उपयोग किया (मत्ती 15:2; मर 7:5)। अपने उत्तर में, यीशु ने "मनुष्यों की रीतियों" का उल्लेख किया, इस प्रकार उनकी मानव उत्पत्ति पर ध्यान आकर्षित किया। वास्तव में, मरकुस 7:8 में, उन्होंने निश्चित रूप से इन परम्पराओं पर परमेश्वर की आज्ञा को प्राथमिकता दी, जो लोगों के लिए एक बोझ बन गई थीं। यीशु ने इन परम्पराओं को लागू करने के तरीके के लिए शास्त्रियों और फरीसियों की कड़ी आलोचना की (मत्ती 23)। उन्होंने देखा कि परम्परा का पालन करना शिक्षा के नैतिक और व्यक्तिगत प्रभाव से अधिक महत्वपूर्ण हो गया था।

देखें यहूदी धर्म; व्यवस्था, बाइबल की अवधारणा; फरीसी; तलमूद; परम्परा, मौखिक।

पराजीम पर्वत

पराजीम पर्वत

यशायाह 28:21 में वर्णित पर्वत, जो स्पष्ट रूप से बालपरासीम के निकट है, "जल की धारा के समान टूट पड़ा," वह स्थान है जहाँ दाऊद ने पलिश्तियों को हराया था। 2 शमूएल 5:20 के सन्दर्भ से, यह मैदान स्पष्ट रूप से रपाईम की तराई में स्थित था, जो यरूशलेम के दक्षिण-पश्चिम में है।

परिज्जी

इस्राएलियों के विजय से पहले और बाद में फिलिस्तीन की भूमि पर निवास करने वाले कई जनसंख्या समूहों में से एक (उत 15:20; निर्ग 3:8, 17; 23:23; 33:2; 34:11; व्य.वि. 7:1; 20:17; यहो 3:10; 9:1; 11:3; 12:8; 24:11; 1 रा 9:20; 2 इति 8:7; एज्रा 9:1; नहे 9:8)। पुराने नियम में इन जातियों का उल्लेख विभिन्न उद्देश्यों को पूरा करता है, जिनमें से कोई भी पूरी तरह से ऐतिहासिक या भौगोलिक नहीं है। यह पाठकों को सूचित करता है कि, चाहे वे कितने भी अधिक हों, जब परमेश्वर का समय आता है, तो इन लोगों का विनाश निश्चित है (उत 15:20; निर्ग 3:8)। अन्य समयों में, इनका उल्लेख इस बात को दर्शाने के लिए किया गया है कि परमेश्वर के शत्रु इस्राएल की उस भूमि में आगे बढ़ने के विरुद्ध कैसे शत्रुता रखते थे जिसे यहोवा ने उन्हें प्रतिज्ञा की थी (यहो 9:1; 11:3; 24:11)। परन्तु उन्हें पराजित और दासत्व के कार्य में निम्न किया हुआ भी दिखाया गया है (यहो 12:8; 1 रा 9:20)। निर्वासन के बाद की अवधि में, ये लोग अपने पितरों की भूमि में बसने वाली वाचा समुदाय के जीवन की पवित्रता के लिए खतरा बने रहे (एज्रा 9:1)।

कुछ उदाहरण हैं जहाँ "परिज्जियों" शब्द "कनानियों" के साथ आता है (उत 13:7; 34:30; न्या 1:4–5), और एक उदाहरण में यह "रपाइयों" के साथ जोड़ा गया है (यहो 17:15)। "पिरिज्जी" नाम भी एल अमरना की पट्टिकाओं में भी आता है।

अब तक परिज्जियों की सही पहचान अस्पष्ट बनी हुई है। कुछ संदर्भों में इनका उल्लेख “कनानियों” के साथ आता है, ऐसा लगता है कि यह कनान की जनसंख्या के प्रमुख घटकों में से एक को संदर्भित करता है। कुछ विद्वानों ने यह भी सुझाव दिया है कि उत्पत्ति 10 की सूची में उन्हें हटा दिए जाने के मद्देनजर, परिज्जी फिलिस्तीन की पूर्व-कनानी आबादी थे। परन्तु इसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता। अन्य विद्वानों ने इस नाम को “बिना दीवारों वाले गाँवों के निवासी” के अर्थ में समझने का प्रयास किया है। यह दृष्टिकोण अन्य इब्रानी शब्द, पराज़ोथ, “बिना दीवारों वाले गाँव” में कुछ समर्थन पाता है (एस्त 9:19; यहेज 38:11; जक 2:4; पुष्टि करें, पराज़ी, “खुला देश,” व्य.वि. 3:5; 1 शमू 6:18)। परंतु यह तथ्य कि यह नाम

अन्य लोगों में, जिनकी पहचान ज्ञात है, इतनी बार प्रकट होता है, ऐसे दृष्टिकोण से सावधान रहने की चेतावनी देता है।

कई टिप्पणीकारों ने, परिज्जियों को कनान की जनसंख्या के प्रमुख घटकों में से एक मानने के बजाय, उन्हें स्थानीयकृत करने का प्रयास किया है, चाहे वह बेतेल के आसपास (पुष्टि करें उत 13:7) या शेकेम के (34:30), या यहूदा के क्षेत्र में (न्या 1:4–5)। परन्तु ये स्थान किसी भी तरह से आपस में जुड़े हुए नहीं हैं। यहोशू 17:15 में रपाईम (एनएलटी, एनआईवी "रेफाईट्स") के संदर्भ ने यह सुझाव दिया है कि परिज्जी पूर्वी यरदन क्षेत्र से संबंधित थे, परन्तु यह न तो तत्काल संदर्भ से और न ही अन्यत्र "रपाईम" शब्द के उपयोग से प्रमाणित नहीं होता।

*यह भी देखें*कनान, कनानी।

परीक्षा

अपनी योग्यता साबित करने की प्रक्रिया। जब इसे परमेश्वर के लोगों के साथ व्यवहारीक रूप में परमेश्वर द्वारा अपने लोगों पर लागू किया जाता है, तो इसका अर्थ है कि परमेश्वर अपने लोगों के विश्वास और नैतिक चरित्र की परीक्षा लेते हैं। जब इस शब्द का प्रयोग नकारात्मक रूप में किया जाता है, तो इसका अर्थ "प्रलोभन देना" होता है - अर्थात, पाप के लिए उकसाना, आमंत्रित करना या उत्तेजित करना। इस शब्द के दोनों अर्थ यीशु के जंगल में चालीस दिनों की परीक्षा पर लागू हो सकते हैं। उन्हें परमेश्वर द्वारा परखा गया और विश्वासयोग्य पाया गया, जबकि उन्हें शैतान द्वारा प्रलोभित किया गया और निष्पाप पाया गया। परमेश्वर की आत्मा ने यीशु को जंगल में उनके विश्वास की परीक्षा के लिए ले गया; लेकिन इस परीक्षा में प्रतिनिधि शैतान था, जिसका पूरा उद्देश्य यीशु को परमेश्वर के प्रति उनकी निष्ठा से बहकाना था। इस शब्द का नकारात्मक अर्थ प्रलोभन देना था। फिर भी यीशु प्रलोभन के आगे नहीं झुके; वे परीक्षा में उत्तीर्ण हुए (देखें 2 कुरि 5:21; इब्रा 26)।

परीक्षा, प्रलोभन

देखें परीक्षा।

परीदा

परीदा

परूदा का एक वैकल्पिक रूप, दासों के एक परिवार के पूर्वज जो बँधुआई के बाद यरूशलेम लौटे (नहे 7:57)। *देखें* परूदा।

परूदा

परूदा

सुलैमान के सेवकों के परिवार का मुखिया (एज्रा 2:55); नहेम्याह 7:57 में इसे परीदा कहा गया है। उनके वंशज इस्राएल के उस अवशेष का हिस्सा बने जो बँधुआई के बाद यरूशलेम लौट आया था (1 एस 5:33)।

परेस

परेस

ऊपर्सीन का एकवचन रूप, जिसका अर्थ है "विभाजित" (दानि 5:28)। *देखें*मने, मने, तकेल, ऊपर्सीन।

परोश

परोश

एक परिवार के मुखिया जो जरूब्बाबेल के साथ बाबेल की बँधुआई के बाद यरूशलेम लौटे (एज्रा 2:3; नहे 7:8)। उनके वंशजों में से एक, पदायाह, ने यरूशलेम की शहरपनाह के पुनर्निर्माण में भाग लिया (नहे 3:25)। अन्य वंशजों का उल्लेख विदेशी पत्नियाँ लेने वालों के रूप में किया गया है (एज्रा 10:25)।

परोश

परोश

एज्रा 8:3 में, परोश के पूर्वज, एक बँधुआई के बाद के परिवार की केजेवी वर्तनी। *देखें*परोश।

पर्गेटरी

रोमन कैथोलिक कलीसिया के अनुसार, स्वर्ग में प्रवेश से पहले अस्थायी दण्ड और शुद्धिकरण का एक स्थान होता है। *देखें*मध्यवर्ती अवस्था।

पर्दे

*देखें*असबाब; घर और निवास; तंबू; मंदिर।

पर्नाक

पर्नाक

जबूलून के गोत्र से एलीसापान का पिता (गिन 34:25)।

पर्पर

उन दो नदियों में से एक, जिनका उल्लेख नामान ने दमिश्क के भीतर या उसके निकट स्थित होने के रूप में किया है (2 रा 5:12)। इसकी सही पहचान अनिश्चित है। एक परम्परा इसे तौरा से जोड़ती है, जो अबाना नदी की सात धाराओं में से एक है, जो दमिश्क से होकर बहती है। दूसरी परम्परा इसे अवज नदी से जोड़ती है, जो हेर्मोन पर्वत की पूर्वी तलहटी से निकलकर दमिश्क के दक्षिण में बहती है। शुरुआती प्रवाह में यह नदी तेज और तीव्र बहाव वाली होती है। वसन्त ऋतु में हेर्मोन पर्वत की बर्फ पिघलने के कारण अवज नदी बढ़ जाती है और गर्मी बढ़ने के साथ घटने लगता है। यह नदी दक्षिणी दमिश्क मैदान की अच्छी उत्पादकता के लिए महत्त्वपूर्ण है और धीमी बहने वाली यरदन नदी की तुलना में कहीं अधिक तेज बहती है।

पर्मशता

पर्मशता

यहूदियों द्वारा मारे गए हामान के दस पुत्रों में से एक (एस्त 9:9)।

पर्वत, पहाड़

भूमि का एक ऊँचा क्षेत्र। इस्राएल और आसपास के देशों में, लोग पहाड़ों को परमेश्वर से मिलने के स्थान के रूप में मानते थे। इस्राएल के धर्म की कई महत्वपूर्ण घटनाएँ सीनै पर्वत या होरेब पर हुईं (देखें निर्ग 3:1–4; 16; 19–23; 1 रा 19:8–18)।

जब दाऊद राजा बने, तब सिय्योन पर्वत लगभग उतना ही महत्वपूर्ण हो गया (भज 50:2; यशा 2:2–4)।

इस्राएल के पड़ोसी कभी-कभी सोचते थे कि पहाड़ जादुई स्थान होते हैं जहाँ उनके देवता रहते हैं। लेकिन इस्राएली जानते थे कि उनका परमेश्वर स्वर्ग में निवास करता है। वह केवल विशेष समयों पर पहाड़ पर उतरता था (निर्ग 19; तुलना करें 1 रा 8:27)।

नए नियम में, यीशु ने पहाड़ों पर कई कार्य किए:

1. उसने वहाँ शिक्षा दी (मत्ती 5:1)
2. वह पहाड़ पर प्रार्थना करने को निकला (लूका 6:12)
3. पहाड़ पर उनका रूपान्तरण हुआ (लूका 9:28–36)।

पर्वेम

भौगोलिक क्षेत्र जहां से सुलैमान ने मंदिर में उपयोग के लिए सोना प्राप्त किया था (2 इति 3:6)। रब्बी स्रोतों के अनुसार, सोने का रंग लाल सा होता था और इसका उपयोग उस पात्र को बनाने के लिये किया जाता था जिससे महायाजक प्रायश्चित के दिन वेदी से होमबलि की राख हटाते थे। पर्वेम सम्भवतः अरब में स्थित था।

पर्शन्दाता

पर्शन्दाता

यहूदियों द्वारा मारे गए हामान के दस पुत्रों में से एक (एस्त 9:7)।

पर्सियस

मकिदुनिया के अन्तिम राजा (1 मक्का 8:5)। पर्सियस मकिदुनिया के फिलिप्पुस तृतीय के अवैध पुत्र थे। उन्होंने 179 ईसा पूर्व में अपने पिता के सिंहासन को सम्भाला। 168 ईसा पूर्व में रोम ने पाइडना की लड़ाई में मकिदुनिया को हरा दिया। मकिदुनिया एक रोमी प्रान्त बन गया, और पर्सियस कैद में मरे।

पलती

पलती

1. 12 जासूसों में से एक जिन्हें मूसा ने कनान देश की खोज के लिए भेजा था, इस्राएली विजय से पहले। पलती बिन्यामीन के गोत्र का प्रतिनिधित्व करता था (गिन 13:9).

2. लैश का पुत्र, जिसे राजा शाऊल ने अपनी बेटी मीकल, जो दाऊद की पत्नी थीं, को शाऊल और दाऊद के बीच के सम्बन्ध टूटने के बाद दिया था (1 शमू 25:44)। मीकल को

उससे वापस लिया गया और दाऊद को लौटाया गया (2 शमू 3:15); उस सन्दर्भ में उसे पलतीएल कहा जाता है।

पलती

1 शमुएल 25:44 में पलती, लैश के पुत्र का केजेवी वर्तनी। *देखें*पलती #2।

पलतीएल

1. अज्जान का पुत्र और इस्साकार के गोत्र का अगुवा (गिन 34:26)। उसे एलीआजर और यहोशू द्वारा यरदन के पश्चिम में भूमि के वितरण में सहायता करने के लिए नियुक्त किया गया था, जो दस गोत्रों को दी गई थी।

2. 2 शमू 3:15 में पेलेती, लैश के पुत्र का एक अन्य प्रस्तुतिकरण। *देखें*पेलेती #2.

पलत्याह

1. हनन्याह का पुत्र, राजा सुलैमान के वंशजों की सूची में हैं (1 इति 3:21)।

2. शिमोनियों में सैन्य प्रधान जिन्होंने हिजकिय्याह के राज्य में सेईर पहाड़ पर अमालेकी के बचे हुओं को नाश करने में सहायता की (1 इति 4:42)।

3. प्रजा के प्रधान, जिन्होंने बँधुआई के बाद नहेम्याह और अन्य लोगों के साथ मिलकर एज्रा की परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य वाचा पर हस्ताक्षर किए (नहे 10:22)।

4. बनायाह का पुत्र और उन दो प्रजा के प्रधान में से एक जिन्हें यहेजकेल ने न्याय के दर्शन में देखा, यहोवा की आत्मा द्वारा पहचाना गया है, जो इस नगर में अनर्थ कल्पना और बुरी युक्ति करते हैं (यहेज 11:1–2, 13)।

पलल्याह

पलल्याह

अदायाह के पूर्वज, एक याजक जो एज्रा के समय में यरूशलेम में निवास करते थे (नहे 11:12)।

पलाएस्ट्रा

पुष्ट व्यायाम के लिए स्थान को नामित करने वाला यूनानी शब्द (2 मक्का 4:14)।

पलायाह

1. एल्योएनै का पुत्र और दाऊद का एक दूरवर्ती वंशज (1 इति 3:24)।

2. लेवी जिसने लोगों को व्यवस्था पढ़कर सुनाने के बाद एज्रा को उसे समझाने (या अनुवाद करने) में मदद की (नहे 8:7; 10:10)।

पलिश्ती, पलिश्तीन

पलिश्ती, पलिश्तीन

दक्षिण-पश्चिमी पलिश्त में भूमध्यसागरीय तट पर स्थित छोटा देश (जिसे निर्गमन 15:14; यशायाह 14:29–31 में "पलिश्तीन" भी कहा गया है); एजियन लोग जो कनान के समुद्री मैदान में बस गए थे।

पूर्वावलोकन

- क्षेत्र
- लोग
- सरकार
- धर्म और अनुष्ठानिक वस्तुएं
- पलिश्ती और इस्राएल

क्षेत्र

सच पूछिये तो, पलिश्तीन समुद्री मैदान का वह हिस्सा है जिसे पलिश्तीन का मैदान कहा जाता है, जो दक्षिण में वादी अल-अरिश (मिस्र की नदी) से लेकर लगभग 70 मील (112.6 किलोमीटर) उत्तर में नहर अल-औजा तक फैला हुआ है, जोप्पा से पाँच मील (8 किलोमीटर) उत्तर में है। गाजा के पास मैदान में लगभग 30 मील (48.3 किलोमीटर) अपनी सबसे बड़ी चौड़ाई तक पहुँच जाता है। तट के पास रेत के टीले हैं, लेकिन अधिकांश क्षेत्र बहुत उपजाऊ है और प्रचुर मात्रा में अनाज (तुलना करें न्यायि 15:1–5) और फलों को पैदा करता है।

पूर्व और मिस्र के बीच मुख्य राजमार्ग तट के किनारे था। यह पलिश्तियों के लिए व्यापारिक लाभ का विषय था, लेकिन इसने उन्हें विदेशी आक्रमण के लिए खुला छोड़ दिया। परमेश्वर ने पलिश्तियों की भूमि से होकर इस सबसे छोटे मार्ग

से इस्राएल को मिस्र से कनान तक नहीं पहुँचाया, क्योंकि वह नहीं चाहता था कि उन्हें इतनी जल्दी पलिश्तियों (या शायद वहाँ तैनात मिस्री सेना) से भयंकर युद्ध का सामना करना पड़े (निर्ग 13:17)। जाहिर है, पलिश्तियों को मिस्रियों से डरने की कोई ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि कुछ विद्वानों का मानना है कि मिस्रियों का पलिश्तियों को फिलिस्तीन में बसाने में हाथ था।

इस सीमित क्षेत्र से पलिश्तियों को जल्द ही विस्तार की आवश्यकता महसूस हुई। शेफेला से होकर गुजरने वाले मार्ग इस्राएल के पहाड़ी क्षेत्र तक प्राकृतिक पहुँच प्रदान करते थे। उन्होंने इस्राएली क्षेत्र में चौकियाँ स्थापित कीं, और युद्ध के समय जिसमें शाऊल और उसके बेटे मारे गए, पलिश्तियों ने बेतशान शहर पर कब्ज़ा किया (1 शमू 31:10)।

लोग

बाइबल बताती है कि पलिश्ती लोग कप्तोर से आए थे (व्य. वि. 2:23; यिर्म 47:4; आमो 9:7), जिसे आमतौर पर क्रेते माना जाता है, हालांकि कुछ विद्वान इसे एशिया के उपद्वीप में रखते हैं। मेदिनेट हाबू में दिखाए गए पलिश्तियों के वस्त्र क्रेटनियों के समान हैं, विशेष रूप से उनके सिर के आभूषण। करेती का नाम क्रेटन के साथ जोड़ा गया है, क्योंकि इन नामों में समान व्यंजनात्मक आधार है: *क, र* और *त*। करेती संभवतः एक पलिश्ती उपसमूह थे जो नेगेव में रहते थे, जो सिकलग से दूर नहीं था, दाऊद का पलिश्तियों के बीच घर (पुष्टि करें 1 शमू 30:14)। करेती और पेलेथी दाऊद के अंगरक्षकों में शामिल थे, 600 गित्तियों (गत के पुरुषों) के साथ (पुष्टि करें 2 शमू 15:19; 20:7, 23; 1 इति 18:17)।

पलिश्तीन नाम कई भाषाओं में पहचाना जा सकता है। इब्रानी में उन्हें पेलिश्तीम के रूप में जाना जाता है, जिसे अंग्रेजी में फिलिस्तीनी के रूप में अनुवादित किया गया है। मिस्री स्रोतों में उन्हें समुद्री लोगों में सूचीबद्ध किया गया है और उन्हें *पेलसेट* या *पेलेस्टे* कहा जाता है। वे मिस्र पर समुद्री लोगों के आक्रमण में अपनी भूमिका के लिए सबसे अधिक जाने जाते हैं, जिन्हें रामसेस तृतीय द्वारा नदीमुख-भूमि पैर और समुद्री युद्ध में पराजित किया गया था। इस लड़ाई के विस्तृत दृश्य मेदिनेट हाबू में रामसेस तृतीय के मंदिर की उत्तरी बाहरी दीवार पर गहरे उत्कीर्ण में दिखाए गए हैं, जो लक्सर के सामने है। ये चित्रण फिलिस्तीनियों के वस्त्र और शस्त्रास्त्र की कुछ जानकारी देते हैं, जिन्हें उनके सिर पर टोपी से आसानी से पहचाना जा सकता है, जो पंखों (या सरकंडों?) से बना था।

ये लोग रामसेस से हारने के बाद फिलिस्तीन के तट पर बस गए, लेकिन यह संभव है कि कुछ लोग मिस्र जाते समय कनान में ही रुक गए हों। संभवतः फिलिस्तीन में पहले भी प्रवास हुआ था, शायद पितृसत्ताओं के समय से पहले।

सरकार

फिलिस्तिया के पूरे देश पर कोई एक शासक नहीं था; शहर स्वतंत्र थे, इसलिए वे शहर-राज्यों के रूप में काम करते थे। इन शहरों के प्रमुखों को राजा नहीं कहा जाता था, लेकिन उन्हें बाइबल में "सरदार" या "शासक" के रूप में संदर्भित किया गया है (उदाहरण के लिए, 1 शमू 5:11; 6:12; 29:2), और वे पांच थे, जो पलिश्ती पेंटापोलिस के पांच प्रमुख शहरों के अनुरूप थे: गाज़ा, अश्कलोन, अश्दोद, गत, और एक्रोन (1 शमू 6:17; तुलना करें यिर्म 25:20)। लोगों को उनसे संबंधित मामलों में अपनी बात कहने का अधिकार था - उदाहरण के लिए, वाचा के सन्दूक की वापसी (1 शमू 5:6–12)—लेकिन बड़े फैसले पाँच सरदारों के बहुमत से लिए जाते थे। उदाहरण के लिए, जब दाऊद और उसके लोग सिकलग में रह रहे थे, तब पलिश्तियों ने इस्राएल के खिलाफ़ एक बड़े सैन्य अभियान की योजना बनाई। दाऊद गत के राजा आकीश के अधीन था, जिसने दाऊद से इस्राएल के खिलाफ़ पलिश्तियों के साथ सेना में शामिल होने के लिए कहा। दाऊद इसके लिए सहमत हो गया, लेकिन जब पलिश्तियों के सरदारों को पता चला कि दाऊद मौजूद है, तो उन्होंने शिकायत की और उसे बाहर कर दिया (अध्याय 29)।

धर्म और अनुष्ठानिक वस्तुएं

ऐसा लगता है कि पलिश्ती अपने साथ जो भी देवता लाए थे, उन्हें कनानी देवताओं के पक्ष में अपेक्षाकृत जल्दी त्याग दिया गया था। बाइबिल में वर्णित एक प्राथमिक पलिश्ती देवता दागोन है, जो एक अनाज देवता है। दागोन के मंदिर रास शमरा (उगारित) और मारी में पाए गए हैं। बाइबिल गाजा (न्यायि 16:23–30) और अशदोद (1 शमू 5:1–5) में दागोन के एक मंदिर का उल्लेख करता है।

पलिश्ती और इस्राएल

"फिलिस्तीन" और "फिलिस्तिया" के विभिन्न रूप पुराने नियम में लगभग 300 बार दिखाई देते हैं, मुख्यतः न्यायियों और शमूएल की पुस्तकों में। सबसे प्रारंभिक उल्लेख उत्पत्ति 10:14 में है, जहाँ कहा गया है कि पलिश्ती कसलूही से आए थे, जो कप्तोरी से संबंधित एक अज्ञात लोग थे (तुलना करें 1 इति 1:12)।

अब्राहम और इसहाक दोनों का गरार में पलिश्तियों के साथ संपर्क था, जो उनकी पत्नियों से संबंधित समान घटनाओं में था (उत 20; 26)। हालाँकि, यहाँ पलिश्ती समुद्र तट पर नहीं बल्कि गेरार में और बेर्शेबा तक पूर्व में हैं (26:33)। दोनों संदर्भों में गरार के राजा को अबीमेलेक कहा गया है जो एक अच्छा सेमिटिक नाम। यह सुझाव दिया गया है कि उस समय के पलिश्ती पहले क्रेते से प्रवासित हुए थे, लेकिन यह सिद्ध नहीं हुआ है।

इस्राएली लोगों द्वारा कनान पर विजय प्राप्त करने के बाद, पलिश्ती इस्राएलियों पर प्रभुत्व स्थापित करने लगे। आक्रामक और युद्धप्रिय लोग, पलिश्तियों के पास श्रेष्ठ हथियार थे, क्योंकि वे लोहे का इस्तेमाल करते थे और क्षेत्र में लोहे के निर्माण पर एकाधिकार रखते थे। इस्राएल पर उनके नियंत्रण ने उन्हें इस्राएल में लोहार के काम को प्रतिबंधित करने की अनुमति दी, जिससे इस्राएलियों को अपने औजारों को तेज करने के लिए भी पलिश्तियों के पास जाने के लिए मजबूर होना पड़ा (1 शमू 13:19–22)। इस्राएली इतने खराब तरीके से सुसज्जित थे कि केवल शाऊल और योनातान के पास तलवार और भाला था (वचन 22)। लोहे को गलाने की सुविधाएं अश्दोद, तेल कासिले, तेल जेमेह, और तेल मोर में पाई जाती थी।

मेदिनेट हबू के उत्कीर्ण चित्रों में पलिश्तीयो को भाले और लंबे सीधे तलवारों से सुसज्जित दिखाया गया हैं, वे सुरक्षा के लिए बड़े, गोल ढालों का उपयोग करते थे। उनके पास तीन-पुरुष रथ थे जिनमें छह पहिये वाले आरे थे, और वे लोगों को चार बैलों द्वारा खींची जाने वाली ठोस दो पहिया गाड़ियों के माध्यम से ले जाते थे। उनके जहाजों में मिस्रियों की तरह एक चौकोर पाल लगी होती थी, और उनमें एक बत्तख के आकार की नोक होती थी, जिसका संभवतः शत्रु जहाजों को टक्कर देने के लिए उपयोग किया जाता था।

इस्राएल में धर्मत्याग की शुरुआत बहुत पहले ही हो चुकी थी, और प्रभु ने अपने लोगों को दंडित करने के लिए पलिश्तियों का इस्तेमाल किया। शमगर ने 600 पलिश्तियों को बैल के खुर से मारकर इस्राएल को छुड़ाया (न्यायि 3:31)। शिमशोन का वर्णन पलिश्ती जीवन के कई पहलुओं को दर्शाता है (13:1–16:31)। यह अभिलेख दर्शाता है कि इस्राएलियों और पलिश्तियों के बीच अंतर्जातीय विवाह हुआ था, जो पुराने नियम के व्यवस्था के विपरीत था।

1 शमूएल 4:1 में इस्राएलियों और पलिश्तियों के बीच युद्ध की रिपोर्ट दी गई है, जब इस्राएली एबेनेज़र में और पलिश्ती अपेक में डेरा डाले हुए थे। पलिश्तियों ने उस दौर में जीत हासिल की और वाचा के सन्दूक पर कब्जा कर लिया (1 शमू 4:17), जिसे उन्होंने सात महीने बाद वापस कर दिया क्योंकि प्रभु ने उन पर विपत्तियाँ भेजी थीं (5:1–6:21)। बाद में, जब शमूएल अगुवा बन गए थे, तो पलिश्तियों ने मिस्पा में इस्राएल पर हमला किया, लेकिन परमेश्वर ने इस्राएल को जीत दिलाई। इस अवसर पर शमूएल ने एक स्मारक पत्थर स्थापित किया और इसे एबेनेज़र ("सहायता का पत्थर," 7:12) नाम दिया। शमूएल के जीवनकाल के दौरान पलिश्तियों ने फिर से इस्राएल पर आक्रमण नहीं किया और इस्राएल ने उन नगरों को पुनः प्राप्त कर लिया जो पलिश्तियों द्वारा ले लिए गए थे (वचन 14)।

इस्राएली क्षेत्र में पलिश्तियों की सबसे बड़ी गतिविधि इस्राएल के पहले राजा शाऊल के शासनकाल के दौरान हुई। पलिश्तियों के 80 से ज़्यादा संदर्भ उस अवधि से संबंधित हैं।फिलिस्तियों ने इस्राएल के विभिन्न हिस्सों में चौकियाँ या छावनियाँ स्थापित कीं (पुष्टि करें 1 शमू 10:5; 13:3)। योनातान ने गेबा में छावनी को पराजित किया (13:3); 1 शमूएल 14:1–15 में वर्णित उसके कारनामे के कारण पलिश्तियों को परास्त होना पड़ा।

एला की तराई में पलिश्तियों और इस्राएली सेनाओं के बीच टकराव हुआ, जहाँ पलिश्तियों ने इस्राएल को चुनौती दी कि वे उनके योद्धा, गोलियत, से एकल युद्ध के लिए एक प्रतिद्वंद्वी प्रदान करें (1 शमू 17:1–11)। बालक चरवाहे दाऊद ने गोलियत को मार डाला; दाऊद एक नायक बन गया, लेकिन शाऊल की ईर्ष्या ने दाऊद को शिकार पुरुष बना दिया। शाऊल की सेना से बचते हुए, दाऊद के लोगों ने पलिश्तियों से कीला नगर को बचाया (23:1–5)। अंततः दाऊद ने गत के राजा आकीश से राजनीतिक शरण मांगी, जिन्होंने उन्हें सिकलग नगर दिया, जहां से दाऊद ने नेगेव में छापे मारे (अध्याय 27)।

जब पलिश्ती इस्राएल के खिलाफ़ युद्ध की तैयारी कर रहे थे, तब आकीश ने दाऊद से पलिश्ती सेना में शामिल होने के लिए कहा और दाऊद सहमत हो गया। पलिश्तियों के सरदारों ने इस भागीदारी को अस्वीकार कर दिया, क्योंकि उन्हें डर था कि दाऊद उनके खिलाफ़ हो जाएगा (1 शमू 28:1–2; 29)। इसके बाद के युद्ध में शाऊल और उसके बेटों को पलिश्तियों ने गिलबो पर्वत पर मार डाला (31:1–7)। पलिश्तियों ने शाऊल का सिर काट दिया, उसके कवच को बेतशान में अश्तोरेत के मंदिर में रखा, और उनके शरीर को उस शहर की दीवार पर लटका दिया (वचन 8–11)।

जब पलिश्तियों को पता चला कि दाऊद राजा बन गया है, तो उन्होंने उसे नष्ट करने का प्रयास किया, लेकिन उसने उन्हें "गेबा से गेजेर तक" हरा दिया (2 शमू 5:17–25)। दाऊद ने पलिश्तियों की शक्ति को तोड़ दिया, और हालाँकि उन्होंने फिर से इस्राएल के खिलाफ युद्ध करने की कोशिश की, लेकिन उन्हें कोई सफलता नहीं मिली (21:15–21)।

उज्जियाह ने पलिश्तियों के खिलाफ युद्ध किया; उसने गत, यब्नेह और अशदोद की दीवारें तोड़ दीं और पलिश्तियों में शहर बनाए (2 इति 26:6–7)। आहाज के शासनकाल में, पलिश्तियों ने शेफेला और नेगेव पर आक्रमण किया और कई शहरों पर कब्ज़ा कर लिया (28:18)। हिजकिय्याह ने पलिश्तियों के खिलाफ गाजा तक युद्ध किया (2 रा 18:8)।

भविष्यद्वक्ताओं में पलिश्तियों का उल्लेख अपेक्षाकृत कम है, यद्यपि यिर्मयाह पलिश्तियों के लिए एक छोटा अध्याय समर्पित करते हैं (यिर्म 47)। पलिश्ती धीरे-धीरे कनानी संस्कृति में समाहित हो गए और वे बाइबल के पन्नों और धर्मनिरपेक्ष इतिहास से गायब हो गए, जिससे फिलिस्तीन नाम उनकी उपस्थिति के स्मारक के रूप में रह गया।

पलिश्तीन

निर्गमन 15:14 और यशायाह 14:29–31 में कनान के दक्षिण-पश्चिम तट के साथ स्थित पलिश्त एक देश।

*देखें*पलिश्त, पलिश्ती।

पलेती

दाऊद के सिर का रक्षक और राजा के राजनीतिक संकटों के दौरान विश्वासयोग्य भाड़े के सैनिक। इनका सम्बंध हमेशा करेती से जोड़ा जाता है, और माना जाता है कि दोनों ही पलिश्ती मूल के थे, जिनका मूल स्थल क्रेते था (कप्तोर, जिसे सामान्यतः पलिश्तियों का घर माना जाता है—आमो 9:7)। पलेती लोग दाऊद के साथ हो लिए जब वह अबशालोम की सेना के खतरे के कारण यरूशलेम से भागे (2 शमू 15:18) और उन्होंने शेबा के बलवा के विरुद्ध दाऊद के लिए युद्ध किया (20:7)। उनके अगुवा बनायाह ने अदोनिय्याह की महत्वाकांक्षाओं के विरुद्ध दाऊद के सिंहासन पर सुलैमान के दावे का समर्थन किया, और सुलैमान के अभिषेक में पलेतियों की उपस्थिति ने निश्चित रूप से अदोनिय्याह की मृत्यु में योगदान दिया (1 रा 1:38, 44)। एजियन से भाड़े के सैनिक आम थे।

पलोनी

दाऊद के दो शूरवीर पुरुष, हेलेस और अहिय्याह को दिया गया पदनाम (1 इति 11:27, 36; 27:10, एनएलटी "पेलोन से")। इस पदनाम के लिए कोई ज्ञात स्रोत नहीं है, जिससे कुछ विद्वान मानते हैं कि मूलपाठ में बिगड़ा है। 2 शमूएल 23:26 में, हेलेस को पेलेती कहा गया है, और अहिय्याह सम्भवतः 2 शमूएल 23:34 में गीलोवासी एलीआम के समान हैं। दोनों मामलों में पेलेती को "पलोनी" की तुलना में अधिक प्राथमिकता दी जाती है। दूसरों का सुझाव है कि पलोनी नगर बेत्पेलेत से लिया गया है (देखें यहो 15:27; नहे 11:26)।

पल्लू

पल्लू

उत्पत्ति 46:9 में रूबेन के दूसरे पुत्र पल्लू की केजेवी वर्तनी। *देखें*पल्लू, पल्लूइयों।

पल्लू, पल्लूइयों

रूबेन का पुत्र, एलीआब का पिता (उत 46:9; निर्ग 6:14; गिन 26:8; 1 इति 5:3) और पल्लूइयों के कुल का संस्थापक (गिन 26:5)।

पवित्र आत्मा

पवित्र आत्मा

*देखें*पवित्र आत्मा।

पवित्र आत्मा

पवित्र आत्मा परमेश्वर की आत्मा हैं और त्रिएकता के तीसरे व्यक्ति हैं। यह दिव्य व्यक्ति परमेश्वर की आत्मा भी कहलाते हैं, और पुराने बाइबल अनुवादों में पवित्र आत्मा भी कहा जाता है। पवित्र आत्मा विश्वासियों में निवास करते हैं, उन्हें मार्गदर्शन देते हैं, और परमेश्वर के सत्य को समझने में उनकी सहायता करते हैं।

*देखिए*परमेश्वर की आत्मा।

पवित्र दीक्षांत सभा

इस्राएल में नियत पर्वों पर गंभीर सभाएं मनाई जाती थीं ताकि लोग और मंदिर पवित्र हो सकें; ये दिन विशेष रूप से विश्राम और परमेश्वर को बलिदान चढ़ाने के लिए समर्पित थे। *देखें* इस्राएल के पर्व और उत्सव; प्रायश्चित का दिन; सब्त।

पवित्र भोज

*देखिए*प्रभु का भोज।

पवित्र युद्ध

देखें पवित्र युद्ध।

पवित्र युद्ध

व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में वर्णित युद्ध, विशेष रूप से अध्याय 20 में। यह केवल प्रशिक्षित सैनिकों और सैन्य उपकरणों के साथ राजाओं द्वारा लड़ा जाने वाला मानवीय उद्यम नहीं है, यह ईश्वर का युद्ध है जिसमें वह स्वयं अपने वाचा के लोगों के साथ शामिल है जिन्हें उसके नाम पर लड़ने के

लिए चुना गया है। सेना का आकार महत्वपूर्ण नहीं है; वास्तव में, कभी-कभी गिनती को इस तथ्य को नाटकीय बनाने के लिए कम कर दिया जाता था कि जीत सैन्य श्रेष्ठता से नहीं, बल्कि परमेश्वर की अपने दुश्मनों के खिलाफ कार्रवाई से प्राप्त होती है। जब इस्राएल परमेश्वर की आज्ञाकारिता में उसके वाचा के लोगों के रूप में रहता था और उसके निर्देशन में युद्ध में जाता था, तो युद्ध परमेश्वर की इच्छा के भीतर होता था, उसके द्वारा आदेशित होता था, और उस पर भरोसा करके विजयी होते थे। परमेश्वर को "युद्ध का पुरुष" के रूप में जाना जाता था, और यह घोषित किया गया है कि "संग्राम यहोवा का है" (1 शमू 17:47; तुलना करें 18:17; 25:28)। यहूदियों की ओर से इस विश्वास के साथ, यह देखना आसान है कि पवित्र युद्ध की अवधारणा कैसे विकसित हुई, खासकर जब उन्हें यह विश्वास था कि उनके दुश्मन परमेश्वर के दुश्मन थे और वे ही वे लोग थे जिनके माध्यम से परमेश्वर संसार के लिए अपने उद्धार के उद्देश्यों को पूरा करेंगें।

मूसा ने विश्वास किया कि परमेश्वर ने युद्ध की घोषणा की और अपने लोगों को युद्ध में भेजा (निर्ग 17:16; गिन 31:3)। कई मौकों पर, युद्ध के महत्वपूर्ण बिंदुओं पर, "यहोवा का भय" शत्रुओं पर आ गया, जिससे इस्राएल की संख्यात्मक रूप से कमजोर सेना को अत्यधिक शक्तिशाली सेनाओं पर सहज विजय प्राप्त करने में सक्षम बनाया (यहो 10:10–14; न्या 4:12–16; 2 शमू 5:24–25)। एक गंभीर सैन्य संकट के समय, एलीशा को सामरिया के चारों ओर पहाड़ियों पर यहोवा की स्वर्गीय सेना को देखने का अवसर मिला, जो सीरिया की भयंकर, आक्रमणकारी सेनाओं को पराजित करने के लिए तैयार थी। एलीशा की प्रार्थना के जवाब में, सीरियाई सैनिक अंधे हो गए और इस्राएलियों के खिलाफ असहाय हो गए (2 रा 6:15–23)। परमेश्वर की इच्छा को निर्धारित करने और युद्ध में उनकी सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न साधनों का उपयोग किया गया। भविष्यद्वक्ता के वचन के अलावा (1 रा 22:5–23), ऊरीम और तुम्मीम (निर्ग 28:30; लैव्य 8:8), एपोद (1 शमू 30:7), और वाचा का सन्दूक इस उद्देश्य के लिए उपयोग किए गए। युद्ध की प्रगति के दौरान परमेश्वर की सेना के अगुवे लगातार सैन्य रणनीति के लिए उनके निर्देश की तलाश करते थे, क्योंकि ईश्वरीय स्वीकृति और मार्गदर्शन के बिना कोई भी कदम नहीं उठाया जाना था (2 शमू 5:19–23)।

चूंकि परमेश्वर ने फिलिस्तीन को अपने लोगों (यहूदियों) को दिया, वह भूमि वास्तव में प्रतिज्ञा की गई भूमि थी; यह ईश्वरीय वाचा द्वारा इस्राएल की थी और इस अर्थ में "पवित्र भूमि" थी। बाहरी आक्रमण के खिलाफ उस भूमि की कोई भी रक्षा एक पवित्र युद्ध था। आक्रमणकारी शत्रु परमेश्वर के लोगों के लिए अपरिवर्तनीय आदेश द्वारा पवित्र क्षेत्र पर अतिक्रमण कर रहे थे और इस प्रकार ईश्वरीय क्रोध को आमंत्रित कर रहे थे। इस दृष्टिकोण से इस्राएल के शत्रुओं का पूर्ण विनाश आवश्यक था, विशेष रूप से जब शत्रु अन्यजाति और नैतिक रूप से भ्रष्ट हो। इस अवधारणा के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक विशिष्ट इब्री शब्द, हेरेम, जिसका मूल रूप से अर्थ था "समर्पित" और इसका अर्थ "विनाश के लिए समर्पित" हो गया, जो परमेश्वर के शासन के प्रति शत्रुतापूर्ण था (यहो 6:17–18)। ईश्वरीय योजना को किसी भी अपमानजनक मूर्तिपूजा या भ्रष्ट अनैतिकता द्वारा विफल, बाधित या निरस्त नहीं किया जाना चाहिए (व्य.वि. 7)। यहूदियों को दिए गए प्रतिज्ञा के मुताबिक देश की सीमाओं के भीतर दुश्मन शहरों को पूरी तरह से नष्ट कर दिया जाना था - एक प्रथा जिसे "प्रतिबंध" के रूप में जाना जाता है। केवल चांदी, सोना, और कांस्य और लोहे के बर्तनों को ही छोड़ा जाना था। उन्हें प्रभु के खजाने में पवित्र मानकर रखा जाना था (यहो 6:17–21; 1 शमू 15:3)।

पवित्र युद्ध की अवधारणा में एक विशिष्ट उद्देश्यपरक पहलू था। यह विशिष्ट युद्धों में ईश्वर की विजय से परे सभी शत्रुता के समापन और शांति के अंतिम समय की ओर देखता था जो ईश्वर के उद्धारक उद्देश्यों की धार्मिकता और संप्रभुता को सही साबित करेगा और अपने लोगों के लिए उसकी चिंता और लक्ष्य को प्रदर्शित करेगा। अंतिम परिपूर्णता से पहले एक विशाल पवित्र युद्ध होगा, जिसके बाद युद्ध के हथियारों को शांति के उपकरणों में बदल दिया जाएगा (यशा 2:4; मीक 4:3) मसीह के शासन के तहत, शांति के राजकुमार (यशा 9:6), जो परमेश्वर के सभी शत्रुओं को प्रभु के विजय दिवस में अधीन कर देंगे (भज 110; दानि 7; जक 14)।

पवित्रता

परमेश्वर का मुख्य गुण और उसके लोगों में विकसित किया जाने वाला गुण। "पवित्रता" और विशेषण "पवित्र" बाइबल में 900 से ज़्यादा बार आते हैं। पुराने नियम में पवित्रता के लिए मुख्य शब्द का अर्थ है "काटना" या "अलग करना।" मूल रूप से, पवित्रता का मतलब है अशुद्ध से अलग होना और शुद्धता के लिए समर्पित होना।

पुराने नियम में, परमेश्वर पर लागू पवित्रता सृष्टि पर उसकी श्रेष्ठता और उसके चरित्र की नैतिक पूर्णता को दर्शाती है। परमेश्वर पवित्र हैं क्योंकि वह अपनी सृष्टि से पूरी तरह अलग हैं और उस पर सर्व-श्रेष्ठ महिमा और शक्ति का प्रयोग करते हैं। उनकी पवित्रता विशेष रूप से भजनों (47:8) और भविष्यद्वक्ताओं (यहेज 39:7) में प्रमुख है, जहाँ "पवित्रता" इस्राएल के परमेश्वर का पर्याय बनकर उभरती है। इस प्रकार, शास्त्र परमेश्वर को "पवित्र" (यशा 57:15), "पवित्र" (अय्यू 6:10; यशा 43:15), और "इस्राएल का पवित्र" (भज 89:18; यशा 60:14; यिर्म 50:29) की उपाधि देता है।

पुराने नियम में परमेश्वर की पवित्रता का अर्थ है कि प्रभु सभी बुराई और अपवित्रता से अलग हैं (तुलना करें अय्यू 34:10)। उनका पवित्र चरित्र पूर्ण नैतिकता का मानक है (यशा 5:16)। परमेश्वर की पवित्रता—उनकी अद्वितीय महिमा और उनके

चरित्र की शुद्धता—भज 99 में कुशलता से संतुलित हैं। वचन 1 से 3 परमेश्वर की अनन्त और पृथ्वी से बंधी दूरी को दर्शाते हैं, जबकि वचन 4 और 5 उनके पाप और बुराई से अलगाव पर जोर देते हैं।

पुराने नियम में परमेश्वर ने अपने लोगों के जीवन में पवित्रता की मांग की। मूसा के माध्यम से, परमेश्वर ने इस्राएल की सभा से कहा, "पवित्र बनो क्योंकि मैं, तुम्हारा परमेश्वर, पवित्र हूँ"(लैव्य 19:2)। पुराने नियम द्वारा निर्धारित पवित्रता दो प्रकार की थी: (1) बाहरी, या औपचारिक; और (2) आंतरिक, या नैतिक और आत्मिक।पेंटाट्यूक (पुराने नियम की पहली पांच पुस्तकें) में निर्धारित पुराने नियम की औपचारिक पवित्रता में परमेश्वर की सेवा के लिए अनुष्ठानिक अभिषेक शामिल था। इस प्रकार याजक और लेवी एक जटिल अनुष्ठानिक अभिषेक प्रक्रिया द्वारा पवित्र किए गए (निर्ग 29), जैसे कि इब्रानी नाज़ीर, जिसका अर्थ है "अलग किए गए" (गिन 6:1–21)। भविष्यद्वक्ता जैसे एलीशा (2 रा 4:9) और यिर्मयाह (यिर्म 1:5) को भी इस्राएल में एक विशेष भविष्यद्वक्ता सेवकाई के लिए पवित्र किया गया था।

लेकिन पुराना नियम पवित्रता के आन्तरिक, नैतिक, और आत्मिक पहलुओं पर भी ध्यान आकर्षित करता है। पुरुष और महिलाएं, जो परमेश्वर की स्वरुप में बनाए गए हैं, अपने जीवन में परमेश्वर के अपने चरित्र की पवित्रता को विकसित करने के लिए बुलाए जाते हैं (लैव्य 19:2; गिन 15:40)। नए नियम में, पेंटाट्यूक में प्रमुख अनुष्ठानिक पवित्रता पृष्ठभूमि में चली जाती है। जहाँ यीशु के समय में यहूदी धर्म का अधिकांश हिस्सा कर्मों द्वारा एक औपचारिक पवित्रता की खोज करता था (मर 7:1–5), वहीं नया नियम पवित्रता के औपचारिक के बजाय नैतिक आयाम पर जोर देता है (वचन 6–12)। पवित्र आत्मा के आगमन के साथ, प्रारम्भिक कलीसिया ने महसूस किया कि जीवन की पवित्रता एक गहन आन्तरिक वास्तविकता थी जो बाहरी दुनिया में लोगों और वस्तुओं के बारे में किसी व्यक्ति के विचारों और दृष्टिकोणों को नियंत्रित करनी चाहिए।

नए नियम के यूनानी समकक्ष पवित्रता के सामान्य इब्रानी शब्द का अर्थ है नैतिक दोष से मुक्त आन्तरिक स्थिति और परमेश्वर की नैतिक पूर्णता के साथ एक सापेक्ष सामंजस्य। शब्द "ईश्वरतुल्यता" या "धार्मिकता" पवित्रता के लिए मुख्य यूनानी शब्द का अर्थ व्यक्त करता है। एक और यूनानी शब्द पुराने नियम की प्रमुख अवधारणा पवित्रता को बाहरी अलगाव के रूप में और परमेश्वर की सेवा के लिए समर्पण के रूप में दर्शाता है।

क्योंकि नए नियम के लेखकों ने पुराने नियम के परमेश्वर के चित्र को माना, पवित्रता को अपेक्षाकृत कुछ प्रेरितीय ग्रंथों में परमेश्वर को समर्पित किया गया है। यीशु ने अपने शिष्यों को यह प्रार्थना करने के लिए कहा कि पिता के नाम का सम्मान हो: "तेरा नाम पवित्र माना जाए" (मत्ती 6:9)। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पिता की नैतिक पूर्णता की स्तुति की जाती है, जो यशायाह से उधार ली गई पवित्रता की तीन गुना प्रशंसा के साथ है: "पवित्र, पवित्र, पवित्र है प्रभु परमेश्वर सर्वशक्तिमान, जो था और है और आने वाला है!" (प्रका 4:8; तुलना करें यशा 6:3)। लूका, हालांकि, परमेश्वर की पवित्रता पर विचार करते थे, जो पुराने नियम की प्रमुख अवधारणा के अनुसार उनकी अलौकिकता और महिमा थी (लूका 1:49)।

इसी प्रकार, यीशु मसीह की पवित्रता का नया नियम में भी उल्लेख किया गया है। लूका (लूका 1:35; 4:34), पतरस (प्रेरि 3:14; 4:27–30), इब्रानियों के लेखक (इब्रा 7:26), और यूहन्ना (प्रका 3:7) पवित्रता को पिता और पुत्र दोनों को समर्पित करते हैं।

चूंकि आत्मा परमेश्वर से आता है, उसके पवित्र चरित्र को प्रकट करता है, और संसार में परमेश्वर के पवित्र उद्देश्यों का साधन है, वह भी पूर्णतः पवित्र है (मत्ती 1:18; 3:16; 28:19; लूका 1:15; 4:14)। सामान्य शीर्षक "पवित्र आत्मा" परमेश्वर के तीसरे व्यक्ति की नैतिक पूर्णता को रेखांकित करता है (यूह 3:5–8; 14:16–17, 26)।

नए नियम में, पवित्रता मसीह की कलीसिया की भी विशेषता है। प्रेरित पौलुस ने सिखाया कि मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया और इसके लिए मरा "उसे पवित्र करने के लिए, उसे वचन के माध्यम से जल से धोकर शुद्ध किया, (इफि 5:26)। पतरस ने पुराने नियम से उधार ली गई भाषा में कलीसिया को एक पवित्र लोगों के रूप में सम्बोधित किया। अविश्वासी जातियों से अलग और प्रभु को समर्पित, कलीसिया "एक पवित्र जाति" है (1 पत 2:9; तुलना करें निर्ग 19:6)।

लेकिन नया नियम अधिकतर व्यक्तिगत मसीहों के सन्दर्भ में पवित्रता पर चर्चा करता है। मसीह में विश्वासियों को अक्सर "संत" कहा जाता है, जिसका शाब्दिक अर्थ "पवित्र लोग" होता है, क्योंकि विश्वास के माध्यम से परमेश्वर पापियों को न्यायसंगत ठहराते हैं, उन्हें अपनी दृष्टि में "पवित्र" घोषित करते हैं। एक न्यायसंगत पापी किसी भी तरह से नैतिक रूप से परिपूर्ण नहीं होता है, लेकिन परमेश्वर विश्वासियों को निर्दोष घोषित करते हैं। इस प्रकार, उदाहरण के लिए, यद्यपि कुरिन्थ के मसीही अनेक पापों से ग्रस्त थे, पौलुस अपने भटके हुए मित्रों को उन लोगों के रूप में सम्बोधित कर सकता था जो “मसीह यीशु में पवित्र किए गए और पवित्र होने के लिए बुलाए गए थे” (1 कुरि 1:2)। उनकी समस्याओं के बावजूद, कुरिन्थियों के विश्वासियों को मसीह में "पवित्र जन" कहा गया।

हालांकि, नया नियम मसीहों के दैनिक अनुभव में व्यावहारिक पवित्रता की वास्तविकता पर बहुत जोर देता है। जो परमेश्वर मसीह में विश्वास के माध्यम से किसी व्यक्ति को स्वतंत्र रूप से धार्मिक घोषित करता है, वह आज्ञा देता है कि विश्वासी जीवन की पवित्रता में प्रगति करे। परमेश्वर की योजना में, विश्वास के साथ पवित्रता में वृद्धि होनी चाहिए। परमेश्वर

कृपापूर्वक आत्मिक संसाधन प्रदान करते हैं ताकि मसीही विश्वासी "ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी" बन सकें (2 पत 1:4)।

यह भी देखें के अस्तित्व और गुण, परमेश्वर।

पवित्रशास्त्र, शास्त्र

यहूदी धर्म और मसीहत के पवित्र लेखन। यहूदी अपने शास्त्रों के रूप में 39 पुस्तकों को मान्यता देते हैं। मसीही इन यहूदी लेखनों को—जो तोराह (व्यवस्था), भविष्यद्वक्ताओं के पुस्तकें, और लेखन के रूप में वर्गीकृत हैं—साथ ही चार सुसमाचार, 21 पत्रियाँ, प्रेरितों के काम की पुस्तक, और प्रकाशितवाक्य को भी पवित्रशास्त्र के रूप में मान्यता देते हैं। कुछ मसीही अपोक्रिफा और/या ड्यूटेरोकैनोनिकल पुस्तकों को भी पवित्रशास्त्र के रूप में मान्यता देते हैं।

देखें बाइबल, बाइबल का अधिनियम, (नए नियम) की पांडुलिपियाँ और पाठ; बाइबल,(पुराने नियम) की पांडुलिपियाँ और पाठ।

पवित्रस्थान

*देखें*पवित्र तम्बू; मन्दिर।

पवित्रस्थान

पवित्रस्थान

दो इब्रीनी शब्दों का अनुवाद, कदोश और मिद्कोश, दोनों ही क्रिया "स्वच्छ होना" और/या "पवित्र होना" से व्युत्पन्न हैं। यह लगभग 60 बार निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, और गिनती में प्रकट होता है जहाँ तम्बू के निर्माण, स्थानांतरण, और प्रारम्भिक उपयोग की सूचना दी गई है। प्रकाशन, बलिदान, और आराधना के स्थानों को व्यवस्थाविवरण में संदर्भित किया गया है, परन्तु "पवित्रस्थान" शब्द द्वारा नहीं। यह शब्द यहेजकेल, दानिय्येल, और बन्धुआई लेखनों में 60 से अधिक बार प्रकट होता है क्योंकि बन्धुआई के दौरान और बाद में इस्राएल के जीवन में पवित्रस्थान का महत्व था।

"पवित्रस्थान" उस स्थान को सन्दर्भित करता है जहाँ परमेश्वर प्रकट हुए और/या निवास करते थे, जैसा कि सन्दूक की उपस्थिति से संकेत मिलता है। परमेश्वर का वचन वहाँ रखा जाता था और वहीं से प्रसारित होता था। वहाँ परमेश्वर के लोग बलिदान के लिए, वाचा के वचन को सुनने के लिए, आराधना और प्रार्थना के लिए, और प्रमुख पर्वों के उत्सव के लिए एकत्र होते थे।

कुलपिताओं के पास आराधना के स्थान थे (उत 26:24–25; 28:16–22) परन्तु कोई वास्तविक पवित्रस्थान नहीं था। पवित्रस्थान का पहला सन्दर्भ (निर्ग 15:17) इसे परमेश्वर के अपने लोगों के बीच निवास करने और उनके ऊपर राज्य करने के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करता है। तम्बू, जो स्थान-स्थान पर ले जाया जाता था, तब तक केंद्रीय पवित्रस्थान था जब तक सुलैमान ने यरूशलेम में मन्दिर नहीं बनाया। यह जोर देकर कहा जाना चाहिए कि परमेश्वर के लोगों के पास एक केंद्रीय पवित्रस्थान होना चाहिए (व्य.वि. 12:4–7; 16:5–8)।

नए नियम में पुराने नियम के पवित्र स्थान को परमेश्वर के अपने लोगों के साथ और उनके बीच अनन्त निवास के पूर्वाभास के रूप में सन्दर्भित किया गया है (इब्रा 8:5–6; 9:1–14)।

*यह भी देखें*तम्बू; मन्दिर।

पवित्रीकरण

पवित्रीकरण का तात्पर्य लोगों, बर्तनों, इमारतों या स्थानों को गैर-धार्मिक उपयोगों से अलग करना ताकि उन्हें पवित्र या धार्मिक उद्देश्यों के लिए समर्पित किया जा सके।

बाइबल में "पवित्रीकरण" का क्या अर्थ है?

बाइबल में, पवित्रीकरण को उपयुक्त अनुष्ठान या मन्नत द्वारा दर्शाया गया था। कुछ इब्रानी शब्द "अलग करने" का संकेत देते हैं (निर्ग 13:2; लैव्य 8:10–12; व्य.वि. 15:19), कुछ "समर्पण" का संकेत देते हैं (लैव्य 21:12; गिन 6:9), अन्य शब्द "अभिषेक" का संकेत देते हैं (शाब्दिक रूप से, "हाथ भरना," निर्ग 28:41; 1 रा 13:33)। नए नियम में पवित्रीकरण के कम संदर्भ हैं, परन्तु वे अक्सर पवित्रता के विचार से सम्बन्धित होते हैं (यूह 10:36; 1 कुरि 7:14; 1 तीमु 4:5)।

विभिन्न परम्पराएँ पवित्रीकरण को कैसे समझती हैं?

विशेष रूप से उन कलीसिया समूहों में जिनके पास बिशप होते हैं, यह शब्द अभिषेक के लिए गंभीर अनुष्ठानों का वर्णन कर सकता है। इसका उपयोग इनका वर्णन करने के लिए भी किया जाता है:

- मन्दिरों के समर्पण के लिए,
- सन्तों के अवशेषों वाले स्थान के लिए,
- गिरजाघरों के लिए,
- दिव्य आराधना या मिस्सा के भाग, या
- गिरजाघर से सम्बन्धित कार्यों के लिए अलग रखी गई इमारतें।

प्रोटेस्टेंट शिक्षा "हर विश्वासी का याजक का पद" के विचार पर जोर देती है। इस प्रकार सभी मसीही "सन्त" माने जाते हैं। "सन्त" शब्द का मूल वही है जो "पवित्रीकरण" का है। यह उन लोगों को संदर्भित करता है जिन्होंने अपना जीवन परमेश्वर को समर्पित कर दिया है।

ऑर्थोडॉक्स और रोमी कैथोलिक शिक्षा में, कलीसिया आधिकारिक रूप से महान मसीहियों को उनकी मृत्यु के बाद "सन्त" के रूप में अभिषेक या "सन्त घोषित करना" है। यह आदर उन लोगों को दिया जाता है जिन्होंने विशेष रूप से पवित्र जीवन का प्रदर्शन किया।

पवित्रीकरण मसीही जीवन के लिए क्यों महत्वपूर्ण है?

पवित्रीकरण महत्वपूर्ण है क्योंकि यह परमेश्वर और संसार दोनों से संबंधित है। प्रेरित पौलुस रोमियों 12:1–2 में इस शब्द को परिभाषित करते हैं। वे इस बात पर जोर देते हैं कि पवित्रीकरण में लोग अपने जीवन को प्रतीकात्मक रूप से परमेश्वर के लिए बलिदान के रूप में समर्पित करते हैं। लोगों और वस्तुओं से संबंधित पवित्रीकरण का महत्व प्रेरित पतरस के पहले पत्र का मूल विषय है। प्रत्येक मसीही को प्रतिदिन "पवित्र" और "राजसी" याजक का पद परमेश्वर की महिमा के लिए जीना चाहिए (1 पत 2:9)। मसीही इसे आत्मिक परिपक्वता का महत्वपूर्ण चिन्ह मानते हैं कि वे अपने व्यक्तित्व को पवित्र आत्मा की सहायता से पवित्र करें।

*यह भी देखें*पवित्रता।

पवित्रीकरण

पवित्रीकरण का अर्थ है "पवित्र या शुद्ध किया जाना"। यह वर्णन करता है कि कैसे मसीही अपने जीवन में परमेश्वर के समान बनते जाते हैं। अधिकान्श धर्मशास्त्री इसे सम्बन्धित शब्दों से अलग करने के लिए संकीर्ण अर्थ में उपयोग करना पसंद करते हैं, जैसे "नयाजन्म", "धार्मिकता" और "महिमामंडन।"

पवित्रीकरण क्या है?

न्यू हैम्पशायर बैपटिस्ट कन्फेशन (1833) पवित्रीकरण की व्याख्या इस प्रकार करता है:

"हम विश्वास करते हैं कि पवित्रीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा, परमेश्वर की इच्छा के अनुसार, हम उनकी पवित्रता के सहभागी बनते हैं; यह एक प्रगतिशील कार्य है; यह नए जन्म में आरम्भ होता है; और यह विश्वासियों के हृदयों में पवित्र आत्मा की उपस्थिति और शक्ति द्वारा, जो सील करने वाले और सांत्वना देने वाले हैं, नियुक्त साधनों के निरन्तर उपयोग में आगे बढ़ता है—विशेष रूप से परमेश्वर का वचन, आत्म-परीक्षण, आत्म-त्याग, सतर्कता और प्रार्थना।" (अनुच्छेद 10)

यह परिभाषा हमें पवित्रीकरण को नए जन्म और महिमामण्डन से अलग समझने में सहायता करती है:

- नया जन्म तब होता है जब कोई पहली बार मसीही बनता है। नया जन्म उद्धार की शुरुआत को दर्शाता है।
- पवित्रीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें परमेश्वर मसीहियों को यीशु के समान बनने में सहायता करते हैं। पवित्रीकरण उद्धार की प्रक्रिया के मध्य भाग को सन्दर्भित करता है।
- महिमामंडन वह है जब परमेश्वर मसीहियों में अपने कार्य को पूर्ण करते हैं। महिमामंडन उद्धार की पूर्णता को सन्दर्भित करता है।

पवित्रीकरण और धर्मीकरण के बीच अन्तर

पवित्रीकरण और धर्मीकरण के बीच का अन्तर महत्वपूर्ण है, लेकिन इसे समझना कठिन हो सकता है। यहाँ कुछ मुख्य अन्तर हैं:

1. "धर्मीकरण," जैसे "नया जन्म," मुख्य रूप से मसीही अनुभव की शुरुआत को सन्दर्भित करता है। पवित्रीकरण उद्धार की प्रक्रिया की प्रगति पर बल देता है।
2. धर्मीकरण का अभिप्राय, परमेश्वर के न्यायी के रूप में कार्य करने से है। परमेश्वर एक ही बार में विश्वासियों के सभी दोषों को हटा देते हैं और उन्हें कानूनी रूप से धार्मिक मानते हैं। पवित्रीकरण, नया जन्म और महिमामंडन की तरह, परमेश्वर के बच्चों के चरित्र पर पवित्र आत्मा की परिवर्तनकारी शक्ति पर जोर देता है।

धर्मसिद्धि और पवित्रीकरण के बीच का अन्तर सुधारवाद के दौरान अत्यन्त महत्वपूर्ण हो गया (यह वह समय था जब

मसीही कलीसिया में बड़ा परिवर्तन हुआ, जो ईस्वी 1517 में शुरू हुआ)। सुधारकों के अनुसार, रोमन कैथोलिक कलीसिया ने धर्मीकरण और पवित्रीकरण को भ्रमित कर दिया था। रोमन कैथोलिक कलीसिया ने यह जोर दिया कि धर्मीकरण "केवल पापों की क्षमा नहीं है, बल्कि आन्तरिक मनुष्यत्व का पवित्रीकरण और नवीनीकरण भी है" (डिक्रीस ऑफ़ द काउंसिल ऑफ़ ट्रेंट, छठा सत्र, 1547, अध्याय 7)। इसके विपरीत, सुधारकों ने यह जोर दिया कि धर्मीकरण और पवित्रीकरण को अलग नहीं किया जा सकता, लेकिन उन्हें अलग-अलग पहचानना आवश्यक है।

कैल्विन ने तर्क दिया कि परमेश्वर के उद्धार के कार्य के इन दो तत्वों को उतने हिस्सों में नहीं बाँटा जा सकता जितना मसीह को बाँटा जा सकता है। कैल्विन ने कहा, "इसलिए, जिन्हें भी परमेश्वर अनुग्रह में स्वीकार करते हैं, उन पर वेह उसी समय अपनाने की आत्मा प्रदान करते है, जिसकी शक्ति से वे उन्हें अपने स्वरूप में पुनः निर्मित करते हैं। यदि सूर्य की चमक को उसकी गर्मी से अलग नहीं किया जा सकता, तो क्या हम यह कहेंगे कि पृथ्वी उसकी रोशनी से गर्म होती है, या उसकी गर्मी से रोशन होती है?" (*इंस्टीट्यूटस ऑफ़ द क्रिश्चियन रिलिजन,* 3:11.6)। धर्मी ठहराना, परमेश्वर के न्यायाधीश के रूप में एक बार का कथन है। पवित्रीकरण उस व्यक्ति के चरित्र में परिवर्तन की प्रक्रिया है जिसे न्यायोचित ठहराया गया है।

न्यू हैम्पशायर बैपटिस्ट कन्फेशन कहता है कि पवित्रीकरण में, "हम उसकी पवित्रता के सहभागी बनते हैं।" इसका क्या अर्थ है? पवित्रीकरण के बारे में बाइबल क्या कहती है, इसका विस्तृत अध्ययन यहाँ सम्भव नहीं है क्योंकि लगभग पूरा पवित्रशास्त्र किसी न किसी रूप में इस मुद्दे को सम्बोधित करता है। हालांकि, उस शिक्षण में एक केन्द्रीय विषय पर जोर दिया जाना चाहिए: "इसलिए तुम पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ" (लैव्य 11:45; 1 पत 1:16; तुलना करें मत्ती 5:48)।

1647 ईस्वी में लिखे गए, वेस्टमिंस्टर शॉर्टर कैटेचिज्म के अनुसार, पवित्रीकरण द्वारा "हम परमेश्वर के स्वरूप के अनुसार सम्पूर्ण मनुष्यत्व में नवीनीकृत होते हैं" (क्वेश्चन 34; देखें कुल 3:10)। पवित्रीकरण के हमारे दृष्टिकोण के लिए इस सत्य से अधिक महत्वपूर्ण कुछ नहीं हो सकता। पवित्रता का मानक, मसीह के स्वरूप के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता है (रोम 8:29)। इससे कुछ भी कम अर्थात् शास्त्र के मानक को कम करना है और इस प्रकार से विश्वास को कमजोर करना है। उपरोक्त परिभाषा संकेत करती है कि मसीह हमारे आदर्श से अधिक है। वह उन लोगों के लिए अपनी पवित्रता प्रदान करते है जो उनके साथ जुड़े हुए हैं—यीशु हमारा पवित्रीकरण है (1 कुरि 1:30)।

प्रारम्भिक शुद्धिकरण

बाइबल दिखाती है कि पवित्रीकरण समय के साथ धीरे-धीरे होता है। प्रेरित पौलुस कहते हैं कि मसीही "तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश-अंश करके बदलते जाते हैं" (2 कुरि 3:18; देखें रोम 12:1–2; फिलि 3:14; इब्रा 6:1; 2 पत 3:18)। इसके अलावा, पवित्रशास्त्र में पाए जाने वाले कई आदेश यह संकेत देते हैं कि मसीही अनुभव में वृद्धि होती रहती है।

उसी समय, पवित्रशास्त्र में कई वचन दिखाते हैं कि पवित्रीकरण विश्वासी को नए जन्म के साथ ही दिया जाता है। उदाहरण के लिए, पौलुस अक्सर मसीहियों को "संत" या "पवित्र लोग" के रूप में सन्दर्भित करते है जैसे कि रोमियों 1:7 और इफिसियों 1:1 में। यह भाषा सुझाव देती है कि पवित्रीकरण पहले से ही कुछ ऐसा है जो विश्वासियों के पास है। पौलुस विशेष रूप से कहते है कि कुरिन्थुस की कलीसिया में मसीही "मसीह यीशु में पवित्र" हैं (1 कुरि 1:2)। वह पवित्रीकरण को धोने के साथ जोड़ते है (जो नए जन्म का प्रतिनिधित्व कर सकता है) और न्यायसंगतता के साथ भी (6:11)। ऐसा लगता है जैसे सभी तीन तत्व एक ही समय में होते हैं। पौलुस कहते हैं कि मसीही पाप के लिए मर चुके हैं (रोम 6:2)। वह मृत्यु का उपयोग यह समझाने के लिए करते हैं कि:

- मृत्यु अन्तिम नहीं है
- मृत्यु को पलटा नहीं जा सकता
- जब कुछ मर जाता है, तो वह पूरी तरह से परिवर्तित हो जाता है

मृत्यु की इस तस्वीर का उपयोग करके, पौलुस यह सिखाते हैं कि:

- परमेश्वर मसीहियों पर पाप की शक्ति को समाप्त करते हैं
- पाप के साथ यह सम्बन्ध तब टूट जाता है जब कोई व्यक्ति मसीही बन जाता है
- यह परिवर्तन पूर्ण और स्थायी है।

पवित्रशास्त्र के ये भाग हर मसीही को परिवर्तन के बाद पूर्ण आज्ञाकारिता नहीं सिखाते। ऐसी व्याख्या हमें पवित्रशास्त्र की समग्र स्पष्ट शिक्षा के साथ संघर्ष में ला सकती है। इसके अलावा, यह ध्यान देना चाहिए कि कुरिन्थ के वासी "संत" होते हुए भी आध्यात्मिक रूप से अपरिपक्व थे (1 कुरि 3:1–3; 6:8; 11:17–22)।

इन अंशों की व्याख्या कैसे की जानी चाहिए? कुछ लेखकों ने सुझाव दिया है कि पौलुस "सम्भावित" पवित्रीकरण के बारे में बात कर रहे है। वे कह रहे है, हालांकि हमारा सम्बन्ध पाप के साथ वास्तव में नष्ट नहीं हुआ है, परमेश्वर ने हमें वह सब कुछ प्रदान किया है जिसकी हमें आवश्यकता है ताकि ऐसा हो सके। इस व्याख्या में कुछ सत्य है, लेकिन यह पूरी तरह से

नहीं समझाता कि पौलुस कितनी दृढ़ता से मसीहियों को पाप की शक्ति से मुक्त होने के बारे में बात करते हैं।

इन अंशों को समझने का एक और तरीका "स्थिति" पवित्रीकरण कहलाता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, पौलुस हमारे परमेश्वर के सामने स्थिति के सम्बन्ध में न्यायिक शब्दों में बात कर रहे हैं। हम इस कानूनी विचार को रोमियों 6:7 में देख सकते हैं जहाँ पौलुस "मुक्त" शब्द का उपयोग "धार्मिक ठहराए जाने" के अर्थ में करते हैं। यदि केवल इतना ही कहा गया है, तो यह सुझाव देता है कि रोमियों 6 केवल धार्मिक ठहराए जाने के सिद्धांत को दोहराता है। यह संदिग्ध है। एक बेहतर दृष्टिकोण यह है कि पौलुस की शिक्षा में न्यायी सम्बन्ध और एक अनुभव सन्दर्भ शामिल है।

प्रगतिशील पवित्रीकरण

इतिहास के माध्यम से मसीहियों ने पवित्रीकरण को कैसे समझा है

सभी मसीही समूह इस बात को मानते हैं कि मन को नया बनाकर परिवर्तन की आवश्यकता है (रोम 12:2), लेकिन मसीही इस बात पर असहमत हैं कि यह परिवर्तन कैसे होता है। प्रोटेस्टेंट सुधारकों ने, सामान्य रूप से, व्यक्तिगत पवित्रीकरण के बारे में जिसे कुछ लोग "निराशावादी" या "सन्देहपूर्ण" दृष्टिकोण कहते हैं, उसे अपनाया। इस दृष्टिकोण का वर्णन वेस्टमिंस्टर कन्फेशन ऑफ़ फेथ (1647) में किया गया है। यह बताता है कि पवित्रीकरण "इस जीवन में अपूर्ण है; हर भाग में कुछ भ्रष्टाचार के अवशेष बने रहते हैं, जिससे विश्वासियों के भीतर एक निरंतर और असंगत युद्ध उत्पन्न होता है" (XIII.ii)। हालांकि यह वक्तव्य आत्मा की विजय शक्ति को महत्वपूर्ण बनाता है, कुछ मसीही विश्वास करते हैं कि इसकी मूल धारणा आत्मिक विजय की आवश्यकता और सम्भावना को भ्रमित करती है।

1703 से 1791 तक जीवित रहे जॉन वेस्ली को अक्सर पवित्रीकरण पर पारम्परिक कैल्विनवादी और लूथरन दृष्टिकोणों पर प्रतिक्रिया करते हुए देखा जाता है। अपने समय के धर्मनिष्ठ आंदोलन से प्रभावित होकर, वेस्ली ने मसीहियत के अनुभवात्मक पहलुओं पर जोर दिया और इस विचार को विकसित किया कि "पूर्ण पवित्रीकरण" इस जीवन में प्राप्त किया जा सकता है, हालांकि वे अपनी शिक्षाओं में हमेशा सुसंगत नहीं थे।

19वीं सदी में, कई मसीही पूर्णता के विचार में रुचि लेने लगे, हालांकि यह एक पूर्ण अर्थ में नहीं था। कुछ का मानना था कि पूर्णता पूरी तरह से पाप को हटाने से आती है, जबकि अन्य का मानना था कि यह उस पाप पर आत्मिक विजय प्राप्त करने के बारे में है जो अभी भी एक विश्वासी के हृदय में मौजूद है। यह बाद वाला दृष्टिकोण विजयी जीवन आंदोलन (जिसे हाई लाइफ मूवमेंट या केस्विकवाद भी कहा जाता है) के लिए केन्द्रीय है। यह आंदोलन 1900 के दशक की शुरुआत में शुरू हुआ। धर्मशास्त्री बेंजामिन बी. वारफील्ड ने, जो 1851 से 1921 तक जीवित रहे, इन विभिन्न पूर्णतावादी समूहों की आलोचना की। जबकि बहस जारी रही है, यह उतनी तीव्र नहीं है जितनी पहले थी।

आत्मिक विकास में ईश्वरीय अनुग्रह और मानव के प्रयास का सन्तुलन

पवित्रीकरण के इर्द-गिर्द अधिकांश विवाद इस प्रक्रिया में मनुष्य की भूमिका पर केन्द्रित है। जबकि सभी मसीही इस बात से सहमत हैं कि परमेश्वर की सहायता के बिना पवित्रता असम्भव है, यह परिभाषित करना चुनौतीपूर्ण है कि वह सत्य व्यक्तिगत क्रिया को कैसे प्रभावित करता है। रोमन कैथोलिक परम्परा में, बपतिस्मे की शुद्धिकरण शक्ति और भले काम के गुण पर महत्वपूर्ण जोर दिया जाता है, जो यह सवाल उठाता है कि क्या ईश्वरीय अनुग्रह के महत्व को नज़रअंदाज़ किया जा रहा है। दूसरी ओर, कुछ विजयी जीवन आंदोलन के समर्थक हैं, जो "छोड़ो और परमेश्वर को करने दो" के विचार पर जोर देते हैं। यद्यपि यह नारा उचित रूप से उपयोग किए जाने पर मूल्यवान हो सकता है, यह कभी-कभी यह संकेत दे सकता है कि विश्वासियों को अपने पवित्रीकरण में पूरी तरह से निष्क्रिय नहीं होना चाहिए।

फिलिप्पियों 2:12–13 इस विषय पर सबसे महत्वपूर्ण पद है। पौलुस अपने उद्धार को कार्यान्वित करने की आज्ञा को इस घोषणा के साथ सन्तुलित करते हैं कि यह परमेश्वर है जो इस कार्य के लिए आवश्यक आत्मिक शक्ति प्रदान करते हैं। केवल इस कथन के पहले भाग पर ध्यान केन्द्रित करना और दूसरे की महत्वता को नज़रअंदाज़ करना आकर्षक हो सकता है। इसके बजाय, कोई पौलुस के ईश्वरीय अनुग्रह पर जोर देने पर ध्यान केन्द्रित कर सकता है, जहाँ व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी को नज़रअंदाज़ किया जाता है। हालांकि, प्रेरित ने जानबूझकर इन दो सच्चाइयों के बीच एक सावधानीपूर्वक सन्तुलन बनाए रखा है।

पवित्रीकरण के लिए अनुशासन, एकाग्रता और प्रयास की आवश्यकता होती है। यह पवित्रशास्त्र के कई आदेशों से स्पष्ट है। कुछ महत्वपूर्ण आदेश वे हैं जहाँ मसीही जीवन को दौड़ने और लड़ाई करने जैसे विचारों के साथ वर्णित किया गया है (1 कुरि 9:24–27; इफि 6:10–17)।

हालांकि, मसीहियों को हमेशा इस प्रलोभन का विरोध करना चाहिए कि वे स्वयं को पवित्र कर सकते हैं, यह मानते हुए कि आत्मिक शक्ति भीतर से आती है और वे केवल अपनी शक्ति पर निर्भर कर सकते हैं। यह एक चुनौतीपूर्ण तनाव उत्पन्न करता है, ठीक वैसे ही जैसे प्रार्थना का विरोधाभास: "जब परमेश्वर, जो हमारी आवश्यकताओं को जानते हैं और जो सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है, वैसे भी हमेशा सबसे अच्छा करेंगे, तो प्रार्थना क्यों करें?"

शायद पवित्रता का असली "रहस्य" इस सन्तुलन को बनाए रखने में है: पवित्रीकरण के सच्चे साधन के रूप में परमेश्वर पर पूरी तरह निर्भर रहना, जबकि अपनी व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी को भी ईमानदारी से निभाना।

*यह भी देखें*पवित्रता; धार्मिकता, धार्मिक।

पशहूर

1. एक याजक परिवार के पूर्वज, जो बँधुआई के बाद जरुब्बाबेल के साथ यरूशलेम लौटे (एज्रा 2:38; नहे 7:41)। सम्भवतः वह मल्किय्याह के पुत्र और याजक अदायाह के दादा थे। अदायाह ने बँधुआई के बाद के काल में पवित्रस्थान में सेवा की (1 इति 9:12)। पशहूर के छः पुत्रों को एज्रा द्वारा अपनी अन्यजाति पत्नियों को त्यागने के लिये प्रोत्साहित किया गया (एज्रा 10:22)।

2. याजकों में से एक, जिन्होंने नहेम्याह के साथ एज्रा की वाचा पर अपनी छाप लगाई (नहे 10:3)।

3. इम्मेर का पुत्र, याजक और पवित्रस्थान के प्रधान, जो यहूदा के राजा सिदकिय्याह के शासनकाल (597–586 ईसा पूर्व) में सेवा करते थे। यरूशलेम के लिये यिर्मयाह का दण्ड की भविष्यद्वाणियों से क्रोधित होकर, पशहूर ने उन्हें पीटा और यहोवा के भवन के ऊपर बिन्यामीन फाटक पर काठ में डाल दिया। छूटने के बाद, यिर्मयाह ने पशहूर की झूठी भविष्यद्वाणियों को प्रगट किया और उसके बाबेल में बँधुआई और मृत्यु की भविष्यद्वाणी की (यिर्म 20:1–6)।

4. मल्किय्याह के पुत्र और सम्भवतः यहूदा के राजा सिदकिय्याह के पोते (597–586 ईसा पूर्व; यिर्म 21:1; 38:1; पुष्टि करें 38:6)। राजा ने पशहूर को सपन्याह याजक के साथ यिर्मयाह के पास यह विनती लेकर भेजा कि वह यहोवा से यहूदा पर कृपा करने की प्रार्थना करें। यिर्मयाह को उनके पिता के गड्ढे में बन्दी बनाकर डाला गया था (यिर्म 38:6)।

5. गदल्याह के पिता। गदल्याह—शपत्याह, यूकल, और पशहूर के साथ—यिर्मयाह का विरोध किया और उसे मल्किय्याह के गड्ढे में कैद करके घात करने का प्रयास किया (यिर्म 38:1)।

पशु

पुराने और नए नियमों में एक पशु। कभी-कभी इसका उपयोग रूपक के रूप में किया जाता है। पुराने नियम में इस शब्द के कई अर्थ हैं। इसे कभी-कभी अलग-अलग अनुवादित किया जाता है क्योंकि कई इब्री शब्द "जीवित प्राणी" के साथ-साथ "पशु" का भी अर्थ हो सकता हैं, लेकिन केवल "पशु" के रूप में अनुवादित करते हैं। इसलिए, पुराने नियम में, पशु निम्नलिखित का संदर्भ दे सकता है:

1. सामान्यतः, कोई भी पशु (जैसे, उत्पत्ति 1:24; भजन 36:6), लेकिन मछली, पक्षी और कीड़े नहीं (जैसे, उत्पत्ति 6:7; लैव्यव्यवस्था 11:2; व्यवस्थाविवरण 4:17; अय्यूब 12:7; 35:11; सपन्याह 1:3)।
2. एक पालतू या प्रशिक्षित पशु (उदाहरण के लिए, निर्गमन 19:13; 22:10; गिनती 3:13; 31:47; न्यायियों 20:48; नीतिवचन 12:10; यिर्मयाह 21:6; जकर्याह 8:10)।
3. एक जंगली और कभी-कभी मांस खाने वाला पशु (उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 37:20; निर्गमन 23:11; व्यवस्थाविवरण 28:26; 1 शमूएल 17:44; यहेजकेल 14:15)।
4. प्रतीकात्मक रूप से, दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य में "पशु" का सबसे अधिक उपयोग किया गया है। दानिय्येल (विशेष रूप से दानिय्येल 7), जिसमें पशु एक संसार के शासक का प्रतीक है जो परमेश्वर के लोगों को सताता और उत्पीड़ित करता है। प्रकाशितवाक्य में, प्रेरित यूहन्ना इस अवधारणा को परमेश्वर के लोगों के अंतिम उत्पीड़न के बारे में बात करने के लिए लागू करते हैं जो इतिहास के अंत में होगा। यूहन्ना का "पशु" उनके पहले के पत्रियों में "मसीह विरोधी" के समान है (1 यूहन्ना 2:18, 22; 4:3; 2 यूहन्ना 1:7) और पौलुस के "अधर्म के पुरुष" के समान है (2 थिस्सलुनीकियों 2:3)। कई बाइबल टिप्पणीकार मानते हैं कि ये तीनों शब्द एक ही व्यक्ति के संदर्भ को व्यक्त करते हैं।

*देखें*मसीह विरोधी; हर-मगिदोन; पशु का चिन्ह; की पुस्तक, प्रकाशितवाक्य।

पश्चाताप

शाब्दिक रूप से मन का परिवर्तन, व्यक्तिगत योजनाओं, इरादों, या विश्वासों में परिवर्तन नहीं, बल्कि परमेश्वर के बारे में किसी के दृष्टिकोण में परिवर्तन। ऐसा पश्चाताप मसीह में उद्धारकारी विश्वास के साथ होता है (प्रेरि 20:21)। यह मान लेना असंगत और समझ से परे है कि कोई मसीह में विश्वास

करता है फिर भी पश्चाताप नहीं करता है। पश्चाताप परिवर्तन का इतना महत्वपूर्ण पहलू है कि अक्सर उद्धारकारी विश्वास के बजाय इस पर ज़ोर दिया जाता है, जैसा कि जब मसीह ने कहा कि एक पापी के पश्चाताप करने पर स्वर्ग में स्वर्गदूतों के बीच आनंद होता है (लूका 15:7)। प्रेरितों ने मसीह के प्रति अन्यजातियों के परिवर्तन का वर्णन इस प्रकार किया कि परमेश्वर ने उन्हें "जीवन के लिये मन फिराव का दान" दिया (प्रेरि 11:18)। वास्तव में, सुसमाचारसम्मत पश्चाताप और मसीह में विश्वास अविभाज्य हैं, हालांकि एक परिवर्तित व्यक्ति एक पहलू के बारे में दूसरे से अधिक जागरूक हो सकता है।

ऐसा मन फिराव कोई पृथक कार्य नहीं है, बल्कि मन की एक प्रवृत्ति है, जो परमेश्वर की घोषित इच्छा के अनुसार व्यवहार के लिए प्रेरणा प्रदान करता है। दैनिक पापों और कमियों की पहचान पश्चाताप के नए कार्यों और मसीह में विश्वास के नए अभ्यासों के लिए अवसर प्रदान करती है। इस तरह के पश्चाताप की सबसे गहरी और सबसे उल्लेखनीय अभिव्यक्तियों में से एक दाऊद का बतशेबा के साथ उसके व्यभिचार का वर्णन है (भजन 51)। संपूर्ण कलिसियाओं को, कभी-कभी, पश्चाताप करने के लिए बुलाया जाता है (प्रका 2:5)। दूसरा कुरिन्थियों 7 में इस तरह के सामूहिक पश्चाताप का एक दिलचस्प और पूर्ण वर्णन है जिसमें पाप के लिए दुःख और पुराने पापपूर्ण तरीकों को त्यागने और उचित रीति से व्यवहार करने का दृढ़ संकल्प शामिल है। यद्यपि पश्चाताप के साथ अक्सर गहरी भावनाएँ जुड़ी होती हैं, यह ऐसी भावनाओं के तुल्य नहीं है, बल्कि पवित्र परमेश्वर के सामने पापी की अपनी आवश्यकता के बारे में दृढ़ विश्वास में निहित है।

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला (मत्ती 3:2; मर 1:4) और मसीह (मर 1:15) दोनों पश्चाताप के प्रचारक थे, धर्मियों को नहीं बल्कि पापियों को पश्चाताप करने के लिए बुलाते थे। और महान आदेश (लूका 24:44–49) के अनुसार, पिन्तेकुस्त के दिन (प्रेरि 2) पर पतरस के प्रचार से शुरू होकर, जिसके उल्लेखनीय परिणाम थे, प्रेरितों ने उसी तरह का प्रचार जारी रखा। *देखें*स्वीकारोक्ति; परिवर्तन; क्षमा; पुनर्जन्म; उद्धार।

पश्चिमी पाठ

पश्चिमी पाठ

बी.एफ.वेस्कॉट और एफ.जे.ए.हॉर्ट पश्चिमी पाठ को यूनानी नये नियम के चार प्रकार के प्रमुख पाठ में से एक के रूप में वर्गीकृत करते हैं। *देखें*बाइबल, पांडुलिपियां और पाठ (नया नियम)।

पसदम्मीम

1 इतिहास 11:13 में एपेसदम्मीम का वैकल्पिक रूप, जो यहूदा के गोत्र में स्थित एक स्थान था। *देखें*एपेसदम्मीम।

पहत्मोआब

पहत्मोआब

इस्राएलियों के एक परिवार के मुखिया, जो बाबेल की बँधुआई के बाद जरूब्बाबेल के साथ फिलिस्तीन लौटे (एज्रा 2:6; नहे 7:11)। उनके परिवार के अन्य सदस्य, लगभग 200 पुरुष, एज्रा के साथ आए (एज्रा 8:4)। लौटने के बाद, उनके कुछ पुत्र उन इस्राएलियों में शामिल थे जिन्होंने विदेशी पत्नियों के साथ अपने सम्बन्धों को तोड़ने की प्रतिज्ञा की (10:30)। हश्शूब, पहत्मोआब के पुत्र, नहेम्याह के समय में यरूशलेम की शहरपनाह और भट्टियों के मीनार के पुनर्निर्माण में मदद की (नहे 3:11)। पहत्मोआब, जिन्हें लोगों का प्रधान कहा गया, उन्होंने एज्रा की वाचा पर अपनी मुहर लगाई (10:14)।

पहरुआ

पहरुआ

सैन्य या नागरिक सुरक्षा व्यक्ति जिनके पास प्राचीन नगरों या सैन्य प्रतिष्ठानों को अचानक हमले या नागरिक आपदाओं से बचाने की ज़िम्मेदारी होती थी (1 शमू 14:16; 2 शमू 18:24–27; 2 रा 9:17–20; यशा 21:6–9)। पहरुओं के पास नए दिन के आगमन की घोषणा करने की ज़िम्मेदारी भी होती थी (भज 130:6; यशा 21:11–12)। भविष्यद्वक्ताओं के कार्य और ज़िम्मेदारियों का वर्णन करने वाले एक अंश में, यहेजकेल ने आसन्न खतरे की चेतावनी देने की पहरुए की समानांतर ज़िम्मेदारी की सूचना दी। यदि पहरुए (या भविष्यद्वक्ता) अपने कार्य में असफल होते, तो वे लोगों के लहू के दोषी होते (यहेज 33:2–9; पुष्टि करें यिर्म 6:17; यहेज 3:17; होश 9:8)। विश्वासयोग्य भविष्यद्वक्ताओं के विपरीत, यशायाह ने इस्राएल के अगुवों की तुलना अंधे पहरुओं से की, जो इस्राएल के खतरे को देखने की क्षमता नहीं रखते थे और न ही लोगों को पश्चाताप की ओर ले जाने में सक्षम थे (यशा 56:10; मीक 7:4)। इस्राएल के पहरुए के रूप में सेवा करने वाले भविष्यद्वक्ताओं ने ही सबसे पहले इस्राएल के आने वाले विनाश को देखा और वे ही थे जिन्होंने सबसे पहले उनके देश में लौटने की घोषणा की (यशा 21:11–12; 52:8)।

पहरुओं का फाटक

"पहरुओं का फाटक" का किंग जेम्स संस्करण अनुवाद। यह यरूशलेम में एक फाटक था। यह सम्भव है कि यह राजभवन के परिसर में था (नहे 12:39)।

*देखिए*पहरुओं का फाटक।

पहरुओं के फाटक

पहरुओं के फाटक

यरूशलेम के उत्तर या उत्तर-पश्चिम भाग में स्थित फाटक (नहे 12:38–39, किंग्स जेम्स संस्करण के अनुसार "बन्दीगृह का फाटक"), हालांकि यह बन्दीगृह के आँगन से संबंधित नहीं था (3:25), जो राजभवन से जुड़ा था। संभवतः यह वही था जो गिनती का फाटक के समान था। *देखें*यरूशलेम।

पहरे का आँगन

सातवीं शताब्दी ई.पू. में यरूशलेम में एक आपातकालीन बंदी क्षेत्र था, जब शहर पर बाबेली का आक्रमण हुआ था। हालांकि भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह को वहाँ बंदी बनाया गया था, फिर भी वे अपनी सामान्य गतिविधियों को बनाए रखने में सक्षम थे, यह दर्शाता है कि यह क्षेत्र शायद एक छोटा आँगन था (यिर्म 32:2–12; 33:1; 37:21; 38:6–28; 39:14–15; किंग्स जेम्स संस्करण के अनुसार "बन्दीगृह की कचहरी")।

पहरे के भवन का आँगन

"पहरे के भवन का आँगन" का किंग जेम्स संस्करण अनुवाद। यह एक खुला भवन था जहाँ उन्होंने भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह को कैद में रखा था (यिर्म 32:2)।

*देखिए*पहरे के भवन का आँगन।

पहला यहूदी विद्रोह

66–70 ईस्वी में विद्रोह, जो यहूदिया में कई अप्रभावी रोमी गवर्नरों के परिणाम स्वरूप हुआ। अन्तिम यहूदी राजा, अग्रिप्पा 1 (जो प्रेरि12 में हेरोदेस है) की मृत्यु 44 ईस्वी में हुई, उसके बाद के 20 साल फिलिस्तीन में यहूदियों के लिए उत्पीड़न और अपमान से भरे थे। अशांति को खुली बगावत में बदलने के लिए केवल एक चिंगारी की जरूरत थी; यह चिंगारी 64 ईस्वी में नियुक्त रोमी गवर्नर फ्लोरस ने प्रदान की। मन्दिर के खजाने से पैसे की मांग और रोमी सैनिकों द्वारा हत्या और लूटपाट ने यहूदियों को 66 ईस्वी में विद्रोह करने के लिए उकसाया।

कई पूर्वी भूमध्यसागरीय नगरों में यहूदियों और मूर्तिपूजकों के बीच एक सामान्य संघर्ष के साथ विद्रोह जल्दी ही पूरे फिलिस्तीन में फैल गया। फिलिस्तीन में विद्रोह का नेतृत्व जेलोतेस ने किया, जो एक यहूदी समूह था जो लम्बे समय से चाहता था कि रोमी फिलिस्तीन छोड़ दें। बेथ-होरोन के पास एक प्रारम्भिक यहूदी जीत के बाद, सम्राट नीरो ने विद्रोहियों को दण्डित करने की कार्यवाही को निर्देशित करने के लिए अपने सबसे सक्षम जनरल, वेस्पासियन को भेजा। सन् 67 ईस्वी की शरद ऋतु तक, गलील और अन्य उत्तरी भूमि रोमी हाथों में वापस आ गई थी। 67 और 68 ईस्वी में सामरिया और यहूदिया में आगे के अभियानों ने केवल चार गढ़ों को यहूदी नियंत्रण में छोड़ दिया। इस बिंदु पर रोमी अभियान धीमा पड़ गया। नीरो ने 68 ईस्वी में आत्महत्या कर ली, और तीन अल्पकालिक सम्राटों के बाद, जनरल वेस्पासियन ने 69 ईस्वी में साम्राज्य पर नियंत्रण कर लिया। उनके पुत्र टाइटस ने फिलिस्तीन में सैन्य बलों की कमान संभाली और 70 ईस्वी में यरूशलेम की घेराबंदी की।

यदि उन्होंने रोम में उथल-पुथल का फायदा उठाकर अपनी स्थिति को मजबूत किया होता और आपस में लड़ रहे यहूदी गुटों के बीच विवादों को सुलझाया होता तो राजधानी में यहूदी बेहतर तैयारी कर सकते थे । जैसा कि घटित हुआ, टाइटस के 80,000 सैनिकों के आगमन ने उन्हें शहर की अन्तिम रक्षा के लिए एकजुट होने पर विवश कर दिया।

नगर की घेराबंदी पांच महीने तक चली। यरूशलेम ने आगे बढ़ रहे रोमी सैनिकों के खिलाफ वीरतापूर्वक प्रतिरोध किया, जिससे नगर की चरण-दर-चरण विजय हुई। यहूदी इतिहास का एक दुखद क्षण 70 ईस्वी के अगस्त की शुरुआत में आया जब सदियों में पहली बार मन्दिर में सुबह और शाम की बलि नहीं चढ़ाई गई। लगभग 29 अगस्त को, अभी भी स्पष्ट नहीं है कि किन परिस्थितियों में, पवित्र स्थान में आग लगा दी गई और मन्दिर नष्ट हो गया, इस प्रकार इस घटना ने यीशु की भविष्यद्वानी को पूरा किया (मत्ती 24:1–2; मर 13:1–2; लूका 19:43–44; 21:5–7)। एक और महीने तक कुछ प्रतिरोध जारी रहा, लेकिन सितंबर के अन्त तक, उजाड़ शेहर में संघर्ष समाप्त हो गया। कुल मिलाकर, विद्रोह के दौरान लगभग दस लाख यहूदी मारे गए और 900,000 को बंदी बना लिया गया।

*यह भी देखें*इतिहास, इस्राएल का; यरूशलेम; यहूदी धर्म।

पहली फसलें

पहला बालक, पशु, या किसी फसल का पहला हिस्सा, जो इब्री विचार में पवित्र माना जाता था और इसलिए प्रभु का होता था। पहले फल, जो आने वाले और अधिक का पूर्वाभास होते थे,

परमेश्वर को उनकी भलाई के लिए धन्यवाद के रूप में अर्पित किए जाते थे।

पहले फल की भेंट में उत्पादन शामिल हो सकता है, चाहे वह अपने स्वाभाविक रूप में हो या किसी तरह से तैयार या संसाधित किया गया हो, जैसे आटा, रोटी, दाखरस, जैतून का तेल, और ऊन। पहलौठा पुत्र और जो भी जानवर किसी के पास होते थे, उन्हें परमेश्वर के लिए माना जाता था। पहलौठे बच्चे और अशुद्ध जानवरों के पहलौठो को "मुक्त" (रुपये-पैसे देकर) किया जाता था, और गायों, भेड़, और बकरियों के पहलौठो को परमेश्वर को बलिदान में चढ़ाया जाता था (गिन 18:14–17)।

किसी भी तरह का पहला फल उन लोगों के लिए आरक्षित था जिन्हें परमेश्वर ने नियुक्त किया था, अर्थात याजक। पुराने नियम में कम से कम तीन बार "पहले फलों में से पहला" का उल्लेख किया गया है। यह पहले पके हुए फलों का संदर्भ हो सकता है, या यह उनमें से सबसे बढ़िया फलों का संदर्भ हो सकता है। ये प्रसाद विशेष रूप से याजकों के लिए निर्धारित थे और उनमें से कोई भी व्यक्ति जो धार्मिक रूप से शुद्ध था, उसे खा सकता था (गिन 18:12–13 । पहिलौठे फलों के अन्य सन्दर्भों के लिए, देखें निर्गमन 23:15–19; 34:22, 26; लैव्यव्यवस्था 2:14; 23:10–17; गिनती 15:20–21; 28:26–31; और व्यवस्थाविवरण 26:1–11।

पहले फल परमेश्वर को भेंट स्वरूप लाकर याजक को तम्बू में और बाद में मन्दिर में प्रस्तुत किए जाते थे (व्य.वि. 26:2)। याजक भेंट को लेते थे, और सप्ताह के पहले दिन, बाहें फैलाकर, इसे प्रभु के सामने लहराते थे। उसी दिन, पहले फल प्रस्तुत करने वाले व्यक्ति को प्रभु के लिए एक नर मेम्ना होम भेंट के रूप में, जैतून के तेल के साथ मिश्रित महीन आटे की अनाज भेंट, और दाखरस की पेय भेंट अर्पित करनी होती थी। पचास दिन बाद एक और अनाज भेंट दी जानी थी। प्रत्येक परिवार को प्रभु को विशेष उपहार के रूप में दो रोटियाँ देनी होती थीं। इन्हें भी उपयुक्त पशु, अनाज, और पेय भेंटों के साथ दिया जाता था (लैव्य. 23:9–22)।

नए नियम में प्रेरित पौलुस ने यीशु मसीह के पुनरुत्थान को विश्वासियों के पुनरुत्थान के प्रथम फल के रूप में सन्दर्भित किया है, जो यीशु की वापसी पर होगा (1 कुरि 15:20, 23)। पवित्र आत्मा, जो सभी विश्वासियों में निवास करते हैं (रोम 8:9), को भी पूर्ण छुटकारे के प्रथम फल के रूप में कहा गया है, जो अभी आना बाकी है। "प्रथम फल" का उपयोग कभी-कभी किसी भौगोलिक क्षेत्र में पहले विश्वासियों के लिए किया जाता है (रोम 16:5; 1 कुरि 16:15) । वे उस विशेष स्थान में अनुसरण करने वाली आत्मिक फसल के एक प्रकार के वचन थे।

मसीही विश्वासी पहले फल कहे जाते हैं, जो परमेश्वर की सभी सृष्टियों में से एक अनोखी और पवित्र सम्पत्ति होने का संकेत देते हैं (याकू 1:18) । इसी प्रकार, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में 144,000 को मानवता से पहले फल के रूप में छुड़ाए गए बताया गया है, जो परमेश्वर और मेम्ना, यीशु मसीह के हैं (प्रका 14:4)।

यह भी देखें इस्राएल के पर्व और त्योहार; भेंट और बलिदान।

पहले और दूसरे शमूएल की पुस्तक

पूर्वावलोकन

- नाम
- लेखक और तिथि
- उद्देश्य और धर्मशास्त्र की शिक्षा
- विषय सूची

नाम

1 और 2 शमूएल की पुस्तक का नाम उस व्यक्ति के नाम से आता है जिसे परमेश्वर ने इस्राएल में राजशाही स्थापित करने के लिए उपयोग किया। 1 शमूएल की प्रारम्भिक कथाओं में शमूएल सबसे प्रमुख व्यक्ति है। न्यायियों के काल से राजशाही के काल में इस्राएल के देश का नेतृत्व करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका इस पुस्तक के शीर्षक के रूप में उनके नाम के उपयोग की गारंटी देती है।

हालांकि, इन पुस्तकों को हमेशा से इस प्रकार नामित नहीं किया गया था और न ही सामग्री को मूल रूप से दो पुस्तकों में विभाजित किया गया था। जहाँ तक ज्ञात है, सेप्टुआजेंट (तीसरी शताब्दी ई.पू. का पुराने नियम का यूनानी अनुवाद) के अनुवादक पहले थे जिन्होंने शमूएल की सामग्री को दो पुस्तकों में विभाजित किया (उन्होंने राजाओं की पुस्तक का भी इसी तरह विभाजन किया)। इन पुस्तकों की इब्रानी मूल हस्तलिपि, जो इब्रानी की विशेषता है, केवल व्यंजनों के लिए प्रतीकों के साथ लिखी गई थी और स्वरों के लिए कोई प्रतीक नहीं थे। जब इसे यूनानी में अनुवादित किया गया, तो स्वरों और व्यंजनों, दोनों के लिए प्रतीकों का उपयोग करना आवश्यक था, जिससे हस्तलिपि काफी लम्बी हो गई। सम्भवतः कुण्डलपत्रों की लम्बाई के व्यावहारिक विचार ने शमूएल और राजाओं की सामग्री को दो पुस्तकों (कुण्डलपत्रों) में विभाजित करने का कारण बना दिया, बजाय इसके कि केवल एक को बनाए रखा जाए। सेप्टुआजेंट के अनुवादकों ने शमूएल और राजाओं में सामग्री और जोर की निरंतरता को पहचानते हुए, जो अब 1 और 2 शमूएल के रूप में जाना जाता है, को "राज्य की पहली और दूसरी पुस्तकें" के रूप में नामित किया और फिर जो अब 1 और 2 राजाओं के रूप में जाना जाता है, उसे "राज्य की तीसरी और चौथी पुस्तकें" के रूप में नामित किया। लातिनी वल्गेट (चौथी शताब्दी ईस्वी के अन्त में जेरोम द्वारा तैयार बाइबल का लातिनी अनुवाद) ने सेप्टुआजेंट के शीर्षकों को थोड़ा

संशोधित करके "प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ राजाओं" कर दिया। इन शीर्षकों का उपयोग मध्य युग के दौरान किया गया और 16वीं शताब्दी ईस्वी में प्रोटेस्टेंट सुधारकों द्वारा यहूदियों की रब्बिनिक परम्परा के साथ सहमति में हमारे वर्तमान शीर्षकों में संशोधित किया गया। हालांकि, सुधारकों ने दो पुस्तकों में विभाजन को बनाए रखा और इसे आधुनिक संस्करणों में भी अपनाया गया है।

लेखक और तिथि

हालांकि पुस्तक के प्रारम्भिक भाग में शमूएल मुख्य है और हमारे संस्करणों में पुस्तक का नाम उनके नाम पर है, यह स्पष्ट है कि वह 1 और 2 शमूएल की पूरी सामग्री के लेखक नहीं है। शमूएल की मृत्यु का उल्लेख 1 शमूएल 25:1 में किया गया है, जो शाऊल के स्थान पर दाऊद के सिंहासन पर बैठने से पहले की बात है। यदि शमूएल ने 1 और 2 शमूएल की सामग्री नहीं लिखी, तो इसे किसने लिखा? 1 इतिहास 29:29 के वचन के आधार पर, कुछ ने सुझाव दिया है कि शमूएल ने पुस्तक की प्रारम्भिक घटनाओं की रचना की और बाद में उनके काम को नातान और गाद भविष्यद्वक्ताओं की लेखनी से पूरा किया गया। अन्य लोगों ने दाऊद के समकालीनों में से किसी का सुझाव दिया है, जैसे अहीमास (2 शमू 15:27, 36; 17:17), हूशै (2 शमू 15:32; 16:16) या जाबूद (1 रा 4:5)। सम्भवतः, इन व्यक्तियों के पास शमूएल, नातान और गाद की लेखनी के साथ-साथ अन्य स्रोतों (देखें 2 शमू 1:18) तक पहुँच होती, जो शाऊल और दाऊद के जीवन और शासन से सम्बन्धित थे। हालांकि, वास्तविक लेखक कौन था, यह उपलब्ध साक्ष्यों से निर्धारित नहीं किया जा सकता। जो भी था, यह स्पष्ट है कि वह सुलैमान की मृत्यु और 930 ई.पू. में राज्य के विभाजन तक जीवित था (देखें "यहूदा में इस्राएल" के सन्दर्भ 1 शमू 11:8; 17:52; 18:16; 2 शमू 5:5; 24:1–9; और "यहूदा के राजा" 1 शमू 27:6 में)। इस प्रकार 1 और 2 शमूएल को 930 ई.पू. के बाद किसी समय अन्तिम रूप में प्रकाशित किया गया था।

उद्देश्य और धर्मशास्त्रीय शिक्षाएँ

1 और 2 शमूएल की कथाओं को जोड़ने वाला विषय राजशाही और वाचा के बीच सम्बन्ध से सम्बन्धित है। लोगों द्वारा की गई राजा की मांग वाचा का उल्लंघन थी; शमूएल द्वारा स्थापित राजशाही वाचा के अनुकूल थी; शाऊल द्वारा की गई राजशाही वाचा के विचार से मेल नहीं खाती थी; और दाऊद द्वारा की गई राजशाही वाचा के राजा के आदर्श का एक अपूर्ण लेकिन सच्चा प्रतिनिधित्व थी।

अक्सर यह कहा गया है कि इस्राएल में राजशाही की स्थापना के वर्णन में द्वैधता है (1 शमू 8–12), क्योंकि कुछ स्थानों पर ऐसा लगता है कि इस्राएल के लिए राजशाही अनुचित है, जबकि अन्य स्थानों पर ऐसा प्रतीत होता है कि राजशाही परमेश्वर की इच्छा थी, उनके लोगों के लिए। इस तनाव का समाधान 1 शमूएल 12 में प्रस्तुत किया गया है, जब शमूएल ने शाऊल का इस्राएल के पहले राजा के रूप में एक वाचा नवीनीकरण समारोह के सन्दर्भ में अभिषेक किया, जिसके द्वारा इस्राएल ने प्रभु के प्रति अपनी निष्ठा का नवीनीकरण किया। यहाँ यह स्पष्ट हो जाता है कि इस्राएल के लिए राजशाही अपने आप में गलत नहीं थी; परमेश्वर चाहते थे कि इस्राएल का एक राजा हो। जिस प्रकार की राजशाही इस्राएल चाहता था ("अन्य राष्ट्रों की तरह") और जिन कारणों से वह एक राजा चाहता था (राष्ट्रीय सुरक्षा की भावना देने और युद्ध में विजय की ओर ले जाने के लिए), उसमें प्रभु को उनके अन्तिम संप्रभु के रूप में अस्वीकार करना शामिल था। शमूएल ने इस्राएल में राजा की भूमिका को परिभाषित किया और शाऊल को लोगों के सामने एक समारोह में प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने प्रभु के प्रति अपनी निष्ठा का नवीनीकरण किया। इस्राएल में राजशाही को पहले एक ऐसे रूप में स्थापित किया गया था जो वाचा के साथ संगत था। इस्राएल में राजा को, देश के हर अन्य नागरिक की तरह, प्रभु की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता के वचनों के अधीन होना था। इस दृष्टिकोण से, लेखक शाऊल के शासन को वाचा की मांगों के अनुरूप नहीं मानते हैं, जबकि दाऊद का शासन, यद्यपि अपूर्ण, वाचा के आदर्श को प्रतिबिम्बित करता है।

1 और 2 शमूएल में कम से कम दो अन्य महत्वपूर्ण विषय दर्ज हैं। इनमें से पहला यह है कि दाऊद उस भूमि को जीतते और प्राप्त करते हैं जो अब्राहम से वादा की गई थी। दाऊद के समय में इस्राएल की सीमाएँ मिस्र से फरात तक विस्तारित होती हैं, जैसा कि वादा किया गया था। बाइबल के शेष भाग के लिए एक और महत्वपूर्ण घटना यह है कि दाऊद, यरूशलेम को इस्राएल का राजनीतिक और धार्मिक केन्द्र चुनते है।

विषय सूची

शमूएल (1 शमू 1–7)

शमूएल की युवावस्था (1 शमू 1–3)

पुत्र के लिए हन्ना की प्रार्थना को परमेश्वर ने लम्बे समय के बांझपन के बाद स्वीकार किया। उन्होंने अपने पुत्र का नाम शमूएल रखा (इब्रानी अभिव्यक्ति "परमेश्वर द्वारा सुना गया" पर आधारित एक शब्द) और उसे प्रभु की सेवा के लिए समर्पित किया - शीलो में मिलाप वाले तम्बू में एली याजक के साथ। हन्ना का परमेश्वर के लिए सुंदर स्तुति गीत, जो प्रार्थना सुनते और उत्तर देते हैं (2:1–10), परमेश्वर की सार्वभौमिकता की महिमा करता है और न केवल इस्राएल में राजशाही की स्थापना की भविष्यवाणी करता है बल्कि अन्ततः मसीह में राजकीय पद की उच्चतम पूर्ति की भी (पद 10)। याजक एली के पुत्रों की दुष्ट प्रथाओं का वर्णन 11–26 पदों में किया गया है। इन लोगों ने न केवल अपने पद का व्यक्तिगत लाभ के लिए उपयोग किया (पद 12–17), बल्कि

तम्बू के प्रवेश द्वार पर सेवा करने वाली महिलाओं के साथ अनैतिक कार्य भी किए (v 22)। यद्यपि एली ने अपने पुत्रों को फटकारा (पद 22–25), तो भी उनकी चेतावनियाँ बहुत कम और बहुत देर से थीं। इसी प्रकार के वातावरण में शमूएल बड़ा हुआ (पद 18–21, 26)।

1 शमूएल 2:27–36 में, एक अज्ञात भविष्यद्वक्ता ने एली और उनके याजकीय वंश पर न्याय की घोषणा की। होप्नी और पीनहास, एली के पुत्रों की निकट भविष्य में मृत्यु की भविष्यवाणी तब पूरी हुई जब पलिश्तियों ने सन्दूक ले लिया और शीलो में तम्बू को नष्ट कर दिया (4:11; यिर्म 7:14)। 1 शमूएल 3:1–4:1 में, शमूएल को भविष्यद्वक्ता बनने के लिए बुलाया गया और उन्हें भी एली के घर के लिए न्याय का सन्देश दिया गया (3:11–14)। जैसे ही शमूएल के शब्दों की विश्वसनीयता की पुष्टि हुई, लोगों ने पहचाना कि वह प्रभु के सच्चे भविष्यद्वक्ता थे (3:19–4:1)।

सन्दूक का खोना और वापसी (1 शमू 4–6)

पलिश्तियों के साथ एक युद्ध में, 2:27–36 और 3:11–14 की भविष्यवाणी आंशिक रूप से पूरी हुई। इस्राएली पराजित हुए, सन्दूक ले लिया गया और होप्नी और पीनहास मारे गए। इन विपत्तियों का समाचार सुनकर, एली भी मर गए (4:17–18)। पलिश्तियों ने प्रभु के सन्दूक को अश्दोद में अपने देवता दागोन के मन्दिर में रखा (5:1–2)। हालांकि, जब दागोन की मूर्ति टुकड़ों में टूट गई और सन्दूक के सामने गिर गई और अश्दोद में एक महामारी फैल गई, तो सन्दूक को गत ले जाया गया। जब गत में महामारी फैल गई, तो इसे एक्रोन ले जाया गया। जब एक्रोन में महामारी फैल गई, तो पलिश्तियों को सन्दूक इस्राएल को लौटाने के लिए मजबूर होना पड़ा—एक परीक्षण के रूप में, इसे दो दूध देने वाली गायों द्वारा खिंची गई गाड़ी पर रखा गया। ये गायें, अपनी मातृत्व प्रवृत्तियों के खिलाफ जाकर, अपने बछड़ों को छोड़कर इस्राएली सीमा और बेतशेमेश नगर की ओर बढ़ गईं (6:1–21)। इस प्रकार प्रभु ने दिखाया कि इस्राएलियों पर विजय और सन्दूक की पकड़ को पलिश्तियों के देवता दागोन को नहीं दिया जा सकता था।

पलिश्तियों की पराजय (1 शमू 7)

बीस साल बीत गए। शमूएल ने लोगों को आश्वासन दिया कि यदि वे अपने पापों को स्वीकार करेंगे और बाल और अश्तरोत की आराधना से दूर हो जाएँगे, तो उन्हें पलिश्तियों के उत्पीड़न से मुक्ति मिलेगी। उन्होंने प्रभु के प्रति निष्ठा को नवीनीकृत करने के लिए मिस्पा में एक राष्ट्रीय सभा का आह्वान किया। जब इस्राएली इकट्ठा हुए, तो पलिश्तियों ने हमला किया और प्रभु ने इस्राएलियों को एक चमत्कारी विजय दी। इस प्रकार यह प्रदर्शित हुआ कि वाचा की आज्ञाकारिता राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करेगी (देखें निर्ग 23:22; व्य.वि. 20:1–4)।

इस्राएल में राजशाही की स्थापना (1 शमू 8–12)

लोगों ने राजा की मांग की (1 शमू 8:1–22)

जब शमूएल वृद्ध हो गए, तब देश के बुजुर्ग उनके पास आए और उनसे अनुरोध किया कि वह उन्हें एक राजा प्रदान करें। शमूएल ने तुरन्त महसूस किया कि उनकी यह विनती प्रभु को अस्वीकार करने के समान है, जो उनके राजा थे, क्योंकि लोग "अन्य राष्ट्रों की तरह" एक राजा चाहते थे—राष्ट्रीय एकता और सैन्य सुरक्षा के प्रतीक के रूप में। फिर भी, प्रभु ने शमूएल से कहा कि वह लोगों को एक राजा दें। हालांकि, उसी समय उन्होंने शमूएल से कहा कि लोगों को चेतावनी दें कि "अन्य राष्ट्रों की तरह" एक राजा होने का क्या अर्थ होगा। यह चेतावनी, समकालीन कनानी राजाओं की प्रथाओं का वर्णन करती हुई, बहरे कानों पर पड़ी; लोग अपने राजा की लालसा में दृढ़ रहे।

शमूएल ने गुप्त रूप से शाऊल का अभिषेक किया (1 शमू 9:1–10:16)

शाऊल की अपने पिता के खोए हुए गधों की खोज और इस प्रक्रिया में शमूएल से उनकी मुलाकात की कहानी यह बताने के लिए दी गई है कि शमूएल और शाऊल की पहली मुलाकात कैसे हुई और कैसे प्रभु ने शमूएल को संकेत दिया कि वह कौन व्यक्ति था जिसे उन्हें इस्राएल के पहले राजा के रूप में अभिषेक करना था (9:16–17)। शमूएल ने निजी तौर पर शाऊल का अभिषेक किया (10:1) और उन्हें तीन संकेत दिए गए ताकि यह पुष्टि हो सके कि उनकी नई बुलाहट प्रभु से आई है।

मिस्पा में सार्वजनिक रूप से शाऊल का चयन किया जाना (1 शमू 10:17–27)

शाऊल को राजा बनाने के लिए निजी पदनाम और अभिषेक के बाद (9:1–10:16), शमूएल ने मिस्पा में एक राष्ट्रीय सभा बुलाई ताकि प्रभु की पसन्द को लोगों के सामने प्रकट किया जा सके (10:20–24) और राजा के कार्य को परिभाषित किया जा सके (पद 25)। इस सभा में फिर से, शमूएल ने जोर दिया कि लोगों ने प्रभु को अस्वीकार कर दिया था क्योंकि उन्होंने गलत कारणों से एक राजा की मांग की थी और अपने शत्रुओं से मुक्ति दिलाने में प्रभु की पिछली विश्वासयोग्यता को नहीं पहचाना था। फिर भी यह स्पष्ट था कि इस्राएल में राजशाही का समय आ गया था और यह प्रभु की इच्छा थी कि लोगों को एक राजा दिया जाए। शमूएल द्वारा "राजशाही के नियमों" की व्याख्या, इस्राएल की एक ओर राजा की इच्छा में पाप और दूसरी ओर प्रभु की उन्हें राजा देने की मंशा के बीच तनाव को हल करने में एक महत्वपूर्ण कदम था। यह दस्तावेज, जो तम्बू में संरक्षित था, सम्भवतः व्यवस्थाविवरण 17:14–20 में "राजा के नियम" का विस्तारित संस्करण था और इस्राएल में राजा की भूमिका को नियन्त्रित करने वाले नियमों को राजा और प्रजा, दोनों के लाभ के लिए स्पष्ट करता

था। यह दस्तावेज नि:संदेह इस्राएली राजशाही को आसपास के राष्ट्रों के राजाओं से अलग करता था।

शाऊल ने इस्राएल को अम्मोनियों पर विजय दिलवाई (1 शमू 11:1–13)

जब अम्मोनियों के राजा नाहाश ने याबेश-गिलाद पर हमला किया, जो मनश्शे के क्षेत्र में यरदन के पूर्व में एक नगर था, शाऊल ने याबेश-गिलाद के निवासियों के समर्थन में एक स्वयंसेवी सेना का नेतृत्व करने के लिए अपनी खेती का काम छोड़ दिया। शाऊल के नेतृत्व में अम्मोनियों पर विजय ने राजा के रूप में उनके चयन पर एक और ईश्वरीय स्वीकृति की मुहर लगा दी। शाऊल ने इस विजय का श्रेय अपनी सैन्य रणनीतियों के बजाय प्रभु को दिया।

शाऊल का राजा के रूप में अभिषेक (1 शमू 11:14–12:25)

याबेश-गिलाद में विजय ने शमूएल को गिलगाल में एक राष्ट्रीय सभा बुलाने के लिए प्रेरित किया ताकि राज्य का नवीनीकरण किया जा सके और शाऊल को राजा बनाया जा सके (11:14–15)। गिलगाल सभा में, शमूएल ने लोगों को उनके राजा के लिए प्रारम्भिक विनती के पाप को स्वीकार करने और प्रभु के प्रति अपनी निष्ठा को नवीनीकृत करने में नेतृत्व किया। इस वाचा नवीनीकरण समारोह के सन्दर्भ में, शाऊल को औपचारिक रूप से राजा के रूप में उनके पद पर स्थापित किया गया। इस प्रकार शाऊल का अभिषेक करके, शमूएल ने न्यायियों की अवधि से राजशाही की अवधि में परिवर्तन के दौरान वाचा की निरंतरता सुनिश्चित की।

शाऊल को राजा के रूप में अस्वीकार किया जाना (1 शमू 13–15)

शाऊल की अनाज्ञाकारिता (1 शमू 13:1–22)

जब शाऊल को पलिश्तियों द्वारा हमले का खतरा हुआ, तो उन्होंने गिलगाल में सैनिकों को इकट्ठा किया और शमूएल की प्रतीक्षा की, जैसा कि उन्हें निर्देश दिया गया था (10:8; 13:8)। जब ऐसा लगा कि शमूएल पूर्व निर्धारित समय के भीतर नहीं पहुँचेंगे, तो शाऊल अधीर हो गए और उन्होंने स्वयं बलिदान चढ़ा दिया (13:9)। जैसे ही बलिदान पूरा हुआ, शमूएल प्रकट हुए और शाऊल को प्रभु की आज्ञा का पालन न करने के लिए फटकार लगाई। शमूएल के पिछले निर्देशों की अवहेलना करके, शाऊल ने अपने पद की एक मौलिक आवश्यकता का उल्लंघन किया था। यह सोचने में वह गम्भीर रूप से गलत थे कि वह प्रभु की विशिष्ट आज्ञा का उल्लंघन करके प्रभु को बलिदान देकर इस्राएल के हाथ को पलिश्तियों के खिलाफ मजबूत कर सकते हैं। शमूएल ने शाऊल से कहा कि उनकी अवज्ञा के कारण उनका वंश नहीं टिकेगा (पद 14)।

योनातान की विजय (1 शमू 13:23–14:52)

शाऊल के पुत्र योनातान और योनातान के हथियार वाहक ने कुशलता और साहस के साथ एक पलिश्ती चौकी पर हमला किया, जिसमें लगभग 20 पुरुषों की हत्या की (14:8–14)। प्रभु ने इस हार का उपयोग एक भूकंप के साथ पूरी पलिश्ती सेना में आतंक फैलाने के लिए। इस बीच शाऊल ने अपनी सेना के साथ युद्ध में शामिल होने के लिए ईश्वरीय मार्गदर्शन मांगा। जब प्रभु का उत्तर तुरन्त नहीं आया, तो शाऊल ने निष्कर्ष निकाला कि प्रभु के शब्द की प्रतीक्षा करना उसके सैन्य लाभ को खतरे में डाल सकता है। यहाँ फिर से उसने दिखाया कि वह प्रभु की प्रतीक्षा करने की बजाय अपने अंतर्दृष्टि पर अधिक विश्वास करता था। शाऊल ने अपनी सेना की नज़रों में अपनी प्रतिष्ठा को और नुकसान पहुँचाया जब उन्होंने युद्ध जीतने से पहले भोजन करने वाले किसी भी व्यक्ति पर एक मूर्खतापूर्ण श्राप लगाया। इससे योनातान का जीवन लगभग खतरे में पड़ गया; उन्हें केवल उनकी रक्षा में सैनिकों के हस्तक्षेप के कारण बचाया गया।

शाऊल का राजा के रूप में अस्वीकार किया जाना (1 शमू 15:1–35)

प्रभु ने शाऊल को शमूएल के माध्यम से आदेश दिया था कि वे अमालेकियों पर हमला करें और उन्हें पूरी तरह से नष्ट कर दें, न तो मनुष्य और न ही पशु जीवन को बख्शें। अमालेकियों ने पहले इस्राएल को नष्ट करने का प्रयास किया था, जब वे मिस्र से निर्गमन के बाद सीनै की यात्रा कर रहे थे (निर्ग 17:8–16)। शाऊल ने प्रभु की अवज्ञा की और बलिदान के लिए जानवरों में से सर्वश्रेष्ठ को और अमालेकी राजा अगाग को जीवित छोड़ दिया। प्रभु ने शमूएल को फिर से शाऊल की अवज्ञा के लिए फटकारने के लिए भेजा। शमूएल ने शाऊल पर प्रभु के खिलाफ विद्रोह करने का आरोप लगाया और उन्हें बताया कि, क्योंकि उन्होंने प्रभु के वचन को अस्वीकार कर दिया था, प्रभु ने उन्हें राजा के रूप में अस्वीकार कर दिया।

शाऊल और दाऊद (1 शमू 16:1—2 शमू 1:27)

शमूएल ने दाऊद का अभिषेक किया (1 शमू 16:1–13)

प्रभु ने शमूएल को बैतलहम में यिशै के घर जाने का निर्देश दिया ताकि उनके पुत्रों में से एक को शाऊल के स्थान पर राजा के रूप में अभिषेक किया जा सके। ईश्वरीय मार्गदर्शन से, यिशै के सबसे छोटे पुत्र, दाऊद को वह दिखाया गया जिसे प्रभु ने चुना था। जब शमूएल ने उन्हें राजा के रूप में अभिषिक्त किया, तो प्रभु का आत्मा उन पर बल के साथ उतरा।

शाऊल की सेवा में दाऊद (1 शमू 16:14–17:58)

जब शाऊल एक दुष्टात्मा से पीड़ित हो गए, तो उनके सेवकों ने एक वीणा बजानेवाले की खोज की जिसका संगीत उन्हें शान्त कर सके। दाऊद इस उद्देश्य के लिए चुने गए। हालांकि, महल में स्थिति स्थायी नहीं थी और दाऊद ने अपना समय महल और अपने घर के कर्तव्यों के बीच बाँटा। समय

के साथ, पलिश्ती विशालकाय गोलियत के नेतृत्व में, इस्राएलियों के खिलाफ डेरा डाले हुए थे। गोलियत ने किसी भी इस्राएली को चुनौती दी जो व्यक्तिगत मुकाबले में उससे लड़ने की हिम्मत करता। कोई इस्राएली उसकी चुनौती स्वीकार करने के लिए आगे नहीं आया जब तक कि दाऊद ने, जो अपने भाइयों के लिए भोजन लाने के लिए इस्राएली सेना के शिविर का दौरा कर रहे थे, इस चुनौती को सुना और प्रभु की शक्ति और सामर्थ्य में जवाब दिया। प्रभु ने दाऊद को एक महान विजय दी क्योंकि उन्होंने स्वीकार किया कि "संग्राम तो यहोवा का है" (17:47) ।

शाऊल का दाऊद के प्रति द्वेष (1 शमूएल 18:1–19:24)

गोलियत पर दाऊद की जीत के बाद, शाऊल के पुत्र योनातान ने मित्रता की वाचा में दाऊद के प्रति निष्ठा की प्रतिज्ञा की। जैसे-जैसे दाऊद इस्राएल की सेनाओं का नेतृत्व करते हुए और सफलताएँ प्राप्त करते गए और जैसे-जैसे उनकी सार्वजनिक प्रशंसा बढ़ती गई, शाऊल को भय होने लगा कि दाऊद उसके सिंहासन के लिए खतरा है (18:14–16, 28–30)। शाऊल, जो दाऊद से घृणा करते थे, उन्हें मारने के कई प्रयास किए (18:17, 25; 19:1, 10)। अन्ततः दाऊद को भागने के लिए मजबूर होना पड़ा और उन्होंने रामाह में शमूएल के पास शरण ली। जब शाऊल और उनके तीन दूत दाऊद को गिरफ्तार करने के लिए रामाह गए, तो वे परमेश्वर के आत्मा से इतने अभिभूत हुए कि वे अपने कार्य को पूरा करने में असमर्थ हो गए।

दाऊद और योनातान (1 शमू 20:1–42)

नए चाँद के पूर्व पर शाही मेज़ से दाऊद की अनुपस्थिति ने शाऊल को फिर से दाऊद के जीवन को हानि पहुँचाने के लिए उकसाया। योनातान ने दाऊद से एक पूर्व निर्धारित स्थान पर मुलाकात की ताकि उन्हें खतरे के बारे में सूचित कर सकें और अलविदा कह सकें। योनातान और दाऊद ने एक बार फिर आपसी निष्ठा और दयालुता की प्रतिज्ञा की। इस मुलाकात में यह स्पष्ट था कि दोनों जानते थे कि इस्राएल के सिंहासन पर शाऊल के उत्तराधिकारी दाऊद होंगे, न कि योनातान।

नोब में दाऊद (1 शमू 21:1–9)

दाऊद नोब में याजक अहीमेलेक के पास गए और यह संकेत देते हुए कि वे शाऊल के लिए एक गुप्त कार्य पर है, उन्होंने रोटी और गोलियत की तलवार मांगी, जो दोनों उन्हें दी गईं। शाऊल के सेवकों में से एक, एदोमी दोएग ने, जो नोब में था, इस लेन-देन को देखा।

गत में दाऊद (1 शमू 21:10–15)

दाऊद फिर पलिश्ती क्षेत्र में राजा आकीश के पास गत गए। जब उनकी पहचान का पता चला, तो उन्होंने बचने के लिए पागलपन का नाटक किया।

अदुल्लाम में दाऊद (1 शमू 22:1–5)

दाऊद अदुल्लाम की गुफा में गए, जहाँ लगभग 400 समर्थक उनके साथ जुड़ गए। उन्होंने अपने माता-पिता को उनकी सुरक्षा के लिए मोआब भेज दिया और फिर यहूदा के हेरेत के वन में लौट आए।

शाऊल नोब में याजकों की हत्या करते हैं (1 शमू 22:6–23)

दोएग ने शाऊल को बताया कि अहीमेलेक याजक ने दाऊद की सहायता की थी। शाऊल के आदेश पर दोएग ने नोब के सभी याजकों का संहार कर दिया, केवल एब्यातार बच गए, जो एपोद के साथ भाग निकले और दाऊद से जा मिले।

कीला में दाऊद (1 शमू 23:1–13)

दाऊद और उनके लोग कीला के नागरिकों को पलिश्ती लुटेरों से बचा लेते हैं, लेकिन जब यह स्पष्ट हो गया कि उनके कृतघ्न निवासी दाऊद को शाऊल के हवाले करने के लिए तैयार हैं, तो उन्हें नगर छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा।

जीप की मरूभूमि में दाऊद (1 शमू 23:14–29)

जब दाऊद जीप की मरूभूमि में थे, तो योनातान की यात्रा से उन्हें प्रोत्साहन मिला, जिन्होंने फिर से अपनी वफादारी की प्रतिज्ञा की। हालांकि, जिपियों ने दाऊद को पकड़ने में शाऊल की मदद करने का वादा किया था, लेकिन एक पलिश्ती हमले ने शाऊल को उसे पकड़ने के प्रयास को छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया।

दाऊद का शाऊल को जीवनदान (1 शमू 24:1–22)

एनगदी में एक गुफा में गहराई से छिपे हुए, दाऊद को अप्रत्याशित रूप से शाऊल का जीवन लेने का अवसर मिला जब शाऊल गुफा के प्रवेश द्वार पर अपने आप को हल्का कर रहे थे। फिर भी, क्योंकि शाऊल "प्रभु के अभिषिक्त" थे, दाऊद ने उनका जीवन बख्श दिया और उन्हें अपनी दुष्टता स्वीकार करने के लिए शर्मिंदा किया। दाऊद ने यह शाऊल को उनके वस्त्र का एक टुकड़ा दिखाकर किया, जिसे उन्होंने काट लिया था जब शाऊल गुफा के प्रवेश द्वार पर थे।

दाऊद, नाबाल और अबीगैल (1 शमू 25:1–44)

दाऊद के साथ एक चरवाहे नाबाल द्वारा बहुत बुरा व्यवहार किया गया। हालांकि, दाऊद को नाबाल की पत्नी अबीगैल के विवेकपूर्ण शब्दों ने उस व्यक्ति का जीवन मूर्खतापूर्वक लेने से रोक दिया। इस घटना के कुछ समय बाद, नाबाल की मृत्यु हो गई और दाऊद ने अबीगैल को अपनी पत्नी बना लिया।

दाऊद ने दूसरी बार शाऊल का जीवन बख्शा (1 शमू 26:1–25)

दूसरी बार, जिपियों ने शाऊल के साथ मिलकर दाऊद को पकड़ने का प्रयास किया। जब शाऊल और उनके लोग सो रहे थे, दाऊद और अबीशै उनके शिविर में घुस गए और शाऊल का भाला और पानी का घड़ा ले गए। अगले दिन,

दाऊद फिर से शाऊल को यह दिखाने में सक्षम थे कि वह उनके हाथों से राजगद्दी छीनने की कोशिश नहीं कर रहे थे।

पलिश्तियों के बीच दाऊद (1 शमू 27:1–12)

आखिरकार दाऊद इस्राएली क्षेत्र में शाऊल से छिपते-छिपते थक गए; निराशा के समय में, वे फिर से पलिश्ती क्षेत्र में शरण लेने के लिए गए ताकि शाऊल की पहुँच से बाहर रह सकें। आकीश के साथ, जो एक पलिश्ती शासक थे, मेलजोल बढ़ाकर, उन्हें और उनके आदमियों को रहने के लिए सिकलग नगर दिया गया। सिकलग से, दाऊद ने पलिश्तियों के दक्षिण में रहने वाली विभिन्न जनजातियों पर आक्रमण किया, लेकिन आकीश को यह सोच कर धोखा दिया कि वे यहूदा के क्षेत्र पर आक्रमण कर रहे थे।

शाऊल और एंदोर की भूत-सिद्धि करनेवाली (1 शमू 28:1–25)

पलिश्ती फिर से इस्राएल से लड़ने के लिए एक सेना इकट्ठी करते हैं और शाऊल भयभीत और होने वाली हार की आशंका में प्रतीत होता हुआ, व्यर्थ में प्रभु से युद्ध के परिणाम के बारे में कुछ वचन मांगते है। जब यह इनकार कर दिया जाता है, तो वह भेष बदलकर एंदोर में एक भूत-सिद्धि करनेवाली के पास जाते है और उससे अनुरोध करते है कि वह शमूएल की आत्मा को उनके पास लाए। इस आत्मा ने शाऊल को बताया कि इस्राएल पराजित होगा और वह और उनके बेटे आगामी युद्ध में मर जाएँगे।

पलिश्ती दाऊद पर विश्वास नहीं करते हैं (1 शमू 29:1–11)

हालांकि आकीश चाहते थे कि दाऊद इस्राएल के साथ युद्ध में पलिश्ती सेना में शामिल हों, परन्तु अन्य पलिश्ती सेनापतियों ने उन पर अविश्वास किया और आकीश को दाऊद और उनके लोगों को सिकलग वापस भेजने के लिए मजबूर किया। इस घटनाक्रम ने आकीश के साथ उनकी स्पष्ट मित्रता से उत्पन्न गंभीर दुविधा से दाऊद को बचा लिया।

दाऊद ने अमालेकियों को पराजित किया (1 शमू 30:1–31)

सिकलग लौटने पर, दाऊद ने पाया कि उनकी अनुपस्थिति में नगर पर अमालेकियों ने हमला किया और उसे जला दिया था और उनकी पत्नियों, बच्चों और मवेशियों को बन्दी बना लिया था। एब्यातार याजक के माध्यम से प्रभु से पूछने के बाद, दाऊद और उनके लोग अमालेकियों का पीछा करने गए और जो कुछ उन्होंने लिया था उससे और अधिक के साथ वापस प्राप्त किया। उन्होंने लूट को अपने सैनिकों में बाँटा और यहूदा के विभिन्न नगरों में उपहार भेजे।

शाऊल और उनके पुत्रों की मृत्यु (1 शमू 31:1—2 शमू 1:27)

जैसा कि भविष्यवाणी की गई थी, पलिश्तियों के साथ युद्ध इस्राएल के लिए एक विनाशकारी हार में समाप्त हुआ, जिसमें शाऊल ने गंभीर रूप से घायल होने के बाद अपना जीवन समाप्त कर लिया। शाऊल के दो अन्य पुत्र और योनातन मारे गए। दाऊद ने शाऊल और योनातान के लिए शोक व्यक्त किया और 2 शमूएल 1:19–27 में दर्ज अपनी श्रद्धांजलि में उनकी स्मृति को ऊँचा किया।

दाऊद (2 शमू 2–24)

यहूदा पर दाऊद का राजा के रूप में अभिषेक (2 शमू 2:1–7)

शाऊल की मृत्यु के बाद, प्रभु ने दाऊद को हेब्रोन जाने का निर्देश दिया, जहाँ यहूदा के गोत्र ने उन्हें अपने राजा के रूप में अभिषेक किया।

दाऊद, इशबोशेत और अब्नेर (2 शमू 2:8–4:12)

हालांकि दाऊद यहूदा के राजा बन गए, बाकी गोत्र—अब्नेर के प्रभाव में थे, जो शाऊल की सेना के सेनापति थे—इशबोशेत को शाऊल का उत्तराधिकारी मानते थे (2:8–10)। इशबोशेत शाऊल का पुत्र था जो पलिश्तियों के साथ युद्ध में बच गया था। दाऊद के लोग, जिनका नेतृत्व योआब कर रहे थे और इशबोशेत के लोग, जिनका नेतृत्व अब्नेर कर रहे थे, दोनों के बीच जल्दी ही संघर्ष छिड़ गया। इस संघर्ष में असाहेल, जो योआब का भाई था, अब्नेर द्वारा मारा गया। जैसे-जैसे दाऊद मजबूत होते गए और इशबोशेत कमजोर, अब्नेर ने अपनी वफादारी इशबोशेत से दाऊद की ओर बदल दी (3:1–21)। हालांकि, योआब ने अपने भाई असाहेल के खून का बदला लेने के लिए अब्नेर की हत्या कर दी, यह दिखावा करते हुए कि वह उनसे बातचीत कर रहे हैं। हालांकि दाऊद ने इस कृत्य से नफरत की, अब्नेर के लिए शोक मनाया और योआब को शाप दिया, इस अपराध को सुलैमान के शासनकाल की शुरुआत तक दण्डित नहीं किया गया (देखें 1 रा 2:5–6, 29–34)। इसके तुरन्त बाद, दो सैनिकों द्वारा इशबोशेत की हत्या कर दी गई और उसका सिर हेब्रोन में दाऊद के पास लाया, यह उम्मीद करते हुए कि उन्हें इनाम मिलेगा (2 शमू 4:1–8)। हालांकि, दाऊद ने उन दोनों को मृत्यु के घाट उतार दिया। शाऊल की वंशावली में एकमात्र जीवित पुरुष योनातान का अपंग पुत्र मपीबोशेत था।

दाऊद पूरे इस्राएल के राजा बने (2 शमू 5)

इशबोशेत की मृत्यु के बाद, दाऊद को हेब्रोन में सभी गोत्रों का राजा नियुक्त किया गया। राजा के रूप में दाऊद के पहले कार्यों में से एक था यबूसियों से सिय्योन के गढ़ पर अधिकार करना। दाऊद ने सिय्योन को अपनी राजधानी के रूप में स्थापित किया और वहाँ अपने निवास के लिए एक राजभवन का निर्माण किया।

सन्दूक यरूशलेम लाया गया (2 शमू 6)

परमेश्वर की उपस्थिति के प्रतीक के रूप में सन्दूक के महत्व को पहचानते हुए, दाऊद ने यह निर्णय लिया कि इसे किर्यत्यारीम में अबीनादाब के घर की गुमनामी से यरूशलेम

लाया जाना चाहिए, जहाँ यह शाऊल के पूरे शासनकाल के दौरान रहा था। सन्दूक को संभालने के लिए निर्धारित नियमों का उल्लंघन करने के कारण अबीनादाब के पुत्रों में से एक, उज्जा की मृत्यु हो गई और सन्दूक को यरूशलेम ले जाने में तीन महीने की देरी हुई। दूसरी कोशिश में, दाऊद ने यरूशलेम के नगर में एक आनंदमय जुलूस का नेतृत्व किया, जहाँ सन्दूक को एक तम्बू में रखा गया जो इसके लिए तैयार किया गया था।

दाऊद, नातान और मन्दिर (2 शमू 7)

जल्द ही यह दाऊद की इच्छा बन गई कि वह एक मन्दिर बनाएँ ताकि वह सन्दूक को घर दे सकें और इस्राएल की आराधना के लिए प्रभु का एक केन्द्र प्रदान कर सकें। प्रभु ने नातान भविष्यद्वक्ता के माध्यम से दाऊद से कहा कि वे प्रभु के लिए एक घर (मन्दिर) नहीं बनाएँगे, बल्कि प्रभु उनके लिए एक घर (एक राजवंश) बनाएँगे जो सदा के लिए स्थायी रहेगा। यहाँ पर वादा किए गए राजवंश की रेखा यहूदा के गोत्र के भीतर दाऊद के घर तक सीमित हो जाती है। यह वादा यीशु के जन्म में पूरा होता है, जो "दाऊद का पुत्र, अब्राहम का पुत्र" थे (देखें मत्ती 1:1)। यह दाऊद के पुत्र, सुलैमान का कार्य होगा कि वे मन्दिर का निर्माण करें (2 शमू 7:13)।

दाऊद की विजयों का वर्णन (2 शमू 8)

दाऊद कई आस-पास के लोगों को पराजित करने में समर्थ थे, इस्राएल की सीमाओं का विस्तार करने में समर्थ थे और देश के लिए समृद्धि और विश्राम का समय स्थापित करने में समर्थ थे।

दाऊद और मपीबोशेत (2 शमू 9)

योनातान के साथ अपनी वाचा को याद करते हुए (देखें 1 शमू 18:1–3; 20:13–16, 42), दाऊद ने शाऊल के घर के बचे हुए लोगों के बारे में पूछा जिन पर वह दयालुता दिखा सकें। जब मपीबोशेत को खोजा गया, तो दाऊद ने उन्हें महल में लाकर राजा की मेज पर भोजन करने का सम्मान दिया।

दाऊद और बतशेबा (2 शमू 10–12)

अम्मोनियों के साथ युद्ध के दौरान, दाऊद ने अपने एक सैनिक, ऊरिय्याह हित्ती की पत्नी के साथ व्यभिचार किया। जब बतशेबा गर्भवती हो गईं, तो दाऊद ने ऊरिय्याह को उनके साथ सोने के लिए प्रेरित करने का प्रयास किया। जब यह असफल रहा, तो दाऊद ने युद्ध में ऊरिय्याह की मृत्यु सुनिश्चित कर दी। इन पापपूर्ण कार्यों ने परमेश्वर के क्रोध को उकसाया (2 शमू 12:10–12) और दाऊद ने अपने जीवन के शेष भाग में अपने दुराचार के कड़वे फल का अनुभव किया।

अम्नोन, अबशालोम और तामार (2 शमू 13)

दाऊद के सबसे बड़े पुत्र, अम्नोन ने अपनी सौतेली बहन तामार को उसकी देखभाल के लिए बुलाने के लिए बीमारी का बहाना किया। जब तामार ने अम्नोन के अनुचित प्रस्तावों को ठुकरा दिया, तो उसने उसके साथ दुष्कर्म किया। इस घटना से तामार का सगा भाई अबशालोम अत्यंत क्रोधित हो गया, जिसने अपनी बहन का प्रतिशोध लेने के लिए अम्नोन को मारने का निर्णय लिया। अबशालोम ने दो वर्ष प्रतीक्षा की और फिर भेड़ की ऊन काटने के समय के उत्सव के दौरान अम्नोन की हत्या की योजना बनाई। इसके बाद वह सीरिया के एक छोटे नगर-राज्य गशूर भाग गया, जहाँ उसके नाना राजा थे।

दाऊद और अबशालोम (2 शमू 14–19)

अबशालोम तीन वर्षों तक बँधुआई में रहा जब तक योआब ने दाऊद से लहू प्रतिशोध का त्याग कराकर उसकी वापसी की व्यवस्था नहीं की (14:1–27)। अबशालोम की वापसी पर, दाऊद ने दो वर्षों तक उससे मिलने से इनकार कर दिया, जब तक कि अन्ततः उनमें मेल नहीं हो गया। इस पूरे प्रकरण में दाऊद ने पश्चाताप और न्याय के मुद्दों को टाल दिया और कोई प्रभावी अनुशासनात्मक कार्रवाई नहीं की। इस बीच अबशालोम ने न्याय के प्रशासन को बदनाम करने का प्रयास करके और दाऊद की दरबार के सदस्यों और लोगों का समर्थन जीतने की कोशिश करके अपने पिता दाऊद से सिंहासन छीनने की साजिश रची। चार वर्षों के बाद, अबशालोम ने हेब्रोन में स्वयं को राजा घोषित किया और अपने पिता को यरूशलेम से भागने के लिए मजबूर करने के लिए पर्याप्त सैन्य शक्ति जुटाई (अध्याय 15)। दाऊद का तुरन्त पीछा न करने के कारण अबशालोम की सेना की हार हुई और दाऊद के सेनापति, योआब के हाथों अबशालोम की मृत्यु हो गई। दाऊद ने अपने पुत्र अबशालोम के लिए शोक व्यक्त किया (19:1–8), लेकिन वह यरूशलेम लौटने और अपने शासन को पुनः स्थापित करने में सक्षम थे। दाऊद ने अबशालोम को मारने के लिए योआब को अनुशासित किया और उन्हें अपने सैनिकों के सेनापति के रूप में अमासा से बदल दिया।

शेबा का विद्रोह (2 शमू 20)

यरूशलेम लौटने के तुरन्त बाद की अस्थिर परिस्थितियों में, बिन्यामीन के गोत्र के शेबा द्वारा एक और असफल विद्रोह का प्रयास किया गया। योआब ने दाऊद की अनुशासनात्मक कार्रवाई की अवहेलना करते हुए अमासा की हत्या कर दी, शेबा का पीछा किया और उसके विद्रोह को कुचल दिया।

दाऊद और गिबोनी (2 शमू 21:1–14)

दाऊद के शासनकाल के दौरान किसी अनिर्दिष्ट समय पर, भूमि ने तीन वर्षों तक अकाल का सामना किया। प्रभु ने दाऊद को प्रकट किया कि यह अकाल शाऊल द्वारा गिबोनियों के साथ इस्राएलियों की संधि के उल्लंघन के कारण था (देखें यहो 9:15, 18–27)। इस अपराध का प्रायश्चित शाऊल के सात वंशजों को गिबोनियों को फाँसी के लिए सौंपकर किया गया।

दाऊद और पलिश्ती (2 शमू 21:15–22)

इस अनुच्छेद में पलिश्तियों के खिलाफ दाऊद के पराक्रमी पुरुषों की चार वीरतापूर्ण उपलब्धियों का वर्णन किया गया है।

दाऊद का स्तुति गीत (2 शमू 22)

स्तुति के एक सुंदर गीत में, दाऊद ने अपने शत्रुओं से अपनी मुक्ति और उस सहायता का वर्णन किया जिसके द्वारा प्रभु ने उन्हें बनाए रखा। वही गीत भजनसंहिता 18 में मामूली भिन्नताओं के साथ आता है।

दाऊद के अन्तिम शब्द (2 शमू 23:1–7)

एक संक्षिप्त अभिव्यक्ति में, दाऊद परमेश्वर के आत्मा के कार्य को स्वीकार करते है जिसने उन्हें परमेश्वर का वचन बोलने में सक्षम बनाया और प्रभु द्वारा उनके और उनके वंश के लिए किए गए वादे की पूर्ति में अपने विश्वास की घोषणा करते है।

दाऊद के वीर पुरुष (2 शमू 23:8–39)

इस अनुच्छेद में दाऊद के 37 योद्धाओं की सूची और उनकी कुछ उपलब्धियों का विवरण शामिल है।

जनगणना और दाऊद को दण्ड (2 शमू 24:1–25)

दाऊद का अपने योद्धाओं की जनगणना करने का निर्णय सैन्य-राजनीतिक संगठन और शक्ति में अनुचित भरोसे का प्रतीक था। प्रभु ने उन्हें भूमि पर एक महामारी भेजकर दण्डित किया, जिसने कई लोगों को मार डाला। प्रभु के वचन के अनुसार गाद भविष्यद्वक्ता के माध्यम से, दाऊद ने अरौना के खलिहान पर एक वेदी बनाई, जो बाद में मन्दिर का स्थल बनने वाला था (देखें 2 इति 3:1)। प्रभु ने दाऊद के बलिदानों और लोगों की ओर से प्रार्थनाओं का उत्तर दिया; महामारी रुक गई।

यह भी देखें दाऊद; शमूएल (व्यक्ति); शाऊल #2।

पहलौठा

बाइबल में परिवार के सबसे बड़े पुत्र या पुत्री के लिए प्रयुक्त शब्द हैं (उत 22:21; 29:26)। इस्राएल को परमेश्वर का पहलौठा कहा गया क्योंकि इस देश की उत्पत्ति चमत्कारिक थी और इसे मिस्र से विशेष छुटकारा मिला था (उत 17:5, 15–16; निर्ग 4:22)। परमेश्वर के पहलौठे के रूप में, इस्राएल को अन्य सभी जातियों पर विशेष अधिकार प्राप्त थे। अन्यजातियों को केवल इस्राएल के प्रति उनकी भलाई के आधार पर "आशीषित" किया गया (उत 12:3; निर्ग 19:6; व्य.वि. 4:5–8)। भविष्यद्वक्ता यशायाह ने वह दिन देखा जब इस्राएल को अधिकारी का दूना भाग मिलेगा (यशा 61:7)। इसलिए, पहलौठा होने का अर्थ प्राथमिकता या प्रधानता के साथ-साथ निज भाग प्राप्त करना भी है।

"कंगालों के जेठे," (यशा 14:30, आरएसवी) अभिव्यक्ति का अर्थ है वह जो अत्यन्त कंगाल है, अर्थात कंगालों में सबसे कंगाल। एक अन्य अलंकारिक अभिव्यक्ति, "मृत्यु का पहलौठा" (अय्यू 18:13, आरएसवी), यह दर्शाती है कि अय्यूब की बीमारी घातक थी।

चूँकि परमेश्वर ने मिस्र में इस्राएल के पहलौठे पुत्रों को मृत्यु से छुड़ाया था, वह आशा करते थे कि प्रत्येक पहलौठे उसके लिए अर्पण किए जाए (निर्ग 11:4–7; 13:12)। जेठा पुत्र पूरे वंश का प्रतिनिधि होता था (उत 49:3; निर्ग 22:29; गिन 3:13)। बलि में प्रयुक्त सभी पशुओं के पहलौठे को भी यहोवा के लिए पवित्र किया जाना था (निर्ग 13:2, 15)।

पहलौठा और छुटकारा

लेवी के गोत्र को छोड़कर, हर गोत्र के पहलौठे को पाँच शेकेल तक का दाम देकर छुड़ाया जाना था (गिन 18:15–16)। यह छुटकारा एक पूर्व दासत्व का संकेत था और इस्राएल को मिस्र में उनके दासत्व से उनके छुड़ाने की स्मरण के लिए था (निर्ग 13:2–8)।

व्यवस्था की रीति से शुद्ध पशुओं के पहलौठे को यहोवा के लिए अर्पित किया जाता था। जन्म के आठवें दिन के बाद एक वर्ष के भीतर उसे निवास स्थान (या बाद में मन्दिर) में लाया जाता था। इस पशु की बलि दी जाती थी और उसका लहू वेदी पर छिड़का जाता था। बलिदान किए गए पशु का माँस याजकों के लिए होता था (निर्ग 13:13; 22:30; पुष्टि करे गिन 18:17)। अशुद्ध पशुओं के पहलौठे को ठहराए हुए मोल के अनुसार उसका पाँचवाँ भाग बढ़ाकर छुड़ाया जा सकता था, जो कि याजक द्वारा ठहराया हुआ मोल था। यदि छुड़ाया नहीं गया, तो इन पशुओं को याजकों द्वारा बेचा, बदला, या नाश कर दिया जाता था (लैव्य 27:27)। गदही के बच्चे को एक मेम्ने के बदले छुड़ाया जाना था (निर्ग 13:13)। यदि उसे छुड़ाया नहीं गया, तो उसे मार डाला जाता था। अशुद्ध पशुओं का माँस नहीं खाया जाता था।

पहलौठा और पहलौठे का अधिकार

पिता की अनुपस्थिति या मृत्यु में जेठा पुत्र परिवार का याजक बनकर कार्य करता था। एसाव और रूबेन इसके उदाहरण हैं (उत 27:19, 32; 1 इति 5:1–2)। यह भूमिका उस समय समाप्त हो गई जब याजकीय कार्य लेवी के गोत्र को सौंप दी गई (गिन 3:12–13)। इसके बाद की पीढ़ियों के सभी पहलौठे को छुड़ाना आवश्यक था। छुड़ाने का दाम लेवियों की वार्षिक आय का हिस्सा बनती थी (8:17; 18:16).

परिवार की सम्पत्ति का दुगना भाग पहलौठे का अधिकार था। यह अधिकार उस समय पहलौठे की सुरक्षा करता था जब परिवार में बहुविवाह होता था। प्रिय पत्नी का पुत्र घराने में जन्मे जेठे का स्थान नहीं ले सकता था (व्य.वि. 21:17)।

पहलौठे की उपाधि मसीह को दी गई है (लूका 2:7; रोम 8:29; कुल 1:15, 18; इब्रा 1:6; प्रका 1:5)। यह मसीह की सम्पूर्ण सृष्टि पर प्रधानता को दर्शाता है, क्योंकि वह मृत्यु से जी उठने वाला पहला है। पहलौठा होने के कारण, मसीह सभी वस्तुओं का वारिस है (इब्रा 1:2) और कलीसिया का सिर है (इफि 1:20–23; कुल 1:18, 24; इब्रा 2:10–12)।

See also पहलौठे का अधिकार; वारिस; निज भाग; ज्येष्ठाधिकार.

पहलौठे का अधिकार

पहलौठे का अधिकार

एक शब्द जो इब्रानी शब्द के यूनानी अनुवाद से आता है जिसका अर्थ है "पहलौठा।" यह बाइबल में नहीं पाया जाता। यह एक अवधारणा है जो पहलौठे पुरुष बालक को दिए गए विशेष दर्जे और विरासत के अधिकारों को दर्शाती है।

यदि पहलौठा की मृत्यु हो जाती, तो अगले सबसे बड़े जीवित पुरुष को पहलौठा के अधिकार नहीं मिलते थे। एक पहलौठी स्त्री को भी ये अधिकार नहीं मिलते थे, और न ही पहलौठा को यदि वह किसी रखैल या दासी से जन्मा होता (उदाहरण के लिए, उत 21:10)।

शास्त्र पहलौठे के अधिकारों पर बहुत महत्व देते हैं, जैसा कि पहलौठे और अन्य पुत्रों के बीच के भेद में देखा जाता है (उत 10:15; 25:13; 36:15), पहलौठे को दी जाने वाली दोहरी हिस्सेदारी (व्य.वि. 21:17), और विशेष आशीष जो उनके पिता उन्हें देते थे (उत 21:1–14; 27:1–29; 48:18)।

*यह भी देखें*जन्मसिद्ध अधिकार; पहलौठा I

पहाड़ हेरेस

पहाड़ हेरेस

दान के क्षेत्र में अय्यालोन का पहाड़ (न्या 1:35)। *देखें*हेरेस #1।

पहाड़, जैतून का

यहूदिया के पहाड़ों में उत्तर-दक्षिण दिशा में फैला एक प्रमुख पर्वतमाला है, जो यरूशलेम और किद्रोन घाटी के पूर्व में स्थित है। तीन शिखर और दो मध्यवर्ती घाटियाँ इस पर्वत को अलग करती हैं। उत्तरी शिखर स्कोपस पहाड़ है। इसके दक्षिण में एक छोटा दर्रा है, जिससे होकर प्राचीन रोमी मार्ग यरीहो की ओर जाता था। केंद्रीय पहाड़ी पारंपरिक जैतून का पहाड़ (2,684 फीट या 818.1 मीटर) है, जो मंदिर के मंच (हरम एश-शेरिफ) के सामने स्थित है। कोन्स्टण्टैन ने अपनी माँ हेलेना को समर्पित महान आरोहण की कलीसिया का निर्माण किया। दक्षिण में एक और दर्रा है, जिसमें आधुनिक सड़क बैतनिय्याह की ओर जाती है। दक्षिणी पहाड़ी, जो यबूसियों के यरूशलेम और दाऊद के नगर को देखती है, को "अपराध का पर्वत" कहा जाता है क्योंकि यहाँ सुलैमान ने अपनी विदेशी पत्नियों के लिए मन्दिर बनवाए थे। इसके नीचे अरब गाँव सिलवान और किद्रोन और हिन्नोम घाटियों का संगम स्थित है।

जैतून के पहाड़ को यह नाम इसके विशाल जैतून के बागों से मिला है, जो प्राचीन काल में प्रसिद्ध थे (जक 14:4; मर 11:1)। इसका पश्चिमी भाग भूमध्य सागर से वर्षा के पानी को इकट्ठा करता है, जो विघटित चूना पत्थर के साथ मिलकर उपजाऊ बागों का निर्माण करता है। पूर्वी भाग शुष्क यहूदी जंगल की सीमा को चिह्नित करता है। बैतनिय्याह और बैतफगे दो नए नियम के गाँव हैं जो इन पूर्वी ढलानों को घेरते हैं।

पुराने नियम में जैतून के पहाड़ का पहली बार उल्लेख तब किया गया है जब दाऊद अबशालोम की षड्यंत्र से भाग गया था। वह यरूशलेम से चला गया, पूर्व में जैतून के पहाड़ पर चढ़ गया, और दरार घाटी की ओर बढ़ता रहा (2 शमू 15:30)। सुलैमान ने सीदोन, मोआब के विदेशी देवताओं के लिए “ऊँचे स्थानों” के निर्माण के लिए इस पर्वत को चुना (1 रा 11:7), और अम्मोन - जिनमें से प्रत्येक को बाद में योशियाह ने नष्ट कर दिया (2 रा 23:13)। यहेजकेल (यहेज 11:23) परमेश्वर की महिमा के मन्दिर से प्रस्थान कर जैतून के पर्वत पर ठहरने का दर्शन दर्ज करता है। सबसे प्रसिद्ध वर्णन जकर्याह के अंतकालीन दर्शन में दिखाई देता है (जक 14:1–5): "उस दिन [प्रभु के] पांव जैतून के पहाड़ पर पड़ेंगे, जो यरूशलेम के पूर्व की ओर है। और जैतून का पहाड़ दो भागों में बंट जाएगा, और पूर्व से पश्चिम तक एक चौड़ी घाटी बन जाएगी, क्योंकि आधा पहाड़ उत्तर की ओर और आधा दक्षिण की ओर बढ़ जाएगा" (पद 4)।

नए नियम में यीशु दुःख-सहन सप्ताह के दौरान जैतून के पहाड़ पर दिखाई देते हैं। एकमात्र अपवाद बैतनिय्याह की कहानियाँ हैं जब यीशु मरियम और मार्था से मिलने जाते हैं (लूका 10:38–42) और लाज़र को मृतकों में से जीवित करते हैं (यूह 11:17–44)। यरूशलेम में अपने विजयी प्रवेश पर, यीशु यरीहो से आए, पूर्व से पर्वत को पार किया, और फिर किद्रोन घाटी में उतरे (मर 11:1–10)। उतरते समय वह रुक गए और नगर के ऊपर रोये (लूका 19:41–44)।

अपने अन्तिम सप्ताह के दौरान, यीशु ने जैतून के पर्वत पर शिक्षा दी (मर 13) और उन्होंने अपनी शामें वहीं बिताईं (लूका 21:37, हालांकि यह बैतनिय्याह को संदर्भित कर सकता है)। अंतिम भोज के बाद, यीशु प्रार्थना के लिए इस पर्वत पर आए थे (मर 14:26)। एक बगीचे में, जो जैतून के तेल के पेरने के

स्थान ("गतसमनी") के पास था, वहीं उन्हें गिरफ्तार किया गया (पद 32)। पृथ्वी पर मसीह की अन्तिम घटना, उनका स्वर्गारोहण, उनके अनुयायियों द्वारा इस पर्वत से देखा गया। (प्रेरि1:12)।

पहाड़ी उपदेश

पहाड़ी उपदेश

*देखें*धन्य वचन, यीशु मसीह की शिक्षाएं।

पहारा देने का गुम्मट

पहारा देने का गुम्मट

वह जगह जिससे किसानों ने अपनी भूमि और पशुधन की रक्षा और जिससे सैनिक अपने नगरों की रक्षा करते थे। पलिश्तीन के अंगूर के बागों में पहारा देने के लिए गुम्मट बनाए गए थे। गुम्मट से पहरुए को अंगूर के बाग की देखरेख करने के लिए नियुक्त किया गया था, जो इसे जंगली जानवरों और चोरों से बचाता था (यशा 5:2; मत्ती 21:33; मर 12:1) । ऐसे ढांचे अभी भी फिलिस्तीन में समान उद्देश्यों के लिए उपयोग किए जाते हैं और अंगूर के बाग के श्रमिकों के रहने के स्थान के रूप में कार्य करते हैं। कुछ गुम्मट, जैसे एदेर का गुम्मट (उत 35:21), जंगल क्षेत्रों में बनाए गए थे। उन्होंने चरवाहों को अपनी भेड़ों की देखभाल करने के लिए एक संरक्षित आश्रय और पहरुओं को एक किलेबंद चौकी प्रदान की ताकि वे नगर की रक्षा कर सकें और इसके व्यापार को लुटेरों से सुरक्षित रख सकें (2 रा 18:8; 2 इति 20:24; यशा 32:14)।

पहिया

मेसोपोटामिया क्षेत्र में उत्पन्न यंत्र, संभवतः लगभग 3500 ई.पू. का है। सबसे प्रारंभिक ज्ञात रूप सुमेर की दो-पहिया गाड़ी है। पहले पहिये शायद पेड़ों से काटे गए चक्र थे, लेकिन बाद में पहिये तीन आकार की तख्तों को तांबे के जोड़ों से जोड़कर बनाए गए, जो पहिये की लंबाई तक फैले होते थे। 2000 ई.पू. के बाद, उत्तरी मेसोपोटामिया में तीलियों वाले पहिये दिखाई दिए।

बाइबल में, चार इब्री शब्दों का उपयोग पहिये के विभिन्न प्रकारों और उपयोगों की पहचान के लिए किया गया है। इनमें शामिल हैं कुम्हार का पहिया (चाक) (यिर्म 18:3), रथ के पहिये (निर्ग 14:25) और अनाज पीसने के पहिये (यशा 28:28)। बाइबल में "पहिया" शब्द का सबसे अधिक और सबसे महत्वपूर्ण उपयोग यहेजकेल के दर्शन में परमेश्वर के रथ के संदर्भ में है (यहे 1, 10)। बड़ी आँधी में बादल के दिखने से (1:4) आग, जीव और पहिये जुड़े हुए हैं। यहेजकेल पाठक का ध्यान इनमें से हर घटना की ओर खींचता है। पहिये उस दिशा में चलते हैं जिस दिशा में जीव उन्हें ले जाते हैं। यहेजकेल में पहिये का महत्व उसका आकार है। पहिया मिश्रित है, एक पहिये के भीतर एक पहिया। इसका यह मतलब नहीं कि दो पहिये एक ही धुरी पर हैं, बल्कि यह एक पहिये में इस तरह से स्थापित पहिये का संकेत करता है कि उसका किनारा उस पहिये के किनारे के साथ 90-डिग्री का कोण बनाता है जिसमें यह स्थापित है। पहिये में गतिशीलता है; यह पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक लुढ़क सकता है। जहाँ भी जीवित प्राणी जाते हैं, यह उनका अनुसरण करेगा। यह परमेश्वर के सार्वभौमिक न्याय की बात करता है, जिससे कोई भी बच नहीं सकता।

*यह भी देखें*यहेजकेल की पुस्तक I

पहेली

प्राचीन दुनिया में शब्द पहेली का व्यापक रूप से उपयोग और सम्मान किया जाता था, रोजमर्रा के मनोरंजन के रूप में और अधिक गंभीर स्तर पर ज्ञान की परीक्षा के रूप में। पहेली का उद्देश्य छुपे हुए अर्थ की खोज करना था। इसलिए, पहेलियों को मोटे तौर पर दंतकथाओं से अलग किया जा सकता है, जो योताम की प्रसिद्ध पौधे की कहानी (न्या 9:7–15) की तरह, आसानी से समझे जाने वाले महत्व को समाहित करती है। जाहिर है, एक मध्यवर्ती क्षेत्र है जहां कोई तीव्र भेदभाव नहीं है। उदाहरण के लिए, यहेजकेल की पहेली (यहेज 17) को कभी-कभी पौधे की दंतकथा के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

शिमशोन के विवाह भोज की पहेली बाइबल की सबसे प्रसिद्ध पहली है (न्या 14)। संभवतः इसे ऐसे अवसरों पर मनोरंजन के रूप में उपयोग किया जाता था (पद 12–13)। पहेली एक दोहे के रूप में थी: “खानेवाले में से खाना, और बलवन्त में से मीठी वस्तु निकली” (पद 14)। शिमशोन के 30 युवकों ने उसकी मंगेतर को धमकी दी, जिसने चतुराई से उससे वह रहस्य निकाल लिया: “मधु से अधिक क्या मीठा? और सिंह से अधिक क्या बलवन्त है?” (पद 18)।

सुलैमान की बुद्धिमानी तब प्रदर्शित हुई जब उसने शेबा की रानी के "कठिन प्रश्नों" (अर्थात, "पहेलियों") का उत्तर दिया (1 रा 10:1–4)। इस प्रकार की बुद्धिमानी के लिए उसकी ख्याति को बेन सीराख ने भी उजागर किया: “तुम्हारे प्राण ने पृथ्वी को ढक लिया, और तुमने इसे दृष्टांतों और पहेलियों से भर दिया” (इक्लस 47:15)।

जोसेफस ने सुलैमान और हीराम के बीच बुद्धि की प्रतियोगिता का उल्लेख किया है, जिसमें पहेलियों का आदान-प्रदान हुआ। सुलैमान ने पहले के आदान-प्रदान में जीत हासिल की, लेकिन हीराम ने अंततः बाहरी सहायता लेकर

उन्हें मात दी (*पुरावशेष* 8.5.5)। ऐसी पहेलियों को हल करने की बुद्धि, स्वाभाविक रूप से, इस्राएल के बुद्धिमान पुरुषों द्वारा दावा की गई थी। (उदाहरण के लिए, भज 49:4; नीति 1:6)। दानिय्येल 8:23–24 में एक अंतकालीन दर्शन है जिसमें बताया गया है कि "एक षड्यंत्रों में माहिर व्यक्ति [जो] सत्ता में आएगा" (शाब्दिक रूप में: "जो पहेलियों को समझने वाला है")। दानिय्येल स्वयं सपनों की व्याख्या करने, पहेलियों को समझाने और कठिन समस्याओं को हल करने की समान क्षमता रखते थे (दानि 5:12)।

नए नियम में पहेलियाँ कम ही दिखाई देती हैं। यीशु के विभिन्न "कठिन कथन" (जैसे, यूह 6:60) स्वीकार करना कठिन हैं और समझने में भी उतने ही कठिन हैं। संभवतः 666 एकमात्र सच्ची पहेली पशु का अंक है (प्रका 13:18)। समकालीन साहित्य में संख्यात्मक संदर्भों के तरीके के बाद, इस व्यक्ति की पहचान करने के विभिन्न प्रयास किए गए हैं। इनमें से सबसे उपयुक्त प्रत्याशी शासक नीरो माना गया है।

पाई

1 इतिहास 1:50 में एदोमी शहर पाऊ का वैकल्पिक रूप । *देखें* पाऊ।

पाउंड

1. किंग जेम्स संस्करण में "मिना" के लिए प्रयुक्त शब्द, जो लगभग एक पाउंड या आधा किलोग्राम के बराबर होता है (1 रा 10:17; एज्रा 2:69; नहे 7:71–72)। *देखें* वजन और माप।
2. एक यूनानी सिक्का (मिना) लगभग तीन महीने की मजदूरी के बराबर होता है (लूका 19:13)।
3. एक रोमी माप (यूनानी में "*लित्रा*"), जिसका मूल्य लगभग 12 आउंस या 0.3 किलो (तीन-चौथाई पाउंड) के बराबर था। इसका उल्लेख केवल यूहन्ना 12:3 और 19:39 में किया गया है। *देखें* वजन और माप।

पाऊ

पाऊ

एदोम में स्थित नगर, जहाँ राजा हदर ने शासन किया (उत 36:39); 1 इतिहास 1:50 में इसे पाई के नाम से भी जाना गया है।

पाठशाला

पाठशाला

देखें शिक्षा।

पात्र

देखें मिट्टी के बर्तन।

पादरी, सेवा

पादरी वह व्यक्ति होता है जो दूसरों की सेवा करते हैं, विशेष रूप से धार्मिक कार्यों में, जैसे प्रचार करना, शिक्षण, या आत्मिक देखभाल प्रदान करना। सेवकाई सेवा करने की क्रिया या वह कार्य है जो एक पादरी करता है, जिसमें धार्मिक समुदाय के भीतर नेतृत्व, शिक्षण, दूसरों की सहायता करना और सेवा के अन्य रूप शामिल हो सकते हैं। "सेवकाई" शब्द का व्यापक अर्थ में कलीसिया के समग्र कार्य के लिए भी उपयोग किया जा सकता है। बिशप (अध्यक्ष); मसीह की देह; कलीसिया; सेवक, सेविका; प्राचीन (बुज़ुर्ग); अभिषेक करना, अभिषेक; पुरोहित (प्रेस्बिटर); याजकाई (पुजारीपन); आत्मिक वरदान।

देखें बिशप; मसीह की देह; कलीसिया; सेवक, सेविका; प्राचीन; अभिषेक करना, अभिषेक की प्रक्रिया; प्रेस्बिटर; याजकीय पद; आत्मिक वरदान।

पादोन

पादोन

एक परिवार के पूर्वज जो जरूब्बाबेल के साथ बाबेली बन्दीगृह के बाद फिलिस्तीन लौटे (एज्रा 2:44; नहे 7:47)।

पानी का कुण्ड

पानी संग्रह करने का स्थान; एक मानव निर्मित जलकुण्ड या जलागम-क्षेत्र। चूने से पलस्तर किए गए पत्थर के कुण्ड फिलिस्तीन में 13वीं शताबदी ईसा पूर्व में सामान्य उपयोग में आए।

टपकने वाले या छोड़ दिए गए गड्ढे कई बार गाड़ने, यातना देने, या कैद की कोठरियों के रूप में उपयोग किए जाते थे। उदाहरण के लिए, जिस कारागार में भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह को डाला गया था, वह एक छोड़ा हुआ कीचड़ भरा गड्ढा था (यिर्म 38:6)। इश्माएल ने 70 घात किए गए व्यक्तियों के लोथों को एक बड़े गड्ढे में फेंक दिया, जिसे मूल रूप से राजा आसा द्वारा युद्धकालीन जल आपूर्ति के लिए निर्मित किया गया था (41:4–9)।

पानी का कुण्ड शुष्क पश्चिमी एशिया में अत्यन्त महत्वपूर्ण थे। यहूदा के राजा उज्जियाह को उस समय का वर्णन किया गया है जब उन्होंने उन क्षेत्रों में कई हौदे खुदवाए जहाँ सोते या कुएँ नहीं थे (2 इति 26:10)। एक अश्शूरी सरदार ने राजा हिजकियाह और उसकी प्रजा का उपहास करते हुए वादा किया कि यदि वे आत्मसमर्पण करेंगे, तो प्रत्येक जन अपने-अपने कुण्ड का पानी पी सकेंगे (यशा 36:16; पुष्टि करें 2 रा 18:31)। इससे बहुत पहले, मूसा ने इस्राएलियों को आश्वासन दिया था कि पहले से खुदे हुए कुएँ, वे प्रतिज्ञा के देश में परमेश्वर के आशीषों में होंगे (व्य.वि. 6:11)।

पानी का पक्षी

पानी के पास रहने वाले कई पक्षियों के लिए नाम, जैसे कि दलदली चकोर, हंस, या यहाँ तक कि सींग वाला उल्लू।

देखें जानवर; पक्षी।

पाप

बुराई जो न केवल मानवता, समाज, दूसरों या स्वयं के खिलाफ है, बल्कि परमेश्वर के खिलाफ भी है। इसलिए परमेश्वर का सिद्धांत पाप को उसके वास्तविक और नैतिक बहुआयामी अर्थ देता है। अन्य देवताओं को चंचल और चरित्रहीन माना जाता था, वे अनियंत्रित व्यवहार में असीमित शक्ति का प्रयोग करते थे। उन देवताओं ने इस्राएल के एक पवित्र, धर्मी और सर्वोत्तम परमेश्वर के जैसे पाप के प्रति जागरूकता पैदा नहीं की थी। यह धार्मिक अवधारणा और इसकी शब्दावली नए नियम में भी अपनाई गई है।

शब्दावली

इस्राएल का परमेश्वर,/; मानवीय व्यवहार के लिए आदर्श, मानक निर्धारित करते हैं। बाइबिल में पाप के लिए सबसे अधिक बार उपयोग किए जाने वाले शब्द किसी न किसी रूप में उस मानक का उल्लंघन करने की बात करते हैं। इब्रानी शब्द हाता' और यूनानी हामार्टिया का मूल अर्थ था "लक्ष्य से चूकना, कर्तव्य में विफल होना" (रोम 3:23)। निर्माता के रूप में, परमेश्वर मनुष्य की स्वतंत्रता की सीमाएँ निर्धारित करता है; अन्य बार-बार इस्तेमाल होने वाला शब्द (इब्रानी, 'अबार; यूनानी, पैराबैसिस) पाप को "अपराध," "निर्धारित सीमाओं को लांघना" के रूप में वर्णित करता है। समान शब्द हैं पेशा' (इब्रानी), जिसका अर्थ है "विद्रोह," "अपराध"; 'आशाम (इब्रानी) का अर्थ है "परमेश्वर के राजकीय विशेषाधिकार का उल्लंघन करना," "अपराध करना"; पैराप्टोमा (यूनानी) का अर्थ है "निर्धारित मार्ग से गलत कदम उठाना," "निषिद्ध भूमि पर अपराध करना।" "अधर्म" का अनुवाद अक्सर 'आओन (इब्रानी, जिसका अर्थ है "विकृतता," "गलती ") होता है, जिसके लिए निकटतम नये नियम के समकक्ष है एनोमिया (यूनानी, "अधर्म") या पैरानोमिया (यूनानी, "कानून तोड़ना")।

पुराने नियम में

उत्पत्ति में परमेश्वर द्वारा दी गई स्वतंत्रता के दुरूपयोग का वर्णन है, जो एक आज्ञा उल्लंघन से हुआ था। यहेजकेल पारंपरिक सामूहिक दोष के सिद्धांतों के खिलाफ व्यक्तिगत जिम्मेदारी पर जोर देते हैं (यहेज 18)। यिर्मयाह का अनुसरण करते हुए, वह बाहरी व्यवहार को सुधारने के लिए शुद्ध, नवीनीकृत आंतरिक जीवन की आवश्यकता पर जोर देते हैं; यदि पाप को दूर करना है तो दिव्य व्यवस्था को व्यक्ति के भीतर प्रेरक शक्ति बनना चाहिए (यिर्म 31:29–34; यहे 36:24–29)।

भज 51 पाप के आंतरिक अर्थ का एक गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भजनकार ने "पाप में मेरी माता ने मुझे गर्भ में धारण किया" कहकर स्वीकार किया कि उसका जीवन प्रारंभ से ही पापमय रहा है। उसके पूरे व्यक्तित्व को "शुद्धिकरण" करने की आवश्यकता थी; वह अपवित्र था। अनुष्ठानिक बलिदान कोई समाधान प्रदान नहीं करते। केवल एक टूटा हुआ, पश्चातापी हृदय ही पापी को परमेश्वर की शुद्धि के लिए तैयार कर सकता है। एकमात्र आशा, अपील का एकमात्र आधार, परमेश्वर के दृढ़ प्रेम और प्रचुर दया में निहित है। पाप के प्रति कठोर दृष्टिकोण के बावजूद, पुराने नियम में पापों की क्षमा की आशा है (भज 103:8–14 यश 1:18; 55:6–7)।

यीशु की शिक्षाओं में

पाप के विषय में यीशु की शिक्षाओं ने ईश्वरीय क्षमा और नवीनीकरण के अनुग्रहपूर्ण प्रस्ताव को अपनाया, न केवल अधिकार के साथ घोषणा की, "तुम्हारे पाप क्षमा हुए," बल्कि करुणा और सामाजिक मान्यता के कई कार्य दिखाते हुए कि

वे पापियों के मित्र बनने आए, उन्हें पश्चाताप के लिए बुलाते हुए, उनकी आशा और सम्मान को बहाल किया (मत्ती 9:1–13; 11:19; लूका 15; 19:1–10)।

यीशु ने पाप की उत्पत्ति के बारे में बहुत कम कहा, सिवाय इसके कि इसे मानव हृदय और इच्छा से जोड़ा (मत्ती 6:22–23; 7:17–19; 18:7; मर 7:20–23), लेकिन उन्होंने पाप के दायरे को महत्वपूर्ण रूप से फिर से परिभाषित किया। जहाँ व्यवस्था केवल लोगों के कार्यों का आकलन कर सकता था, वहीं यीशु ने दिखाया कि क्रोध, तिरस्कार, अभिलाषा, हृदय की कठोरता, और छल भी पाप हैं। उन्होंने उपेक्षा के पापों के बारे में कहा, जैसे कि अच्छे काम अधूरे रहने देना, बंजर पेड़, तोड़े का उयोग ना करना, घायल को नजरअंदाज करने वाला याजक, और कभी न दिखाए गए प्रेम आदि (मत्ती 25:41–46)। उन्होंने विशेष रूप से प्रेम के विरुद्ध पापों की निंदा की—भाईचारा न होना, अत्यधिक बैर, स्वार्थपन, असंवेदनशीलता (लूका 12:16–21; 16:19–31)। और उन्होंने आत्म-धार्मिकता और आत्मिक अंधेपन की निंदा की (मत्ती 23:16–26; मर 3:22–30)। यीशु ने पाप को बीमारी (मर 2:17) और कभी-कभी मूर्खता (लूका 12:20) के रूप में बताया। फिर भी, यीशु ने घोषणा किया कि गिरे हुए मनुष्यों को परमेश्वर की मदद से चंगा किया जा सकता है (लूका 7:36–50)।

यूहन्ना ***के लेखों में***

यूहन्ना के सुसमाचार में माना गया है कि पापी मानवता को मसीह, मेम्ने के बलिदान की आवश्यकता है ताकि संसार का पाप दूर किया जा सके और मसीह में प्रकाश एवं जीवन की पेशकश की जा सके। नया लेख पाप पर जोर देता है जो मसीह में प्रदान किए गए उद्धार को स्वीकार करने से इनकार करता है, जो जगत के लिए परमेश्वर के प्रेम द्वारा है—विश्वास करने से इनकार करना। अंधकार से प्रेम करने, प्रकाश को अस्वीकार करने और उद्धारकर्ता मसीह को स्वीकार करने से इनकार करने के लिए मनुष्यों का पहले ही न्याय हो चुका है (यूह 3:16–21)।

विज्ञानवाद के इस दावे के विरुद्ध कि उन्नत मसीहीयों के लिए पाप कोई मायने नहीं रखता, 1 यूहन्ना 15 कारणों की पुष्टि करता है कि मसीह जीवन में पाप को क्यों सहन नहीं किया जा सकता और फिर से जोर देता है कि पाप सत्य की अज्ञानता और प्रेम की कमी दोनों है (1 यूह 3:3–10)। फिर भी परमेश्वर उन लोगों को क्षमा करते हैं जो अपने पापों को स्वीकार करते हैं, जबकि मसीह उनके पापों का प्रायश्चित करते हैं और उनके लिए मध्यस्थता करते हैं (1:7–2:2)।

पौलुस ***के लेखों में***

पौलुस ने अपने अवलोकन से और पवित्रशास्त्र से दृढ़ता से तर्क दिया कि सभी ने पाप किया है (रोम 1–3)। उसके लिए, पाप शक्ति है, ताकत है, "व्यवस्था" है जो लोगों के भीतर शासन करता है (रोम 5:21; 7:23; 8:2; 1 कुरि 15:56), जो सभी प्रकार के बुरे व्यवहार को उत्पन्न करता है—विवेक की कठोरता (रोम 7:21–24), परमेश्वर से अलगाव, और मृत्यु के अधीनता (रोम 5:10; 6:23; इफ 2:1–5, 12; कुल 1:21)। मनुष्य स्वयं को सुधारने में असमर्थ हैं (रोम 7:24)। पौलुस की इस निराशाजनक, सार्वभौमिक स्थिति की व्याख्या विभिन्न रूपों में की जाती है। कुछ पाठकों का मानना है कि रोमियों 5:12–21 कहता है कि आदम का पाप सभी पापों का स्रोत है; अन्य, कि यह सभी पापों की "समानता" है। किसी भी घटना में, पौलुस ने अनिवार्य रूप से कहा कि "हर व्यक्ति अपने खुद का आदम है," जिसका अर्थ है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी पापी स्थिति के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार है, भले ही पापी स्वभाव आदम से विरासत में मिला हो।

पौलुस के लिए, पाप का समाधान, मसीह के साथ विश्वासियों की मृत्यु में निहित है—पाप, स्वयं, जगत के लिए मरना। समानांतर रूप से, आक्रामक, उत्साही आत्मा का नया जीवन व्यक्ति के जीवन को भीतर से बदल देता है, प्रत्येक व्यक्ति को मसीह की समानता में व्यक्तित्व को पवित्र करके एक नई रचना बनाता है (रोम 3:21–26; 5:6–9; 6; 8:1–4, 28–29; 2 कुरि 5:14–21)।

*यह भी देखें*शरीर; धर्मीकरण, धार्मिक; पवित्रीकरण; मृत्यु के हेतु पाप; अक्षम्य पाप।

पाप जिसका फल मृत्यु है

1 यूहन्ना 5:16 में उल्लिखित पाप; इस वचन में यूहन्ना ऐसा पाप करने वालों के लिए प्रार्थना करने से मना करता हैं। सबसे अधिक संभावना है कि यूहन्ना उन लोगों की बात कर रहे थे जो निर्णायक रूप से सत्य से मुंह मोड़ लेते हैं, साथ ही उन झूठे शिक्षकों की भी जो कलीसिया को धोखा देते हैं (इब्रा 6:4–6; 2 यूह 1:7–9)।

*यह भी देखें*ईशनिंदा; पाप।

पापबलि

*देखें*भेंट और बलिदान।

पापियास

पापियास एक प्रारम्भिक कलीसियाई अगुआ थे जो लगभग ईस्वी 60 से 130 तक जीवित रहे। वे हियरापुलिस नामक स्थान से थे और मसीही विश्वास के प्रारम्भिक दिनों के बारे में लिखते थे। हम पापियास के बारे में दो अन्य प्रारम्भिक कलीसिया लेखकों से जानते हैं: कैसरिया के यूसेबियस और लियन्स के आईरेनियस। आईरेनियस ने कहा कि पापियास ने

प्रेरित यूहन्ना को उपदेश देते हुए सुना था और वे एक अन्य कलीसियाई अगुआ पॉलीकार्प को भी जानते थे।

यूसेबियस ने एक पुस्तक का उल्लेख किया जिसे पापियास ने लिखा था जिसका नाम था *एक्सप्लनेशन ऑफ़ थे सेइंग्स ऑफ़ थे लॉर्ड*। इस पुस्तक में, पापियास ने कहा कि वे प्रेरितों द्वारा कही और की गई सच्ची कहानियों को लिखना चाहते थे। उन्होंने ये कहानियाँ एक पुराने कलीसिया अगुए (प्राचीन) से प्राप्त कीं। आईरेनियस ने सोचा कि पापियास प्रेरित यूहन्ना के बारे में बात कर रहे थे। यूसेबियस ने सोचा कि पापियास दो अलग-अलग यूहन्ना के बारे में बात कर रहे थे:

- प्रेरित यूहन्ना
- एक और यूहन्ना, जो अरिस्टियन नामक व्यक्ति के मित्र थे।

पापियास ने कहा कि मरकुस के सुसमाचार के लेखक पतरस के अनुवादक थे, जिनका नाम मरकुस था। जबकि मरकुस ने कभी मसीह को बोलते नहीं सुना था, उन्होंने पतरस के प्रचार से जो कुछ भी याद था, उसका सावधानीपूर्वक वर्णन किया। पापियास ने सहमति जताई कि मत्ती ने यीशु के कथनों को इब्री में लिखा। जबकि आईरेनियस ने इसे मत्ती के सुसमाचार में इब्रीवाद (इब्री मुहावरे या अभिव्यक्तियाँ) के रूप में समझा, ओरेगन ने सोचा कि इसका मतलब था कि मत्ती ने मूल रूप से अपना सुसमाचार इब्री में लिखा।

पापियास की लेखनी ने लोगों को इन विषयों पर प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित किया है:

1. सुसमाचारों को कैसे एक साथ संकलित किया गया;
2. क्या मत्ती का सुसमाचार पहले इब्री (या अरामी, जो एक सम्बन्धित भाषा है) में लिखा गया था; और
3. क्या प्रारम्भिक कलीसिया में दो महत्वपूर्ण पुरुषों के नाम यूहन्ना थे?

परम्परा के अनुसार, पापियास को उनके विश्वास के कारण शहीद कर दिया गया और वह एक शहीद के रूप में मरे।

पापों की क्षमा

केजेवी का वाक्यांश जो "पापों की क्षमा" का पर्यायवाची है। नया नियम एक सत्य का वर्णन करने के लिए विभिन्न प्रकार के शब्दों का उपयोग करता है। पापों की क्षमा की अवधारणा के साथ, कई अभिव्यक्तियाँ उपयोग की जाती हैं ("ध्यान नहीं दिया," रोम 3:25; "ढांपे गए," रोम 4:7; "पापी न ठहराए," रोम 4:8; "स्मरण न करूँगा," इब्रा 10:17)। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण शब्द "क्षमा" के रूप में अनुवादित है (मत्ती 26:28; मर 1:4; लूका 1:77; 3:3; 24:47; प्रेरि 2:38; 10:43; इब्रा 9:22; 10:18)।

इस शब्द की यूनानी भाषा में एक दिलचस्प परंपरा है। कानूनी अर्थ में, इसका इस्तेमाल पद से बर्खास्तगी, दायित्व से मुक्ति, ऋण या दंड की माफी के रूप में उपयोग किया गया था। समय के साथ इसका मतलब माफी या कर से छूट को भी संदर्भित करने लगा। नया नियम के उपयोग में क्रिया का अर्थ है "छोड़ देना," "पीछे छोड़ देना," या "दूर भेज देना।" इसलिए, संज्ञा का अनुवाद "क्षमा" के साथ-साथ "छुटकारा" के रूप में अनुवादित किया जा सकता है (और अक्सर किया जाता है) (प्रेरि 5:31; 13:38; 26:18; इफि 1:7; कुलु 1:14)। जबकि क्षमा को मानव और दिव्य दोनों स्तरों पर प्रयोग किया जा सकता है, "छुटकारा" शब्द द्वारा इंगित की गई क्षमा लगभग हमेशा परमेश्वर की होती है (मत्ती 26:28; प्रेरि 10:43)।

यह भी देखें क्षमा।

पाफुस

पाफुस

यह मूल रूप से दक्षिण-पश्चिम साइप्रस में एक फीनीकेवासियों की बस्ती थी। "पुराने पाफुस" को एक यूनानी बस्ती, "नए पाफुस" द्वारा पूरक बनाया गया था, जो लगभग 10 मील (16.1 किलोमीटर) दूर था; नया पाफुस प्रशासनिक केन्द्र बन गया जब साइप्रस 22 ईसा पूर्व में रोम का एक प्रशासनिक समितीय प्रान्त बना। यह संयुक्त शहर अपने मन्दिर के लिए प्रसिद्ध था, जो मूल रूप से सीरिया की देवी ऐस्टार्टी को समर्पित था, जिनकी पूजा (टैसिटस के अनुसार) प्राचीन फीनीके रीति-रिवाजों के साथ की जाती थी, जिसमें एक शंक्वाकार पत्थर (उल्कापिंड) का अभिषेक शामिल था। यूनानियों ने उन्हें एफ़्रोडाइट के साथ जोड़ा, यह दावा करते हुए कि वह समुद्र से उत्पन्न हुईं थी।

पाफुस में, पौलुस को पहली बार एलीमास से सुसमाचार के प्रति जोरदार विरोध का सामना करना पड़ा। यहाँ पौलुस ने अपना पहला चमत्कार किया था। दयालुता से, एलीमास का अंधापन केवल "कुछ समय के लिए" थी (प्रेरि 13:11)।

पारा

बिन्यामीन के निज भाग का नगर (यहो 18:23)। यह निःसन्देह खिरबेत एल-फराह है, जो यरूशलेम के उत्तर-पूर्व में लगभग पाँच और आधा मील (8.8 किमी) की दूरी पर स्थित है।

पारान

यह उत्तर-पूर्वी सीनै प्रायद्वीप का मरूभूमि क्षेत्र है, जो अराबा (रिफ्ट तराई) के पश्चिम में स्थित है। कादेशबर्ने इसकी उत्तरी सीमा है। कुछ विद्वान केंद्रीय सीनै के महान एट-तिह पठार को इस मरूभूमि का हिस्सा मानते हैं।

पारान का जंगल एक जंगली, और शुष्क विस्तार है जिसमें पठार, पहाड़, घाटियाँ और वादियाँ हैं। पानी और वनस्पति की कमी के कारण यह स्थान अत्यंत दुर्गम था और यह उस भूमि के विपरीत है जो दूध और शहद से बहता है जिसकी प्रतिज्ञा इस्राएल से की गई थी।

यह जंगल इश्माएल का घर बन गया (उत 21:20–21)। मिस्र से कनान की यात्रा के दौरान इस्राएलीयों ने वहाँ डेरा डाला (गिन 10:12; 12:16)। कादेशबर्ने से, जो जंगल के उत्तरी किनारे पर था, मूसा ने प्रतिज्ञा की गई देश का भेद पता लगाने के लिए भेजे (13:3, 26)। यह भी कहा जाता है कि दाऊद ने शमूएल की मृत्यु के बाद अपने दल को इस क्षेत्र में ले गया ताकि वे राजा शाऊल से दूरी बना सकें (1 शमू 25:1)।

*यह भी देखें*फिलिस्तीन; सीना, सीनै; जंगल में यात्रा।

पारुह

इस्साकार के गोत्र से यहोशापात के पिता। यहोशापात को वर्ष में एक महीने राजा सुलैमान और उसके परिवार के लिए भोजन उपलब्ध कराने के लिए नियुक्त किया गया था (1 रा 4:7, 17)।

पारूसिया

एक यूनानी शब्द की वर्तनी जिसका अर्थ है "उपस्थिति," "आगमन," "प्रकट होना," या "आना।" इसे अक्सर लोगों के संदर्भ में उपयोग किया जाता है (1 कुरि 16:17; 2 कुरि 7:6; 10:10; फिलि 1:26; 2:12) और एक बार मसीह विरोधी के संदर्भ में (2 थिस्स 2:9), यह शब्द मुख्य रूप से मसीह का उल्लेख करने के लिए उपयोग किया जाता है (मत्ती 24:3, 27, 37–39; 1 कुरि 15:23; 1 थिस्स 2:19; 3:13; 4:15; 5:23; 2 थिस्स 2:1, 8)। इसलिए, पारूसिया का अर्थ युगों के अंत में मसीह के दोबारा आगमन को दर्शाने के लिए किया जाता है।

पौलुस संभवतः मसीह के दोबारा आगमन पर तकनीकी जोर देने के लिए उत्तरदायी थे। उन्होंने समय की गणना करने के प्रयास को खण्डित किया है(1 थिस्स 5:1–2; 2 थिस्स 2:2–3; तुलना करें मत्ती 24:4–36)। फिर भी, उन्होंने पारूसिया की एक चमकदार तस्वीर प्रस्तुत की (1 थिस्स 4:13–18; 2 थिस्स 1:7–2:8; देखें 1 कुरि 15:20–28, 50–55)।

वे सिखाते हैं कि यह व्यक्तिगत, दृश्यमान, अचानक और महिमामय आगमन होगा (1 कुरि 15:23; 1 थिस्स 2:19; 3:13; 4:15–17)। वे स्पष्ट रूप से महसूस करते थे कि वे और उनके पढ़नेवाला मसीह के दोबारा आगमन का अनुभव करेंगे (1 थिस्स 4:15; तुलना करें रोम 8:23; 13:11)। हालाँकि, उन्होंने अपना शहीदी मृत्यु का सामना करने पर अपना मन बदल लिया (फिलि 1:23)।

याकूब ने मसीह के दोबारा आगमन में देरी को महसूस करते हुए धीरज रखने का आह्वान किया (याकू 5:7–8)। पतरस ने भी चेतावनी दी कि देरी से शंका उत्पन्न न हो (2 पत 3:8–10)। यह संदेश कोई कहानियां नहीं है (2 पत 1:16), और संदेह करने वालों को चुप करा दिया जाएगा (2 पत 3:3–4)। यूहन्ना ने निरंतर विश्वास को प्रोत्साहित किया ताकि प्रभु के आगमन पर विश्वासियों को लज्जित न होना पड़े (1 यूह 2:28)।

*यह भी देखें*युगांतशास्त्र; मसीह का दूसरा आगमन।

पारै

दाऊद के शूरवीरों में से एक, जिसे यहूदा में अरबा से होने का कहा जाता है (2 शमू 23:35); सम्भवतः एज्बै के पुत्र नारै के समान थे (1 इति 11:37)।

पार्थिया, पारथी लोग

पार्थिया*, पारथी लोग

देश (जो मोटे तौर पर आधुनिक ईरान के अनुरूप है) जो रोमी साम्राज्य के पूर्वी सीमाओं के परे स्थित है, और इस प्रकार लगभग नए नियम की दुनिया के बाहर है।

हालाँकि, यह पुराने नियम की दुनिया के मानचित्रों में शामिल है, जो आमतौर पर पूर्वी क्षेत्र को शामिल करते हैं। जब अश्शूर और बाबेल के आक्रमणों के बाद कई यहूदी फिलिस्तीन से निर्वासित किए गए थे, तो वे इस क्षेत्र में रह रहे थे, जब छठी शताब्दी ईसा पूर्व में यह कुस्रू के विशाल फारसी साम्राज्य का हिस्सा बन गया, और हजारों ने कुस्रू के प्रत्यावर्तन के प्रस्ताव के बावजूद वहीं रहना जारी रखा। दो शताब्दियों के बाद, उस साम्राज्य को सिकंदर महान ने जीत लिया। परन्तु 100 साल बाद, इसके कई हिस्सों ने, जिनमें पारथी भी शामिल था, उनके उत्तराधिकारियों के जुए को उतार फेंका और स्वतंत्र हो गए।

पार्थिय अन्ततः फ़रात नदी से लेकर सिन्धु नदी तक फैला एक महान साम्राज्य बन गया। नए नियम के काल में, शक्तिशाली रोम भी इसे सम्भावित खतरे के रूप में मानता था। दोनों

शक्तियों के बीच पहले टकराव में वास्तव में रोमियों की हार हुई (53 ईसा पूर्व में कैरहे, बाइबल हारान में)। केवल दूसरी शताब्दी ईस्वी में संतुलन बदला, और तब भी, दो बार अधिग्रहित किया गया, पारथी ने दो बार अपनी स्वतंत्रता पुनः प्राप्त की। अंततः यह 226 ईस्वी में गिर गया, रोमियों के कारण नहीं, बल्कि अपने ही सीमाओं के भीतर नव-फारसी तख्तापलट के कारण।

आसिया के व्यापार मार्गों के बीच स्थित होने के कारण धनी, और अपने प्रसिद्ध घुड़सवार धनुर्धारियों के कारण सैन्य रूप से मजबूत, जिन्होंने कई युद्धों में पीछे हटने का नाटक करके और फिर पीछा करने वाले शत्रु पर तीर चलाकर जीत हासिल की (इसलिए वाक्यांश "विभाजन [या 'पारथी'] शॉट"), पारथी लोग सहिष्णु भी प्रतीत होते हैं। उनके बीच बड़ा यहूदी समुदाय रहता रहा, और पिन्तेकुस्त के समय (प्रेरितों के काम 2) उनके बाबेल प्रांत में, जो आश्चर्यजनक रूप से, यहूदी राज्यपाल था। अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि पारथी के यहूदी, और सम्भवतः यहूदी मत में परिवर्तित पारथी लोग ("यहूदी मत अपनानेवाले"), उस युग-निर्माण वाले दिन यरूशलेम में थे (वचन 9)। उनके द्वारा पुनरुत्थान के कुछ हफ़्तों के भीतर ही सुसमाचार को भारत ले जाया गया होगा।

पालकी

पालकी

अधिकारियों को ले जाने के लिए उपयोग किया जाने वाला एक बड़ा शय्या (श्रेष्ठ 3:7–10; यशा 66:20)। इसे "रथ" या "पालकी" के रूप में भी अनुवादित किया जा सकता है।

देखें यात्रा।

पालन-पोषण

यूनानी शब्द *पाइडिया* (मूल भाषा *paideia)*का किंग जेम्स संस्करण अनुवाद, इफिसियों 6:4 में है। इसे "अनुशासन" के रूप में बेहतर अनुवादित किया जाता है।

अनुशासन अनुशासन।

पाला

जमी हुई जल वाष्प या ओस (भज 78:47; भज 147:16; भज 148:8; यिर्म 36:30; जक 14:6)।

पालाल

पालाल

ऊजै का पुत्र, जिन्होंने नहेम्याह के समय में यरूशलेम की शहरपनाह को फिर से बनाने में सहायता की (नहे 3:25)।

पावदान

एक नीची स्टूल जिसका उपयोग पैरों को सहारा देने के लिए किया जाता था। राजा सुलेमान के महान सोने के राजस्व का एक हिस्सा उनके हाथी दांत के सिंहासन के लिए एक पावदान बनाने में उपयोग किया गया था (2 इति 9:18)। यह शब्द अक्सर रूपक के रूप में उपयोग किया जाता है। वाचा का सन्दूक और मन्दिर दोनों को परमेश्वर का पावदान कहा जाता है क्योंकि वे स्थान थे जहाँ परमेश्वर विश्राम करते थे (उनकी महिमा वहाँ निवास करती थी) और शासन करते थे (1 इति 28:2; भज 99:5; 132:7; विल 2:1; पुष्टि करें यश 60:13)। मसीहा के शत्रु उसके पावदान बन जाएंगे; अर्थात, वे पूरी तरह से परमेश्वर की शक्ति द्वारा उसके अधीन हो जाएंगे (भज 110:1)। पावदान के कई नए नियम सन्दर्भ (शाब्दिक रूप से "पैर के नीचे कुछ") पुराने नियम की उस अपेक्षा के समान हैं जिसमें मसीह के शत्रुओं पर अन्तिम विजय की बात की गई है (मत्ती 22:44; मर 12:36; लूका 20:43; प्रेरि 2:35; इब्रा 1:13; 10:13)।

पासक

आशेर के गोत्र से यपलेत का पुत्र (1 इति 7:33)।

पासबानी पत्रियाँ

1 तीमुथियुस, 2 तीमुथियुस, और तीतुस पत्रियों का वर्णन करने के लिए आज के समय में बाइबल विद्वानों द्वारा उपयोग किया जाने वाला एक शब्द। मसीही परम्परा में, इन तीन लेखों को दूसरी शताब्दी से एक साथ समूहित किया गया है। इन्हें कलीसियाओं के बजाय व्यक्तियों को सम्बोधित किया गया है, लेकिन प्रत्येक पत्र के अन्त में आशीष वचन प्राप्तकर्ताओं के एक समूह को दर्शाता है। संक्षेप में, पत्र अपने प्राप्तकर्ताओं को कलीसिया की व्यवस्था, झूठे सिद्धान्त, अगुआई के मानक, और कलीसियाई जीवन की पासबानी देखरेख के बारे में सलाह देते हैं।

*यह भी देखें*प्रेरित पौलुस; पहला तीमुथियुस की पत्री; दूसरा तीमुथियुस की पत्री; तीतुस की पत्री।

पासेह

1. एशतोन का पुत्र, बेतरापा का भाई और यहूदा के गोत्र से कलूब का वंशज। पासेह का उल्लेख रेका के पुरुषों में से एक के रूप में किया गया है (1 इति 4:12)।

2. मन्दिर सेवकों के एक परिवार के पूर्वज, जो बाबेल की बँधुआई के बाद जरुब्बाबेल के साथ फिलिस्तीन लौट आए (एज्रा 2:49; नहे 7:51)।

3. योयादा के पिता। योयादा ने मशुल्लाम के साथ मिलकर निर्वासन उपरांत अवधि में नहेम्याह के निर्देशन में यरूशलेम के पुराना फाटक की मरम्मत की (नहे 3:6)।

पासेह

पासेह

केजेवी वर्तनी पासेह, मन्दिर सेवकों के एक परिवार के मुखिया, नहेम्याह 7:51 में। *देखें*पासेह #2।

पिण्डुक

देखें पक्षी (कबूतर)।

पिता (मनुष्य)

एक पिता वह पुरुष होता हैं जो एक बालक का पालक होता हैं। बाइबल में, शब्द "पिता" पितरों या पूर्वजों का भी उल्लेख कर सकता है, जिसका अर्थ है पहले की पीढ़ियाँ या कुलपिता।

*देखें*परिवारिक जीवन और सम्बन्ध।

पिता के रूप में परमेश्वर

बाइबल परमेश्वर को विभिन्न तरीकों से पिता के रूप में वर्णित करती है। सृष्टिकर्ता के रूप में, वे सभी लोगों के पिता हैं (मला 2:10; प्रेरि 17:28)। लेकिन एक विशेष तरीके से, परमेश्वर उन लोगों के पिता हैं जो उन पर विश्वास करते हैं। वे उनकी देखभाल करते हैं, उनकी रक्षा करते हैं, और उनका मार्गदर्शन करते हैं (यूह 1:12–13; रोम 8:14–17)।

पिता परमेश्वर और पुत्र यीशु के बीच का सम्बन्ध परमेश्वर की पितृत्व का सबसे गहरा अर्थ प्रकट करता है। यीशु के बपतिस्मा के समय, परमेश्वर ने स्वर्ग से कहा, "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ!" (मत्ती 3:17)। विश्वासियों के विपरीत, जो गोद लिए गए परमेश्वर के संतान हैं, यीशु परमेश्वर के अनन्त पुत्र हैं। उन्होंने कहा, "मैं और पिता एक हैं" (यूह 10:30)। यह दिखाता है कि वे पिता के समान ईश्वरीय स्वभाव साझा करते हैं।

यीशु ने यह प्रकट किया कि परमेश्वर पिता कैसे हैं। उन्होंने अपने शिष्यों से कहा, "जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है" (यूह 14:9)। यीशु हमेशा वही करते थे जो उनके पिता को प्रसन्न करता था (यूह 8:29)। उन्होंने लोगों को परमेश्वर के पितृ प्रेम के बारे में सिखाया। उन्होंने अपने अनुयायियों को परमेश्वर से "हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है" के रूप में प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित किया (मत्ती 6:9)। यह प्रार्थना (जिसे प्रभु की प्रार्थना कहा जाता है) हमें परमेश्वर की देखभाल पर भरोसा करने और उसकी इच्छा को खोजने के लिए सिखाती है।

यीशु के माध्यम से, विश्वासियों का परमेश्वर के साथ एक घनिष्ठ सम्बन्ध हो सकता है, और उन्हें विश्वास के द्वारा परमेश्वर के परिवार में शामिल किया जाता है (गला 4:4–7)।

*देखें*परमेश्वर के नाम; त्रिएकता।

पितोम

इस्राएलियों द्वारा उनकी मिस्री दासता के दौरान बनाए गए भण्डार नगरों में से एक (रामसेस के साथ) (निर्ग 1:11)। इन स्थलों की पहचान को लेकर मिस्री विद्वानों के बीच लंबे समय से मतभेद रहे हैं। रामसेस की पहचान को पीरामेस के साथ जोड़कर काफी हद तक स्थापित किया गया है, जो फ़िरौन रामसेस II (1290–1224 ई.पू.) की राजधानी थी। रामसेस के लिए कई प्राचीन स्थलों का सुझाव दिया गया है, लेकिन कई वर्षों तक पूर्वोत्तर डेल्टा में तानिस को संभावित स्थान माना गया। हालांकि, उसी सामान्य क्षेत्र में कांतिर अधिक संभावित स्थान है।

पितोम मिस्री वाक्यांश से लिया गया है जिसका अर्थ है "आतुम [देवता] का घर।" यह सौर देवता आतुम की उपासना के लिए समर्पित मंदिर रहा होगा। मंदिर की भंडारण सुविधाओं के निर्माण में इज़राइली शामिल रहे होंगे। थेब्स में रामसेस II के मृत्यु सम्बंधित मंदिर की भंडारण सुविधाएं अच्छी तरह से संरक्षित, धनुषाकार छतों वाली लंबी आयताकार संरचनाएं हैं। इन्हें एक के बगल में एक बनाया गया था और मृत्युमन्दिर परिसर का एक बड़ा भाग घेर रखा था। यह हमें उन संरचनाओं की एक काफी सटीक तस्वीर देता है जिनके लिए इस्राएलियों को ईंटें प्रदान करने के लिए विवश किया गया था।

हालांकि पितोम की व्युत्पत्ति ज्ञात है, परन्तु इसका सटीक स्थान अभी भी विद्वानों के बीच चर्चा का विषय बना हुआ है। पितोम से जुड़े दो मुख्य स्थल तेल-एर-रेताबह और तेल-एल-

मसखुता हैं, जो दोनों वादी तूमिलात में स्थित हैं, जो नील डेल्टा से पूर्व की ओर झील तिमसाह तक फैला हुआ है। हाल के वर्षों में दोनों स्थलों पर उत्खनन किया गया है और दोनों स्थलों से फिलिस्तीन और सीरिया के एशियाई लोगों की उपस्थिति के प्रमाण मिले हैं। चूँकि अरबी नाम मसखुता और इब्रानी शब्द सुक्कोत (जो निर्गमन 12:37 में निर्गमन के मार्ग पर एक ठहराव बिंदु के रूप में उल्लेखित है) के बीच एक संबंध हो सकता है, तेल-एर-रेताबह को अब पितोम के लिए सबसे संभावित स्थान माना जाता है और मसखुता सुक्कोत का स्थान होगा।

*यह भी देखें*मिस्र, मिस्री ; रामसेस (स्थान)I

पित्त

1. यकृत का पीला-भूरा कड़वा स्राव (अय्यू 16:13) या पित्त वाला अंग (20:25)।

2. बहुत कड़वा, जहरीला पौधा जिसे निश्चित रूप से पहचाना नहीं जा सकता, हालांकि धतुरा, इंद्रायन, और खसखस का सुझाव दिया गया है। इब्रानी शब्द समय-समय पर पुराने नियम में आता है और इसका सन्दर्भ (1) व्य.वि. 29:18 में "पित्त"; (2) अय्यू 20:14, 16 में विषैले सांप का "विष"; (3) भज 69:21 में "पित्त" या "विष" जो किसी व्यक्ति को भोजन के रूप में दिया गया; (4) इस्राएल पर ईश्वरीय दण्ड जैसे "पित्त का पानी" (यिर्म 8:14; 9:15; 23:15; या "विष"); (5) इस्राएल का ईश्वरीय न्याय का कड़वा अनुभव (विल 3:5, 19); (6) इस्राएल पर ईश्वरीय न्याय जो खेत की क्यारियों में "धतूरे" की तरह उगता है (होश 10:4; या "जहरीले पौधे); और (7) "न्याय को पित्त में बदलकर" इस्राएल ने न्याय को विकृत कर दिया है (आमो 6:12)।

3. नए नियम में "अप्रिय स्वाद वाला पदार्थ"। मत्ती 27:34 दाखरस के साथ मिश्रित पित्त का उल्लेख करता है जो क्रूस पर मसीह को दिया गया था। मर 15:23 "गंधरस" की बात करता है, जो दाखमधु के साथ मिश्रित तरल की अधिक विशिष्ट पहचान हो सकती है। प्रेरि 8:23 में पतरस ने जादूगर शमौन की आत्मिक स्थिति को "पित्त की कड़वाहट" के रूप में वर्णित किया।

*यह भी देखें*पौधे (लौकी, जंगली)।

पिन्तेकुस्त

पिन्तेकुस्त

यह शब्द यूनानी शब्द पेंटेकोस्टे ("पचासवाँ") से लिया गया है, जो फसह के 50वें दिन मनाए जाने वाले पर्व के लिए प्रयोग किया जाता था। पुराने नियम में इस पर्व को यहूदी मत में शावु'ओत (सप्ताह) कहा जाता है, और इसे सप्ताहों का पर्व (निर्ग 34:22; व्यव 16:10) कहा जाता है क्योंकि यह फसह के सात सप्ताह बाद आता है। अन्य नामों में फसल का पर्व (निर्ग 23:16) शामिल है, क्योंकि इसका सम्बन्ध फसल के मौसम से है, और प्रथम फल का दिन (गिन 28:26), क्योंकि दो रोटियाँ नए पिसे अनाज की प्रभु के सामने प्रस्तुत की जाती थीं। (इस अन्तिम नाम को फसल के मौसम की शुरुआत में प्रथम फल की भेंट से अलग समझा जाना चाहिए, जैसा कि लैव्य 23:9–14 में उल्लेख किया गया है।)

सप्ताहों का पर्व तीन पुराने नियम की तीर्थयात्रा के पर्व में से एक था जब लोगों को उपहारों और भेंटों के साथ प्रभु के सामने उपस्थित होना था (निर्ग 23:14–17)। यह पर्व मुख्य रूप से फसल का पर्व था और जौ की फसल के अन्त और गेहूं की फसल की शुरुआत का उत्सव मनाता था। परंपरागत रूप से, अनाज की कटाई फसह से शुरू होती थी, जब मध्य अप्रैल के आसपास पहली बार अनाज काटा जाता था (व्यव 16:9) और पिन्तेकुस्त तक, जो मध्य जून में समाप्त होता था। जोसेफस का यह कथन कि पिन्तेकुस्त को "समापन" कहा जाता था, इस समझ को दर्शाता है (*एंटीक्विटिस* 3.10.6)।

प्रत्येक वर्ष, अखमीरी की रोटी के पर्व (फसह के बाद के सात दिनों की अवधि) के दौरान सब्त के अगले दिन याजक प्रभु के सामने नई फसल के अनाज का एक पूला हिलाते थे। फिर लोग तब उस पहले अनाज के पूले की भेंट से लेकर सातवें सब्त के अगले दिन तक 50 दिन गिनते थे, ताकि सप्ताहों के पर्व का पालन कर सकें (लैव्य 23:11)। इस दिन दो रोटियाँ, जो दो-दसवें एफा आटे से बनी होती थीं और खमीर के साथ पकी होती थीं, प्रभु के सामने हिलाई जाती थीं (वचन 17) और स्वेच्छा से भेंट देने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था (व्यव 16:10)। यह फसल का पर्व महान आनन्द का समय था और पवित्र सभा का समय था जब कोई काम नहीं किया जाता था (लैव्य 23:21; व्यव 16:11)। सुलैमान के समय के दौरान सप्ताहों के पर्व का पालन (2 इति 8:13) पंचग्रन्थ के बाहर एकमात्र पुराने नियम का सन्दर्भ है, क्योंकि यहेजकेल ने भविष्य के पर्वों के लिए अपने कैलेंडर में इसका कोई उल्लेख नहीं किया है (यहे 45–46)।

पिन्तेकुस्त का उल्लेख पहली बार नए नियम में मसीह के चेलों पर पवित्र आत्मा के आगमन के अवसर के रूप में किया गया है, जिसे कई धर्मशास्त्री कलीसिया की शुरुआत के रूप में समझते हैं (प्रेरि 2:1)। चूँकि यह अनिवार्य पर्व था, इसलिए यहूदी यरूशलेम में पिन्तेकुस्त मनाने के लिए दूर-दूर से एकत्रित होते थे, जिससे यह परमेश्वर के कार्य के लिए उपयुक्त समय बन जाता था। दो अवसरों पर पौलुस ने अपनी यात्राओं की योजना बनाते समय पिन्तेकुस्त के पर्व पर विचार किया। पहले उदाहरण में वह कुरिन्थियों को पिन्तेकुस्त के बाद तक उनके पास अपनी यात्रा में देरी के बारे में लिखता है (1 कुरिन्थियों 16:8), जबकि बाद में वह पिन्तेकुस्त के समय तक

यरूशलेम पहुंचने के लिए इच्छुक था (प्रेरितों के काम 20:16)।

इस्राएल के भोज और पर्व *भी देखें*।

पिम

वजन माप जो लगभग दो-तिहाई शेकेल के समकक्ष है। *देखें* वजन और माप।

पिरगमुन

पिरगमुन

कैइकस नदी के उत्तर में स्थित एक नगर, मूसिया (पश्चिमी तुर्की) के दक्षिणी भाग में है। पिरगमुन यूनानिवादी काल के दौरान सबसे महत्वपूर्ण सांस्कृतिक केन्द्रों में से एक था (वह समय जब यूनानी संस्कृति व्यापक रूप से फैली, लगभग 323 से 31 ईसा पूर्व)।

स्ट्रैबो, एक प्रारम्भिक भूगोलवेत्ता जो 63 ईसा पूर्व से लगभग 24 ईस्वी तक जीवित रहे, उन्होंने कहा कि पिरगमुन के आसपास का क्षेत्र मूसिया में सबसे समृद्ध भूमि थी। बाइबल में इसका केवल दो बार उल्लेख किया गया है (प्रका 1:11; 2:12; किंग जेम्स संस्करण "पर्गामोस")। दोनों बार, यह पिरगमुन को एशिया की सात कलीसियाओं में से एक के रूप में सन्दर्भित करता है, जिनके लिए यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में लिखा था।

पिरगमुन का स्थान और भूगोल

रोमियों ने मूसिया को दो अन्य क्षेत्रों, लुदिया और करिया के साथ मिलाकर एशिया जिले का गठन किया। यह जिला अब आधुनिक तुर्की का पश्चिमी भाग है। पिरगमुन समुद्र के करीब, 32 किलोमीटर (20 मील) से कम दूरी पर अन्दर की ओर था। नगर एक बड़े शंकु के आकार की पहाड़ी पर स्थित था, जो लगभग 305 मीटर (1,000 फीट) ऊँची थी। यह पहाड़ी कैकस नदी के लगभग 5 किलोमीटर (3 मील) उत्तर में थी। पिरगमुन की पहाड़ी के दोनों ओर दो छोटी नदियाँ बहती थीं। सेलिनस नदी पश्चिम की ओर थी, और सेटियस नदी पूर्व की ओर थी। इन दोनों नदियों ने मिलकर बड़ी कैकस नदी के साथ संगम किया।

पिरगमुन की स्थिति ने इसे स्वाभाविक रूप से मजबूत और बचाव के लिए उपयुक्त बना दिया। यह एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल भी था, जिसमें मन्दिर थे। इन कारकों ने इसे धन सुरक्षित रखने के लिए एक उत्तम स्थान बना दिया। सिकन्दर महान के एक सेनापति, लाइसिमेकस ने पिरगमुन में बड़ी मात्रा में धन जमा किया। उन्होंने वहाँ 9,000 तोड़े छोड़े (एक तोड़ा रुपये-पैसे के वजन की एक इकाई थी, लगभग 34 किलोग्राम या 75 पाउंड चाँदी)। बाद में, पिरगमुन के राजाओं ने इस धन का उपयोग अपने नगर को महान और सुन्दर बनाने के लिए किया। पिरगमुन के लोग 400 ईसा पूर्व से पहले सिक्के बनाना शुरू कर चुके थे। हालांकि, यह एक महान नगर तब तक नहीं बना जब तक सिकन्दर महान की मृत्यु (323 ईसा पूर्व में) नहीं हो गई।

एक शक्तिशाली नगर के रूप में पिरगमुन का उदय

पिरगमुन राजा अटालस प्रथम के अधीन बहुत प्रभावशाली और सुन्दर बन गया। उन्होंने 241 से 197 ईसा पूर्व तक शासन किया और अटालिड राजाओं के परिवार की शुरुआत की। अटालस प्रथम धनी और युद्ध में सफल थे। उन्होंने गॉल्स (यूरोप के एक दल) को हराया, जो 278 ईसा पूर्व में गलातिया नामक क्षेत्र में आए थे।

अटालस प्रथम ने एक चतुर राजनीतिक कदम उठाया। वे रोम के सहयोगी बन गए, जो बहुत शक्तिशाली हो रहा था। इस गठबंधन ने अटालस प्रथम को अपने राज्य में अधिक यूनानी संस्कृति लाने में सहायता की।

अपनी दौलत और शक्ति के साथ, एटालस प्रथम ने पिरगमुन को सुन्दर बनाया। उन्होंने कई प्रभावशाली इमारतें बनाईं, जिनमें शामिल हैं:

- मन्दिर
- रंगशाला
- एक पुस्तकालय
- अन्य सार्वजनिक भवन

इन सुधारों ने पिरगमुन को अपने समय के सबसे प्रभावशाली नगरों में से एक बना दिया।

अत्तालुस प्रथम के बाद, उनके पुत्र यूमेनेस द्वितीय राजा बने। उन्होंने 197 से 159 ईसा पूर्व तक शासन किया। यूमेनेस द्वितीय के शासनकाल में, पिरगमुन अपनी सबसे शक्तिशाली और प्रसिद्ध स्थिति में पहुँच गया।

189 ईसा पूर्व में, रोम ने यूमेनेस द्वितीय को एक बड़ा इनाम दिया। क्योंकि यूमेनेस द्वितीय ने सीरिया में एक युद्ध में रोम की सहायता की थी, रोम ने उन्हें टॉरस पहाड़ों के उत्तर-पश्चिम की सारी भूमि दे दी जो पहले सेल्यूकिड राज्य की थी। इस उपहार ने पिरगमुन राज्य को बहुत बड़ा बना दिया। अब यह टॉरस पहाड़ों से लेकर डार्डानेल्स (उत्तर-पश्चिमी तुर्की में एक संकीर्ण जलसंधि) तक फैला हुआ था।

यूमेनीज द्वितीय ने पिरगमुन की लाइब्रेरी को और भी उत्कृष्ट बनाया। उन्होंने इसके संग्रह को 200,000 पुस्तकों तक बढ़ा दिया। इससे यह लगभग उतनी ही प्रभावशाली हो गई जितनी प्रसिद्ध सिकन्दरिया का पुस्तकालय जो मिस्र में था।

धार्मिक महत्व और सम्राट की आराधना

यूमेनीज द्वितीय ने ज्यूस के लिए एक विशाल वेदी (धार्मिक समारोहों के लिए एक विशेष मेज) भी बनाई। ज्यूस यूनानी धर्म में एक प्रमुख देवता थे। यह वेदी नगर से 244 मीटर (800 फीट) ऊँची पहाड़ी पर स्थित थी और दूर से दिखाई देती थी।

कुछ लोग मानते हैं कि यह वेदी वही हो सकती है जिसे बाइबल प्रकाशितवाक्य 2:13 में "शैतान का सिंहासन" कहती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि पिरगमुन गैर-मसीही आराधना के लिए एक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान था। यह उस समय के चार प्रमुख देवताओं की आराधना का मुख्य केन्द्र था:

- ज्यूस (देवताओं के राजा)
- एथेना (बुद्धि की देवी)
- डायोनिसस (दाखरस और उत्सवों के देवता)
- एस्क्लेपियस (चंगाई के देवता)

हालांकि, यह सम्भव है कि प्रकाशितवाक्य उस तथ्य का उल्लेख कर रहा हो कि पिरगमुन उस समय आसिया में सम्राट की आराधना का केन्द्र था।

पिरगमुन रोम का अंग बन गया

अत्तालिक राजवंश के अंतिम राजा, एटालस तृतीय की मृत्यु 133 ईसा पूर्व में बिना कोई उत्तराधिकारी छोड़े हो गई। अपनी वसीयत में, उन्होंने अपना सारा राज्य रोम को सौंप दिया। पिरगमुन और अन्य स्थापित यूनानी नगर, हालांकि, स्व-शासित क्षेत्र बन गए। इन सभी नगरों को कर से मुक्त कर दिया गया था।

शासन को सरल बनाने के लिए, रोमी हाकिम (एक उच्च-स्तरीय रोमी अधिकारी) ने फ्रूगिया के पूर्वी क्षेत्र को पुन्तुस और कप्पदूकिया को सौंप दिया। इस प्रकार, नवगठित रोमी प्रान्त आसिया पहले के परगमने साम्राज्य से छोटा था। 120 ईसा पूर्व के बाद, फ्रूगिया को रोमी सभा द्वारा पुनः प्राप्त किया गया (पुन्तुस के राजा मिथ्रीडेट्स की मृत्यु के बाद)। हालांकि, इसे वास्तव में 85 ईसा पूर्व तक आसिया में शामिल नहीं किया गया था। उस समय, रोम द्वारा शासित क्षेत्र फिर से पुराने परगमने राज्य के आकार के समान था।

पिरगमुन को तीन अलग-अलग क्षेत्रों में लम्बे समय तक विकसित किया गया था:

- पहाड़ के ऊपर का ऊपरी नगर सबसे उत्तरी क्षेत्र था। यह मुख्य रूप से शाही परिवार, कुलीन वर्ग (उच्च वर्ग), और सैन्य सेनापतियों का क्षेत्र था। यह वह क्षेत्र था जहाँ आधिकारिक गतिविधियाँ होती थीं।
- मध्य नगर, जो दक्षिण में और पहाड़ के नीचे था, आम लोगों द्वारा देखे जाने वाले नगर के हिस्से को शामिल करता था। इस स्थान में युवाओं के लिए खेल के मैदान और कम शिक्षा प्राप्त लोगों द्वारा देखे जाने वाले मन्दिर शामिल थे। ये संरचनाएँ सीधे नगर और याजक के पद द्वारा नियंत्रित नहीं थीं। पिरगमुन में रहने वाले सभी लोग इन स्थानों का स्वतंत्र रूप से उपयोग कर सकते थे।
- तीसरा क्षेत्र, सेलीनस नदी के पार दक्षिण-पश्चिम में, प्रसिद्ध पिरगमुन के अस्क्लेपियन को समेटे हुए था। यह चिकित्सा कलाओं का एक केन्द्र था। यहाँ एक चिकित्सा विद्यालय था जहाँ प्रसिद्ध डॉक्टर गैलेन ने अध्ययन किया। लोग यहाँ अस्क्लेपियस देवता की पूजा करते थे। उनका मन्दिर गोल था और रोम में ईस्वी 130 में बने प्रसिद्ध पैंथियन जैसा दिखता था। यहाँ एक सुन्दर फव्वारा, रंगशाला, कुण्ड, चिकित्सा भवन, पुस्तकालय, और विभिन्न मन्दिर भी थे। इन संरचनाओं के कुछ अवशेष अभी भी दिखाई देते हैं।

बाइबल और प्रारम्भिक मसीही विश्वास में पिरगमुन

प्रकाशितवाक्य 2:12–15 दो समूहों का उल्लेख करता है:

- निकोलाइटन्स (प्रारम्भिक मसीही कलीसिया के भीतर एक समूह जिनकी कुछ संदिग्ध प्रथाएँ थीं)
- जो लोग बिलाम की शिक्षाओं का पालन करते थे (पुराने नियम में एक व्यक्ति जो लोगों को परमेश्वर से दूर ले जाने के लिए जाना जाता है)

यह सम्भवतः दो यूनानी देवताओं, डायोनिसस और एफ्रोडाइट की लोकप्रिय आराधना को सन्दर्भित करता है। पिरगमुन में कई लोग इन देवताओं की पूजा करते थे। यहूदी और मसीही लोग दोनों मानते थे कि यह नैतिक रूप से अनुचित था (जोसेफस की *एंटीक्विटिस* 14.10.22)।

प्लैनी (*नेचुरल हिस्ट्री* 5.30) ने माना कि पिरगमुन आसिया का सबसे महत्वपूर्ण नगर था। इस कारण से, यह सम्भवतः उन

मुख्य स्थानों में से एक था जहाँ लोग रोमी सम्राट की ईश्वर के रूप में पूजा करते थे। प्रकाशितवाक्य में अन्तिपास की शहादत का उल्लेख है, "मेरा विश्वासयोग्य साक्षी" (प्रका 2:13)। यह तब समझ में आता है जब हम यह याद करते हैं कि पिरगमुन में यहूदी और मसीही लोग सम्राट की ईश्वर के रूप में आराधना नहीं करते थे।

पिरगमुन एक विशेष प्रकार की लेखन सामग्री बनाने के लिए प्रसिद्ध था। यह भेड़ की खाल से बनाई जाती थी। यह सामग्री बहुत लोकप्रिय हो गई और इसे "चर्मपत्र" कहा जाता था, जो लातीनी शब्द *पेरगामेना* से आया है।

पिरगा

पिरगा

यह शहर सम्भवतः बहुत प्रारंभिक यूनानी मूल का था और प्राचीन पंफूलिया की धार्मिक राजधानी था। दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में, रोमी लोगों ने वहां एक सीरियाई छावनी को हरा दिया, और उसके बाद शहर को बाहरी नियंत्रण से काफी हद तक स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

अपनी पहली मिशनरी यात्रा पर, पौलुस और उनके साथी पिसिदिया के अन्ताकिया जाते समय इस शहर से होकर गुजरे। प्रेरितों के कार्य में उस अवसर पर किसी प्रचार गतिविधि का उल्लेख नहीं है, बल्कि केवल इतना उल्लेख है कि यह पिरगा ही था जहाँ यूहन्ना मरकुस अपने साथियों को छोड़कर यरूशलेम लौट गया था (प्रेरि 13:13–14)।

यदि हम मानते हैं कि लूका ने इस तथ्य को दर्ज किया होगा कि पौलुस ने इस यात्रा के दौरान प्रचार किया था, तो हम केवल अनुमान लगा सकते हैं कि उन्होंने ऐसा क्यों नहीं किया। पास में स्थित एक प्रसिद्ध अनातोलियन प्रकृति की देवी, अरतिमिस के मन्दिर की उपस्थिति ने उन्हें हतोत्साहित करने के बजाय चुनौती दी होगी। प्रेरित बीमार हो सकते थे (कुछ टिप्पणीकार गला 4:13 में सन्दर्भ के साथ सम्भावित सम्बन्ध का सुझाव देते हैं), लेकिन उस स्थिति में हम उम्मीद कर सकते थे कि बरनबास ने उनकी जगह ले ली होती। यह सुझाव दिया गया है कि इस बिन्दु पर समूह में अन्यजातियों के प्रति प्रचार और स्वीकृति को लेकर असहमति थी, और यह पौलुस के साथ उनके मतभेद (और शायद उनके अगुआई के प्रति असंतोष) ही थे जिन्होंने यूहन्ना (मरकुस) के प्रस्थान को प्रेरित किया।

हालांकि घर की ओर की यात्रा में, पौलुस और बरनबास ने अत्तलिया जाने से पहले "पिरगा में वचन का प्रचार किया", जहां उन्होंने सीरिया के अन्ताकिया के लिए जहाज लिया (प्रेरि 14:25–26)। उस प्रचार के परिणाम ज्ञात नहीं हैं, लेकिन यह स्पष्ट है कि पिरगा में मसीही मत उतना उन्नत नहीं हुआ जितना कि एशिया के उपद्वीप के अन्य शहरों में हुआ था।

पिरसिस

रोम में मसीही महिला जिन्हें पौलुस ने अभिवादन भेजा (रोम 16:12)।

पिरातोन

अब्दोन का घर, जो छोटे न्यायियों में से एक है (न्या 12:13–15)। इसे एप्रैम के देश और अमालेकियों के पहाड़ी देश में बताया गया है। यह सम्भवतः संकेत करता है कि यह मूलतः अमालेकियों का था या कि इसे उनके किसी चढ़ाई के समय उनके द्वारा ले लिया गया था। दाऊद के शूरवीरों में से एक, बनायाह को भी पिरातोनी कहा जाता है (2 शमू 23:30; 1 इति 11:31; 27:14)। आम तौर पर इसकी पहचान फेराटा से की जाती है, जो सामरिया से छह मील (9.7 किलोमीटर) दक्षिण पश्चिम में एक ऊंची चट्टान पर स्थित है।

पिराम

यर्मूत का राजा, जो यरूशलेम के दक्षिण-पश्चिम में स्थित एक कनानी शहर है। यहोशू के विरुद्ध चार एमोरी राजाओं के साथ सन्धि में मिलने के बाद, पिराम—अन्य राजाओं के साथ—पराजित हुआ और मारा गया (यहो 10:3)।

पिरामिड

देखिए मिस्र, मिस्री।

पिलतै

पिलतै

योयाकीम के दिनों में महायाजक के रूप में याजक और मोअद्याह के घर के मुखिया, जो बँधुआई के बाद की अवधि में थे (नहे 12:17)।

पिलानेहार

पिलानेहार

अधिकारी जिसका मुख्य कर्तव्य राजा को परोसे गए दाखरस का स्वाद चखना था ताकि विषाक्तता (जहर) से बचाव हो

सके। प्राचीन काल में पिलानेहारे राजा और उच्च अधिकारियों के दरबारों में अक्सर पाए जाते थे (1 रा 10:5)। ये लोग अधिकार में रहने वालों के निकट होते थे और कभी-कभी काफी प्रभाव भी डालते थे। आमतौर पर उनमें से कई राजा की सेवा करते थे, जिनमें "पिलानेहारों के प्रधान" (बटलर) उनके प्रमुख होते थे (उत 40:1–23)। सुलैमान के दरबार में भी पिलानेहारों शामिल थे (2 इति 9:4), और नहेम्याह राजा पिलानेहारों थे (नहे 1:11–2:1); रबशाके भी पिलानेहार रहा होगा (2 रा 18:13–19; यशा 36:2)।

पिलानेहारा

एक इब्रानी शब्द का अनुवाद जो उत्पत्ति 40 and 41 में है जिसका अर्थ है "पियाऊ" या "दाखरस चखने वाला"। *देखें* पियाऊ।

पिल्दाश

नाहोर और मिल्का का छठा पुत्र; अब्राहम का भतीजा (उत 22:22) ।

पिल्हा

पिल्हा

राजनीतिक अगुए जिन्होंने बँधुआई के बाद के युग में एज्रा की वाचा पर अपनी मुहर लगाई (नहे 10:24)।

पिसगा पहाड़

पिसगा पहाड़

प्राचीन शहर यरीहो के पास मृत सागर के उत्तर-पूर्व छोर पर स्थित एक पहाड़। राजा बालाक भविष्यद्वक्ता बिलाम को पिसगा की चोटी पर ले गया (गिन 23:14)। परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वे प्रतिज्ञा की गई भूमि को देखने के लिए इसकी चोटी पर जाएं (व्य.वि. 3:27)। बाद में, मूसा पिसगा के चोटी पर वापस गए और वहीं उनका निधन हुआ (34:1)।

पिसगा की ढलानें मृत सागर की सीमा बनाती हैं, जिसे अराबा का सागर भी कहा जाता है (व्य.वि. 3:17; 4:49; यहो 12:3; 13:20)। किंग जेम्स संस्करण कभी-कभी इन ढलानों को "अश्दोत-पिसगा" के रूप में सन्दर्भित करता है। कई विद्वान पिसगा पहाड़ की पहचान आधुनिक रस एस-सियाघा के साथ करते हैं, जो नबो पहाड़ के उत्तर में स्थित है।

यह भी देखें नबो पहाड़।

पिसिदिया

यह गलातिया के रोमी प्रान्त में एक क्षेत्र था जहां पौलुस और बरनबास ने लगभग 48 ईस्वी में दौरा किया।

पिसिदिया टॉरस पर्वतों के उत्तर में स्थित है, जो किलिकिया और पंफूलिया के तटों के साथ हैं। पिसिदिया अनातोलिया के केन्द्रीय पठार पर स्थित है, जो समुद्र तल से 1100 मीटर (3,600 फीट) ऊँचाई पर है। पर्वत इसे तटीय क्षेत्रों से अलग करते हैं। इस क्षेत्र में टॉरस की तलहटी शामिल है। यह लगभग 640 किलोमीटर (400 मील) लम्बा और 265 किलोमीटर (165 मील) चौड़ा है। यह पश्चिम में एशिया के बड़े प्रान्त, उत्तर में गलातिया और पूर्व में लुकाउनिया से सटा हुआ है। इन पर्वतों में रहने वाले लोग आक्रामक और नियंत्रित करने में कठिन माने जाते थे।

सेल्यूसिड्स ने पहले कई वर्षों तक उन्हें नियंत्रण में रखा। बाद में, रोमी लोगों ने भी ऐसा ही किया। सेल्यूकस प्रथम निकेटर, जिन्होंने 312 से 280 ईसा पूर्व तक शासन किया, ने इन जनजातियों को नियंत्रित करने के लिए अन्ताकिया शहर की स्थापना की। गलातिया के एमिंटस ने भी सुरक्षा में सुधार के लिए लगभग 26 ईसा पूर्व में शहर को मजबूत किया। जब उनकी मृत्यु 25 ईसा पूर्व में हुई, तो पिसिदिया गलातिया प्रान्त का हिस्सा बन गया। सम्राट अगस्तुस ने क्षेत्र में शान्ति लाने के प्रयास को पूरा किया और अन्ताकिया के अलावा पांच शहरों की स्थापना की:

1. क्रिम्मा
2. कोमाना
3. ओल्बा
4. पारलेईस
5. लुस्त्रा

सैन्य सड़कें सभी शहरों को अन्ताकिया से जोड़ती थीं। 1912 में मिले एक शिलालेख से पता चलता है कि क्विरिनियुस अगस्तुस के समय इस इलाके का राज्यपाल था (देखें लूका 2:2)। अन्ताकिया पिसिदिया की राजधानी थी। यह शहर पश्चिम में इफिसुस और पूर्व में दिरबे और तरसुस के बीच मुख्य सड़क पर था। यह मुख्य रूप से एक रोमी उपनिवेश था (रोम द्वारा नियंत्रित एक बस्ती), जिसमें सेल्यूसिड्स द्वारा व्यापार के लिए लाया गया एक बड़ा यहूदी समुदाय था।

पौलुस और बरनबास ने पिसिदिया के माध्यम से कम से कम दो बार यात्रा की, जब वे पिरगा और दिरबे के बीच में थे (प्रेरि 13:14; 14:24)। पिसिदिया के अन्ताकिया में, मसीही मिशनरी कार्य के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण निर्णयों में से

एक लिया गया और घोषित किया गया। जब यहूदी श्रोताओं द्वारा अधिकांश ने उनके संदेश को अस्वीकार कर दिया, तो पौलुस और बरनबास ने गैर-यहूदी लोगों पर ध्यान केन्द्रित करना शुरू किया। उन्होंने कहा, "परन्तु जबकि तुम उसे दूर करते हो, और अपने को अनन्त जीवन के योग्य नहीं ठहराते, तो अब, हम अन्यजातियों की ओर फिरते हैं" (प्रेरि 13:46)। अब से, पौलुस और उनके मित्रों ने गैर-यहूदियों के बीच अपने संदेश को फैलाने पर ध्यान केन्द्रित किया। इसने मसीही मत को एक विश्वव्यापी मत बना दिया, न कि केवल एक अन्य यहूदी संप्रदाय।

पिसिदिया का अन्ताकिया

फ्रूगिया और पिसिदिया के जिलों के बीच एशिया के उपद्वीप में एक शहर हैं। प्रेरित पौलुस ने वहाँ सुसमाचार सुनाने के लिए यात्रा किया। पौलुस को अन्ताकिया की आराधनालय के सरदारों द्वारा नेवता दिया गया था। उन्होंने पौलुस को अपने सब्त या शनिवार की सभा में प्रोत्साहन का सन्देश देने के लिए कहला भेजा (प्रेरि 13:14–15)।

प्रेरितों के काम में दर्ज वृत्तान्त के अनुसार, कई लोगों ने और सुनने की विनती की (13:42)। कुछ यहूदी अगुओं को पौलुस से ईर्ष्या हो रही थी क्योंकि वह लोकप्रिय थे। उन्होंने उनके बारे में निन्दा की बातें कहना शुरू कर दिया (13:45)। तब पौलुस अन्यजाति श्रोताओं की ओर मुड़े (13:46–48)। कुछ यहूदी अधिकारियों ने उन्हें शहर छोड़ने के लिए मजबूर किया (13:50)। अन्ताकिया के वही यहूदी पौलुस पर हमला करते रहे जब वह लुस्त्रा की यात्रा कर रहे थे (प्रेरि 14:19)। पौलुस दूसरी बार अन्ताकिया से होकर पिरगा और अत्तलिया की ओर जाते हुए यात्रा की (14:21)।

अन्ताकिया शहर का निर्माण 300 ईसा पूर्व के आसपास सेल्युकस निकेटर द्वारा किया गया था। उन्होंने इस शहर का नाम अपने पुत्र एंटिओकस प्रथम के नाम पर रखा। 188 ईसा पूर्व में रोमी विजय के परिणामस्वरूप, इस क्षेत्र को सेल्यूसिड राजाओं के शासन से मुक्त घोषित कर दिया गया। रोमी लोगों ने तुरन्त इसे अपने शहरों जैसा बनाना शुरू कर दिया। लगभग 36 ईसा पूर्व में, एंटनी ने अन्ताकिया को गलातियों के राजा, अमीनतास के क्षेत्र का हिस्सा बना दिया। अमीनतास की मृत्यु के 11 साल बाद, इस शहर को उपनिवेश बस्ती का दर्जा दिया गया और यह कैसरिया एंटिओकेला बन गया। यह दक्षिणी गलातिया की राजधानी थी।

पिस्ता

फिलिस्तीन टेरिबिंथ या टर्पेंटाइन पेड़ (*पिस्टाशिया टेरिबिंथुस*) एक बड़ा पेड़ है जो मौसमी रूप से अपनी पत्तियाँ खो देता है। इसकी शाखाएँ विभिन्न दिशाओं में फैलती हैं। सर्दियों में, बिना पत्तियों के, यह एक बाँज वृक्ष के समान दिखता है। यह पेड़ 3.7 से 7.6 मीटर (12 से 25 फीट) ऊँचा होता है। पेड़ के हर हिस्से में एक मीठी सुगंध वाली, चिपचिपी रस होती है जिसे राल कहा जाता है।

तेरबिन्थ पेड़ सीरिया, लबानोन, फिलिस्तीन, और अरब की पहाड़ियों के निचले हिस्सों में आम है। यह आमतौर पर अकेला उगता है बजाय समूहों में और ज्यादातर उन जगहों पर पाया जाता है जो ओक पेड़ों के लिए बहुत गर्म या बहुत सूखे होते हैं। चूंकि तेरबिन्थ स्वाभाविक रूप से गिलाद में उगता है, इसलिए यह सम्भावना है कि इसका रालयुक्त रस उन मसालों का हिस्सा था जो इस्राएली गिलाद से मिस्र ले जाते थे (उत 37:25)।

उत्पत्ति 43:11 में उल्लेखित "पिस्ता" सम्भवतः पिस्ता पेड़ (*पिस्टाशिया वेरा*) से पिस्ता, एक सूखा मेवा हैं, जो टेरेबिंथ से निकटता से सम्बन्धित है। पिस्ता पेड़ 3 से 9.1 मीटर (10 से 30 फीट) की ऊँचाई तक बढ़ता है और इसकी शाखाएँ फैलती हैं। यह पेड़ लबानोन और इस्राएल के कई पथरीले क्षेत्रों और आसपास के क्षेत्रों में जंगली रूप से उगता है। पिस्ता मेवा का खोल हल्के रंग का होता है, और अन्दर का गूदा मीठा और नाजुक स्वाद वाला होता है, जिसे लोग पेड़ के उगने वाले स्थानों पर पसन्द करते हैं।

*देखें*भोजन और भोजन की तैयारी।

पिस्पा, पिस्पाह

आशेर के गोत्र से येतेर का पुत्र (1 इति 7:38)।

पिस्सू

छोटा, बिना पंखवाला कीड़ा जिसके पास कूदने के लिए मजबूत पैर होते हैं। पिस्सू का उल्लेख केवल 1 शमूएल 24:14 और 26:20 में किया गया है, जहाँ दाऊद स्वयं को पिस्सू के रूप में सन्दर्भित करते हैं। *देखें*पशु।

पीखोल, पीकोल

अबिमेलेक की सेना का सेनापति, जो अब्राहम और इसहाक के साथ उनके शासक की संधि वार्ताओं के संबंध में उल्लेखित हैं (उत 21:22, 32; 26:26)। सेना के सेनापति की उपस्थिति अब्राहम की कमजोरी को दर्शा सकती थी, परन्तु विरोधियों ने अब्राहम के परमेश्वर की श्रेष्ठ सामर्थ्य को स्वीकार किया और इस प्रकार उनके साथ शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की माँग की।

पीछे हटना

धर्म के प्रति प्रतिबद्धता खो देना, समर्पण में कमी होना या नैतिकता में कमी होना।

पीछे हटने के लिए मुख्य इब्रानी शब्द का अर्थ है "वापस मुड़ना" या "दूर हटना।" इस्राएली अक्सर परमेश्वर से दूर हो जाते थे और अपने पड़ोसियों की पापपूर्ण प्रथाओं और मूर्तियों का अनुसरण करने लगते थे। पुराने नियम में:

- इस्राएल को दुष्ट चीजों की लालसा करने वाला और परमेश्वर तथा उनके आदेशों को त्यागने वाला बताया गया है (एज्रा 9:10; यशा 1:4; यहेज 11:21)।
- उन्होंने मूर्तियों की उपासना की और विश्वासघात करके परमेश्वर के साथ अपनी वाचा तोड़ दी (भज 78:10; यिर्म 2:11; होशे 4:10)। वाचा परमेश्वर और उनके लोगों के बीच एक विशेष वादा या अनुबंध होती है।
- उन्होंने परमेश्वर के महान कार्यों को भुला दिया, उनकी सलाह को नज़रअंदाज़ किया और उनकी शिक्षाओं को अस्वीकार कर दिया (भज 78:11; 107:11; यशा 30:9)।
- वे हठी हो गए और सभी प्रकार के अनैतिक आचरणों में लिप्त हो गए (यिर्म 3:21)।
- जिन धार्मिक अगुवों को लोगों का मार्गदर्शन करना चाहिए था, वे उन्हें भटका रहे थे (यशा 9:16)।
- याजक विश्वासघाती थे (यिर्म 50:6)।

परमेश्वर अपने लोगों की आत्मिक विफलता से गहरे दु:खी थे और उन्होंने कहा, “अविश्वासी इस्राएल ने व्यभिचार किया है” (यहाँ व्यभिचार का उपयोग परमेश्वर के प्रति अविश्वास के रूपक के रूप में किया गया है; यिर्म 3:8)। होशे के माध्यम से, प्रभु ने इस तथ्य पर शोक व्यक्त किया कि “इस्राएल ने हठीली बछिया के समान हठ किया है” (होशे 4:16)। यिर्मयाह ने स्वीकार किया, “हम तेरा संग छोड़कर बहुत दूर भटक गए हैं, और हमने तेरे विरुद्ध पाप किया है” (यिर्म 14:7)।

पीड़ा

कोई भी बात जो दर्द या परेशानी का कारण बनती है, जैसे कोई आपदा।

बाइबिल के अनुसार, क्लेश तब शुरू हुआ जब पाप ने दुनिया में प्रवेश किया। मानवता और सारी सृष्टि "काँटे और ऊँटकटारे," पाप, मृत्यु, और क्षय से पीड़ित हो गई (तुलना करें उत 3:16–19; रोम 8:18–21)। पाप के कारण, क्लेश एक सामान्य मानव अनुभव बन गया है, और हमारा छोटा सा जीवन परेशानियों से भरा होते हैं (अय्यू 14:1–6)। लोग प्राकृतिक आपदाओं, शारीरिक चोटों, और दूसरों के साथ संघर्षों से बच नहीं सकते (2 इति 20:9)। फिर भी, परमेश्वर अपने लोगों को सिखाने और अनुशासित करने के लिए क्लेश का उपयोग करते हैं। यह क्लेश इस्राएलियों द्वारा सामना किए गए उत्पीड़न से दिखाया गया है:

- मिस्र (निर्ग 4:31)
- न्यायियों के समय में उनके संघर्ष (नहे 9:26–27)
- उनका बाबेल की बँधुवाई (यशा 26:16)

अपने संकट में, इस्राएलियों ने परमेश्वर को पुकारा। उन्होंने इस्राएलियों को छुड़ाया और उन्हें आज्ञा मानने के लिए मार्गदर्शन किया (यिर्म 10:18; होश 5:15–6:3)।

बाइबिल यह जानती है कि इसे समझना कठिन है। यह दिखान कठिन है कि धर्मी लोग इतनी पीड़ा क्यों सहते हैं (भज 34:19; 37:39; 138:7)। यहाँ तक कि भविष्यद्वक्ता और "प्रभु के दास" (मसीह) को भी नहीं बख्शा गया (यशा 53:2–12; यिर्म 15:15)। यीशु मसीह ने मानवता के दुखों और पीड़ाओं को उठाया। उन्होंने उस पीड़ा की भविष्यद्ववाणी को पूरा किया जो आदम के पाप से शुरू हुई थी (यशा 53:4–5; 1 पत 2:24)।

यीशु ने चेतावनी दी थी कि उनके अनुयायी कई परीक्षाओं और क्लेशों का सामना करेंगे (यूह 16:33)। पौलुस ने सिखाया कि परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए कई पीड़ाओं का सामना करना पड़ता है (प्रेरि 14:22)। लेकिन इनसे किसी मसीही का विश्वास कमज़ोर नहीं होना चाहिए (1 थिस्स 3:3)। इन्हें मसीह के अपने शरीर, कलीसिया के लिए होने वाले कष्टों में जो कमी है उसे पूरा करने के रूप में देखा जाना चाहिए (2 कुरि 4:10–11; कुल 1:24)। बाइबिल यह भी सुझाव देती है कि जब "अन्त" निकट आएगा, तो पीड़ा और अधिक तीव्र हो जाएंगे (मत्ती 24:9–14; 2 तीमु 3:13)। शैतान की शक्तियाँ "चुने हुओं" को धोखा देने और नष्ट करने के लिए हमला करेंगी (मत्ती 24:24; 2 थिस्स 2:9–12; प्रका 20:7–9)। जब यीशु मसीह स्वर्ग से धधकती आग में प्रकट होंगे, तो परमेश्वर उन लोगों को पीड़ा देंगे जिन्होंने विश्वासियों को नुकसान पहुँचाया है। वह उन लोगों से बदला लेंगे जिन्होंने यीशु मसीह के सुसमाचार का पालन नहीं किया है (रोम 2:9; 2 थिस्स 1:5–10; 2:7–8)

यह भी देखें उत्पीड़न; महाक्लेश।

पीड़ित सेवक

*देखिए*प्रभु का सेवक।

पीतल

तांबे और जस्ता से बनी एक पीले रंग की धातु, जिसका उपयोग अक्सर बाइबिल के समय में उपकरण, हथियार और सजावटी सामान बनाने के लिए किया जाता था।

*देखें*खनिज और धातुएं।

पीतल

तांबे और टिन का टिकाऊ मिश्र धातु, जिसका उपयोग प्राचीन काल में आभूषणों, हथियारों, सिक्कों और अन्य प्रयोजनों के लिए व्यापक रूप से किया जाता था। *देखें*खनिज और धातुएं।

पीतल का सर्प, पीतल ...

पीतल का सर्प, पीतल का साँप

वह मूर्ति का टुकड़ा जिसे परमेश्वर ने मूसा को बनाने का आदेश दिया जब इस्राएली "तेज विषवाले साँप" द्वारा काटे जा रहे थे (गिन 21:4–9)। सर्पों को न्याय के रूप में भेजा गया था क्योंकि लोग परमेश्वर और मूसा के खिलाफ कुड़कुड़ा रहे थे। जब लोगों ने पश्चाताप किया, परमेश्वर ने प्रतिरूप बनाने का आदेश दिया; जो लोग इसे देखते थे, वे चंगे हो जाते थे।

कुछ लोग इस दृश्य के धर्मशास्त्रीय अर्थ को उस घटना से जोड़ते हैं जिसमें मूसा की लाठी सर्प बन गई, फ़िरौन के जादूगरों की लाठियों को (जो सर्प बन गई थीं) निगल गई और फिर से लाठी बन गई (निर्ग 7:8–12; पुष्टि करें 4:2–5, 28–30)। साँप मिस्री और कनानी धर्मों में देवता के रूप में पूजा जाता था। इसलिए, परमेश्वर के सर्प की विजय प्रभु की अन्यजाति देवताओं पर श्रेष्ठता का प्रतीक थी। हालाँकि, गिनती 21 में, ऐसी समझ गौण होनी चाहिए थी। वह घटना जंगल में कई "धर्मत्यागों" घटनाओं में से अंतिम थी (पुष्टि करें 1 कुरि 10:9), जिनमें से सभी में चार तत्व शामिल थे: परमेश्वर के खिलाफ शिकायतें, न्याय, पश्चाताप और क्षमा या उद्धार। मुख्य धर्मशास्त्रीय विषय यहोवा की श्रेष्ठता नहीं बल्कि उनका उद्धार का प्रावधान है। जोर किसी चमत्कारी उपचार सूत्र पर नहीं था, बल्कि सर्प पर ध्यान केंद्रित करने वालों को प्रदान किए गए उद्धार के प्रतीक के रूप में था।

पीतल का साँप फिर से 2 राजाओं 18:4 में दिखाई देता है। मध्यवर्ती सदियों में यह मूर्तिपूजक वस्तु बन गया था और दक्षिणी राज्य यहूदा के राजा हिजकिय्याह (716–686 ईसा पूर्व) ने अपने सुधार आंदोलन में इसे समाप्त कर दिया। पूर्व-मसीही साहित्य में इसका अंतिम संदर्भ अप्रमाणिक पुस्तक सुलैमान की बुद्धि में है, जो उपरोक्त व्याख्या का समर्थन करता है: उद्धार सर्प के माध्यम से नहीं बल्कि परमेश्वर की व्यवस्था के माध्यम से आया। “जो उसकी ओर फिरा वह चंगा हुआ, न कि वह जो उसने देखा, बल्कि परमेश्वर के द्वारा, जो सबके उद्धारकर्ता हैं” (सुलै 16:7)।

इस पृष्ठभूमि के खिलाफ, मसीह ने कहा कि जैसे मूसा के साँप को उठाया गया था, वैसे ही मनुष्य के पुत्र को भी उठाया जाना चाहिए (यूह 3:14)। "मनुष्य के पुत्र" का "ऊपर उठाया जाना" मसीह की मृत्यु का निश्चित संदर्भ है और इसके दो केंद्र बिंदु हैं। एक "मृत्यु द्वारा उद्धार" का विषय है, जो मूसा के साँप की छवि में देखा जाता है और दिव्य आदेश "होना ही चाहिए" (यूहन्ना में परमेश्वर की निर्धारित उद्धार योजना की आवश्यकता का संदर्भ है) में देखा गया। दूसरा "मृत्यु द्वारा महिमा" का विषय है, जो क्रिया में स्वयं (जिसमें महिमा का विचार शामिल है) और यूहन्ना द्वारा यीशु की पृथ्वी पर सेवकाई की महिमा और उनके पुनरुत्थान की स्थिति पर जोर देने में देखा गया।

पीतल का साँप

मूसा ने परमेश्वर के आदेश पर मरुभूमि में साँपों द्वारा काटे गए इस्राएलियों को ठीक करने के लिए एक पीतल का साँप बनाया था।

*देखें*पीतल का सर्प, पीतल का सांप।

पीतल का साँप

पीतल का साँप

*देखें*पीतल का साँप, पीतल का सर्प।

पीतोन

बिन्यामीनी, मीका का पुत्र और योनातान का वंशज (1 इति 8:35; 9:41)।

पीनहास

1. एलीआजर के पुत्र, हारून के पोते (निर्ग 6:25) और अबीशू के पिता (1 इति 6:4, 50)। एलीआजर के महायाजक के पद के दौरान, पीनहास ने तम्बू के द्वारपालों की देखरेख की (9:20) जैसे उनके पिता एलीआजर ने की थी, जब हारून

महायाजक के रूप में सेवा कर रहे थे (पुष्टि करें गिन 3:32)। शित्तीम में बालपोर के देवता के साथ इस्राएल के पाप से दु:खी होकर पीनहास ने एक इस्राएली पुरुष और एक मिद्यानी स्त्री को उनके अनैतिक व्यवहार के कारण मार डाला (25:7)। इस कार्य के बाद, प्रभु ने इस्राएल के प्रति अपना क्रोध दूर कर लिया और पीनहास के साथ शांति की वाचा की, जो उसके और उसके वंशजों के लिए एक स्थायी याजक का पद था (पद 11–13); उसका कार्य पीढ़ी दर पीढ़ी उसके लिए धार्मिकता के रूप में गिना गया (भज 106:30)। उस संक्षिप्त अवधि को छोड़कर जब एली ने महायाजक के रूप में कार्य किया (पुष्टि करें 1 शमू 1–3; 14:3), पीनहास और उनके वंशज महायाजकीय पद पर सेवा करते रहे जब तक कि 70 ई. में रोमियों द्वारा यरूशलेम मन्दिर का विनाश नहीं हुआ।

बालपोर की घटना के बाद, पीनहास ने इस्राएल के साथ मिलकर मिद्यानियों को युद्ध में पराजित किया (गिन 31:6)। जब इस्राएल ने कनान की भूमि पर अधिकार कर लिया, तो पीनहास को एप्रैम के पहाड़ी देश में गिबा नगर विरासत में दिया गया (यहो 24:33)। उन्हें इस्राएली अगुवों के एक छोटे प्रतिनिधिमंडल के साथ भेजा गया ताकि यरदन के पश्चिमी तट पर इस्राएल के पूर्व में रहने वाले गोत्रों द्वारा एक वेदी के निर्माण के बारे में प्रश्न पूछ सकें (यहो 22:13, 30–32)। बाद में, बेतेल में, पीनहास ने इस्राएल को बिन्यामीन के गोत्र पर युद्ध में विजय का आश्वासन दिया (न्या 20:28)। उनके वंशज एज्रा शास्त्री (एज्रा 7:5) और गेर्शोम (8:2) अपने परिवारों के साथ बँधुआई के बाद यरूशलेम लौटे।

2. एली के दो पुत्रों में से एक, जो शीलो में याजक के रूप में सेवा करते थे (1 शमू 1:3)। 1 शमूएल के अनुसार, पीनहास एक घृणित याजक थे, जो अपने भाई होप्नी के साथ मिलकर अर्पित भेंटो का तिरस्कार करते थे (2:12–17) और जिन्होंने पवित्रस्थान को अपवित्र किया (पद 22) और एली का तिरस्कार किया (पद 25)। उसकी मृत्यु की भविष्यवाणी उसके पिता को परमेश्वर के एक पुरुष द्वारा की गई थी (पद 34)। पलिश्तियों के साथ एक युद्ध में, पीनहास की मृत्यु उसी दिन हुई जब उसकी पत्नी ने एक पुत्र को जन्म दिया, जिसका नाम ईकाबोद रखा गया (4:11, 17–19; 14:3)।

3. एलीआजर के पिता। एलीआजर ने मरेमोत और लेवीय, योजाबाद और नोअद्याह की मदद की, ताकि वे मन्दिर के बहुमूल्य बर्तनों और धातुओं की सूची बना सकें, जो बंधुआई के बाद के युग के दौरान था (एज्रा 8:33)।

पीनोन

एसाव से उत्पन्न एक "प्रमुख" (एनएलटी में "नेता") (उत 36:41; 1 इति 1:52)।

पीला

एक रंग जो सुनहरा, सूरज या पके हुए नींबू जैसा दिखाई देता है। बाइबल में त्वचा रोगों के कानूनों में, याजक पीले (या सुनहरे) बालों को संक्रमण का *चिह्न* मानते थे (लैव्य 13:30, 32, 36)।

यह भी देखें रंग।

पीलातुस, पुन्तियुस

तिबिरियुस द्वारा यहूदिया का पाँचवाँ गवर्नर नियुक्त किया गया, पिलातुस ने 26–36 ईस्वी तक इस पद पर कार्यरत रहा। वह सुसमाचारों की मुकदमे की कथाओं में प्रमुखता से प्रकट होता है, जहाँ वह रोमी राज्यपाल था जिसने यीशु को क्रूस पर चढ़ाने की अनुमति दी थी। इसके अलावा, वह बाइबल के अतिरिक्त विभिन्न स्रोतों में एक निष्पक्ष प्रशासक के रूप में प्रकट होता है, जिसने यहूदिया में लगातार रोमी अधिकार का पालन करवाया।

टैसिटस (इतिहास 15.44) पिलातुस का उल्लेख यीशु की क्रूस पर चढ़ाए जाने के संदर्भ में करता है, लेकिन सुसमाचार की कथा में अधिक कुछ नहीं जोड़ता। दूसरी ओर, यूसुफ़स तीन कथाएँ प्रस्तुत करता है। सबसे पहले, वह पिलातुस के आगमन को नए गवर्नर के रूप में वर्णित करता है (*युद्ध* 2.9.2; पुरावशेष 18.3.1; पुष्टि करें यूसिबियस का *इतिहास* 2.6)। यहूदी व्यवस्था का उल्लंघन करते हुए, पिलातुस ने कैसर की छवि वाले ध्वज को लेकर यरूशलेम में आया। इसके बाद यहूदियों का एक बड़ा समूह विरोध में कैसरिया आया और वहाँ पाँच दिनों तक उपवास किया। पिलातुस ने उन्हें तितर-बितर करने के लिए सैनिकों को बुलाया, लेकिन जल्द ही उसने यहूदियों की कठोरता का पहला सबक सीखा। यहूदी उस ध्वज को सहन करने की बजाय मरने को तैयार थे। इसके तुरन्त बाद पिलातुस ने नरमी दिखाई।

दूसरी घटना तब हुई जब पिलातुस ने यरूशलेम के लिए 35 मील (56.3 किलोमीटर) लंबा नहर बनाने के लिए मंदिर के धन का उपयोग किया (*युद्ध* 2.9.4; *पुरावशेष* 18.3.2)। फिर से, एक बड़ा विरोध हुआ। पिलातुस ने अपने सैनिकों को अंगरखे पहनने और भेष बदलकर भीड़ में घुसने का आदेश दिया। उसके आदेश पर, सैनिकों ने विरोधियों को पीटने के लिए डंडों का इस्तेमाल किया। कई यहूदी मारे गए। यूसुफ़स ने उस घटना के प्रति यरूशलेम की भयावह प्रतिक्रिया का वर्णन किया है।

अंत में, यूसुफ़स ने पिलातुस की बर्खास्तगी की कहानी दर्ज की (*पुरावशेष* 18.4.1–2)। 36 ईस्वी में एक सामरी झूठे भविष्यद्वक्ता (जो *तहेब,* या सामरी मसीह होने का दिखावा करते हुए) तब अपने अनुयायियों से वादा किया कि वह उन्हें गिरिज्जीम पहाड़ पर मूसा द्वारा छिपाए गए पवित्र बर्तन

दिखाएगा। पिलातुस ने भारी हथियारों से लैस पैदल सेना और घुड़सवारों की एक टुकड़ी भेजी, जिन्होंने तीर्थयात्रियों को रोक लिया और उनमें से अधिकांश को मार डाला। सामरियों ने इस घटना की शिकायत सिरिया के गवर्नर वितेलियुस से की, जिसके बाद पिलातुस को कैसर तिबिरियुस के सामने पेश होने का आदेश दिया गया। पिलातुस के स्थान पर रोम से एक और गवर्नर, मार्सेलस को भेजा गया।

फिलो एक और घटना का भी उल्लेख करता है (कायस को पत्र 299–305)। यहूदी धर्म के प्रति तिबिरियुस की उदार नीतियों की प्रशंसा करते हुए, वह पुन्तियुस पिलातुस का एक नकारात्मक उदाहरण देता है। गवर्नर ने यरूशलेम में हेरोदेस के पूर्व महल में सम्राट का नाम अंकित सोने के परत वाले ढाल लगाए थे। जब यहूदी विरोध करने आए, तो पिलातुस ने उनकी शिकायतें सुनने से इनकार कर दिया। तब हेरोदेस के बेटों ने तिबिरियुस से अपील की, जिसने पिलातुस को आदेश दिया कि वह इन ढालों को कैसरिया में औगुस्तुस के मंदिर में स्थानांतरित करे। योसेफुस की समानांतर कहानी के साथ समानताओं ने कई विद्वानों को यह विश्वास दिलाया है कि फिलो बस उसी घटना का एक और संस्करण बता रहे हैं।

लूका एक छोटी सी घटना का उल्लेख करते हैं जो इसी चित्रण में योगदान देती है। लूका 13:1 में कुछ यहूदी यीशु को गलीलियों के बारे में बताते हैं जिनका खून पीलातुस ने उनके बलिदानों के साथ मिला दिया था। हालाँकि इस कहानी की पुष्टि किसी अन्य गवाह द्वारा नहीं की गई है, यह फिलो और योसेफुस द्वारा दिए गए पिलातुस के चरित्र की छवि से मेल खाती है। वास्तव में, लूका अपने परीक्षण कथा में एक और दिलचस्प विवरण जोड़ते है। लूका 23:12 में वह कहते हैं कि यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले, हेरोदेस अन्तिपास (गलील में) और पीलातुस एक-दूसरे के शत्रु थे। यह केवल पिलातुस की सामान्य विरोधी भावना से नहीं, बल्कि विशेष रूप से गलीली घटना से उत्पन्न हो सकता है।

यीशु की मृत्यु में पिलातुस की भूमिका प्रत्येक सुसमाचार में दर्ज है (मत्ती 27:2; मर 15:1; लूका 23:1; यूह 18:29) और इसे प्रेरितों के प्रचार में एक ऐतिहासिक तथ्य के रूप में याद किया गया था (प्रेरि 3:13; 4:27; 13:28; 1 तीमु 6:13)। यीशु की सजा और मृत्यु को सुनिश्चित करने के लिए, कैफा और महासभा ने अपने आरोप पिलातुस के सामने प्रस्तुत किए। हालांकि आरोपों ने राज्यपाल की रुचि को आकर्षित करने के लिए एक राजनीतिक रंग ले लिया, फिर भी वह निंदा के लिए कोई आधार नहीं पा सके। अंत में, पिलातुस अप्रत्याशित रूप से यहूदी अधिपतियों को मना लेते हैं और यीशु को क्रूस पर चढ़ा देते हैं।

सभी सुसमाचार और विशेष रूप से यूहन्ना पिलातुस द्वारा यीशु की बेगुनाही के बारे में बार-बार दिए गए फैसले को दर्शाते हैं। मत्ती 27:19 के अनुसार, पीलातुस की पत्नी ने यीशु की सजा के बारे में एक अशुभ सपना देखा, और उसने अपने पति को चेतावनी दी। पीलातुस ने यीशु को रिहा करने की कोशिश की, लेकिन भीड़ बरअब्बा के लिए चिल्लायी। मत्ती ने यहाँ तक लिखा है कि पिलातुस ने अपने हाथ धोए (27:24–25), और इस मामले में अपनी निर्दोषता की घोषणा की। और अंत में, यूहन्ना कहते हैं कि पिलातुस ने क्रूस के ऊपर लिखे शीर्षक को बदलने से इनकार कर दिया (यूह 19:19–22)। इसलिए, ये विवरण यीशु की मृत्यु के लिए पूरी जिम्मेदारी पिलातुस से हटाकर यहूदी अधिपतियों की महासभा पर डालते हैं। वे ही अंततः जिम्मेदार हैं।

लेकिन पिलातुस ने महासभा की ओर से काम क्यों किया? इसके दो जवाब हो सकते हैं। पहला, कैफा और पिलातुस के बीच मिलीभगत हो सकती है जो लम्बे समय से चले आ रहे रिश्ते और एक ही समय पर शासन करने की वजह से हुई हो। कैफा के अठारह वर्षों में से दस वर्ष पिलातुस के अधीन थे, और जब 36 ई. में पिलातुस को बर्खास्त कर दिया गया, तो कैफा को भी उसी समय हटा दिया गया। दूसरा, यदि यीशु का मुकदमा 33 ई. में हुआ था, तो पिलातुस अपनी बर्खास्तगी को लेकर चिंतित हो सकते थे। उन्हें मूल रूप से सेजानुस द्वारा नियुक्त किया गया था (जो रोम में अंगरक्षक-दल के गवर्नर थे और तिबिरियुस के अधीन उपनिवेशीय पदों पर लोगों की नियुक्ति करते थे), लेकिन 31 ई. के शरद ऋतु में सेजानुस की मृत्यु हो गई थी। इसलिए, यूह 19:12 में दर्ज आरोप ("यदि तू इसको छोड़ देगा तो तू कैसर का मित्र नहीं") का पिलातुस पर वास्तविक प्रभाव होता। पिलातुस को अपनी परेशानी का अहसास था और वह यहूदियों को शांत करने और सम्राट को खुश करने के लिए उत्सुक था।

पिलातुस के 36 ई. में बर्खास्त होने के बाद का इतिहास अज्ञात है। यूसेबियस की रिपोर्ट है कि पीलातुस ने अंततः सम्राट कैलीगुला के शासनकाल के दौरान 37–41 ई. (इतिहास 2.7) में आत्महत्या कर ली।

पीवेसेत

पीवेसेत

नगर का उल्लेख यहेजकेल की मिस्र के पतन की भविष्यवाणी में नो, नोप, और ओन के साथ किया गया है (यहेज 30:17)। मिस्री भाषा में इस नाम का अनुवाद "देवी बास्टेट का घर" किया गया है। बास्टेट को पहले एक महिला के रूप में सिंहनी के सिर के साथ दर्शाया गया था, और बाद की अवधि में बिल्ली के सिर के साथ। यूनानी में उन्हें बूबास्टिस या बुबास्टिस के नाम से जाना जाता था। बूबास्टिस के नगर का हेरोडोटस द्वारा विस्तृत वर्णन किया गया था। यह पुराने तानाइट डाली के दाहिने किनारे पर स्थित था, जिसे बूबास्टिस की डाली के रूप में भी जाना जाता है। बूबास्टिस वर्तमान में टेल बस्ता है। 1866–67 में पुरातात्विक उत्खनन ने यह प्रमाण उजागर किया कि यह एक बहुत पुराना नगर है, जो पुराने राज्य से

सम्बन्धित है। शीशक प्रथम, 22वीं (लिबियन) वंश के संस्थापक, के समय तक पीवेसेत राजधानी नहीं बना। इसलिए, इस वंश को बूबास्टिस के वंश के रूप में भी जाना जाता है। 23वीं वंश ने बूबास्टिस को राजधानी बनाए रखा। इसने लगभग दो शताब्दियों तक राजधानी के रूप में कार्य किया (लगभग 950–750 ईसा पूर्व)। नगर को लगभग 350 ईसा पूर्व फारसी सेनाओं द्वारा नष्ट कर दिया गया था।

पीशोन

अदन की वाटिका से निकलनेवाली नदी की चार धाराओं में से पहली धारा (उत 2:11)। इसके पहचान के सुझावों में रियोन, सिंधु, गंगा, हिद्देकेल और फरात को जोड़नेवाली एक नहर, और आकाशगंगा (मिल्की वे) का प्रतीक शामिल हैं। पिशोन की पहचान पर कोई सर्वसम्मति नहीं है।

पीशोन

उत्पत्ति 2:11 में पीशोन नदी के लिए KJV अनुवाद । *देखें* पीशोन।

पीहहीरोत

इस्राएलियों के मिस्र से प्रतिज्ञा के देश की यात्रा के दौरान डेरे का स्थान (निर्ग 14:2)। यहीं पर पीछा करके मिस्री उन्हें पकड़ लेते हैं (पद 9), जिससे लाल समुद्र पर मुक्ति मिलती है। इस्राएल कभी नहीं भूले कि प्रभु ने उन्हें कैसे छुड़ाया था। पीहहीरोत का सटीक स्थान अनिश्चित है, जैसे बाल-सपोन और मिग्दोल, जिनका भी उसी क्षेत्र में होने का उल्लेख है। मिस्र से प्रस्थान करने के बाद, इस्राएली पहले गोशेन के सुक्कोत में और फिर एताम में डेरा डालते हैं (गिन 33:6)। पीहहीरोत के बाद, वे तीन दिन की यात्रा करके मारा और एलीम पहुंचे, जो संभवतः स्वेज की खाड़ी के पूर्वी तट पर सीनै के मार्ग में स्थित थे। ऐसा लगता है कि पीहहीरोत मिस्र की उत्तर-पूर्व सीमा पर था, संभवतः कड़वी झीलों के पश्चिमी तट पर। इस्राएलियों ने पलिश्तियों के मार्ग की अपेक्षित दिशा से यात्रा नहीं की, बल्कि मरूभूमि के मार्ग से दक्षिण-पूर्व की ओर गए (पुष्टि करें गिनती 13:17–18), अंततः पुराने मिस्री मार्ग से जुड़ते हुए जो सीनै के तांबे और मरकत की खानों की ओर जाता था।

यह भी देखें जंगल में भटकना I

पुआ

पुआ

गिनती 26:23 में इस्साकार के पुत्र पुव्वा का केजेवी रूप। *देखें* पुव्वा।

पुतियुली

पुतियुली

यह नेपल्स की खाड़ी पर स्थित इतालियानी का एक बन्दरगाह शहर है। यह समुद्री यात्रियों और रोम जाने वाले माल के लिए एक सामान्य ठहराव स्थान था। पौलुस, रेगियुम में उतरने के बाद, रोम ले जाए जाने से पहले सात दिनों तक पुतियुली में मसीही विश्वासियों के साथ रहे (प्रेरि 28:13)। आधुनिक शहर को पॉज़ुओली कहा जाता है।

पुत्र

देखें परिवारिक जीवन और संबंध; वंशावली; परमेश्वर के पुत्र।

पुत्री

देखें परिवारिक जीवन और सम्बन्ध।

पुनरुत्थान

मृतकों में से जी उठाए जाने का कार्य, बाइबल में तीन अलग-अलग संदर्भों में उपयोग किया गया है: (1) यह मृतकों को अद्भुत रूप से पृथ्वी पर जीवन में वापस लाने को संदर्भित करता है, जैसे जब एलिय्याह ने लड़के को जी उठाया (1 रा 17:8–24), एलीशा ने शूनेमिन की स्त्री के पुत्र को जी उठाया (2 रा 4:18–37), यीशु ने याईर की बेटी (मर 5:35–43) और लाजर (यूह 11:17–44) को जी उठाया, पतरस ने दोरकास को जी उठाया (प्रेरि 9:36–42), और पौलुस ने यूतुखुस को जी उठाया (20:9–12)। ऐसा कोई संकेत नहीं है कि ये पुनर्जीवन भविष्य में होने वाली मृत्यु को रोकेगा । (2) यह सबसे अधिक बार यीशु मसीह के पुनरुत्थान को संदर्भित करता है। (3) यह दंड या प्रतिफल के लिए समय के अंत में मानव जाति के युगांतिक पुनरुत्थान को भी संदर्भित करता है (यूह 5:29; पुष्टी करें प्रका 20:5–6)।

पूर्वावलोकन

- पुराने नियम और यहूदी विश्वास में पुनरुत्थान

- यीशु मसीह का पुनरुत्थान
- पुनरुत्थान के विवरण
- मसीह के पुनरुत्थान का महत्व
- सामान्य रूप से पुनरुत्थान
- पुनरुत्थान और ज्ञानवाद

पुराने नियम और यहूदी विश्वास में पुनरुत्थान

इस्राएल में अनंत जीवन के लिए पुनरुत्थान की अवधारणा धीरे-धीरे विकसित हुई। जीवन और मृत्यु इस दुनिया में भौतिक अस्तित्व तक सीमित थे। मृत्यु का मतलब इस दुनिया को छोड़कर एक छायादार अस्तित्व में प्रवेश करना था जिसे अधोलोक के नाम से जाना जाता है, रपाई, या मरे हुओं का स्थान (यश 14:9), निराशा का स्थान (2 शम 12:23; अय्यू 7:9–10) । अधोलोक की त्रासदी यह थी कि एक व्यक्ति को परमेश्वर के साथ संगति से अलग कर दिया गया था। उस चरण में इस्राएल के विचार से, पुनरुत्थान की बहुत कम आशा थी (भजन 6:4–5; 88:10–12)।

लेकिन व्यक्तिगत भविष्य के बारे में निराशा के बीच, इस्राएल ने परमेश्वर के प्रति विश्वास की भावना विकसित की। भविष्य स्पष्ट न होने के बावजूद, अय्यूब ने असहाय होकर रोते हुए कहा, "यदि मनुष्य मर जाए तो क्या वह फिर जीवित होगा?" (अय्य 14:14) । जैसे अय्यूब ने असंभव प्रतीत होने वाली चीज़ की तलाश की, तो अय्य 19:25–26 में कठिन गद्यांश जीवित छुड़ानेवाले (गो'एल) द्वारा पुनरुत्थान की वास्तविकता का सुझाव देते है।

जबकि कुछ लोग तर्क देंगे कि होशे 6:1–3 पुनरुत्थान का सुझाव देता है, यह अधिक संभावना है कि इस्राएल ने इसे परमेश्वर की निरंतर देखभाल का वादा माना, भले ही उन्होंने अपने शत्रुओं के हाथों हार का सामना किया हो। यह आकलन करना कठिन है कि पौलुस ने होशे के तीसरे दिन के कथन में यीशु का संदर्भ देखा था या नहीं (1 कुरिन्थियों 15:4)। यह गद्यांश, साथ ही यहेजकेल (अध्याय 37) की सूखी हड्डियों जैसे वचन के साथ, मुख्य रूप से हार के बावजूद इस्राएल को आशा देने पर केंद्रित हैं लेकिन हो सकता है कि वे इस्राएल में विकसित हो रही इस भावना का हिस्सा बन गए हों कि मृत्यु के बाद कुछ और होना चाहिए।

हालाँकि, दानिय्येल 12:2 में मृतकों के पुनरुत्थान का निश्चित संदर्भ है। वास्तव में, वचन ने यहूदियों के दोहरे पुनरुत्थान की घोषणा की: कुछ को अनन्त जीवन का और कुछ को अनन्त तिरस्कार का। लेकिन इस वचन द्वारा सुझाए गए सभी लोगों का कोई सामान्य पुनरुत्थान नहीं था।

अंतर-नियम काल में, विचार ठोस होने लगे। धर्मशास्त्रीय रूप से रूढ़िवादी सदूकियों का पुनरुत्थान और उसके बाद के जीवन के नए विचारों से कोई लेना-देना नहीं था। वे लगातार यह तर्क देते रहे कि मूसा के लेखन में पुनरुत्थान का कोई उल्लेख नहीं था, कि जीवन इस सांसारिक क्षेत्र से संबंधित था, और भविष्य की आशा का अनुभव अपने बच्चों के माध्यम से किया जाता था (एक्लस 46:12)। अधोलोक, जो एक मृतकों का स्थान है, परमेश्वर के साथ संबंध से रहित था और यह एक अभागे अस्तित्व का स्थान था। पुनरुत्थान के बारे में सदूकियों का मत आम तौर पर मसीह लोगों को अच्छी तरह से पता है क्योंकि यीशु और सदूकियों के बीच मुठभेड़ हुई थी जब उन्होंने सात भाइयों की पत्नी के बारे में उन्हें फंसाने की कोशिश की थी। यीशु ने पुनरुत्थान, परमेश्वर और पवित्रशास्त्र के बारे में उनके दृष्टिकोण को रद्द कर दिया (मरकुस 12:18–27) ।

फरीसियों, एस्सेन्स और कुमरान के लोग पुनरुत्थान में विश्वास करते थे। पुनरुत्थान के दोहरे पहलू का सुझाव 2 एज्रास 7 और बारूक के प्रकाशन 50–51 के प्रसिद्ध युगांतशास्त्रीय गद्यांशों द्वारा दिया गया था। दोनों ग्रंथ पहली शताब्दी ईस्वी के बाद के हो सकते हैं। 1 एनोख की समानताओं में, धर्मी यहूदी आमतौर पर पुनरुत्थान की उम्मीद कर सकते थे, लेकिन दुष्ट नहीं (1 हनोक 1:46, 51, 62)। लेकिन हनोक में कहीं और यह संकेत है कि कुछ दुष्टों को न्याय के लिए जी उठाया जा सकता है (वचन 22, 67, 90) । इन गद्यांश में धर्मी लोगों के पुनरुत्थान को आम तौर पर आत्मिक प्रकार के देह से जोड़ा जाता है, फिर भी 2 मक्काबियों 7:14 से आगे में, यह दृष्टिकोण कम विकसित और अधिक भौतिक लगता है। कुमरान के तपस्वी प्रभु के महान दिन में पुनरुत्थान की उम्मीद कर रहे थे।

जबकि यहूदी विश्वास में पुनरुत्थान और ऐसा मानने के एक युगान्तकारी दिन की भावना बढ़ रही थी, मसीह के पुनरुत्थान का कहीं कोई संकेत नहीं था। ऐसा विचार यीशु की ऐतिहासिक वास्तविकता की प्रतीक्षा कर रहा था।

यीशु मसीह का पुनरुत्थान

मसीह का पुनरुत्थान मसीही लोगों का केंद्रीय बिंदु है। पौलुस के लिए पुनरुत्थान इतना महत्वपूर्ण था कि उन्होंने इसके वैधता पर उपदेश और विश्वास दोनों को जोड़ दिया। उन्होंने माना कि पुनरुत्थान के बिना मसीहत खाली और अर्थहीन होगी (1 कुरि 15:12–19) । वास्तव में, उनके लिए पुनरुत्थान यीशु में परमेश्वर की सामर्थ का अनावरण था (रोम 1:4) ।

मसीह का पुनरुत्थान नए नियम के अन्य वचनों के पीछे की पूर्वधारणा भी है। जीवित आशा के लिए नया जन्म पुनरुत्थान पर आधारित है (1 पत 1:3)। यह परमेश्वर के साथ गवाही और संगति का आधार है, क्योंकि जीवित प्रभु को देखा और छुआ गया है (1 यूह 1:1–4)। यह सेवकाई और प्रेरिताई के लिए आधारभूत सिद्धांत है (प्रेरि 1:21–25)। इसी प्रकार सुसमाचार शायद ही अच्छी खबर होते अगर वे मसीह के पुनरुत्थान के साथ समाप्त नहीं होते। मसीह का पुनरुत्थान

सभी विश्वासियों के लिए आदर्श है, जो मसीह के लौटने पर पुनरुत्थान का अनुभव करेंगे।

पुनरुत्थान के विवरण

जबकि यीशु मसीह का पुनरुत्थान मसीहत का मूल सार है, यह काफी वाद-विवाद का विषय रहा है। विद्वानों ने अक्सर उन विवरणों में मौजूद विविधताओं पर ध्यान दिया है। कब्र पर कितनी स्त्रियाँ थीं और कौन थीं? क्या वहां एक (मत्ती; मर) या दो (लूका; यूह) स्वर्गदूत थे? क्या स्त्रियाँ देह का अभिषेक करने आई थीं (मर; लूका) या कब्र देखने (मत्ती)? क्या स्त्रियों ने डर के कारण किसी से कुछ नहीं कहा (मर), या उन्होंने चेलों को बताया (मत्ती)? प्रकट होने का क्रम क्या था, और क्या वे यरूशलेम (लूका; यूह 20) में प्रकट हुए या गलील (मत्ती; यूह 21) में या दोनों जगहों पर? क्या प्रकट होने में सामंजस्य हो सकता है? यीशु की देह किस प्रकार की थी? ये और कई अन्य प्रश्न समकालीन विद्वानों की वाद-विवाद के लिए बहुत मायने रखते हैं।

इनमें से कई प्रश्न हाल के विद्वानों द्वारा पहली बार नहीं खोजे गए थे। दूसरी शताब्दी में टैटियन ने अपने *डायटेस्सारॉन* (सद्भाव) की रचना करके प्रश्नों को हटाने का प्रयास किया, इस आशा में कि मसीही लोग उनके कार्य को सुसमाचारों के लिए एक प्रकार-मुक्त विकल्प के रूप में स्वीकार करेंगे। हालांकि मसीहियों को सद्भावना पसंद थी, उन्होंने सुसमाचारों को विश्वासपूर्वक प्रसारित करना जारी रखा, क्योंकि उनका मानना था कि उनमें ईश्वरीय प्रेरणा से, परमेश्वर ने अपने पुत्र के बारे में प्रभावशाली गवाही प्रदान की थी। आज भी कई लोग ऐतिहासिक प्रश्नों की बारीकियों से निपटने के प्रयास में सामंजस्य का तरीका अपनाते हैं, लेकिन वे अक्सर प्रत्येक गवाही की विशिष्टता को नजरअंदाज कर देते हैं। अन्य लोग मतभेदों पर जोर देते हैं और सुसमाचार की रचनाओं पर अंदाज़ लगाते हैं, लेकिन पुनरुत्थान का तथ्य आमतौर पर इन मानवीय निर्माणों के विवरण में खो जाता है। दोनों अलग-अलग तरीकों से विश्वास और तर्क के सार की रक्षा करने के प्रयास हैं।

खाली कब्र

खाली कब्र के बारे में कई व्याख्याएँ दी गई हैं। कुछ लोगों ने कहा कि देह को चेलों ने चुरा लिया था (पहले से ही मत्ती 28:13 में सुझाया गया है), लेकिन फिर धोखाधड़ी के आधार पर कलीसिया को समझाने की जरूरत है। दूसरों ने कहा है कि यहूदी देह चुरा सकते थे, या हो सकता है कि चेलों ने कब्र को गलत समझा हो, लेकिन फिर शत्रुओं द्वारा जल्द ही देह प्रस्तुत कर दिया जाता। दूसरों ने कहा है कि यीशु बेहोशी में चले गए होंगे, बाद में ठंडी कब्र में जाग गए होंगे, लेकिन फिर परिणाम शायद ही मसीही कलीसिया की सामर्थ को प्रेरित कर पाता। ये सभी व्याख्याएँ पूर्वधारणा पर आधारित तर्कवादी प्रयास हैं कि यीशु का वास्तविक पुनरुत्थान नहीं हो सकता था।

भौतिक भिन्नताओं के बावजूद, और जबकि सुसमाचार लेखकों ने अपनी कब्र की कहानियों में बहुत सारी सामान्य सामग्री का उपयोग किया है, वे स्वयं कब्र को पुनरुत्थान विश्वास के आधार के रूप में नियोजित करने से बचते हैं। यूहन्ना 20:8 को छोड़कर, खाली कब्र ने आश्चर्य और डर उत्पन्न किया। वास्तव में, यह एक निष्क्रिय कहानी प्रतीत हुई (लूका 24:11) । यह कब्र की कहानियाँ नहीं हैं बल्कि यीशु के पुनरुत्थान के बाद उनकी उपस्थिति ने विश्वास को जन्म दिया।

प्रकटीकरण

कब्र की कहानियों के विपरीत, प्रकटीकरण में विषय की समानता बहुत कम है। फिर भी, प्रकटीकरण इस विश्वास का आधार हैं कि अविश्वसनीय बात हुई। पौलुस जैसे शत्रु को उत्साही प्रेरित में परिवर्तित कर दिया (प्रेरि 9:1–22; 1 कुरि 15:8)। पतरस जैसे भयभीत मछुआरे ने अपने जाल छोड़ दिए (यूह 21)। थोमा जैसे संदेह करने वाले ने प्रारंभिक मसीहत का सबसे बड़ा अंगीकार व्यक्त किया, यीशु को "मेरा प्रभु और मेरा परमेश्वर" कहा (20:24–28)। और इम्माऊस के दो थके हुए यात्री यरूशलेम जल्दी लौटने और पुनरुथित यीशु के साथ अपनी मुलाकात के बारे में समाचार साझा करने के लिए नए उत्साह से भर गए (लूका 24:13–35)।

विद्वानों ने इन प्रकटीकरण के स्वाभाव पर बहस की है। पौलुस की प्रकटीकरण की सूची से शुरू करते हुए (1 कुरिं 15:5–8), कुछ लोगों ने तर्क दिया है कि सभी प्रकटीकरण एक ही प्रकृति की हैं, और चूंकि प्रेरितों के काम में पौलुस के लिए दमिश्क-सड़क पर दर्ज प्रकटीकरण आत्मिक प्रकृति का प्रतीत होता है (प्रेरि 9:1–9; पुष्टी करें 22:6–11; 26:12–19), तो सभी प्रकटीकरण समान होने चाहिए थे । यह कथन कि पुनरुथित यीशु को छुआ जा सकता था (लूका 24:41–43) को पहले के दर्शन-प्रकार की परंपरा में बाद के जोड़ के रूप में खारिज कर दिया जाता है। इस प्रकार का तर्क शारीरिक पुनरुत्थान की असंभवता की पूर्वधारणाओं पर आधारित है।

एक अन्य सिद्धांत इतिहास के यीशु और विश्वास के मसीह के बीच विभाजन पर आधारित था। इस दृष्टिकोण के अनुसार, पुनरुत्थान को इतिहास की घटना के रूप में नहीं बल्कि चेलों के विश्वास के अनुभव के रूप में माना जाना चाहिए। हालाँकि, समस्या यह है कि यीशु के पुनरुत्थान के चश्मदीद गवाहों ने इस घटना को ऐतिहासिक, प्रत्यक्ष वास्तविकता के रूप में घोषित किया।

मसीह के पुनरुत्थान का महत्व

बाइबल में दर्ज कई लोग मृतकों में से जी उठाए गए थे। एलिय्याह ने विधवा के पुत्र को जीवित किया, यीशु ने अन्य विधवा के पुत्र को जीवित किया, और यीशु ने लाजर को जीवित किया। हालाँकि, उनका पुनरोद्धार (या पुनर्जीवन) मसीह के पुनरुत्थान के समान नहीं है। वे केवल फिर से मरने के लिए जी उठे; वह हमेशा के लिए जीने के लिए जी उठे। वे अभी भी भ्रष्टता से अभिशप्त होकर उठे; यीशु अविनाशी रूप में उठे। वे अपनी रचना में कोई बदलाव के बिना उठे; जबकि यीशु एक महत्वपूर्ण रूप से अलग रूप में उठे।

जब प्रभु जी उठे, तो उनके साथ तीन महत्वपूर्ण चीजें हुईं। उन्हें महिमा मिली, उनका रूपान्तरण हुआ और वे आत्मा बन गए। तीनों एक साथ हुए। जब उनका पुनरुत्थान हुआ, तो उन्हें महिमा मिली (देखें लूका 24:26)। उसी समय, उनकी देह महिमामय देह में परिवर्तित हो गई (फिल 3:21)। उसी प्रकार—और काफी रहस्यमय तरीके से—वह जीवन देने वाली आत्मा बन गए (1 कुरि 15:45)।

प्रभु के क्रूस पर चढ़ने और पुनरुत्थान से पहले, उन्होंने घोषणा की, “वह समय आ गया है , कि मनुष्य के पुत्र कि महिमा हो। मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है” (यूह 12:23–24)। यह घोषणा पुनरुत्थान की सबसे अच्छी तस्वीर प्रदान करती है। पौलुस ने भी इस दृष्टांत का उपयोग किया। उसने पुनरुत्थान की महिमा की तुलना मृत्यु में बोए गए अनाज से की, जो फिर जीवन में प्रकट होता है। वास्तव में, पौलुस ने पुनरुत्थान के बारे में कुरिन्थियों द्वारा पूछे गए दो प्रश्नों का उत्तर देते समय इस दृष्टांत का उपयोग किया: (1) मुर्दे किस रीति से जी उठते हैं? और (2) किस देह के साथ आते हैं? (1 कुर 15:35) ।

पहले प्रश्न के उत्तर में पौलुस ने कहा, “हे निर्बुद्धि, जो कुछ तू बोता है, जब तक वह न मरे जिलाया नहीं जाता” (1 कुर 15:36) । यह पूरी तरह से प्रभु के कथन यूहन्ना 12:24 के अनुसार है, और दोनों एक-दूसरे की व्याख्या करते हैं। अनाज को जीवित होने से पहले मरना चाहिए। पौलुस दूसरे प्रश्न के लिए अधिक स्पष्टीकरण देता है; और आत्मा ने इस रहस्य को प्रकट करने के लिए उनके महान वचन को प्रेरित किया। उसी गेहूं के दाने के स्वाभाविक उदाहरण का उपयोग करते हुए, पौलुस ने प्रकट किया कि पुनरुत्थान में जो देह आता है, वह बोए गए देह से पूरी तरह से अलग रूप में होता है। जैविक प्रक्रिया के माध्यम से, अकेला नग्न अनाज गेहूं की डंठल में बदल जाता है। मूल रूप से, अनाज और डंठल एक ही हैं—डंठल केवल पूर्व का जीवित विकास और व्यक्त विस्तार है। संक्षेप में, डंठल अनाज की महिमा है, या महिमामंडित अनाज है। यह चित्रण दिखाता है कि यीशु की पुनरुथित देह पूरी तरह से उस देह से अलग थी जिसे दफनाया गया था। मृत्यु में, उसे भ्रष्टाचार, अपमान, और कमजोरी में बोया गया था; पुनरुत्थान में, वह अविनाशी, महिमा, और सामर्थ में प्रकट हुआ। मनुष्य के रूप में यीशु के पास जो स्वाभाविक देह थी, वह आत्मिक देह बन गई, और साथ ही मसीह "जीवन देने वाली आत्मा" बन गए।

इस नए आत्मिक अस्तित्व के साथ, मसीह, आत्मा के रूप में और पवित्र आत्मा के माध्यम से, लाखों विश्वासियों में एक साथ निवास कर सकते थे। पुनरुत्थान से पहले, यीशु अपने नश्वर देह द्वारा सीमित थे; पुनरुत्थान के बाद, यीशु को उनके सभी विश्वासियों द्वारा असीमित रूप से अनुभव किया जा सकता था। अपने पुनरुत्थान से पहले, मसीह केवल अपने विश्वासियों के बीच रह सकते थे; अपने पुनरुत्थान के बाद, वह अपने विश्वासियों में रह सकते थे। क्योंकि मसीह पुनरुत्थान के माध्यम से आत्मा बन गए, उन्हें वे अनुभव कर सकते हैं जिनमें वह निवास करते हैं। मसीह की आत्मा अब मसीह को हमारे लिए बहुत वास्तविक और अनुभवात्मक बनाती है।

प्रभु यीशु ने नए प्रकार के अस्तित्व में प्रवेश किया जब उन्हें मृतकों में से जी उठाया गया क्योंकि वह महिमावान थे और साथ ही वे आत्मा बन गए—या, शब्द गढ़ने के लिए, वे "न्यूमाफाइड" हो गए (यूनानी शब्द "आत्मा," न्यूमा से)। ऐसा प्रतीत होता है कि जब वह जी उठे तो अंतर्निहित आत्मा ने उनकी देह में प्रवेश किया और उन्हें इस प्रकार संतृप्त कर दिया कि उनका सम्पूर्ण अस्तित्व आत्मा से निर्मित हो गया। हाल के अध्ययनों में न्यूमेटोलॉजी (आत्मा का अध्ययन) के क्षेत्र में यह बताया गया है कि पुनरुथित मसीह और आत्मा, मसीह के पुनरुत्थान के माध्यम से एक हो गए थे।

विलियम मिलिगन, जो पुनरुत्थान के विषय पर सर्वश्रेष्ठ अंग्रेजी शास्त्रीय लेखक हैं, उन्होंने कहा कि पुनरुत्थान मसीह आत्मा हैं। उस शास्त्र में, जिसे *रिज़रेक्शन ऑफ़ आवर लॉर्ड* कहा जाता है, उन्होंने निम्नलिखित लिखा:

हमारे प्रभु के पुनरुत्थान के बाद की स्थिति को पवित्र लेखकों द्वारा मूल रूप से न्यूमा (आत्मा) की स्थिति के रूप में देखा गया था। वास्तव में ऐसा नहीं है कि हमारे प्रभु के पास तब कोई देह नहीं था, क्योंकि यह पवित्रशास्त्र का निरंतर उपदेश है कि उनके पास देह था; लेकिन उनकी अवस्था की सबसे गहरी, मौलिक विशेषता, जो देह में भी अंतर्निहित थी, और इसे उनके आत्मा के साथ पूर्ण अनुकूलन और सामंजस्य में ढाल रही थी, वह आत्मा थी। दूसरे शब्दों में, यह प्रस्तावित किया गया है कि यह जांच की जाए कि क्या नए नियम में यह शब्द आत्मा का उपयोग हमारे प्रभु के पुनरुत्थान के बाद की स्थिति का संक्षिप्त वर्णन करने के लिए नहीं किया गया है, इसके विपरीत कि वह पृथ्वी पर अपने अपमान के दिनों के दौरान क्या थे।

मिलिगन ने वहां से यह दिखाने के लिए आगे बढ़े कि कई पवित्रशास्त्र इस बात की पुष्टि करते हैं कि पुनरुथित मसीह आत्मा हैं। उन्होंने यह दिखाने के लिए 1 कुरिन्थियों 6:17 का हवाला दिया कि जो विश्वासी पुनरुथित प्रभु के साथ जुड़ा हुआ है, उसे आत्मा के रूप में उनके साथ जुड़ा होना चाहिए,

क्योंकि जो प्रभु के साथ जुड़ा हुआ है, उसे उनके साथ "एक आत्मा" कहा जाता है। उन्होंने 2 कुरिन्थियों 3:17–18 का उपयोग यह दिखाने के लिए किया कि प्रभु जो आत्मा है, वही पुनरुथित मसीह है। उन्होंने यह साबित करने के लिए 1 तीमुथियुस 3:16, रोमियों 1:3–4, और इब्रानियों 9:14 का भी उपयोग किया कि पुनरुथित प्रभु आत्मा हैं।

जब हम सुसमाचार के अंतिम अध्यायों को पढ़ते हैं, तो हमें एहसास होता है कि पुनरुत्थान के बाद हमारे प्रभु में बड़ा परिवर्तन हुआ था। महिमा में प्रवेश करके, उन्होंने अस्तित्व के नए क्षेत्र में प्रवेश किया था। एक पल में वह दिखाई दे रहे थे; अगले ही पल वह अदृश्य हो गए (लूका 24:31)। वह स्थान और शायद समय की सीमाओं को चुनौती दे रहे थे। पुनरुत्थान के दिन की सुबह, वह मरियम मगदलीनी को बगीचे में दिखाई दिए (यूह 20:11–17), फिर कुछ अन्य महिलाओं को (मत्ती 28:9)। इसके बाद, वह अपने पिता के पास चले गए (यूह 20:17)। फिर वह पतरस को दर्शन देने के लिए लौटे, जो घर चले गए थे (यूह 20:10; लूका 24:34)। उसी दिन, देर दोपहर में, वह दो चेलों के साथ इम्माऊस के रास्ते पर सात मील (11.3 किलोमीटर) पैदल चले (लूका 24:13–33), जिसके बाद वह चेलों को दिखाई दिए जब वे यरूशलेम में कहीं बंद कमरे में इकट्ठे हुए थे (लूका 24:33–48; यूह 20:19–23)। इन सभी घटनाओं के अनुक्रमिक, कालानुक्रमिक क्रम का पालन करना लगभग असंभव है। यीशु ने जो किया वह मानवीय रूप से असंभव था। वह एक ही दिन में इन सभी स्थानों पर कैसे उपस्थित हो सकते थे? हम केवल यह कह सकते हैं कि पुनरुत्थान ने उनके अस्तित्व के क्षेत्र को बहुत बदल दिया। आत्मा के रूप में, और फिर भी देह के साथ—एक महिमामय देह—वह अब समय और स्थान से सीमित नहीं थे।

पुनरुत्थान के माध्यम से, यीशु ने अलग रूप प्राप्त किया था (देखें मर 16:12)। जहाँ तक उनके व्यक्तित्व का सवाल है, वे अभी भी वही थे; गलील में चलने वाले और कलवरी के क्रूस पर चढ़ाए गए यीशु वही यीशु हैं जो पुनरुथित हुए। उनका व्यक्तित्व नहीं बदला था, न ही कभी बदलेगा; यह अपरिवर्तनीय है। लेकिन उनका रूप बदल गया; वह अब जीवन देने वाले आत्मा है। इस प्रकार, मसीह अपने सभी विश्वासियों में वास करने में सक्षम है।

पुनरुत्थान और पुनर्जनन पवित्रशास्त्र में निकटता से जुड़े हुए हैं—उसी तरह जैसे क्रूस पर चढ़ाया जाना और छुटकारा अविभाज्य एकता बनाते हैं। जैसे मसीह के क्रूस पर चढ़ाए बिना छुटकारा संभव नहीं था, वैसे ही मसीह के पुनरुत्थान के बिना पुनर्जनन संभव नहीं है। पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से कहता है कि हम मसीह के पुनरुत्थान के माध्यम से फिर से जन्मे हैं (1 पत 1:3)।

मसीह के मृतकों में से जी उठने के बाद, उन्होंने चेलों को अपना भाई कहा (मत्ती 28:10; यूह 20:19), और उन्होंने घोषणा की कि उनका परमेश्वर अब चेलों का परमेश्वर है, और उनका पिता चेलों का पिता है। पुनरुत्थान के माध्यम से, चेले यीशु के भाई बन गए थे, वही ईश्वरीय जीवन और वही पिता को प्राप्त करते हुए। मृतकों में से पहलौठे पुत्र के रूप में (कुल 1:18; प्रका 1:18), यीशु मसीह कई भाइयों में पहलौठे पुत्र बन गए (रोम 8:29)।

सामान्य पुनरुत्थान

पौलुस प्रभु के उस दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे जब मसीह में मृतकों को जिलाया जाएगा और जो अभी भी जीवित हैं वे अंतिम विजय में मृतकों के साथ शामिल होंगे (1 थिस 4:15–18)। उनके मन में कोई संदेह नहीं था कि यह पुनरुत्थान शानदार अपेक्षा थी, कि इसमें किसी प्रकार का व्यक्तिगत देह शामिल था, और यह देह भौतिक नहीं बल्कि आत्मिक होगा (1 कुरि 15:35–44)। पौलुस ने दो पुनरुत्थानों की बात नहीं की, जैसा कि योहन्ना के लेख में है (जैसे, यो 5:29), लेकिन केवल जीवन के पुनरुत्थान की बात की। शायद यूहन्ना का प्रकाशन इस मुद्दे पर नए नियम के विचार को समझने में सबसे अच्छा संकेत प्रदान करता है क्योंकि यह पहले पुनरुत्थान का हिस्सा होने की आशीष का उल्लेख करता है (प्रका 20:5–6)। हालाँकि प्रकाशितवाक्य में "पुनरुत्थान" शब्द का उपयोग न्याय के संदर्भ में नहीं किया गया है, लेकिन न्यायासन पर उपस्थिति और आग की झील में दूसरी मृत्यु का निर्णय यह संकेत देता है कि न्याय के लिए पुनरुत्थान जीवन के पुनरुत्थान के समान नहीं होगा।

पुनरुत्थान और ज्ञानवाद

ज्ञानवाद युगांतविज्ञान यूनानी अमरता के दृष्टिकोण पर आधारित है और इसमें भक्त के आत्मिक आरोहण में शारीरिक भूसी को त्यागना शामिल है, जो परिपूर्णता या ज्ञानवादी स्वर्ग तक पहुंचता है। क्योंकि जिस तरह से ज्ञानवाद ने शब्दों का उपयोग किया, फिलिप्पुस का सुसमाचार एक सहायक नजरिया है ज्ञानवाद के तोड़े मरोड़े गए विचारों को समझने के लिए। वहाँ यह तर्क दिया गया है कि "जो लोग कहते हैं कि प्रभु पहले मरे और [फिर] जी उठे, वे ग़लत हैं; क्योंकि वे पहले जी उठे और [फिर] मर गए। यदि कोई पहले पुनरुत्थान को प्राप्त नहीं करता, तो क्या वह नहीं मरेगा?" (फिलिप 56:15–19)। पुनरुत्थान की अवधारणा को युगांतविज्ञान से हटा दिया गया गया है और इसे पुनरुत्थान की वास्तविक भविष्य की अपेक्षा के संदर्भ में नहीं बल्कि इस दुनिया में एक साकार आत्मिक जागृति के संदर्भ में परिभाषित किया गया है। फिलिप्पुस का सुसमाचार यह समझने में भी उपयोगी है कि क्यों 2 तीमुथियुस 2:17–19 में हुमिनयुस और फिलेतुस के खिलाफ आलोचना इतनी कड़ी थी क्योंकि वे मानते थे कि पुनरुत्थान अतीत था। स्पष्ट रूप से, जब यह ज्ञानवाद में प्रकट हुआ तो पौलुस का समुदाय और कलिसिया द्वारा साकारित युगांतविज्ञान को अस्वीकार कर दिया गया।

और इसे वर्तमान समय में कलिसिया द्वारा अस्वीकार किया जाना चाहिए।

यह भी देखें मृत, स्थान; युगांतविज्ञान; मसीह का दूसरा आगमन; आत्मा।

पुन्तियुस पिलातुस

*देखिए*पुन्तियुस पिलातुस।

पुन्तुस

पुन्तुस

उत्तरपूर्वी एशिया के उपद्वीप में रोमी प्रांत, काला सागर के दक्षिणी तट पर स्थित है। गलातिया, कप्पदूकिया, और आर्मेनिया पुन्तुस की सीमा पर स्थित हैं। लगभग 1000 ईसा पूर्व पहले यूनानियों ने काले सागर के दक्षिणपूर्वी तट पर उपनिवेश बनाना शुरू किया, साइनोप और ट्रेबिजोंड की स्थापना की। यहाँ ज़ेनफोन और उनके लोग अपने महान पूर्वी साहसिक कार्य के बाद समुद्र तक पहुँचे। प्रसिद्ध भूगोलवेत्ता स्ट्रैबो, जिन्हें पुन्तुस के प्राचीन इतिहास का ज्ञान है, उनका जन्म आंतरिक शहर अमासिया में हुआ था। अमासिया के राजा मिथ्रिडेट्स यूपेटोर, रोमियों के अनुसार, गणराज्य के सबसे दुर्जेय शत्रु थे जिनका उन्होंने सामना किया। उन्होंने रोमियों के खिलाफ तीन युद्ध लड़े जब तक कि लगभग 60 ईसा पूर्व में उनकी अन्तिम हार पोम्पी द्वारा नहीं हुई।

तम्बू बनाने वाला अक्विला, जो अपनी पत्नी प्रिस्किल्ला के साथ प्रेरित पौलुस के सहायक सहकर्मी थे, उनका जन्म पुन्तुस में हुआ था। हालाँकि, पौलुस के विपरीत, वह रोमी नागरिक नहीं थे; इसलिए, वह क्लौदियुस के आदेश के अधीन थे और यहूदी होने के कारण रोम से निष्कासित कर दिए गए थे(प्रेरि 18:2; 22:25–28)।

पतरस के दिनों में जो मसीही वहाँ रहते थे (1 पत 1:1) सम्भवतः उन लोगों में से थे जो पहले पिन्तेकुस्त के बाद यरूशलेम से लौटे थे जब पतरस ने बोला था (प्रेरि 2:9)।

पुबलियुस

पुबलियुस

माल्टा द्वीप के निवासी का नाम, जिसका उल्लेख प्रेरि 28:7–8 में किया गया है। उन्होंने पौलुस और अन्य लोगों की थोड़े समय के लिए मेजबानी की जब एक जहाज़ के टूटने के कारण वे रोम की यात्रा के दौरान द्वीप पर फंस गए थे। पुबलियुस ने एक ऐसा पद धारण किया था जो यह दर्शाता था कि वह उस समय माल्टा पर एक महत्वपूर्ण अधिकारी थे। उनके बीमार पिता को पौलुस ने इस यात्रा के दौरान चंगा किया था।

पुब्बा

उत्पत्ति 46:13 में इस्साकार का पुत्र पुब्बा का KJV वर्तनी। *देखें*पुब्बा

पुरकियुस फेस्तुस

पुरकियुस फेस्तुस

*देखिए*पुरकियुस फेस्तुस।

पुरवाई

हवा मुख्य रूप से मई, सितम्बर, और अक्टूबर में आती है। इस प्रचण्ड लूह, जिसे गरम हवा भी कहा जाता है, इसने वनस्पति को नाश कर दिया (उत 41:6; यहेज 17:10; योन 4:8), फूलों को मुर्झा दिया (भज 103:15–16), और कुण्ड और सोता को सूखा दिया (होश 13:15)। यहोवा ने प्रचण्ड पुरवाई का उपयोग करके लाल समुद्र के जल को पीछे हटा दिया ताकि इस्राएली पार कर सकें (निर्ग 14:21)। पुरवाई भी परमेश्वर के न्याय को दर्शाती है (यशा 27:8; यिर्म 4:11; 18:17)। एक पूर्वी या उत्तर-पुरवाई ने प्रेरित पौलुस के जहाज को मार्ग से भटका दिया (प्रेरि 27:14, केजेवी के अनुसार "यूरोक्लिडोन" या यूरकुलीन)। यह हवा, जो पश्चिमी भूमध्य सागर में कई बार बहती है, "लेवेंटर" (भूमध्य सागर में तेज़ पुरवाई) कहलाती है।

पुरस्कार

अच्छे या बुरे कार्यों के लिए प्रतिफल या मुआवजा। यह अक्सर किसी के कार्यों से उत्पन्न होने वाले लाभ या परिणामों को सन्दर्भित करता है। यह अवधारणा नैतिक जिम्मेदारी और जवाबदेही को समाहित करती है। इस विचार से सम्बन्धित शब्दों में शामिल हैं:

- वेतन
- पंजीकरण इनाम
- पुरस्कार
- प्रतिफल

ये शर्तें सभी पुरस्कारों को शामिल करती हैं, जिसमें रोजमर्रा की बातचीत और मनुष्य के व्यवहार पर परमेश्वर की

प्रतिक्रिया भी सम्मिलित है। ये इस जीवन और अगले जीवन दोनों को समाहित करती हैं।

यूनानी और इब्री लोगों के लिए, इनाम का विचार एक क्रिया को पूरा करने के विचार से जुड़ा हुआ था। जैसे एक मजदूर को उसके काम के लिए भुगतान मिलता है, वैसे ही एक क्रिया से कुछ निश्चित परिणाम आने की उम्मीद की जाती है, चाहे वह इनाम हो या दण्ड। यह अवधारणा व्यावसायिक भाषा में परिलक्षित होती है, जैसे जब पौलुस कहते हैं, "पाप की मज़दूरी मृत्यु है" (रोम 6:23)। इसका अर्थ है कि कार्यों के अनुरूप परिणाम की अपेक्षा की जाती है।

बाइबिल के दृष्टिकोण में इनाम दोनों नैतिक और धार्मिक हैं। परमेश्वर की वाचा इस्राएल के साथ उनकी कृपा का चिन्ह थी और उनके आदेशों का पालन करने पर आशीर्वाद का वादा करती थी। हालांकि, अनाज्ञाकारिता विपत्ति और मृत्यु की ओर ले जाती। व्यवस्थाविवरण 28 आज्ञाकारिता के लिए आशीर्वाद और प्रभु की दृष्टि में सही और अच्छा न करने के लिए शापों का विवरण देता है (देखें लैव्यव्यवस्था 26 भी)। जंगल में भटकने के दौरान, अनाज्ञाकारिता ने कष्ट और मृत्यु को जन्म दिया। न्यायियों और राजाओं के समय का इतिहास दिखाता है कि विश्वासयोग्यता आशीर्वाद लाती थी, और पाप दण्ड को लाता था। विजय और राष्ट्रीय समृद्धि परमेश्वर के आदेशों का पालन करने से जुड़ी थी (यहोशू 1:7–9; तुलना करें न्यायियों 2)।

कभी-कभी, इनाम और दण्ड के इस प्रारूप का अनुसरण होता प्रतीत नहीं होता था। यहूदियों का विश्वास था कि परमेश्वर दयालु और क्षमाशील हैं। क्षमा में पाप के लिए दण्ड को हटाना शामिल होता है। जैसा कि कहा गया है, "उसने हमारे पापों के अनुसार हम से व्यवहार नहीं किया, और न हमारे अधर्म के कामों के अनुसार हमको बदला दिया है।" (भज 103:10)।

सभोपदेशक में, लेखक ने देखा कि जीवन हमेशा प्रतिशोध के सिद्धांत के साथ मेल नहीं खाता। उन्होंने कुछ हद तक निंदक दृष्टिकोण का उल्लेख किया जब धर्मी पीड़ित होते हैं और दुष्ट समृद्ध होते हैं। अय्यूब के मित्रों ने सोचा कि उनकी पीड़ा छिपे हुए पाप के कारण थी, लेकिन अय्यूब ने अपनी अखंडता बनाए रखी। अन्त में, अय्यूब को उनकी विश्वासयोग्यता के लिए पुरस्कृत किया गया।

यीशु के समय तक, यहूदी धर्म ने काफी विकास कर लिया था। रोमी कानून ने पुरानी कानूनी प्रणाली की जगह ले ली थी। हालांकि, यहूदी धर्म अभी भी अच्छे कार्यों को महत्व देता था और लोगों को परमेश्वर की आशीष के लिए पुण्य अर्जित करने के लिए प्रोत्साहित करता था (तोबित 4:7–10; सिराच 51:30)। फरीसी मानते थे कि व्यवस्था का सावधानीपूर्वक पालन करने से परमेश्वर की कृपा प्राप्त होगी। वे सोचते थे कि अच्छे कर्मों का इनाम मिलेगा, और पापों को दण्डित किया जाएगा, यदि इस जीवन में नहीं, तो भविष्य में।

यीशु ने पुरस्कार के बारे में भी सिखाया, विशेष रूप से पहाड़ पर उपदेश में (मत्ती 5–7)। उन्होंने कहा कि परमेश्वर उन लोगों को आशीर्वाद देंगे जो कुछ नैतिक गुण प्रदर्शित करते हैं (मत्ती 5:1–12)। जो लोग दूसरों द्वारा प्रशंसा पाने के लिए कार्य करते हैं, उन्हें केवल वही प्रशंसा मिलेगी, लेकिन जो लोग परमेश्वर को प्रसन्न करने का प्रयास करते हैं, उन्हें परमेश्वर द्वारा पुरस्कृत किया जाएगा (मत्ती 6:1, 4, 6, 18)। यीशु ने मजदूरों के दृष्टान्त के साथ पुरस्कार के विचार को चुनौती दी (मत्ती 20:1–16)। इसमें, सभी को समान मजदूरी मिली, चाहे उन्होंने कितनी भी देर काम किया हो। उन्होंने सिखाया कि हमें निर्दोष रूप से पुरस्कार प्राप्त करने से परे उद्देश्यों के लिए काम करना चाहिए। अच्छे चरवाहे के दृष्टान्त में, यीशु ने मज़दूरी के लिए काम करने वाले मजदूर की तुलना उस चरवाहे से की, जो भेड़ों के लिए अपने प्राण दे देगा (यूह 10:11–14)। एक सेवक जो केवल अपना कर्तव्य निभाता है, विशेष पुरस्कार का अधिकारी नहीं होता (लूका 17:9–10)।

पौलुस ने पुरस्कार पर एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया, विशेष रूप से उद्धार के सम्बन्ध में। उद्धार अब अच्छे कार्यों की तुलना में दुष्ट कार्यों को कम करने के परिणाम के रूप में नहीं देखा जाता है। यह ईश्वरीय कृपा का एक उपहार है जिसे अर्जित नहीं किया जा सकता (रोमियों 4:4–5)। उद्धार अर्जित नहीं किया जाता बल्कि एक प्रेमपूर्ण परमेश्वर द्वारा दिया जाता है। हालांकि, उद्धार मिलने के बाद अच्छे कार्यों के लिए पुरस्कार अभी भी दिए जाते हैं। 1 कुरिन्थियों 3:8–14 सिखाता है कि व्यक्ति के कार्यों की गुणवत्ता का मूल्यांकन और पुरस्कार दिया जाएगा, लेकिन उद्धार स्वयं कार्यों पर आधारित नहीं है। फिर भी, कार्य किसी के अंतिम गंतव्य के लिए महत्वपूर्ण हैं (कुलुस्सियों 3:24; प्रकाशितवाक्य 14:13)।

यह भी देखें मुकुट; न्याय।

पुरातत्व और बाइबल

प्राचीन मानव इतिहास का अध्ययन भौतिक अवशेषों की पुनःप्राप्ति और परिक्षण के माध्यम से किया जाता है। बाइबल पुरातत्व का ध्यान निकट पूर्व (मध्य पूर्व) में पाई गई वस्तुओं और संरचनाओं पर केंद्रित होता है जो बाइबल से संबंधित होती है। इन अवशेषों में दफन कलाकृतियाँ (प्राचीन वस्तुएँ), खण्डहर और स्मारक शामिल होते हैं। इनमें से कुछ कलाकृतियों पर प्राचीन भाषाओं में शिलालेख (लिखावट) लिखे हुए पाए गए हैं। विद्वानों को इन शिलालेखों को समझने के लिए सावधानीपूर्वक अध्ययन करना पड़ता है। अन्य वस्तुओं में टूटे हुए मिट्टी के बर्तन, जली हुई लकड़ी, खिलौने और उपकरण जैसी रोजमर्रा की वस्तुएँ शामिल होती हैं। इन सभी टुकड़ों को उस ऐतिहासिक काल के संदर्भ में समझना आवश्यक होता है जिससे वे आए हैं।

पुरातत्व में खोजें

कई महत्वपूर्ण पुरातात्विक खोजें संयोगवश हुई हैं। उदाहरण के लिए, सीरिया में एक किसान ने जुताई करते समय प्राचीन उगरित शहर की खोज की। एक चरवाहे ने खोई हुई बकरी की खोज करते समय एक गुफा में मृत सागर कुण्डलपत्रों की खोज की। 1887 में, एक मिस्री महिला ने उर्वरक के रूप में उपयोग करने के लिए ईंटों की तलाश करते समय अमरना टैबलेट्स (पत्रों) की खोज की। 1945 में, नाग हम्मादी के पास पक्षियों की खाद की खोज कर रहे मिस्रवासियों ने महत्वपूर्ण ग्नॉस्टिक हस्तलिपियों की खोज की। हालांकि, संयोगवश हुई खोजें सावधानीपूर्वक, व्यवस्थित पुरातात्विक सर्वेक्षणों का विकल्प नहीं हो सकतीं।

आजकल, पुरातत्वविद संभावित स्थलों का हवाई फोटोग्राफी और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का उपयोग करके सावधानीपूर्वक सर्वेक्षण करते हैं। ये विधियाँ भूमिगत वस्तुओं का पता लगाने के लिए उपयोग की जाती हैं। कलाकृतियों की तिथि उस मिट्टी की परत के आधार पर निर्धारित की जाती है जिसमें वे पाई गई थीं और अन्य विधियों, जैसे रेडियोकार्बन डेटिंग का उपयोग किया जाता है। लक्ष्य एक ऐसी समय रेखा बनाना है जो कलाकृतियों और स्थल के इतिहास को सही ढंग से दर्शाए।

बाइबल को समझने में पुरातत्व की भूमिका

पुरातत्वविद और विद्वान इन कलाकृतियों को अतीत के मानव जीवन के वास्तविक, तथ्यात्मक प्रमाण के रूप में मानते हैं। यद्यपि इन्हें कैसे समझा जाए, इस पर विभिन्न मत हो सकते हैं, फिर भी ये वस्तुएँ इतिहास की प्रत्यक्ष साक्षी हैं। इन प्राचीन वस्तुओं को प्रमाण के रूप में समझना महत्वपूर्ण है और इन्हें इतिहास, संस्कृति या धर्म के बारे में व्यक्तिगत सिद्धांतों के अनुरूप नहीं बनाना चाहिए। पश्चिमी एशिया के पुरातत्व हमें बाइबल को समझने में मदद करते है, क्योंकि यह वस्तुनिष्ठ पृष्ठभूमि जानकारी प्रदान करते है।

उदाहरण के लिए, यदि किसी लेखन वाली कलाकृति की तिथि लगभग 3000 ई.पू. की है, तो यह दिखाता है कि उस समय लेखन मौजूद था। इसका मतलब है कि पुराने नियम के प्रारंभिक लेखक उन कहानियों को लिख सकते थे जिनका श्रेय उन्हें दियया गया है। पुरातात्विक खोजों ने दिखाया है कि मूसा, जो बाइबल की पहली पांच पुस्तकों के पारंपरिक लेखक हैं, लिख सकते थे:

- मिस्री चित्रलिपि,
- बेबिलोनी कीलाक्षर, और
- कनानी बोलियाँ, जिनमें इब्रानी शामिल हैं।

बाइबल के बारे में कोई भी सिद्धांत जो ऐसे प्रमाणों को नज़रअंदाज़ करता है, वह गलत होने की संभावना है।

पुरातत्व और बाइबल

पूर्वविलोकन

- **पुरातत्व और दैनिक जीवन**
- **पुरातत्व और धर्म**
- **पुरातत्व और युद्ध**
- **पुरातत्व और साहित्य**
- **पुरातत्व और भाषा**

पुरातत्व और दैनिक जीवन

पुरातत्व विज्ञान ने प्राचीन लोगों के दैनिक जीवन के बारे में बहुत कुछ उजागर किया है। खुदाई (खुदाई स्थल) से पता चलता है कि नवपाषाण काल (अंतिम पाषाण युग) के दौरान, लोग बुनाई की गई छड़ियों से बनी साधारण झोपड़ियों में रहते थे। इन झोपड़ियों में से कुछ में अन्दर से सजावट भी की गई थी। अब्राम के समय में उर के मध्यवर्गीय घर आधुनिक मानकों के अनुसार भी सुरुचिपूर्ण थे। नॉसस, पर्सेपोलिस, मारी और कांतिर जैसे स्थानों में महलों के खण्डहर उनकी पूर्व की भव्यता को प्रकट करते हैं। बुनाई मानव की सबसे पुरानी शिल्पों में से एक है और इसे प्राचीन काल में भी किया जाता था। ओरिएंटल कालीनों को बुनने की तकनीकें मेसोपोटामिया में उत्पन्न हुईं। मिट्टी के बर्तन, साधारण और सजावटी दोनों, एक और प्राचीन शिल्प थे।

सामाजिक रीति-रिवाज़

पुरातत्व विज्ञान ने बाइबल में उल्लेखित सामाजिक रिवाज़ों को भी स्पष्ट किया है। उदाहरण के लिए, अब्राम का अपनी पत्नी की दासी हाजिरा से संतान प्राप्त करना, नुज़ी में स्थानीय रिवाजों का पालन था और इसे अनैतिक नहीं माना जाता था। गोद लेने की प्रथाएं, जैसे अब्राम द्वारा एलीएज़र को गोद लेना (उत 15:2–4), नुज़ी के ग्रंथों के माध्यम से बेहतर तरीके से समझी गई है। ये ग्रंथ निःसंतान दंपतियों का एक सेवक को गोद लेने का वर्णन करते हैं जो उनकी संपत्ति का उत्तराधिकारी बनता। ये गोद लिए गए व्यक्ति ज्येष्ठ पुत्र बन जाते, हालांकि प्राकृतिक संतान के जन्म से ये अधिकार समाप्त हो सकते थे। नुज़ी, उगारित और अलालख के ग्रंथ भी ज्येष्ठ पुत्रों के अधिकारों को समझाते हैं और कैसे उन अधिकारों का व्यापार किया जा सकता था, जैसा कि उत 25:31–34 में देखा गया है।

व्यापार

बाइबल काल में कार्य और व्यापार को विभिन्न पुरातात्विक खोजों के माध्यम से दर्शाया गया है। उदाहरण के लिए, बेनी हसन से एक प्रकार की तस्वीर जिसे "टेबलो (चित्रमय तस्वीर)" कहा जाता है (लगभग 1900 ई.पू. में बनाई गई), यहूदियों को मिस्र में सामान लाते हुए दिखाती है, संभवतः

धातुकारों के रूप में। अन्य स्रोत गतिविधियों को दर्शाते हैं जैसे:

- शिकार
- मछली पकड़ना
- ईंट बनाना
- कृषि
- मिट्टी के बर्तन बनाना

ये स्रोत यह भी जानकारी प्रदान करते हैं कि लोग कैसे कपड़े पहनते थे, मिस्र की चित्रकला के उदाहरणों के साथ जो 500 वर्षों बाद यहूदियों को फिरौन को उपहार देते हुए दिखाते हैं, जो कपड़ों की शैलियों को दर्शाते हैं जो सदियों तक अपरिवर्तित रहीं। हालांकि, इस्राएलियों को मनुष्यों या परमेश्वर के प्रतिरूप बनाने से मना किया गया था।

मिट्टी के टुकड़े

सबसे आम दैनिक अवशेष मिट्टी के बर्तन के टुकड़े होते हैं, जिन्हें अक्सर लेखन सामग्री के रूप में उपयोग किया जाता था। उदाहरण के लिए, "लाकिश पत्र," 587 ई.पू. में एक उत्तरी चौकी से लिखे गए सैन्य पत्रों की एक श्रृंखला, मिट्टी के बर्तन के टुकड़ों पर लिखे गए थे। यहाँ तक कि नए नियम के समय में भी, मिट्टी के बर्तन के टुकड़ों का उपयोग लेखन के लिए किया जाता था। इसका कारण यह था कि वे सरकंडे की तुलना में अधिक टिकाऊ और मोम की पट्टियों की तुलना में अधिक सुविधाजनक थे। मिस्र में कलम, पैलेट और स्याही भी मिली हैं। मृत सागर कुण्डलपत्रों को लिखने के लिए उपयोग की गई स्याही कुमरान से प्राप्त की गई है।

खेल

पुरातात्त्विक खोजों में प्राचीन काल के खेल और खिलौने भी शामिल हैं। उदाहरण के लिए, बेनी हसन, मकबरे के एक चित्र (लगभग 2000 ई.पू) में मिस्र की लड़कियों को गेंद का खेल खेलते हुए दिखाता है। थेब्स के एक मंदिर से एक चित्र, रामसेस तृतीय को चेकर्स खेलते हुए दिखाता है। बाद के काल के मिस्र के बच्चे कंकड़ का उपयोग करके एक खेल खेलते थे, जो शायद बैकगैमोन का एक प्रारंभिक संस्करण था। मेगिद्दो में, लगभग 1200 ई.पू. का एक हाथीदांत का खेल बोर्ड मिला, जिसमें छेद थे, संभवतः खूंटियों के लिए। निकट पूर्व के बच्चों के खिलौने आधुनिक खिलौनों से बहुत अलग नहीं थे। खिलौने मिले हैं जैसे:

- सीटी
- गेंदें
- रथ का नमूना
- पहियों वाले जानवर

मिस्र की कब्रों की चित्रकारी में कुश्ती, तीरंदाजी और दौड़ जैसे वयस्क खेल भी चित्रित किए गए थे।

शव संरक्षण

शव संरक्षण एक प्रक्रिया है जो मृत शरीरों को संरक्षित करती है। याकूब और यूसुफ का शव संरक्षण, जैसा कि उत 50:2–3, 26 में वर्णित है, एक प्राचीन मिस्री प्रथा थी। याकूब को उनके पूर्वजों के साथ मकपेला की गुफा में दफनाया गया था। यद्यपि यह स्थान ज्ञात है, इसे खोदा नहीं जा सकता क्योंकि यह अरबों के लिए एक पवित्र स्थान है। प्राचीन इब्रानी दफन स्थल से संबंधित एक शिलालेख 1931 में जैतून पर्वत पर पाया गया था। इसमें लिखा है, "यहाँ यहूदा के राजा उज्जियाह की हड्डियाँ लाई गईं—खोलें नहीं।" यह शिलालेख मसीह के समय का है। यह सुझाव देता है कि यरूशलेम में खुदाई के दौरान राजा उज्जियाह की कब्र मिली थी और उनके अवशेषों को किसी अन्य स्थान पर ले जाया गया था।

पुरातत्वविदों ने यह भी दिखाया है कि मसीह की कब्र के प्रवेश द्वार को ढकने वाला, पत्थर का दरवाज़ा लगभग 100 ई.पू. से 100 ई. तक आम था, जो सुसमाचार के विवरणों से मेल खाता है।

पुरातत्व और धर्म

पुरातत्व ने बाइबल के विश्वास और उपासना के स्वभाव में अंतर्दृष्टि प्रदान की है। बहुत पहले, जब अब्राम ने एकमात्र सच्चे परमेश्वर का अनुसरण करने के लिए उर छोड़ा, गैर-यहूदी मेसोपोटामियाई विभिन्न देवताओं की पूजा करते थे। वे इन देवताओं को आकाश के देवता मानते थे। यह पृष्ठभूमि इब्रानी पितामाहों के उनके परमेश्वर के साथ संबंध को अधिक समझने योग्य बनाती है। उठाने योग्य मंदिरों में मूर्तिपूजक देवताओं की पूजा का चित्रण रामसेस द्वितीय के एक उत्कीर्णन में किया गया है, जिसमें मिस्र के शिविर में एक दिव्य तंबू दिखाया गया है। सातवीं शताब्दी ई.पू. के फोनीशियन लेखन में भी बैलों द्वारा खींचे गए एक वहनीय मंदिर का उल्लेख है। यह पृष्ठभूमि इस विचार का समर्थन करती है कि इस्राएली जंगल मिलापवाला तम्बू बाद की खोज नहीं था।

पुरातत्व ने बाबुली बंधुवाई से पहले उपासना में गायकों की भागीदारी की परंपरा की पुष्टि की है। सदियों से, फिलिस्तीनी अपनी संगीत क्षमताओं के लिए जाने जाते थे। उगरित के रस शमरा से प्राप्त टैबलेट्स (पत्रों) में धार्मिक कविता है जो इब्रानी भजनों के समान है। सुलैमान का मंदिर, जिसे

फोनीशियन कारीगरों ने बनाया था, एक योजना का पालन करता था (देखें 1 रा 6) जो सीरिया के तेल तैनात में पाए गए आठवीं शताब्दी ई.पू. के एक चैपल (उपासना स्थल) के समान है। यरूशलेम की विलाप दीवार में नेहेम्याह के समय के पत्थरों को शामिल माना जाता है। लेकिन, शहर में सुलैमान की नींव के कोई निशान नहीं मिले हैं। हेरोदेस के मंदिर के पत्थर पाए गए हैं, जो ई. 70 में नष्ट हो गया था। ये टुकड़े मंदिर की संरचना के बारे में मूल्यवान जानकारी प्रदान करते हैं। यद्यपि मसीह के समय में फिलिस्तीन में कई आराधनालय मौजूद थे, कुछ अवशेष ही पाए गए हैं।

पुरातत्व और युद्ध

पुरातत्व विज्ञान ने प्राचीन युद्ध के हमारे ज्ञान को बहुत बढ़ाया है, जो एक महत्वपूर्ण बाइबल विषय है। पश्चिमी एशियाई लोग युद्ध को विरोधी राष्ट्रों के देवताओं के बीच संघर्ष के रूप में देखते थे। सैन्य सेवा को पवित्र माना जाता था और सैनिकों को अत्यधिक सम्मानित किया जाता था। परमेश्वर, जो सेनाओं के प्रभु हैं, को इब्रानी सेना का सेनापति माना जाता था। वे किसी शहर के पूर्ण विनाश का आदेश दे सकते थे, जिसे "निषेध" कहा जाता था, जैसा कि यरीहो के मामले में हुआ था (यहो 6:17, 24)। युद्ध में नियमों का पालन किया जाता था। यदि किसी शहर को खतरा होता, तो उसके निवासी आत्मसमर्पण कर सकते थे और उनकी जान बचाई जा सकती थी, हालांकि उनकी संपत्ति ले ली जाती थी। यदि वे विरोध करते, तो वे पूर्ण विनाश का जोखिम उठाते। युद्ध की रणनीतियों में शामिल थे:

- सामने से हमले (प्रत्यक्ष हमले)
- जासूस
- घात
- गश्त

कभी-कभी युद्ध एकल युद्ध द्वारा तय किए जाते थे, जैसा कि दाऊद और गोलियत की कहानी में है (1 शमू 17:38–54)।

प्राचीन कवच और हथियारों को चित्रों और स्मारकों में व्यापक रूप से दर्शाया गया है।

- उर से प्राप्त एक सुनहरा टोप सुमेरियन सैन्य उपकरण का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इसके विपरीत, छोटे हित्ती टोप कर्नाक की एक कब्र की दीवार पर चित्रित हैं। प्रारंभ में, केवल इस्राएली सेनाओं के अगुवे ही धातु के टोप पहनते थे (देखें 1 शमू 17:38)। लेकिन, सेल्यूसीड साम्राज्य के समय तक, सभी इब्रानी सैनिकों के पास कांस्य के टोप थे (1 मका 6:35)। रोमी सैनिक आमतौर पर या तो चमड़े या कांस्य के टोप पहनते थे।
- इब्रियों ने दो प्रकार की ढालों का उपयोग किया: एक बड़ी पैदल सेना के लिए और एक छोटी तीरंदाजों के लिए (2 इति 14:8)। ये ढालें आमतौर पर लकड़ी और चमड़े की बनी होती थीं, हालांकि कुछ कांस्य की भी बनी होती थीं।
- जैसा कि यिर्मयाह 46:4 में उल्लेख है, झिलम का उपयोग पश्चिमी एशिया में कम से कम पंद्रहवीं शताब्दी ई.पू. से किया जाता था, जैसा कि अलालख और उगारित में खोजों से पता चलता है।
- तलवारें और भाले, इब्रानी हथियारों के आवश्यक भाग, विभिन्न आकारों और रूपों में आते थे। तलवार बनाने के लिए भट्टियाँ गरार में पाई गईं और कांस्य युग के खंजर लाकिश और मगिद्दो से प्राप्त हुए हैं।
- मिश्रित एशियाई धनुष पहले के समय में चित्रित सरल धनुषों की तुलना में एक सुधार था। 1300 और 900 ई.पू. के बीच के तीरों के सिरों पर खुदे हुए नाम, तीरंदाजों की टुकड़ियों के अस्तित्व का सुझाव देते हैं (देखें यशा 21:17)।

नए नियम में सैन्य उपकरणों के बारे में बहुत कम कहा गया है।

पुरातत्व और साहित्य

पुरातात्त्विक खोजों ने बाइबल साहित्य के समानान्तर कई प्रकारों के प्रमाण प्रदान किए हैं। उदाहरण के लिए, रास शाम्रा के उत्खननकर्ताओं को काव्य और गद्य की पट्टिकाएँ मिली। इन पट्टिकाओं में व्याकरण और साहित्यिक रूप, इब्रानी भजनों में पाए जाने वाले रूप के समान थे। अब यह स्पष्ट है कि विस्तृत कानून संहिताएँ, जैसे कि पंचग्रन्थ में हैं, मूसा के समय से पहले भी अस्तित्व में थीं।

ई.पू. उन्नीसवीं शताब्दी के आसपास के खंडित सुमेरियन संहिताएं, जैसे कि हम्मुराबी की विधि संहिता, रूप और शैली में मूसा की विधि के समान हैं। हम्मुराबी की विधि संहिता ने 300 खंडों में न्याय के सिद्धांतों को समझाया। यह संहिता समाज को कानून और व्यवस्था के माध्यम से नियंत्रित करने का प्रयास था। इसकी शैली दिलचस्प है; यह एक कविता की प्रस्तावना के साथ शुरू होती है, उसके बाद कानूनी खंड आता है और गैर-काव्यात्मक भाषा में एक उपसंहार के साथ समाप्त होती है। यह तीन-भागीय प्रारुप अय्यूब की पुस्तक में भी दिखाई देता है, साथ ही अधिक आधुनिक लेखनों में भी।

निर्गमन 20:1–17 की वाचा संरचना और व्यवस्थाविवरण में इसकी पूर्ण रूपरेखा, दूसरी सहस्राब्दी ई.पू. के बोगाज़कोई के हित्ती जागीरदार संधियों की संरचना के समान है। ये संधियाँ एक मानक प्रारूप में लिखी गई थीं, जिसे पुराने नियम के विभिन्न अंशों में भी देखा जा सकता है जैसे

- निर्गमन 20:1–17
- लैव्यव्यवस्था 18:1–30
- व्यवस्थाविवरण 1:1–31:30
- यिर्मयाह 31:31–37

उत्पत्ति में ऐसे तत्व शामिल हैं जो मेसोपोटामिया की साहित्यिक परंपराओं के समान हैं। उदाहरण के लिए, बार-बार आने वाला वाक्यांश "वंशावली यह है।" यह वाक्यांश और इसके आसपास का पाठ मेसोपोटामिया की पट्टिकाओं पर "कोलोफोन्स" (आधुनिक पुस्तकों में प्रकाशन जानकारी) के रूप में उपयोग किया जाता है। यह वाक्यांश, नुज़ी जैसे स्थलों से पारिवारिक सूचियों के साथ, यह सुझाव देता है कि प्रारंभिक उत्पत्ति की संक्षिप्त शैली सुमेरियन ऐतिहासिक लेखन के समान है।

इब्रानी ज्ञान साहित्य, जैसे कि नीतिवचन, जैसी समानताएँ अन्य प्राचीन ग्रंथों में भी पाई जाती है। उदाहरण के लिए, "अमेनेमोपी का उपदेश," एक मिस्री ग्रंथ, नीतिवचन 22:17–24:22 के साथ समानताएँ साझा करता है, हालांकि विद्वान इस पर बहस करते हैं कि क्या एक ग्रंथ ने दूसरे को प्रभावित किया या वे दोनों किसी पहले के, खोए हुए स्रोत से उत्पन्न हुए।

प्राचीन विश्व से पत्रों का रूप बाइबल में अक्सर उपयोग किया गया है (उदाहरण के लिए, 2 शमूएल 11; 1 राजाओं 21; 2 राजाओं 5:10, 20; एज्रा 4:6–7; नहेम्याह 2:7)। इस रूप का उपयोग मिस्री चर्मपत्रों में किया गया था, जैसे कि ज़ेनोन दस्तावेज़ और यूनानी लेखनों में जैसे प्लेटो के पत्र में। प्लेटो का *सातवां पत्र* लगभग 354 ई.पू. का है, जो प्रेरित पौलुस के पत्रों के समान है। प्लेटो का *सातवां पत्र* उनके शिक्षण के बारे में गलतफहमियों को सुधारने का प्रयास भी करता है। पौलुस के पत्र कभी-कभी मिस्र के कुछ पत्रों के व्यक्तिगत स्वभाव के समान हैं, विशेष रूप से फिलेमोन।

पुरातत्व और भाषा

पुरातत्व के माध्यम से प्राचीन भाषाओं की पुनःप्राप्ति ने हमें पुराने नियम को समझने में मदद की है। पुराने नियम में कई अभिव्यक्तियाँ मूल रूप से सुमेरियन या अक्कादी मानी गई हैं। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 1:1 में "आकाश और पृथ्वी" वाक्यांश। सुमेरियन में यह अभिव्यक्ति *अन-की* है, जिसका अर्थ है "ब्रह्मांड।" यह वाक्यांश संपूर्णता को व्यक्त करने के लिए दो विपरीत शब्दों का उपयोग करता है, जो एक साहित्यिक उपकरण है जो प्रकाशितवाक्य 22:13 में भी देखा जाता है।

उगारितिक और एब्लाइक दोनों पश्चिमी यहूदी बोलियाँ हैं जो इब्रानी से निकटता से संबंधित हैं। इन बोलियों ने अस्पष्ट इब्रानी काव्यात्मक भाषा में अंतर्दृष्टि प्रदान की है, यह प्रकट करते हुए कि यह प्राचीन कनानी अभिव्यक्तियों को संरक्षित करती है। अरामी एक और उत्तर-पश्चिमी यहूदी भाषा है। अरामी के अध्ययन ने पुराने नियम के कुछ भागों में प्रयुक्त भाषा को भी स्पष्ट किया है, जैसे कि एज्रा और दानिय्येल की पुस्तकें। ये शाही अरामी में लिखी गई थीं। पाँचवीं और चौथी शताब्दी ई.पू. के एलीफैंटाइन चर्मपत्र इन ग्रंथों की प्रारंभिक तिथि का समर्थन करते हैं।

नया नियम कोइन, या "सामान्य" यूनानी में लिखा गया था, जो पश्चिमी एशिया और रोमी साम्राज्य की सामान्य भाषा थी। नए नियम की यूनानी में अक्सर यहूदी अभिव्यक्तियाँ होती हैं, जिन्हें यदि पहचाना न जाए, तो गलत अनुवाद हो सकते हैं।

बाइबल अध्ययन के लिए महत्व

पुरातात्त्विक खोजों ने प्राचीन विश्व के हमारे ज्ञान को काफी बढ़ाया है। उन्होंने हमें बाइबल के लोगों को वास्तविक ऐतिहासिक व्यक्तियों के रूप में देखने की अनुमति दी है। ये व्यक्ति तनाव और सांस्कृतिक उपलब्धियों के समय में जीते थे। वे पौराणिक व्यक्ति नहीं थे। वे जीवन की समस्याओं से जूझते थे। कभी-कभी उन्हें परमेश्वर के सर्वशक्तिमान और सर्वपवित्र रूप के दर्शन होते थे, जो उन्हें और उनके राष्ट्रों को मार्गदर्शन करते थे और इतिहास में उनके उद्देश्य को पूरा करने में उनकी सहायता करते थे।

पुरातत्व यह दर्शाता है कि इब्रानियों का अध्ययन प्राचीन पश्चिमी एशिया के व्यापक संदर्भ में किया जाना चाहिए, जो सुमेरियों और एजियन जैसे विविध लोगों को शामिल करने वाली एक बड़ी संस्कृति का हिस्सा थे। इस अध्ययन को निष्पक्ष रूप से अपनाना आवश्यक है। हमें बाइबल घटनाओं और जीवन को समझने के लिए प्रमाणों का उपयोग करना चाहिए। यद्यपि पुरातात्विक व्याख्याओं और बाइबल प्रमाणों के बीच कभी-कभी संघर्ष हो सकता है, ये दुर्लभ होते हैं और अधिक जानकारी मिलने पर कम हो जाते हैं।

पुरातत्वशास्त्र, पवित्रशास्त्र के आत्मिक सत्य को प्रमाणित या खंडित नहीं कर सकता, लेकिन यह इब्रानी इतिहास को

प्रमाणित करता है। यह पुराने और नए नियम में कई पहले से अनिश्चित शब्दों और परंपराओं को स्पष्ट करता है। ऐसा करते हुए, पुरातत्वशास्त्र उन भविष्यवाणियों के लिए एक ठोस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रदान करता है जो यीशु मसीह के जीवन की ओर ले जाती हैं।

पुराना नियम

देखिए बाइबल।

पुराना नियम कालक्रम

देखें बाइबल की समयरेखा (पुराना नियम)।

पुराना नियम कैनन

देखें बाइबल का कैनन।

पुराना पुरुष

देखें पुराना और नया पुरुष।

पुराना फाटक

यरूशलेम का वह फाटक जो योयादा और मशुल्लाम द्वारा नहेम्याह की देखरेख में मरम्मत किया गया (नहे 3:6), और बाद में यरूशलेम की शहरपनाह के समर्पण के दौरान उत्सव मनाने वालों की एक टोली द्वारा यात्रा किए गए उत्तरी मार्ग में उल्लेख किया गया (12:39)। पुराना फाटक नगर की उत्तरी दीवार में मछली फाटक और एप्रैम के फाटक के बीच स्थित था (12:38–39)।

यह भी देखें यरूशलेम।

पुरालेख विद्या

प्राचीन शिलालेखों का अध्ययन। *देखें* शिलालेख (वर्णमाला)।

पुरुषगामी (समलैंगिकता)

पुरुषगामी (समलैंगिकता)

See यौन-क्रिया, कामुकता देखें।

पुरूर्स

पुरूर्स

बिरीया के सोपत्रुस के पिता, जो अन्य लोगों के साथ, पौलुस के साथ मकिदुनिया के माध्यम से उनकी वापस आने की यात्रा में शामिल हुए थे (प्रेरि 20:4)।

पुरोहित का टोप

पगड़ी के लिए किंग जेम्स संस्करण अनुवाद। पगड़ी एक प्रकार का सिर पर पहनने वाला वस्त्र है, जिसे इस्राएल के महायाजक द्वारा पहना जाता है, जैसा कि निर्गमन 28:4 में उल्लेख है।

देखें याजक और लेवी।

पुल्लतै, पुलतै

ओबेदेदोम का पुत्र, जो दाऊद के शासनकाल के दौरान पवित्रस्थान में लेवी द्वारपाल था (1 इति 26:5)।

पुव्वा

इस्साकार का पुत्र, जो याकूब और उनके घराने के साथ मिस्र गया, जहाँ उसने फिलिस्तीन में भयंकर अकाल से शरण मांगी (उत 46:13; "पूआ")। पुव्वा ने पुव्वियों परिवार की स्थापना की (गिन 26:23) और उन्हें 1 इतिहास 7:1 में पूआ भी कहा जाता है।

पुव्वियों

पुव्वियों

देखें पुव्वियों।

पुव्वी

पुव्वी

इस्साकार के गोत्र में एक परिवार का सदस्य, जिनका नेतृत्व पुव्वा (गिन 26:23) द्वारा किया गया था। *देखें* पुव्वा।

पुस्तक

लिखित पृष्ठों या कुण्डलपत्र का एक सेट जिसमें अभिलेख या कहानी लिखी होती है। ये आमतौर पर लकड़ी, चर्मपत्र या सरकंडे से बने होते हैं। पृष्ठों वाली जिल्दबंद पुस्तकें बाद में, बाइबिल काल के बाद विकसित की गईं। बाइबल के संदर्भ में, प्रत्येक व्यक्तिगत रचना को "पुस्तक" कहा जाता है क्योंकि यह दस्तावेज़ बाइबिल संग्रह का हिस्सा बनने से पहले यही था। इस प्रकार, बाइबल में 66 पुस्तकें हैं—जैसे उत्पत्ति, यशायाह, मत्ती, और प्रकाशितवाक्य।

प्राचीन इब्रानी लोगों के लिए सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक व्यवस्था की पुस्तक थी (2 रा 22:8), क्योंकि यह परमेश्वर से मूसा को आई थी (यहो 23:6; मर 12:26) और इसमें मूसा की वाचा का अभिलेख था (उदा., निर्ग 20)। परमेश्वर ने यहोशू को इसे दिन और रात ध्यान करने का निर्देश दिया (यहो 1:8)। नबियों ने विशेष रूप से व्यवस्थाविवरण को लगातार उद्धृत किया है। योशिय्याह के शासनकाल में मन्दिर के नवीनीकरण के दौरान व्यवस्था की पुस्तक की खोज ने महत्वपूर्ण धार्मिक सुधारों को जन्म दिया (2 रा 22:8–13)।

कुछ पुस्तकें जिन्हें विशेष रूप से बाइबिल के स्रोत सामग्री के रूप में चिह्नित किया गया है, वे हैं परमेश्वर के युद्धों की पुस्तक (गिन 21:14), याशार की पुस्तक (यहो 10:13; 2 शमू 1:18), सुलैमान के कार्यों की पुस्तक (1 रा 11:41), और यहूदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक (14:29)। उन पुस्तकों में दर्ज सामग्री के स्रोत के रूप में इतिहास की पुस्तकों में कई भविष्यसूचक कार्यों का उल्लेख दिया गया है। इनमें से कुछ हैं जैसे शमूएल दर्शी का इतिहास, नातान नबी का इतिहास, गाद दर्शी का इतिहास (1 इति 29:29), और शीलोवासी अहिय्याह की भविष्यवाणी थी (2 इति 9:29)। यह तथ्य कि इतिहास के लिए भविष्यवाणी स्रोतों का उपयोग किया गया था, यह दर्शाता है कि इब्रानी लोग अपने इतिहास को परमेश्वर के कार्यों का अभिलेख मानते थे। *देखें*लेखन।

पुस्तक, यशायाह की

पूर्वावलोकन

- लेखक
- तिथि
- पृष्ठभूमि
- साहित्यिक एकता
- धर्मशास्त्रीय शिक्षा
- विषयवस्तु

लेखक

भविष्यद्वक्ता यशायाह, जिनके नाम का अर्थ है "येहोवा बचाता हैं," यरूशलेम में रहते थे और वहाँ सेवा करते थे। यहूदा के राजाओं के साथ उनके बार-बार सम्पर्क के कारण, कुछ विद्वानों का मानना था कि यशायाह राज परिवार से सम्बंधित थे, लेकिन यह निश्चित नहीं है। अध्याय 7 और 8 के अनुसार, यशायाह विवाहित थे और उनके कम से कम दो पुत्र थे, शार्याशूब और महेर्शालाल्हाशबज, जिनके प्रतीकात्मक नामों ने देश के साथ परमेश्वर के व्यवहार को दर्शाया। “शिष्य” जिनका उल्लेख 8:16 में किया गया है, संभवतः यशायाह की सेवकाई में उनकी सहायता करते थे और शायद उन्होंने उस पुस्तक को लिखने में भी मदद की हो जो उनके नाम से जानी जाती है।

जब यशायाह ने अध्याय 6 में वर्णित प्रसिद्ध मन्दिर दर्शन में प्रभु को देखा, तो वह जहाँ भी परमेश्वर उन्हें भेजते, जाने के लिए तैयार थे, भले ही उन्हें कड़ी विरोध का सामना करना पड़े (6:9–10)। राजा आहाज ने विशेष रूप से यशायाह की सलाह का विरोध किया (7:4–17), और आमतौर पर लोगों ने उनके उपदेश का मजाक उड़ाया (5:10–12; 28:9–10)। हालांकि, धर्मपरायण हिजकिय्याह के शासनकाल के दौरान, यशायाह की सेवकाई की बहुत सराहना की गई, और संकट के समय में राजा ने उनसे उत्सुकता से परामर्श किया (37:1–7, 21–35)।

यशायाह को आमतौर पर लेखन भविष्यद्वक्ताओं में सबसे महान माना जाता है। उनकी किताब के कुछ अध्याय एक बेजोड़ साहित्यिक सुन्दरता प्रदर्शित करते हैं और काव्यात्मक उपकरणों और समृद्ध प्रतीकों की विविधता का उपयोग करते हैं। अध्याय 40–66 में कई शक्तिशाली अंश शामिल हैं जो पुस्तक की भव्यता को उजागर करते हैं। यह विडम्बना है कि कई विद्वान इन अध्यायों को "दूसरे" या "तीसरे" यशायाह को मानते हैं, अज्ञात लेखक जिन्होंने बेबिलोनी बँधुआई के समय यशायाह के बहुत बाद में लिखा। फिर भी पुराने नियम में कहीं और, उन सभी के नाम जिन्होंने भविष्यद्वानी की पुस्तकें लिखीं, संरक्षित हैं, और यह बहुत असामान्य होगा कि यहूदियों को यह न पता हो कि इतने शानदार भविष्यद्वानी अध्याय 40–66 किसने लिखे होंगे।

तिथि

चूंकि अध्याय 1–39 में दर्ज कई घटनाएँ यशायाह की सेवा के दौरान हुईं, इसलिए इनमें से अधिकांश अध्याय संभवतः लगभग 700 ई.पू. या उसके तुरन्त बाद लिखे गए थे। 701 ई.पू. में अश्शूर सेना का विनाश पुस्तक के पहले भाग का पराकाष्ठा है, जो 10:16, 24–34 और 30:31–33 की भविष्यद्वानी को पूरा करता है। 37:38 में यशायाह राजा सन्हेरीब की मृत्यु का उल्लेख करते हैं, जो 681 ई.पू. तक नहीं हुई थी। इसका मतलब है कि कुछ पहले के अध्याय, 40–66 के साथ, शायद बाद में, यशायाह के सेवानिवृत्ति के वर्षों के

दौरान लिखे गए थे। कई दशकों का अन्तर पुस्तक के अन्तिम आधे हिस्से में पाए जाने वाले विषय वस्तु में बदलाव का कारण हो सकता है। इन अध्यायों में यशायाह भविष्य में यहूदियों को संबोधित करते हैं जो लगभग 550 ई.पू. में बाबेल में बँधुआई में होंगे।

पृष्ठभूमि

यशायाह की सार्वजनिक सेवा मुख्य रूप से 740–700 ई.पू. के दौरान हुई, जो अश्शूर देश के तेजी से विस्तार की अवधि थी। राजा तिग्लत्पिलेसेर तृतीय (745–727 ई.पू) के अधीन, अश्शूर पश्चिम और दक्षिण की ओर बढ़े, और 738 ई.पू तक अश्शूर सम्राट दमिश्क और इस्राएल से कर मांग रहा था। 734 ई.पू के आसपास दमिश्क (सीरिया) के रसीन और इस्राएल के पेकाह ने अश्शूर के खिलाफ विद्रोह करने के लिए एक गठबंधन बनाया, और उन्होंने यहूदा के राजा आहाज का समर्थन प्राप्त करने की कोशिश की। लेकिन आहाज ने शामिल होने से मना कर दिया, और जब दमिश्क और इस्राएल के राजाओं ने यहूदा पर आक्रमण किया (देखें 7:1), तो आहाज ने सीधे तिग्लत्पिलेसेर से मदद की अपील की (पुष्टि करें 2 रा 16:7–9)। थोड़े संकोच के साथ अश्शूर ने दमिश्क पर कब्जा करने और उत्तरी इस्राएल के राज्य को अश्शूर प्रांत में बदलने के लिए वापसी की।

कठपुतली राजा होशे ने 732–723 ई.पू. तक इस्राएल पर शासन किया लेकिन जब उसने नए अश्शूर राजा शल्मनेसेर पाचवें के खिलाफ विद्रोह में शामिल हो गया तो उसे कैद कर लिया गया। शल्मनेसेर ने सामरिया की राजधानी नगर की घेराबंदी की, जो अंततः 722 ई.पू. में गिर गई, जिससे उत्तरी राज्य का अंत हो गया। सारगोन ने 722 में शल्मनेसर का उत्तराधिकार किया और कई विद्रोहों को शांत करना पड़ा। 711 ई.पू में सर्गोन ने अशदोद के पलिश्ती नगर पर कब्जा कर लिया, जो यशायाह की भविष्यद्वानी के अध्याय 20 का अवसर बन गया।

705 ई.पू में सन्हेरीब के शासन में आने के साथ ही व्यापक विद्रोह शुरू हो गया, जो और भी महत्वपूर्ण था। यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने अपने सामान्य कर का भुगतान रोक दिया, और 701 ई.पू तक सन्हेरीब ने विद्रोहियों को दण्डित करने के लिए फिलिस्तीन पर आक्रमण कर दिया। इस अभियान का विवरण यशायाह 36–37 में दिया गया है और यह बताता है कि कैसे एक के बाद एक नगर को अश्शूर द्वारा कब्जा कर लिया गया था, इससे पहले कि आक्रमणकारी यरूशलेम के द्वार पर खड़े होकर पूर्ण आत्मसमर्पण की मांग करते। जीवित रहने की लगभग कोई उम्मीद नहीं होने के बावजूद, हिजकिय्याह को यशायाह ने परमेश्वर पर भरोसा करने के लिए प्रोत्साहित किया, और एक रात में प्रभु के दूत ने 185,000 अश्शूर सैनिकों को मार डाला, जिससे सन्हेरीब की सेना लगभग समाप्त हो गई (यशा 37:36–37)।

पुस्तक, यशायाह की

अश्शूर के दुश्मनों से मित्रता करने के प्रयास में, हिजकिय्याह ने बाबेल के राजा के दूतों को अपने भण्डार दिखाए (39:1–4)। यशायाह ने चेतावनी दी कि एक दिन बेबिलोनी सेनाएँ यरूशलेम पर विजय प्राप्त करेंगी और उन खजानों के साथ नगर के निवासियों को भी ले जाएंगी (पद 5–7)। न केवल यशायाह ने 586–539 ई.पू के बाबेल बंदीगृह की भविष्यद्वानी की (पुष्टि करें 6:11–12), लेकिन उन्होंने यह भी भविष्यद्वानी की थी कि इस्राएल बाबेल से मुक्त हो जाएगा (48:20)। कसदी राज्य, जिसका नेतृत्व नबूकदनेस्सर कर रहा था, यहूदा पर परमेश्वर का न्याय का साधन बनेगा, लेकिन वे भी पराजय का सामना करेंगे। यशायाह की सबसे उल्लेखनीय भविष्यद्वानियों में से एक फारस के राजा कुस्रू का नामकरण था, वह शासक जिसने 539 ई.पू में बाबुल को पराजित किया और इस्राएल को बँधुआई से मुक्त किया (पुष्टि करें 44:28)। मादी लोगों के साथ (पुष्टि करें 13:17), कुस्रू ने बाबेल के विरुद्ध अपनी सेना भेजने से पहले कई महत्वपूर्ण जीत हासिल की। यशायाह ने उसे इस्राएल को मुक्ति दिलाने के लिए प्रभु द्वारा अभिषिक्त व्यक्ति के रूप में सम्मानित किया (45:1–5)।

साहित्यिक एकता

बाबुल और फारस के बाद के राज्यों के संदर्भों के कारण, यशायाह की एकता पर सवाल उठाया गया है। अध्याय 40–66 अचानक 550 ई.पू के बँधुआई काल में चले जाते हैं, जो यशायाह के जीवन के लगभग 150 साल बाद है। इसके अलावा, प्रभु का सेवक इन अध्यायों में प्रमुख भूमिका निभाते हैं और मसीही राजा पृष्ठभूमि में चला जाता है। अद्भुत काव्यात्मक पद्यांश 40, 53, 55, और 60 अध्यायों में पाए जाते हैं, जो उल्लेखनीय गहराई और शक्ति को दर्शाते हैं।

हालांकि इन कारकों को कभी-कभी बिसंगति का संकेत माना जाता है, वास्तव में पुस्तक में एकता के लिए मजबूत संकेत हैं। उदाहरण के लिए, ऐतिहासिक मध्यांतर (अध्याय 36–39) एक कड़ी या पुल का काम करता है जो अध्याय 1–35 और 40–66 को जोड़ता है। अध्याय 36–37 अश्शूरिय खण्ड को पूरा करते हैं, और अध्याय 38–39 बाबेल विषयवस्तु को प्रस्तुत करते हैं। अधिकांश जोड़ने वाले अध्याय गद्य में लिखे गए हैं, जबकि अन्य (कुछ अनुवादों में) मुख्यतः कविता हैं। मौखिक या शैलीगत एकता के दृष्टिकोण से, कोई यशायाह के लिए परमेश्वर के पसंदीदा शीर्षक, "इस्राएल का पवित्र जन" की ओर इशारा कर सकता है। यह शीर्षक अध्यायों 1–39 में 12 बार, और अध्यायों 40–66 में 14 बार प्रकट होता है, लेकिन बाकी पुराने नियम में केवल सात बार मिलता है। प्रसिद्ध सेवक गीतों का अध्ययन 52:13–53:12 कई पूर्ववर्ती पद्यांशों, विशेष रूप से अध्यायों 1–6 में, के साथ कई सम्बन्धों को प्रकट करता है। जो सेवक मारा और घायल किया गया है (53:4–5), वही दण्ड प्राप्त करता है जो पीटे गए और घायल देश को 1:5–6 में मिला था (साथ ही पुष्टि करें 52:13 के साथ 2:12 और 6:1)।

पुस्तक, यशायाह की

धर्मशास्त्रीय शिक्षा

पुराने नियम में यशायाह वैसा ही है जैसे नए नियम में रोमियों की पुस्तक — एक पुस्तक जो गहन धार्मिक सत्य से भरी हुई है। रोमियों की तरह, यशायाह परमेश्वर के विद्रोही लोगों के पापपूर्णता और उनके उद्धार के कृपालु प्रावधान को प्रकट करता है। क्योंकि परमेश्वर इस्राएल का पवित्र है (1:4; 6:3), वह पाप को अनदेखा नहीं कर सकता, बल्कि दोषियों को दण्डित करना आवश्यक है। इस्राएल (5:30; 42:25) और अन्य जातियों (2:11, 17, 20) दोनों न्याय के समय का अनुभव करते हैं जिसे प्रभु का दिन कहा जाता है। क्रोध में परमेश्वर अपने लोगों के खिलाफ अपना हाथ उठाते हैं (पुष्टि करें 5:25), लेकिन अंततः उसका क्रोध बाबेल और अन्य जातियों पर उंडेला जाता है (पुष्टि करें 13:3–5; 34:2)।

अश्शूर और बाबेल के पतन के साथ, प्रभु का दिन एक आनंदमय विजय का दिन बन जाता है (10:27; 61:2)। यशा 63:4 के अनुसार, यह प्रभु के उद्धार का वर्ष है। पहले, इस्राएल को मिस्र में दासता से मुक्त किया गया था; अब बाबेल की कैद से वापसी समान आनन्द लाती है (52:9; 61:1)। अन्तिम छुटकारा मसीह की मृत्यु के माध्यम से पूरी की जानी है, और यशा 53 हमारे प्रभु के कष्ट और मृत्यु का विस्तार से वर्णन करता है। उनकी सेवा के रूप में पीड़ित सेवक का परिचय 49:4 और 50:6–7 में भी दिया गया है; इस बीच, 49:6 कहता है कि सेवक "अन्यजातियों के लिये ज्योति" होगा। दूसरे आगमन की ओर देखते हुए, यशायाह शांति और धार्मिकता के एक मसीह युग की भविष्यद्वानी करते हैं। जाति-जाति के लोग अपनी तलवारों को हल में बदल देंगे (2:4) और "शांति का राजकुमार" हमेशा के लिए शासन करेंगे (9:6–7)।

पुरे पुस्तक में परमेश्वर को सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता के रूप में चित्रित किया गया है (48:13)—सर्वश्रेष्ठ, जो सिंहासन पर विराजमान है, उच्च और महिमान्वित; राजा, सर्वशक्तिमान परमेश्वर (6:1, 5)। वह पृथ्वी की सेनाओं को नियंत्रित करता है (13:4) और अपनी इच्छा से शासकों को हटाता है (40:23–24)। उसके सामने जातियाँ 'बाल्टी में एक बूँद' के समान हैं (40:15), और उसकी तुलना में सभी मूर्तियाँ निरर्थक और शक्तिहीन हैं (41:29; 44:6)। यही वह परमेश्वर है जो अपने शत्रुओं पर क्रोध और अपने सेवकों पर प्रेम प्रकट करता है (66:14)।

विषयवस्तु

न्याय और आशा के संदेश (1–12)

प्रारम्भिक अध्याय में यशायाह इस्राएल (यहूदा सहित) को "एक पापी जाति" के रूप में वर्णित करता है जिसने परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह किया है। हालांकि लोग नियमित रूप से उसे भेंट चढ़ाते हैं, उनकी उपासना कपटपूर्ण है, गरीब और असहाय लोगों के प्रति उनके उत्पीड़न को छिपाने का एक प्रयास है। प्रभु इस्राएल जाति को उनके पापों से पश्चाताप करने या न्याय की आग का सामना करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इस परिचय के बाद, यशायाह मसीही युग की शांति का वर्णन करने के लिए 2:1–4 में मुड़ते हैं। वह दिन आएगा जब सभी देश परमेश्वर के वचन का पालन करेंगे और शांति से रहेंगे। "प्रभु का पर्वत"—यरूशलेम—उठाया जाएगा "और सभी देश उसकी ओर बहेंगे" (2:2–3)। इस बीच, हालांकि, इस्राएल और अन्य जातियों ने प्रभु के खिलाफ खुद को ऊंचा किया है, और वह अपनी शक्ति के अद्भुत प्रदर्शन में उनका न्याय करेगा। इस्राएल के लिए, परमेश्वर का न्याय बड़ी उथल-पुथल लाएगा, जिसमें इसके प्रधानों का नुकसान भी शामिल है। अवज्ञाकारी और निर्दयी शासकों को या तो मृत्यु का सामना करना पड़ेगा या बँधुआई का। अध्याय 3 का अंत सिय्योन की महिलाओं के अभिमान और अहंकार की निंदा करते हुए होता है; वे भी अपमान सहेंगी। येरूशलेम के पाप से शुद्ध होने के बाद, बचे हुए लोग "प्रभु की शाखा" के शासन का आनन्द लेंगे, जो अपने लोगों की रक्षा और सुरक्षा करेगा (4:2–6)।

5:1–7 में यशायाह इस्राएल के बारे में एक छोटा सा गीत प्रस्तुत करता है, जो परमेश्वर की दाख की बारी है। प्रभु ने अच्छे अंगूरों की पैदावार सुनिश्चित करने के लिए हर सम्भव प्रयास किया, लेकिन दाख की बारी ने केवल खराब फल ही पैदा किए और उसे नष्ट करना पड़ा। तब यशायाह इस्राएल के विरुद्ध छह श्रापों की घोषणा करता है, और घोषणा करता है कि अश्शूर की सेना देश पर आक्रमण करेगी। इस्राएल के पाप की पृष्ठभूमि में, यशायाह (अध्याय 6) उस दर्शन का वर्णन करता है जिसके माध्यम से उसे भविष्यद्वक्ता के रूप में बुलाया गया था। परमेश्वर की पवित्रता और अपनी पापपूर्णता से अभिभूत होकर, यशायाह ने सोचा कि वह नष्ट हो गया है, लेकिन जब उसे आश्वासन मिला कि उसके पाप क्षमा कर दिए गए हैं, तो उसने उस जाति की जिद के बावजूद परमेश्वर के बुलावे का सकारात्मक उत्तर दिया, जिसके पास उसे भेजा गया था।

पूरे देश में सबसे कठोर व्यक्तियों में से एक यहूदा का राजा आहाज था, और अध्याय 7 में यशायाह की इस अधर्मी शासक के साथ मुठभेड़ का वर्णन है। जब अहाज को दमिश्क और उत्तरी राज्य द्वारा धमकी दी गई, तो उसने यशायाह के इस वादे पर विश्वास करने से इंकार कर दिया कि परमेश्वर उसकी रक्षा करेंगे। यह वह अवसर था जब यशायाह ने आहाज को इम्मानुएल का चिन्ह दिया (7:14)। "कुँवारी" अंततः मरियम को संदर्भित करती है और "इम्मानुएल" मसीह को (मत्ती 1:23), लेकिन निकट भविष्यद्वानी में बच्चा यशायाह का अपना पुत्र महेर्शालाल्हाशबज हो सकता है (यशा 8:3)। (यीशु का कुंवारी से जन्म में इस अनुच्छेद की चार व्याख्याएं देखें) यह नाम (जिसका अर्थ है "लूटने में तेज और बर्बाद करने में जल्दी," पद 1) एक संकेत होगा कि जल्द ही यहूदा के दुश्मन गिर जाएंगे; "इम्मानुएल" का अर्थ था कि परमेश्वर

यहूदा के साथ होंगे (पद10)। हालांकि, अगर आहाज ने अश्शूर के राजा से मदद की अपील की, तो यशायाह ने उसे चेतावनी दी कि अश्शूर की शक्तिशाली सेनाएँ एक दिन यहूदा पर भी आक्रमण करेंगी (पुष्टि करें 7:17–25; 8:6–8)। अश्शूर द्वारा लाई गई विनाशकारी स्थिति यहूदा को अकाल और संकट के समय में डाल देगी (8:21–22)।

फिर भी, अश्शूर के आक्रमण से जुड़ी उदासी और अंधकार अनिश्चित काल तक नहीं रहेंगे, और 9:1–5 शांति और आनन्द के समय की बात करता है। पद 6–7 एक बच्चे का परिचय देते हैं जो एक धर्मी राजा बनेगा और हमेशा के लिए शासन करेगा। यह "शांति का राजकुमार" मसीह है, "सर्वशक्तिमान परमेश्वर" जिसका राज्य 2:2–4 में वर्णित है।

हालांकि, निकट भविष्य में, दोनों इस्राएल और यहूदा अपने पापों की सजा के रूप में युद्ध की पीड़ा झेलेंगे। परमेश्वर अपने लोगों से क्रोधित हैं क्योंकि वे अभिमानी और अहंकारी हैं, और उनके प्रधान गरीबों और जरूरतमंदों की प्रार्थनाओं को नजरअंदाज करते हैं। गृहयुद्ध और विदेशी आक्रमण असहाय राष्ट्र को कुचल देंगे (9:8–10:4)। लेकिन एक बार जब इस्राएल का न्याय हो जाएगा, तो परमेश्वर अपना हाथ अश्शूर के खिलाफ करेंगे, उस साधन के खिलाफ जिसका उसने अन्य देशों का न्याय करने के लिए उपयोग किया है। उसकी जीत की श्रृंखला के कारण, अश्शूर अहंकार से भरी हुई है और अधिक विजय के लिए उत्सुक है। फिर भी जब यरूशलेम हारने वाला होता है, तब भी परमेश्वर लबानोन में देवदार की तरह अश्शूर की सेना को काट डालेंगे और अपने लोगों को बचाएंगे (10:26–34)।

अश्शूर की हार के बाद, यशायाह इस्राएल की बहाली और मसीह के शक्तिशाली शासन का वर्णन करता है (अध्याय 11)। यहूदी और गैर-यहूदी दोनों यरूशलेम की ओर आकर्षित होंगे ताकि शांति और न्याय के युग का आनन्द ले सकें। दाऊद की तरह, मसीह पर भी परमेश्वर की आत्मा होगी जो दुष्टों का न्याय करेंगे और जरूरतमंदों की रक्षा करेंगे। इन प्रारम्भिक संदेशों को समाप्त करने के लिए, यशायाह दो छोटे स्तुति गीत प्रस्तुत करते हैं जो परमेश्वर की पिछले उद्धार और भविष्य के आशीष के वादे का जश्न मनाते हैं (अध्याय 12)।

जातियों के विरुद्ध भविष्यद्वानियाँ (13–23)

हालांकि बाबेल उस समय की प्रमुख शक्ति नहीं है, यशायाह अपने न्याय की घोषणाओं की शुरुआत दक्षिण में अश्शूर के पड़ोसी के विनाश के बारे में दो अध्यायों से करते हैं। बाबेल अंततः यरूशलेम पर विजय प्राप्त करेगा (605 और 586 ई.पू के बीच), लेकिन मादियों (13:17) और एलामीयों के साथ बाबेल पर कब्जा कर लेंगे (539 ई.पू)। भविष्य के बाबेल के राजाओं द्वारा प्राप्त की जाने वाली महिमा के बावजूद, परमेश्वर उनकी शोभा को कब्र तक गिरा देंगे (14:9–10)। अध्याय का अंत अश्शूर और पलिश्तियों के खिलाफ छोटी भविष्यद्वानियों के साथ होता है।

इस्राएल के सबसे पुराने शत्रुओं में से एक मोआब देश था, जो मृतक सागर के पूर्व में स्थित था। हालांकि यह एक छोटा देश था, यशायाह ने लूत के इन वंशजों को दो अध्याय समर्पित किए हैं। अध्याय 15 उनके नगरों में व्यापक शोक का वर्णन करता है। एक संक्षिप्त अंतराल के बाद मोआबियों से इस्राएल और उसके परमेश्वर के अधीन होने का आग्रह करते हुए (16:1–5), यशायाह बताता है कि घमण्ड मोआब के पतन का कारण बनेगा। रोने की आवाजें पूरे देश में गूंजेंगी, क्योंकि अंगूर की बेलें और खेत सूख जाएंगे और रौंदे जाएंगे।

अध्याय 17 में चौथी भविष्यद्वानी दमिश्क और एप्रैम (इस्राएल का उत्तरी राज्य) के खिलाफ निर्देशित है, जो कदाचित 734 ई.पू के आसपास यहूदा के खिलाफ उनके गठबंधन को दर्शाता है। दोनों देश बर्बाद हो जाएंगे, और एप्रैम को प्रभु, उसके "उद्धारकर्ता" और "चट्टान" को छोड़ने के लिए दोषी ठहराया गया है (17:10)।

अध्याय 18 और 19 में यशायाह दक्षिण की ओर मुड़ते हैं और कूशियों और मिस्र को संबोधित करते हैं, देश जिनके 715–633 ई.पू के दौरान आपस में मजबूत सम्बन्ध थे, जब कूशियों का शासक शबाको मिस्र का फिरौन बना। लेकिन मिस्र असहमति से ग्रस्त है और अश्शूर राजाओं के हाथों बहुत पीड़ित है। अपने प्रधानों की कथित बुद्धिमत्ता के बावजूद, मिस्र आर्थिक और राजनीतिक बर्बादी का सामना कर रहा है (19:5–15)। फिर भी समय आ रहा है जब मिस्रवासियों को पुनःस्थापित किया जाएगा और वे इस्राएल के परमेश्वर की आराधना करेंगे। अश्शूर और इस्राएल के साथ, मिस्र एक आशीष बनेगा (19:24)। कुछ व्याख्याकारों का मानना है कि यह भविष्यद्वानी कलीसिया युग के दौरान गैर-यहूदियों के उद्धार की है, लेकिन अन्य इसे सहस्राब्दी युग की शांति से जोड़ते हैं (पुष्टि करें 2:2–4; 11:6–9)। हालांकि निकट भविष्य के लिए, यशायाह घोषणा करते हैं कि अश्शूर कई मिस्रियों और कूशियों को बंदी बना लेगा (अध्याय 20)।

बाबुल के बारे में दूसरी भविष्यद्वानी (पुष्टि करें 13:1–14:23) अध्याय 21 में समाहित है, और यशायाह बाबेल के पतन के प्रभाव को देखते हुए स्तब्ध है (21:3–4)। जब बाबेल गिर जाएगी, तो दुनिया जान जाएगी कि उसके देवता शक्तिहीन थे (21:9; पुष्टि करें प्रका 14:8; 18:2)।

हालांकि यह जातियों के खिलाफ इन भविष्यद्वानियों के बीच असंगत लगता है, अध्याय 22 यरूशलेम नगर की निंदा करता है। जातियों की तरह, यरूशलेम भी उल्लास से भरा है (22:2) लेकिन जल्द ही एक घेराबंदी के आतंक का अनुभव करेगा। चूंकि लोग अब प्रभु पर निर्भर नहीं हैं (पद 11), वह उन्हें शत्रु के हवाले कर देगा। यरूशलेम की बेवफाई का उदाहरण शेबना है, जो अहंकार और भौतिकवाद के दोषी एक उच्च अधिकारी हैं जिनका स्थान धार्मिक एलयाकीम द्वारा लिया जाएगा (पद 15–23)।

अंतिम भविष्यवाणी (अध्याय 23) त्यर नगर के खिलाफ

निर्देशित है, जिसने तब तक कब्जे का विरोध किया जब तक सिकंदर महान ने 332 ई.पू. में द्वीप किले को नहीं जीता। जब त्यर गिरा, तो पूरे भूमध्यसागरीय क्षेत्र की अर्थव्यवस्था हिल गई, क्योंकि उसके जहाजों ने राष्ट्रों के सामान को दूर-दूर तक पहुँचाया था।

अंतिम न्याय और आशीष (24–27)

यह खण्ड अध्याय 13–23 का एक भव्य समापन के रूप में कार्य करता है क्योंकि यह जातियों पर परमेश्वर के न्याय और परमेश्वर के राज्य के उद्घाटन की भविष्यद्वानी करता है। एक अपवित्र पृथ्वी को अपनी सजा सहनी होगी (24:5–6) और यहाँ तक कि शैतान की ताकतों को भी न्याय का सामना करना पड़ेगा (पद 21–22)।

अध्याय 25 में यशायाह परमेश्वर की महान विजय पर आनन्दित होता है और उस दिन की ओर देखता है जब मृत्यु को निगल लिया जाएगा और सभी चेहरों से आंसू पोंछे जाएंगे (25:8)। इस्राएल के लम्बे समय से शत्रु, मोआब द्वारा प्रतीकित, नीचा दिखाया जाएगा (पद 10–12), लेकिन यरूशलेम धर्मियों के लिए एक गढ़ होगा (26:1–3)। 26:7–19 में देश प्रार्थना करता है कि ये वादे वास्तविकता बन जाएं। पद 20–21 इंगित करते हैं कि प्रभु वास्तव में प्रतिक्रिया देंगे, पाप से शापित पृथ्वी और स्वयं शैतान पर अपना क्रोध प्रकट करेंगे (27:1)। जब ऐसा होगा, इस्राएल एक फलदायी अंगूर का बाग होगा, जो पूरे विश्व के लिए आशीष होगा (27:2–6; पुष्टि करें 5:1–7)। सबसे पहले, हालांकि, इस्राएल को युद्ध और बँधुआई सहना होगा, और फिर बचे हुए लोग यरूशलेम लौट आएंगे।

विपत्तियों की श्रृंखला (28–33)

अपने ऐतिहासिक काल में लौटते हुए, यशायाह उत्तरी और दक्षिणी दोनों राज्यों पर, साथ ही अश्शूर पर भी एक श्रृंखला की विपत्तियाँ घोषित करते हैं (अध्याय 33)। अध्याय 28 उत्तरी राज्य की राजधानी सामरिया की घटती शक्ति के वर्णन से शुरू होता है। पद 7–10 यहूदा के प्रधानों को उसी रोशनी में चित्रित करते हैं; उन्होंने यशायाह के सन्देश की उपेक्षा की है और वे परमेश्वर से दूर हैं। न्याय आने वाला है, और उनकी झूठी तैयारी (पद 15, 18) बेकार होगी। परमेश्वर इस्राएल के खिलाफ लड़ेगा (पद 21–22), और यहाँ तक कि यरूशलेम को भी घेराबंदी में डाल दिया जाएगा जब तक परमेश्वर अपनी दया में हस्तक्षेप नहीं करते (29:1–8)। उनकी कपटी आराधना के कारण, लोग दण्ड के योग्य हैं, लेकिन भविष्य में इस्राएल फिर से प्रभु को स्वीकार करेगा और शारीरिक और आत्मिक रूप से सम्पूर्ण बनाया जाएगा (29:17–24)।

अध्याय 30 और 31 यहूदा के मिस्र के साथ प्रस्तावित गठबंधन की निंदा करते हैं ताकि अश्शूर को विफल किया जा सके। परमेश्वर चाहते हैं कि उनके लोग उन पर भरोसा करें, न कि दक्षिण में उनके अविश्वसनीय पड़ोसियों पर। परमेश्वर यरूशलेम की रक्षा करने का वादा करते हैं (30:18; 31:5) और आक्रमणकारी अश्शूर सेना को हराने का वादा करते हैं (30:31–33; 31:8–9)। कोई भी उनकी शक्तिशाली तलवार के सामने खड़ा नहीं हो सकता।

इस सकारात्मक बात को जारी रखते हुए, यशायाह अध्याय 32 और 33 में मसीही राजा के धर्मपूर्ण शासन पर जोर देते हैं। अंत में सिय्योन को शांति और सुरक्षा का आनन्द मिलेगा (32:2, 17–18; 33:6), जो यशायाह के अपने समय से एक बड़ा परिवर्तन होगा। आठवीं शताब्दी ई.पू यहूदा में महिलाएं सुरक्षित महसूस कर सकती थीं (32:9), लेकिन अश्शूर सैनिक फसलों को नष्ट कर देंगे और व्यापक शोक का कारण बनेंगे। यद्यपि, विलाप जल्द ही समाप्त हो जाएगा, क्योंकि भविष्यद्वक्ता 33:1 में अश्शूर पर शोक की घोषणा करता है। यशायाह अश्शूर के विनाश के लिए प्रार्थना करने के बाद (33:2–9), परमेश्वर कार्रवाई करने का वादा करते हैं (पद 10–12)। शत्रु सैनिक और अधिकारी चले जाएंगे, क्योंकि प्रभु अपने लोगों को बचाएंगे और उन्हें न्याय और सुरक्षा प्रदान करेंगे।

अधिक न्याय और आशीष (34–35)

यह खण्ड अध्याय 28–33 को पराकाष्ठा बनाता है। एक बार फिर, आशीष और पुनर्स्थापन के समय से पहले विनाशकारी न्याय आता है। अध्याय 34 में यशायाह अन्तिम दिनों पर विचार करते हुए विश्वात्मक आयामों के न्याय का चित्रण करते हैं। स्वर्ग और पृथ्वी उन जातियों पर उन्डेले गए परमेश्वर के क्रोध को सहते हैं, और पद 4 यूहन्ना के महान क्लेश के वर्णन के लिए आधार प्रदान करता है प्रका 6:13–14। एदोम (मोआब की तरह; देखें यशा 25:10–12) उस दुनिया का प्रतिनिधित्व करता है जिसे प्रभु की प्रतिशोध के दिन तलवार से न्याय किया गया है।

दूसरी ओर, अध्याय 35 एक ऐसे पद्यांश की बात करता है जो जीवन से भरपूर है और आनन्द और पुनर्स्थापना की बात करता है। एक खिलता हुआ मरूभूमि उस शारीरिक और आत्मिक युग से मेल खाता है जब परमेश्वर अपने लोगों को मुक्त करने आएंगे। इस शानदार दृश्य में इस्राएलियों को बाबेल की कैद से वापसी और मसीह का दूसरा आगमन दोनों उपयुक्त होते हैं।

ऐतिहासिक मध्यांतर (36–39)

ये अध्याय पुस्तक के दोनों हिस्सों को जोड़ने वाला कड़ी बनते हैं। अध्याय 36 और 37 में अश्शूर के पतन के बारे में यशायाह की भविष्यद्वानियों की पूर्ति होती है, और अध्याय 38 और 39 बाबेल की बँधुआई का परिचय देते हैं जो अध्याय 40–66 के लिए पृष्ठभूमि बनते हैं। 701 ई.पू में अश्शूर के राजा सन्हेरीब ने यरूशलेम के बिना शर्त आत्मसमर्पण की मांग की। वह अपने क्षेत्र कमांडर को लोगों को संबोधित करने और उनकी अधीनता प्राप्त करने के लिए भेजता है। प्रभावशाली शब्दों के

साथ, सेनापति नगर को समझाने की कोशिश करता है कि आत्मसमर्पण सबसे अच्छी नीति है। आश्चर्यजनक रूप से लोग घबराते नहीं हैं, और राजा हिजकिय्याह यशायाह से संकटग्रस्त नगर के लिए प्रार्थना करने के लिए कहते हैं। भविष्यद्वक्ता ऐसा करते हैं और घोषणा करते हैं कि घमंडी असुर विजयी नहीं होगा। इसके बजाय, वे एक भयानक आपदा का सामना करते हैं जब प्रभु का दूत 185,000 पुरुषों को मार देता है।

अध्याय 38 और 39 हिजकिय्याह के जीवन में एक और संकट को दर्शाते हैं जब वह गंभीर रूप से बीमार हो जाता है। चमत्कारि रूप से, परमेश्वर उसे ठीक करते हैं, और हिजकिय्याह उनके कृपालु हस्तक्षेप के लिए प्रभु की प्रशंसा करता है। जब बाबेल का राजा हिजकिय्याह को उसकी आरोग्यता पर बधाई देने के लिए दूत भेजता है, तो हिजकिय्याह मूर्खतापूर्वक इन सन्देशवाहकों को अपने राजकीय खजाना दिखाता है। यशायाह गंभीरता से घोषणा करते हैं कि एक दिन बाबेल की सेनाएँ यरूशलेम पर कब्जा कर लेंगी, भूमि को लूट लेंगी, और इन खजानों को ले जाएंगी।

बाबेल से वापसी (40–48)

बेबिलोनी बँधुआई अंततः आती है, लेकिन यशायाह वादा करते हैं कि यह समाप्त हो जाएगी। परमेश्वर, अतुलनीय रूप से सामर्थी सृष्टिकर्ता, किसी भी राजा, जाति, या देवता से कहीं अधिक महान हैं, और वह अपने लोगों को यरूशलेम वापस लाएंगे। इस बँधुआई से वापसी को पूरा करने के लिए, परमेश्वर फारस के राजा कुस्रू को उठाते हैं (41:2, 25)। परमेश्वर अपने लोगों को नहीं भूलते हैं, और वह उन्हें हिम्मत रखने और खुश होने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

अध्याय 42 में हमें एक व्यक्ति से परिचय कराया जाता है जो फारसी कुस्रू से भी अधिक महत्वपूर्ण है। पद 1–7 (चार सेवक गीतों में से पहला) प्रभु के सेवक का वर्णन करते हैं, जो जाति-जाति में न्याय लाएगा और "अन्यजातियों के लिये ज्योति" होगा (42:6)। यह मसीह है, और कलवरी पर जो छुटकारा वह पूरा करेगा (पुष्टि करें अध्याय 53), वह बाबुल से मिली मुक्ति से भी महान है। सेवक से जुड़ी शुभ सन्देश के प्रकाश में, यशायाह प्रभु की स्तुति करता है, क्योंकि उसने दुष्टों को दण्डित किया और अपने भटके हुए लोगों को बचाया। अध्याय 43 यह घोषित करता है कि कुछ भी इस्राएल की वापसी में बाधा नहीं बनेगा, और प्रभु उनके पापों को अब और याद नहीं करेंगे। वास्तव में, वह अपनी आत्मा उनके वंशजों पर उंडेलेंगे" (44:3)।

इतना महान परमेश्वर किसी भी मूर्ति से कहीं अधिक शक्तिशाली है। 44:6–20 में यशायाह व्यंग्य का उपयोग करके मानव निर्मित छवियों की निरर्थकता को दिखाते हैं। केवल परमेश्वर के पास सृजन और पुनर्स्थापना की शक्ति है, और वह बँधुआई में गए लोगों की रिहाई को प्रभावी बनाने और यरूशलेम के पुनर्निर्माण की शुरुआत करने के लिए कुस्रू को सामने लाएंगे। अध्याय 46 और 47 इस्राएल के परमेश्वर और बाबेल के मूर्तियों के बीच अन्तर करते हैं। जब परमेश्वर कुस्रू को उठाते हैं, तो बाबेल की मूर्तियाँ अपने देश को बचाने में असमर्थ होंगी, और राज्यों की रानी (47:5) अपने जादूगरों और ज्योतिषियों के साथ गिर जाएगी। इस खण्ड का अन्तिम अध्याय (अध्याय 48) परमेश्वर के उद्देश्य को दोहराता है कि उन्होंने बाबेल से इस्राएलियों की मुक्ति के लिए अपने चुने हुए सहयोगी, फारस के कुस्रू का चयन किया है।

प्रभु के सेवक के द्वारा उद्धार (49–57)

अध्याय 49–53 अन्तिम तीन सेवक गीतों को शामिल करते हैं (पुष्टि करें साथ ही 42:1–7), दुनिया के पापों के लिए सेवक की मृत्यु में समाप्त होता है (52:13–53:12)। दूसरे सेवक गीत (49:1–7) में, यशायाह सेवक के बुलाहट और सेवकाई का वर्णन करते हैं, यह बताते हुए कि वह इस्राएल और जातियों के लिए उद्धार को पूरा करते समय मजबूत विरोध का सामना करेगा। अध्याय 49 का बाकी हिस्सा मुख्य रूप से इस बात से सम्बंधित है कि कैसे परमेश्वर इस्राएल को बँधुआई से वापस लाएंगे। जल्द ही देश एक शक्तिशाली भीड़ से भर जाएगी (पद 19–21), और अन्यजाती लोग इस्राएल और उसके परमेश्वर को मान्यता देंगे (पद 22–23).

हालांकि इस्राएल ने अपने पापों के कारण बँधुआई पूरी तरह से अर्जित किया है (50:1–3), सेवक द्वारा सहन की गई पीड़ा (पद 4–11; तीसरा सेवक गीत) पूरी तरह से अयोग्य है। पद 6 की पिटाई और उपहास मसीह के अनुभव की भविष्यद्वानी है (पुष्टि करें मत्ती 27:26, 30; मर 15:19)। यशा 50 के 10–11 पदों में पूरे देश को प्रभु पर भरोसा करने की चुनौती दी गई है, जैसे सेवक ने किया था। वास्तव में, एक विश्वास करने वाले बचे हुए लोग है जो प्रभु की आज्ञा का पालन करते हैं (51:1–8), और प्रभु वादा करते हैं कि वह उन्हें उनके मातृभूमि में पुनःस्थापित करेंगे। इस्राएल ने परमेश्वर के क्रोध का प्याला पिया है (पद 17, 22), लेकिन बँधुआई से मुक्ति की अच्छी खबर यरूशलेम के खंडहरों को भी आनन्द के गीतों में फूटने का कारण बनती है (52:7–10)।

फिर भी सबसे अच्छी खबर पाप से मुक्ति है; अन्तिम सेवक गीत (52:13–53:12) बताता है कि मसीह कैसे पाप की दासता में बंधे लोगों के लिए स्वतंत्रता जीतते हैं। इस संक्षिप्त पद्यांश में हम सीखते हैं कि मसीह अस्वीकृति (53:3) और यहाँ तक कि विकृति (52:14) भी सहते हैं। एक मेमने की तरह वध के लिए ले जाया गया (53:7), वह अपमान में मरते समय हमारे पापों को अपने शरीर में ढोता है। लोग सोचते हैं कि वह अपने पापों के लिए पीड़ित है (पद 4), लेकिन वह "हमारे अधर्मों के लिए छेदा गया" और "कुचला गया" है (पद 5)। इस अनुभाग के पहले और अन्तिम अनुच्छेद (52:13–15; 53:10–12) में कहा गया है कि अपनी पीड़ा के माध्यम से सेवक को अत्यधिक महिमा प्राप्त होती है। जो एक

भयानक हार लगती है, वास्तव में मृत्यु और शैतान पर विजय है और कई लोगों के लिए उद्धार लाती है।

सेवक की मृत्यु के प्रत्यक्ष परिणाम स्वरूप, सभी लोगों के लिए महान आनन्द आता है। अध्याय 54 में यह आनन्द यरूशलेम की नई स्थिति के रूप में परिलक्षित होता है, जो अब प्रभु की पत्नी है। उसके वंशज अनेक होंगे और प्रभु से सीखने के लिए उत्सुक होंगे। पहली बार बहुवचन "प्रभु के सेवक" प्रकट होता है (54:17), जो सभी विश्वासियों को शामिल करता है, चाहे यहूदी हो या अन्यजाति (पुष्टि करें 65:8–9, 13–15)। आनन्द और समृद्धि भी अध्याय 55 की विशेषताएँ हैं, एक महान आत्मिक भोज का निमंत्रण। सभी लोगों से आग्रह किया जाता है कि वे उस प्रभु की ओर मुड़ें जो इस्राएल से अपने वादे निभाता है। 56:1–8 में, परदेशीयों को यरूशलेम में परमेश्वर के "पवित्र पर्वत" पर आने के लिए आमंत्रित किया गया है, क्योंकि मन्दिर सभी जातियों के लिए प्रार्थना का घर होगा (56:7; पुष्टि करें मत्ती 21:13)।

विश्वास करने वाले अन्यजाति अविश्वासी यहूदियों के साथ तीव्रता से विपरीत हैं, और 56:9–57:13 में यशायाह फिर से न्याय के विषय पर लौटते हैं। इस्राएल पीड़ित है क्योंकि उसके प्रधान दुष्ट हैं और क्योंकि लोग मूर्तिपूजा के दोषी हैं। आत्मिक चंगाई उपलब्ध है, लेकिन जब तक व्यक्ति मन नहीं फिराते, वे बँधुआई से लौटने वाले बचे हुए लोगों का हिस्सा नहीं बन सकते और वादा किए गए देश में शांति का आनन्द नहीं ले सकते।

परम आशीष और अन्तिम न्याय (58–66)

यशायाह के अन्तिम नौ अध्याय मुक्ति और महिमा पर जोर देते हैं, लेकिन न्याय की वास्तविकता भी बहुत स्पष्ट है। वास्तव में, अध्याय 58 और 59 इस्राएल के पापों पर विलाप करते हैं। लोग अपनी उपासना में कपटी हैं; वे स्वार्थी हैं और सब्त का पालन करने में असफल रहते हैं। झूठ, उत्पीड़न, और हत्या लोगों को परमेश्वर से अलग करते हैं। जब यशायाह खुलेआम इन पापों को स्वीकार करता है (59:12–13), तो प्रभु अचानक अपने लोगों की ओर से कार्रवाई करते हैं। एक शक्तिशाली योद्धा की तरह, वह विश्वास करने वाले अवशेषों को बाबेल से बचाते हैं और उन्हें यरूशलेम वापस लाते हैं।

अध्याय 60 में यरूशलेम की महिमा और सम्पत्ति नई ऊंचाइयों पर पहुंचती है। नगर और पवित्र स्थान दोनों ही वैभव से सुसज्जित हैं, जो सुलैमान के शासनकाल की समृद्धि के अनुरूप हैं। जैसे जातियों ने सुलैमान का सम्मान किया, वैसे ही पृथ्वी के प्रधान बँधुआई से लौटने वालों की सहायता और सशक्तिकरण करेंगे। हालांकि यह सच है कि फारसी सरकार ने यहूदियों की बार-बार मदद की, यहाँ वर्णित परिस्थितियों का अन्तिम पूर्ति सहस्राब्दी के दौरान और नए यरूशलेम के सम्बन्ध में होगी (पुष्टि करें प्रका 21:23; 22:5)। प्राचीन खण्डहरों का पुनर्निर्माण किया जाएगा (यशा 61:4), और प्रभु अब्राहम और दाऊद के साथ किए गए वाचा को पूरा करेंगे (यश 61:8; पुष्टि करें उत 12:1–3; यशा 55:3)। यरूशलेम पवित्र लोगों का नगर होगा, प्रभु के छुड़ाए हुए लोग (यश 62:12), और प्रभु उसमें आनन्द लेंगे (पद 4)।

अपने लोगों के लिए उद्धार प्राप्त करने के लिए, परमेश्वर को पहले अधर्मी लोगों का न्याय करना होगा। अंगूर के रस के कुचलने का महान दृश्य (63:2–3) न्याय प्रक्रिया को चित्रित करता है और यह प्रभु के दिन से जुड़ा हुआ है (पुष्टि करें 13:3; 34:2)। चूंकि परमेश्वर ने अपने लोगों की ओर से हस्तक्षेप करने का वचन किया है, इसलिए यशायाह उस वादे की पूर्ति के लिए प्रार्थना करता है (63:7–64:12)। वह अतीत में परमेश्वर की विश्वासयोग्यता को याद करता है और प्रार्थना करता है कि वह फिर से अपने पीड़ित लोगों पर दया करेंगे।

यशायाह की प्रार्थना का उत्तर अध्याय 65 में पाया जाता है। परमेश्वर अपने सेवकों को, जो उसकी आराधना करते हैं और उसकी आज्ञा का पालन करते हैं, उन्हें पवित्र देश वापस देने का वादा करते हैं। लेकिन देश के उस वर्ग के लिए जो अपनी जिद पर अड़ा हुआ है, परमेश्वर पीड़ा और विनाश का वादा करते हैं। परमेश्वर के सेवकों की परम आनन्द नई आकाश और नई पृथ्वी के वर्णन में निहित है (65:17–25)। शांति, लम्बी आयु, और समृद्धि उन आशीषों में शामिल होंगे जो एक ऐसे युग में प्राप्त होंगे जो सहस्राब्दी और अनन्त राज्य की विशेषताओं को जोड़ता हुआ प्रतीत होता है (पुष्टि करें अध्याय 60)।

एक उपयुक्त सारांश में, अध्याय 66 उद्धार और न्याय के विषयों को एक साथ जोड़ता है। परमेश्वर यरूशलेम को सांत्वना देंगे और उसे भरपूर मात्रा में आशीष देंगे, लेकिन पापी उनके क्रोध के पात्र हैं। जो उसका सम्मान करते हैं वे सदा के लिए बने रहेंगे, लेकिन जो विद्रोह करते हैं वे अनंतकाल तक तिरस्कार सहेंगे।

यह भी देखें यशायाह (व्यक्ति); इतिहास, इस्राएल का; मसीहा; भविष्यद्वानी; भविष्यद्वक्ता, भविष्यद्वक्तिनी; प्रभु का सेवक; यीशु का कुंवारी जन्म।

पुस्तकालय

पुस्तकालय

अभिलेखों, इतिहास और आदेशों के भंडारण के लिए इस्तेमाल की जाने वाली इमारत; दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व में पश्चिमी एशिया के देशों में यह एक आम संरचना थी (एज्रा 5:17–6:1)। फारसी राजाओं के लिए एक ग्रीष्मकालीन शरण, एकबाताना के पुस्तकालय में, राजा दारा (521–486 ईसा पूर्व) ने कुस्रू (559–530 ईसा पूर्व) का एक आदेश पाया जिसने यहूदियों को बँधुआई के बाद यरूशलेम मन्दिर का पुनर्निर्माण शुरू करने का अधिकार दिया (एज्रा 6:2)। उस आदेश के आधार पर, दारा ने पुनर्निर्माण प्रयासों का समर्थन

दिया, जो स्थानीय विरोध के कारण 16 वर्षों से रुके हुए थे (तुलना करें हाग 1:1; जक 1:1)।

पुही

1 इतिहास 2:53 में यहूदा के गोत्र के एक परिवार के सदस्य पूती की केजेवी में वर्तनी। *देखें*पूती।

पूआ

1. दो इब्री दाइयों में से एक, जिन्हें फ़िरौन ने इब्री पुरुषों को जन्म के समय मारने का निर्देश दिया था। हालांकि उसने परमेश्वर का भय माना और निर्देश का पालन नहीं किया (निर्ग 1:15)।
2. तोला के पिता, इस्राएल के एक न्यायी (न्या 10:1)I
3. 1 इतिहास 7:1 में इस्साकार के पुत्र पुव्वा का एक वैकल्पिक रूप। *देखें*पुव्वा I

पूत

पूत

1. पूत, हाम के तीसरे पुत्र का KJV वर्तनी, उत्पत्ति 10:6 में। *देखें*पूत (व्यक्ति)।

2. पूत की KJV वर्तनी, एक क्षेत्र जो मिस्र के पास महासागर के साथ है, यहेजकेल 27:10 में। *देखें*पूत (स्थान)।

पूत (व्यक्ति)

पूत (व्यक्ति)

हाम के चार पुत्रों में से तीसरा, जो संभवतः उत्तरी अफ्रीका में बस गया था और शायद मिस्र और लीबिया के लोगों का पूर्वज है (उत 10:6; 1 इति 1:8)।

*यह भी देखें*पूत (स्थान) I

पूत (स्थान)

प्राचीन राष्ट्र, जो उसी नाम के एक पुरुष से उत्पन्न हुआ। इसे सामान्यतः लिबिया के रूप में पहचाना जाता है, यद्यपि यह तर्क दिया गया है कि यह मिस्र के अभिलेखों में वर्णित "पन्ट" था, जो अफ्रीका के उत्तर-पूर्वी तट पर कहीं स्थित था, संभवतः सोमालिया। इसका मिस्र, कूश, और कनान के साथ संबंध, और पुराने नियम में नाम का उपयोग, लीबिया स्थान को संभावित बनाता है। पुराने नियम में लीबिया के लोगों को लूबिम कहा जाता है, एक नाम जो हमेशा बहुवचन में दिखाई देता है।

प्राचीन लीबिया मिस्र के पश्चिम में, आधुनिक लीबिया का स्थल, उत्तरी अफ्रीका के भूमध्यसागरीय तट पर स्थित था। मिस्रवासियों ने कई लीबियाई समूहों के बीच भेद किया। तजेहेनु, जो तटीय क्षेत्र में निवास करते थे, मुख्य रूप से पशुपालक थे। उन्हें मिस्री कला में लंबे बालों वाले और केवल एक कमरबन्द और एक लिंग म्यान पहने हुए दिखाया गया है। उन्हें नौ धनुषों में सूचीबद्ध किया गया था - मिस्र के नौ पारंपरिक शत्रु। तजेमेहु खानाबदोश थे और अन्य अफ्रीकी जातीय समूहों से शारीरिक रूप से भिन्न थे क्योंकि उनके सुनहरे बाल और नीली आंखें थीं। उनका मिस्र के साथ संबंध पुरानी राज्य से है, और समय-समय पर वे मिस्र में प्रवेश करने का प्रयास करते थे। लिबु (जिनके नाम पर देश का नाम रखा गया) और मेश्वेश (पश्चिमी लीबियाई) को गोरे, गुदने वाले, और लंबे चमड़े के वस्त्र पहने हुए वर्णित किया गया है।

मिस्रियों का लीबिया के साथ पूरे इतिहास में व्यावसायिक और सैन्य संपर्क था। लीबियाई लोग समय-समय पर उत्तर-पश्चिम से मिस्र में प्रवेश करने का प्रयास करते थे। मध्य राज्य से सिनुहे की कहानी (लगभग 2000 ई.पू.) है, जो अमेनेमहत प्रथम की मृत्यु से शुरू होती है, जबकि उनका पुत्र, सेनुसर्ट (सेसोस्त्रिस), पश्चिमी नदीमुख-भूमि में लीबियाई लोगों से लड़ रहा था। बाद में, लीबियाई लोगों ने नदीमुख-भूमि में घुसपैठ की, लेकिन सेटी प्रथम और रामसेस द्वितीय ने उन्हें नियंत्रण में रखा। मर्नेप्ता की शिला (लगभग 1224–लगभग 1214 ई.पू.), जिसमें इस्राएल का उल्लेख है, मुख्य रूप से लीबियाई लोगों पर मिस्र की विजय को समर्पित है। रामसेस तृतीय ने उन्हें पश्चिमी नदीमुख-भूमि से बाहर निकाल दिया, समुद्री लोगों के साथ अपनी विजयी भूमि और समुद्री संघर्षों के संबंध में।

अंततः, लीबियाई लोगों ने मिस्र पर नियंत्रण प्राप्त किया और 22वीं (बुबास्ताइट) वंश (लगभग 946–लगभग 720 ई.पू.) और 23वीं (तानिटिक) वंश (लगभग 792–लगभग 720 ई.पू.) का गठन किया। उनके राजाओं के अन्यजाति नाम थे जैसे शेशोंक (पुराने नियम के शीशक, 1 रा 11:40; 14:25; 2 इति 12:2–9), ओसोरकोन, और ताकेलोट।

बाइबल में पूत का पहला उल्लेख राष्ट्रों की सूची में है (उत 10), जहाँ पूत को हाम का पुत्र बताया गया है, साथ ही कूश

(नूबिया, कूश), मिस्र, और कनान के साथ (उत 10:6; पुष्टि करें 1 इति 1:8)।

यिर्मयाह 46 कर्कमीश की लड़ाई का वर्णन करता है और मिस्र की सेनाओं में कूश और पूत के योद्धाओं का उल्लेख करता है, "जो ढाल संभालते हैं" (यिर्म 46:9)। यहेजकेल फारस, लूद, और पूत को सोर की सेना में शामिल बताता है (यहेज 27:10)। नहूम ने "पूत और लिबियाई" का उल्लेख किया है जो नो के सहयोगियों में थे, जो अश्शूरियों के मिस्र पर आक्रमण को रोकने में असमर्थ थे (नहू 3:9)। दानिय्येल भविष्यद्वानी करते हैं कि मसीह विरोधी के अधीन लिबियाई, मिस्र, कूश और अन्य होंगे (दानि 11:43)।

यशायाह 66:19 में इब्रानी पाठ में "पूल" लिखा है, जबकि यूनानी संस्करण में "पूत" दिया गया है, जिसे अधिकांश अंग्रेजी अनुवादों ने अपनाया है। (में "लीबियन्स" लिखा है, जिसमें इब्रानी और यूनानी पाठ के लिए पाद टिप्पणी है।) यहाँ, पूत को तर्शीश और लूद के बीच उन राष्ट्रों की सूची में रखा गया है जिन्हें परमेश्वर की महिमा के बारे में बताया जाएगा। यहेजकेल 30:5 में इब्रानी शब्द पूत को लीबिया के समकक्ष देश माना जाता है। हालाँकि, अन्य विद्वान इस ही वचन में कूब को भी लीबिया मानते हैं (देखें)। फारस के राजा क्षयर्ष (485–465 ई.पू.) के अभिलेखों में, लीबिया को क्षयर्ष के अधीन राष्ट्रों में सूचीबद्ध किया गया है।

पूती

किर्यत्यारीम से यहूदा के गोत्र का एक परिवार का उल्लेख केवल 1 इतिहास 2:53 में किया गया है।

पूतीएल

एलीआजर की पत्नी के पिता और पीनहास के दादा (निर्ग 6:25)I

पूदेंस

पूदेंस

पौलुस के एक साथी, जिनका उल्लेख 2 तीमुथियुस 4:21 में किया गया है। पत्र के अंत में पूदेंस, तीमुथियुस को व्यक्तिगत अभिवादन भेजते हैं। पौलुस तीन अन्य साथियों के नाम भी बताते हैं जो अभिवादन भेजते हैं: यूबूलुस, लीनुस, और क्लौदिया।

पूनोन

शहर को आधुनिक फेनान के साथ पहचाना गया है, जो अराबा के पूर्वी किनारे पर एदोम के पहाड़ी देश में स्थित है। पूनोन एदोम से नेगेव होते हुए मिस्र तक जाने वाले मार्ग पर स्थित था। इसे पानी की भरपूर आपूर्ति और तांबे की उपस्थिति का लाभ मिला। पूनोन प्राचीन तांबा गलाने का केन्द्र बन गया (लगभग 2000 ई.पू.), जिसे आसपास के क्षेत्र में खनन किया गया या पूनोन में आयात किया गया। जब इस्राएली पूनोन से होकर यरदन पूर्व की ओर जा रहे थे (गिन 33:42–43), पूनोन अपने औद्योगिक इतिहास के निम्न बिन्दु पर था। चारों ओर कचरा ढेरों के अवशेष भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। पुरातात्विक साक्ष्य संकेत करते हैं कि पूनोन कुलपिताओं के समय (मध्य कांस्य युग) में एक विस्तृत बस्ती थी और 500 वर्षों की कोई स्थायी बस्ती नहीं होने के बाद इसे लगभग 1300 ई.पू. में पुनः बसाया गया। खनन और गलाने के कार्य 700 ई.पू. तक चले और फिर नबातियन युग में पुनः शुरू हुए। यूसेबियस लिखतें हैं कि मसीही लोग भी पूनोन में खदानों में कैदियों के साथ काम करते थे। बाइज़ानटाइन काल में मसीहियों ने यहां एक विशाल गिरजाघर और मठ का निर्माण किया। एक शिलालेख जिसमें बिशप थियोडोर का नाम (लगभग 587 ई.पू.) था, मठ में पाया गया।

पूरीम

पूरीम

यहूदियों के लिए इब्री नाम उस पर्व के लिए है जो यहूदियों के लोगों को हामान से बचाने का उत्सव मनाता है (एस्त 9:26–32)। पूरीम का अर्थ है "चिट्ठियाँ," जो निर्णय लेने के लिए उपयोग की जाती थीं।

*देखें*इस्राएल के भोज और पर्व।

पूर्व ज्ञान

पूर्व ज्ञान

घटनाओं या चीजों के होने से पहले उनके बारे में ज्ञान।

नए नियम में, "पूर्व ज्ञान" के लिए यूनानी शब्द केवल सात बार आता है। यह वर्णन करता है:

1. मसीही को झूठे शिक्षकों के बारे में चेतावनी (2 पतरस 3:17)
2. पौलुस के प्रारंभिक जीवन के बारे में यहूदियों का पूर्व ज्ञान (प्रेरितों के काम 26:4–5)

3. परमेश्वर का मसीह की मृत्यु के बारे में पहले से ज्ञान (प्रेरितों के काम 2:23; 1 पतरस 1:18–20)
4. परमेश्वर का अपने लोगों के बारे में ज्ञान (रोमियों 11:2)
5. परमेश्वर का अपनी कलीसिया बारे में ज्ञान (रोमियों 8:28–30; 1 पतरस 1:1–2)

हालाँकि "पूर्व ज्ञान" शब्द का उपयोग अक्सर नहीं किया जाता है, लेकिन यह विचार बाइबल में हर जगह मौजूद है। सबसे पहले, बाइबल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि परमेश्वर सब कुछ जानते हैं। उनकी समझ असीमित है (भजन संहिता 147:5)। वे हर हृदय और विचार को जानते हैं (1 इतिहास 28:9)। भजन संहिता 139 परमेश्वर के सभी मनुष्य विचारों, शब्दों और कार्यों के ज्ञान का वर्णन करता है। यह ज्ञान एक गौरैया की उड़ान और एक व्यक्ति के सिर पर बालों की संख्या तक भी फैला हुआ है (मत्ती 10:29–30)। इस असीमित ज्ञान से, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि परमेश्वर मानव इतिहास में भविष्य की घटनाओं को भी जानते हैं।

बाइबल यह भी सीधे तौर पर कहती है कि परमेश्वर घटनाओं के घटित होने से पहले ही उनके बारे में जानते हैं। यह ज्ञान उन्हें मूर्तियों से अलग करता है, जो भविष्य को नहीं देख सकतीं (यशायाह 44:6–8; 45:21)। परमेश्वर का पूर्व ज्ञान भविष्यद्वक्ताओं की भविष्यद्वाणियों का आधार है। उदाहरण के लिए:

- परमेश्वर ने आदम और हव्वा से कहा कि स्त्री की संतान सर्प और उसकी संतानों को पराजित करेगी (उत्पत्ति 3:15)
- उन्होंने अब्राहम से भविष्य में आशीष देने का वादा किया (उत्पत्ति 12:3)
- परमेश्वर ने मूसा से यह भी कहा, "मैं जानता हूँ कि मिस्र का राजा तुम को जाने न देगा" (निर्गमन 3:19)

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने मसीह की आने वाली महिमा के बारे में बताया (यशायाह 9:1–7; यिर्मयाह 23:5–6; यहेजकेल 34:20–31; होशे 3:4–5)। दानिय्येल 7 में, परमेश्वर ने भविष्य के विश्व साम्राज्यों के उत्थान और पतन और उनके राज्य की स्थापना का प्रकाशन किया (देखें दानिय्येल 2:31–45)। नए नियम में अक्सर मसीह की सेवकाई और कलीसिया को पुराने नियम की भविष्यवाणियों को पूरा करते हुए देखा जाता है (मत्ती 1:22; 4:14; 8:17; यूहन्ना 12:38–41; प्रेरितों के काम 2:17–21; 3:22–25; गलातियों 3:8; इब्रानियों 5:6; 1 पतरस 1:10–12)।

प्राचीन यूनानी दार्शनिकों का मानना था कि नियति सभी भविष्य की घटनाओं को नियंत्रित करती है। इसमें मनुष्य इतिहास और देवताओं की नियति शामिल थी। कभी-कभी, देवता किसी भविष्य की घटना को जान सकते थे और उसे लोगों को प्रकट कर सकते थे, लेकिन ऐसी घटनाओं को अपरिवर्तनीय माना जाता था। यह दृष्टिकोण बाइबल के उस दृष्टिकोण से बहुत अलग है जिसमें एक व्यक्तिगत सृष्टिकर्ता होते हैं जो भविष्य को जानते हैं और अपने उद्देश्य के अनुसार इतिहास का मार्गदर्शन करते हैं।

सदियों से, धर्मशास्त्रियों और दार्शनिकों ने परमेश्वर के पूर्व ज्ञान और मनुष्य स्वतंत्रता पर वाद-विवाद किया है। कुछ तर्क करते हैं कि यदि परमेश्वर जानते हैं कि भविष्य में क्या होगा, तो वह अवश्य होगा, इसलिए मनुष्य विकल्प अप्रासंगिक हो जाते हैं।

प्रारंभिक कलीसिया के धर्मशास्त्रियों ने दृढ़ता से इनकार किया कि पूर्व ज्ञान का अर्थ घटनाओं का पूर्वनिर्धारण था। उदाहरण के लिए, जस्टिन मार्टियर ने कहा, "जब हम भविष्य की घटनाओं के बारे में भविष्यद्वाणी करते हैं, हम यह नहीं कहते कि वे घातक आवश्यकता से होती हैं।" दूसरे शब्दों में, सिर्फ इसलिए कि परमेश्वर जानते हैं कि क्या होगा, इसका मतलब यह नहीं है कि वह ऐसा होने का *कारण* बनता है।

कुछ धर्मशास्त्री चिंतित हैं कि पूर्व ज्ञान मनुष्य स्वतंत्रता को समाप्त कर सकता है। इसलिए, वे तर्क देते हैं कि परमेश्वर भविष्य की घटनाओं को निश्चितता के साथ नहीं जानते। उदाहरण के लिए, आधुनिक प्रक्रिया धर्मशास्त्र परमेश्वर को प्रकृति और मानवता के साथ विकसित होते हुए देखता है। यह दृष्टिकोण सुझाव देता है कि परमेश्वर केवल अतीत की घटनाओं को ही जान सकते हैं। यह भविष्य को परमेश्वर और मनुष्यों दोनों के लिए अनिश्चित छोड़ देता है। एक पुराने धर्मशास्त्री, एडम क्लार्क, ने सुझाव दिया कि हालांकि परमेश्वर सभी भविष्य की घटनाओं को जान सकते हैं, वे कुछ को पहले से जानने का चयन नहीं करते।

ऑगस्टिन का एक अलग दृष्टिकोण था। उन्होंने तर्क दिया कि परमेश्वर अनंत काल में रहते हैं, जहां सभी चीजें एक साथ उपस्थित होती हैं। परमेश्वर के लिए, कोई अतीत या भविष्य नहीं है। इसलिए, वे चीजों को उनके होने से पहले "जान" नहीं सकते। वे सभी घटनाओं को एक अनन्त"अभी" से देखते हैं। हालांकि, ऑगस्टिन ने सभी चीजों, जिसमें भविष्य की घटनाएं भी शामिल हैं, के बारे में परमेश्वर के ज्ञान को नकारा नहीं।

सुसमाचारवादी धर्मशास्त्री, बाइबल का हवाला देते हुए, मानते हैं कि परमेश्वर सभी भविष्य की घटनाओं को जानते हैं। हालांकि, इसमें कुछ असहमति है। कैल्विन के अनुयायी यह दावा करते हैं कि परमेश्वर सभी घटनाओं को जानते हैं। वे यह निर्धारित करते हैं कि मनुष्य इतिहास में क्या होगा, यहां तक कि सबसे छोटे विवरण भी। इस दृष्टिकोण में, पूर्व ज्ञान निकटता से पूर्वनिर्धारण (भविष्य की घटनाओं को सुनिश्चित

करना) से जुड़ा हुआ है, या यहां तक कि इसके साथ पहचाना जाता है। अधिकांश कैल्विनवादी धर्मशास्त्री कहते हैं कि मनुष्य अपने चुनावों के लिए जिम्मेदार हैं। वे अंधे भाग्य के शिकार नहीं हैं। वे यह भी मानते हैं कि परमेश्वर पाप के लेखक नहीं हैं। बल्कि, पाप दूतों और मनुष्यों द्वारा पवित्र, धर्मी परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह से उत्पन्न होता है।

आर्मीनियाई सुसमाचारसम्मत पूर्व ज्ञान को घटनाओं की पूर्वनिर्धारण से अलग मानते हैं। वे तर्क करते हैं कि परमेश्वर ने मनुष्य इतिहास और संसार के उद्धार को पूर्वनिर्धारित किया। लेकिन, व्यक्तिगत प्रतिक्रियाएँ परमेश्वर के प्रति नहीं हैं। इसलिए, परमेश्वर किसी घटना को पूर्व ज्ञान में रख सकते हैं बिना उसे सीधे घटित किए।

सुसमाचारवादी मसीही इस बात पर असहमत हो सकते हैं कि परमेश्वर का पूर्व ज्ञान इतिहास से कैसे सम्बन्धित है। लेकिन, बाइबल यह सिखाती है कि परमेश्वर को सभी चीजों का पूर्व ज्ञान है और मनुष्यों को उनके चुनावों के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है।

*यह भी देखें*चुने हुए, चुनाव; पूर्वनिर्धारण ।

पूर्व में तारा

वह तारा जिसने ज्ञानी पुरुषों को बालक यीशु की ओर मार्गदर्शन किया (मत्ती 2:2, 7–10)। ज्ञानी पुरुष पूर्वी भूमि (सम्भवतः पार्थिया, बेबीलोन या अरब) से आए थे और हेरोदेस के पास पहुँचे। उन्होंने बताया कि उन्होंने अपने देश में यहूदियों के राजा का तारा देखा था। हेरोदेस और यहूदियों के शास्त्रियों ने ज्ञानी पुरुषों को बैतलहम की ओर निर्देशित किया। तारा तब उन्हें उस स्थान पर ले गया जहाँ यीशु का जन्म हुआ था।

इस घटना को समझाने के लिए कई सिद्धांत प्रस्तावित किए गए हैं। 17वीं शताब्दी में, जोहान्स केपलर ने प्रस्तावित किया कि एक अधिनव तारा (सुपरनोवा) असाधारण प्रकाश उत्पन्न कर सकता है। हर साल कई ऐसे विस्फोट दर्ज किए जाते हैं, लेकिन कुछ ही नग्न आँखों से दिखाई देते हैं। मसीह के समय से कोई ज्ञात नहीं है। प्राचीन लोग धूमकेतुओं से मोहित थे। हैली का धूमकेतु पहली बार 240 ई.पू. में देखा गया था। यदि इसे 77-वर्षीय अन्तराल पर गणना की जाए, तो यह यहूदिया में लगभग 12–11 ई.पू. में दिखाई देता। हालांकि, यह तिथि यीशु के जन्म से बहुत पहले की है।

प्राचीन संसार में धूमकेतु को अक्सर आपदाओं से जोड़ा जाता था। प्राचीन लोग ज्योतिष का भी अभ्यास करते थे और नक्षत्रों और ग्रहों की गति का अध्ययन करते थे। वे दुर्लभ ग्रह संरेखणों को ध्यान से देखते थे। 7 ई.पू. में, बृहस्पति और शनि, मीन राशि में संरेखित हुए थे। यह घटना हर 257 वर्षों में होती है। इस सिद्धांत के अनुसार, बृहस्पति को संसार का शासक माना जाता था। शनि को सीरिया-फिलिस्तीन से जोड़ा गया था और मीन राशि को अन्त समय से जोड़ा गया था।

पहली सदी के पाठक, चाहे वे यहूदी हों या यूनानी, यीशु के जन्म की घोषणा करने वाले नए तारे के बारे में पढ़कर आश्चर्यचकित नहीं होते। मत्ती 2:2 में, वाक्यांश "पूर्व में" का अर्थ "इसके उदय पर" हो सकता है। इसका मतलब यह हो सकता है कि बुद्धिमान लोगों ने एक नया तारा देखा और इसे एक महत्वपूर्ण घटना के रूप में चिह्नित किया। यूनानी-रोमी समाज में, आकाश अक्सर घटनाओं की भविष्यवाणी या व्याख्या करता था, जैसे रोम की स्थापना और औगुस्तुस का जन्म। यहूदी धर्म भी तारों के महत्व पर जोर देता था। जोसीफस ने ईस्वी 70 में यरूशलेम के पतन के दौरान तारा घटनाओं का उल्लेख किया। इसके अलावा, रब्बी गिनती 24:17 में बिलाम की कहानी की कल्पना से प्रभावित थे (विशेष रूप से देखें गिन 24:17 सेप्टुआजेंट में) और उन्होंने अपनी मसीहाई अपेक्षाओं को एक तारे में प्रतीकित किया। यह कुमरान में भी आम था (दमास्कस डोक्युमेंट 7:19 और आगे; 1QM 11:6; तुलना करें टेस्टामेंट ऑफ़ लेवी 18:3; प्रका 22:16)। इसी तरह, शमौन बार-कोखबा ("तारे का पुत्र") के विद्रोह के बाद ढाले गए सिक्कों पर एक तारा चित्रित था।

*यह भी देखें*खगोल विज्ञान।

पूर्वनियति

यह विश्वास कि परमेश्वर ने पहले से ही यह योजना बनाई है कि लोगों के जीवन में क्या होगा, विशेष रूप से उनके उद्धार के सम्बन्ध में। कुछ मसीही विश्वास करते हैं कि परमेश्वर चुनते हैं कि कौन बचाया जाएगा, जबकि अन्य विश्वास करते हैं कि मनुष्यों के पास इस निर्णय में अधिक विकल्प होता है।

*देखें*चयन, निर्वाचन; पूर्वनिर्धारण।

पूर्वनिर्धारण

पूर्वनिर्धारण क्या है?

परमेश्वर की गतिविधि जो घटनाओं और परिणामों को पहले से तय करती है। लोग अक्सर "पूर्वनिर्धारण" और "पूर्वनियति" का उपयोग एक ही अर्थ में करते हैं। हालांकि, "पूर्वनियति" और "चयन" विशेष रूप से लोगों की नियति को सन्दर्भित करते हैं।

कई प्रारंभिक कलीसिया के पिताओं ने पूर्वनिर्धारण के बारे में लिखा। हिप्पो के ऑगस्टिन, जो 354 से 430 तक जीवित रहे, ने अपनी शिक्षाओं में पूर्वनिर्धारण पर जोर दिया। ऑगस्टिन ने प्रोटेस्टेंट सुधारकों, विशेष रूप से जॉन केल्विन को बहुत

प्रभावित किया। सुधारित धर्मशास्त्री पूर्वनिर्धारण का अध्ययन परमेश्वर के अनन्त निर्णय को देखकर शुरू करते हैं, जैसा कि वेस्टमिंस्टर कन्फेशन ऑफ फेथ जैसे विश्वास के कथनों में दिखाया गया है। परमेश्वर की आज्ञा एक है, लेकिन लोग आमतौर पर इसे समझाने के लिए "परमेश्वर की आज्ञा" के रूप में बात करते हैं। मार्टिन लूथर पूर्वनिर्धारण में विश्वास करते थे लेकिन उन्होंने इसे केल्विन जितना महत्व नहीं दिया। लूथर की शिक्षाओं में पूर्वनिर्धारण के बारे में बहुत कुछ नहीं कहा गया है, मुख्य रूप से पूर्वनियति या चुनाव पर चर्चा की गई है। आधुनिक लूथरवादी विचार सशर्त चुनाव पर जोर देते हैं, न कि पूर्ण चयन पर। इसका अर्थ है कि वे मानते हैं कि चयन या पूर्वनियति उस विश्वास पर आधारित है जिसे परमेश्वर पहले से देख लेते हैं।

परमेश्वर की योजना में पूर्वनिर्धारण

पूर्वनिर्धारण परमेश्वर की सम्पूर्ण योजना की नींव है: उनका सारी सृष्टि की रचना करने का निर्णय, उसकी देखभाल करना (पूर्व प्रबन्ध), और उसकी नियति को "उनकी इच्छा के मत के अनुसार" निर्धारित करना (इफिसियों 1:11)। वेस्टमिंस्टर शॉर्टर कैटेकिसम इसे इस प्रकार समझाता है: परमेश्वर ने "अपनी इच्छा की सलाह के अनुसार अपनी अनन्त योजना का निर्देश दिया है, जिसके द्वारा, अपनी महिमा के लिए, उन्होंने जो कुछ भी होता है उसे पूर्वनियोजित किया है।" इसलिए, पूर्वनिर्धारण सभी मसीही शिक्षाओं के आधार पर है, क्योंकि यह पूरे संसार, सारी सृष्टि और उसमें सब कुछ के इतिहास और नियति के बारे में है।

प्रेरित पौलुस ने सृष्टि की पूर्णता के लिए परमेश्वर की योजना के बारे में कहा: "सृष्टि परमेश्वर के पुत्रों के प्रकट होने की बड़ी आशा से प्रतीक्षा कर रही है। क्योंकि सृष्टि को व्यर्थता के अधीन किया गया था, अपनी इच्छा से नहीं, पर उसके द्वारा जिसने इसे अधीन किया, इस आशा में कि सृष्टि स्वयं विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी" (रोमियों 8:19–21)। पवित्र शास्त्र संक्षेप में सृष्टि के उद्धार का वर्णन करता है। यह "एक नये आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिनमें धार्मिकता वास करेगी" के बारे में बात करता है (2 पतरस 3:13)। वे चीजें जो मनुष्य जीवन को हानि पहुंचाती हैं और मनुष्य के पाप से उत्पन्न होती हैं (अर्थात, भ्रष्टता) समाप्त हो जाएंगी। परमेश्वर "सब कुछ नया" बनाएंगे, इसलिए परमेश्वर हर चीज के नियति पर नियंत्रण रखते हैं (प्रकाशितवाक्य 21:1–5)।

चुनौतियाँ और वाद-विवाद

पूर्वनिर्धारण धर्मशास्त्र और सामान्य ज्ञान के लिए समस्याएँ उत्पन्न करता है। यह विशेष रूप से उद्धार के संबंध में मनुष्य स्वतंत्रता और जिम्मेदारी के लिए सत्य है। यदि लोग पहले से निर्धारित हैं, तो उन्हें उनके कार्यों और निर्णयों के लिए कैसे जिम्मेदार ठहराया जा सकता है? कुछ लोग इस कठिनाई को दूर करने के लिए मनुष्य स्वतंत्रता के संदर्भ में परमेश्वर के पूर्वनिर्धारण को अस्वीकार करते हैं। जब परमेश्वर ने मनुष्यों को स्वतंत्र इच्छाशक्ति के साथ बनाया (अर्थात, वह क्षमता जो किसी और या किसी चीज़ द्वारा निर्धारित नहीं की जाती), तो कुछ तर्क देते हैं कि परमेश्वर ने उन घटनाओं पर अपने नियंत्रण को आवश्यक रूप से सीमित कर दिया जो "होनी ही चाहिए"। अन्यथा, स्वतंत्र और जिम्मेदार मनुष्य गतिविधि का कोई अर्थ नहीं है। केल्विनवाद इस तर्क को खारिज करता है, यह जोर देकर कि स्वतंत्र गतिविधि संभव है, भले ही यह पूर्वनियोजित हो और इसके होने से पहले ही ज्ञात हो।

पूर्वनिर्धारण का इनकार करने का अर्थ है कि परमेश्वर अपनी सृष्टि को नियंत्रित नहीं करते। यदि यह सत्य होता, तो मनुष्य गतिविधि या तो परमेश्वर से ऊपर या परे किसी चीज़ द्वारा निर्धारित होती, या अज्ञात कारणों द्वारा। बाइबल और मनुष्य अनुभव में प्रकट परमेश्वर की पूर्व प्रबन्ध और प्रावधान इस दृष्टिकोण का बचाव करना कठिन बना देते हैं। मसीही विचारधारा सामान्यतः कहती है कि परमेश्वर पूर्वनिर्धारण करते हैं और अपनी सृष्टि को नियंत्रित करते हैं, और मनुष्य उस बड़े नियंत्रण के भीतर स्वतंत्र और जिम्मेदारी से कार्य करने में सक्षम होते हैं। यह विरोधाभासी प्रतीत होता है क्योंकि मनुष्य की समझ सीमित है।

पवित्रशास्त्र में पूर्वनिर्धारण

बाइबल में अक्सर पूर्वनिर्धारण (जिसमें पूर्वनिर्धारण, या चयन शामिल है) और पूर्व ज्ञान का उल्लेख होता है। पूर्वनिर्धारण तर्कसंगत रूप से पूर्व ज्ञान से पहले होता है, लेकिन चूंकि दोनों ही परमेश्वर में अनन्त हैं, इसलिए ऐसी कोई प्राथमिकता नहीं होती।

जब उन्होंने बाबेल के आने वाले न्याय के बारे में बात की, तो परमेश्वर ने कहा, "यही युक्ति सारी पृथ्वी के लिये ठहराई गई है, और यह वही हाथ है जो सब जातियों पर बढ़ा हुआ है। क्योंकि सेनाओं के यहोवा ने युक्ति की है और कौन उसको टाल सकता है? उसका हाथ बढ़ाया गया है, उसे कौन रोक सकता है?" (यशायाह 14:26–27)। परमेश्वर ने यह भी घोषणा की कि उन्होंने शुरुआत से ही अन्त को निर्धारित कर दिया है। "मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी इच्छा को पूरी करूँगा" (यशायाह 46:10)। पौलुस ने कहा कि परमेश्वर अपने उद्देश्यों को "अपनी इच्छा के मत के अनुसार" पूरा करते हैं (इफिसियों 1:11; तुलना करें भजन संहिता 119:89–91; दानिय्येल 4:35)।

बाइबल यह भी कहती है:

- एक मनुष्य के दिन नियुक्त किए गए हैं (अय्यूब 14:5)
- परमेश्वर की चिंता उनके प्राणियों तक फैली हुई है (भजन संहिता 104:14–30; मत्ती 10:29)
- हमारे सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं (मत्ती 10:30)

इसके अलावा, परमेश्वर की योजना लोगों और राष्ट्रों तक फैली हुई है, क्योंकि "उन्होंनें एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियाँ सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाई हैं; और उनके ठहराए हुए समय और निवास के सीमाओं को इसलिए बाँधा है" (प्रेरितों के काम 17:26)।

परमेश्वर जानते हैं और यहाँ तक कि लोगों के बुरे कार्यों का उपयोग भी अपने उद्देश्यों के लिए करते हैं। यूसुफ के भाइयों ने उसे दासत्व में बेचकर पाप किया। बाद में यूसुफ ने कहा, "तुम लोगों ने मेरे लिये बुराई का विचार किया था; परन्तु परमेश्वर ने उसी बात में भलाई का विचार किया, जिससे वह ऐसा करे, जैसा आज के दिन प्रगट है, कि बहुत से लोगों के प्राण बचे हैं।" (उत्पत्ति 50:20)।

एक और उदाहरण है जब यहूदा इस्करियोती ने यीशु को धोखा दिया। यीशु ने कहा, "मनुष्य का पुत्र तो जैसा उसके लिये ठहराया गया, जाता ही है, पर हाय उस मनुष्य पर, जिसके द्वारा वह पकड़वाया जाता है" (लूका 22:22; "मनुष्य का पुत्र" एक उपाधि है जिसका उपयोग यीशु ने स्वयं के लिए किया)। पिन्तेकुस्त के दिन, प्रेरित पतरस ने कहा, "वे [यीशु] परमेश्वर की ठहराई हुई योजना और पूर्व ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तो तुम ने अधर्मियों के हाथ से उसे क्रूस पर चढ़वाकर मार डाला" (प्रेरितों के काम 2:23; तुलना करें 4:27–28)

पौलुस फ़िरौन के कार्यों पर परमेश्वर के निर्धारण अधिकार का उल्लेख करते हैं (रोमियों 9:17)। प्रकाशितवाक्य 17:17 कहता है, "परमेश्वर उनके मन में यह डालेगा कि वे उसकी मनसा पूरी करें"। इसलिए, परमेश्वर इतिहास को पहले से निर्धारित करते हैं, और यहाँ तक कि बुरे कार्य भी उनकी योजनाओं को पूरा करते हैं।

पापियों के उद्धार के लिए मसीह के माध्यम से चयन परमेश्वर की पूर्वनियति में शामिल है (रोमियों 8:28–39; तुलना करें प्रेरितों के काम 13:48; फिलिप्पियों 2:12–13; 1 पतरस 2:9 के साथ)। परमेश्वर की उद्धार की योजना उनके अनन्त प्रेम पर आधारित है (इफिसियों 1:3–14; रोमियों 5:6–11)। मसीही जन परमेश्वर को जानकर और परमेश्वर द्वारा जाने (अर्थात्, प्रेम किए जाने) के द्वारा परमेश्वर की कृपा प्राप्त करते हैं (गलातियों 4:9)। चुनाव और विश्वासियों का विश्वास दोनों ही उद्धार की प्रक्रिया का हिस्सा हैं।

पूर्वनिर्धारण और परमेश्वर का पूर्व प्रबन्ध

पूर्वनिर्धारण परमेश्वर की पूर्व प्रबन्ध या परमेश्वर की देखभाल में निहित है। परमेश्वर का पूर्व प्रबन्ध संसार के लिए उनकी योजना की प्राप्ति है। सृष्टि के लिए परमेश्वर की देखभाल और नियंत्रण उनके स्वरूप में बनाए गए मनुष्यता के लिए उनके उद्धार की योजना को दर्शाते हैं। परमेश्वर इतिहास को नियंत्रित करते हैं, लेकिन वे पाप के लिए जिम्मेदार नहीं हैं। उन्होंने मनुष्यों को "हाँ" या "नहीं" कहने में सक्षम बनाया। लेकिन परमेश्वर की योजना को रोका नहीं जा सकता। यह विरोध के बावजूद जारी रहती है। परमेश्वर की अन्तिम योजना मनुष्य इतिहास की सभी घटनाओं में हो रही है, चाहे वे बुराई हों या भलाई। लेकिन उनकी प्रभुता बिना कारण या निष्पक्षता के नहीं थोपी जाती। परमेश्वर अत्याचारी नहीं हैं बल्कि पवित्र, प्रेममय और धर्मी हैं। उनकी योजना उनके स्वभाव के अनुसार पूरी होती है, जो सृष्टि के लिए देखभाल और चिंता में और पापियों के लिए अटल प्रेम में दिखाई देती है।

प्राकृतिक नियम वे नियम हैं जिन्हें परमेश्वर ने सारी सृष्टि को नियंत्रित करने के लिए स्थापित (पूर्वनिर्धारण) किया है। प्रकृति की विनाशकारी शक्तियों के बारे में क्या, जैसे भूकंप, बवंडर, और तूफान? ऐसे स्पष्ट बुराईयों की आवश्यकता एक प्रेममय परमेश्वर द्वारा बनाए गए संसार में क्यों है? इसका मतलब यह नहीं है कि परमेश्वर प्रकृति को नियंत्रित करने में असमर्थ हैं। यदि जीवन का पूरा अर्थ सांसारिक, भौतिक संसार में पाया जाता, तो यह एक समस्या हो सकती थी। लेकिन परमेश्वर का अन्तिम उद्देश्य केवल वर्तमान जीवन से अधिक है और इसमें आने वाले उद्धार के राज्य की पूर्णता शामिल है (प्रकाशितवाक्य 11:15; 21:1–4)। पूर्वनिर्धारण एक महान रहस्य है, लेकिन यह विश्वासियों को आनन्द और सुख प्रदान करना चाहिए जिनके प्रेममय प्रभु ने अपनी महान योजना उन्हें प्रकट की है।

यह भी देखें चुने हुए, चयन; पूर्व ज्ञान।

पूर्वी फाटक

यरूशलेम के शहरपनाह वाले नगर में फाटक (नहे 3:29)। "पूर्वी फाटक" का उल्लेख मन्दिर के फाटक के लिए भी होता है जैसा कि यहेजकेल 10:19; 11:1; और 43:1 में बताया गया है। *देखें* यरूशलेम।

पूर्वी ताल

पूर्वी ताल

खारे ताल या मृत सागर के लिए एक और नाम है। यह नाम इस समुद्र के इस्राएल की भूमि की पूर्वी सीमा पर स्थित होने के कारण आता है (यहेज 47:18; योए 2:20; जक 14:8)।

*देखें*मृत सागर।

पूर्वी ताल

पूर्वी ताल

यहेजकेल 47:18 में "पूर्वी ताल" का उल्लेख, मृत सागर के लिए एक वैकल्पिक नाम है। *देखें*मृत सागर।

पूर्वी लोग

पूर्वी लोग

यह वाक्यांश उन राष्ट्रों के संदर्भ में इस्तेमाल किया गया है जो इस्राएल के पूर्व में थे (उदाहरण के लिए न्या 6:3)। *देखें*पूर्वी लोग।

पूर्वी लोग

कनान के पूर्व और उत्तर-पूर्व में स्थित जनजातियाँ, उनमें से कई खुलेआम यहूदियों के प्रति शत्रुतापूर्ण थे। उत्पत्ति 29:1 इन लोगों का पहला संदर्भ प्रदान करता है। याकूब, हारान की ओर जाते हुए, उस क्षेत्र से गुजरे जिसे "पूर्वी लोगों की भूमि" के माध्यम से यात्रा की थी।

इस शब्द का व्यापक उपयोग यह दर्शाता है कि यह शब्द शरणार्थियों (यहेज 25:10) या मेसोपोटामिया के लोगों (1 रा 4:30) के लिए भी इस्तेमाल होता था। यह शब्द विशेष जनजातियों के साथ भी जुड़ा हुआ है, जैसे कि अमालेकी (न्या 6:3), अम्मोनी (यहेज 25:4), एदोमी (यशा 11:14), केदारी (यिर्म 49:28), मिद्यानी (न्या 6:33), और मोआबी (यहेज 25:10)।

इस शब्द से जुड़ी सबसे प्रतिष्ठित पुराने नियम की हस्ती कुलपति अय्यूब हैं, जिन्हें पूर्व के सभी लोगों में सबसे महान पुरुष कहा गया है (अय्यू 1:3)। अय्यूब की मातृभूमि, ऊस की भूमि, संभवतः मृत सागर के दक्षिण-पूर्व में एदोम के निकट थी।

पूल

1. एक नाम जो अश्शूरी शासक तिग्लत्पिलेसेर 745–727 ईसा पूर्व को तब दिया गया जब वह 729 ईसा पूर्व में बाबेल का राजा बना। उसने 727 ईसा पूर्व तक बाबेल पर शासन किया। (2 रा 15:19; 1 इति 5:26)। इस नाम का अर्थ अज्ञात है, और अश्शूरी हस्तलिपियों में इसका उल्लेख नहीं मिलता। कुछ विद्वानों का सुझाव है कि तिग्लत्पिलेसेर का मूल नाम पूल था। *देखें*तिग्लत्पिलेसेर।
2. एक अफ्रीकी लोग जिनका उल्लेख केवल किंग जेम्स संस्करण के यशायाह 66:19 में किया गया है। तर्शीश और लूद के साथ उनका सम्बंध इस बात का मजबूत समर्थन देता है कि "पूल" "पूत" (जैसा कि विभिन्न यूनानी हस्तलिपियों में) के लिए एक प्रतिलिपिकार की गलती है। वे मिस्रियों से सम्बन्धित लोग थे और लूबी लोगों की उपसंस्कृति हो सकते हैं। *देखें*पूत (स्थान)।

पृथ्वी

हमारे बसे हुए ग्रह के लिए प्रयुक्त शब्द। इसका उपयोग इसे स्वर्ग और नरक से अलग करने के लिए किया जाता है। यह भूमि, मिट्टी, या कई अन्य चीजों का भी अर्थ हो सकता है। बाइबल में "पृथ्वी" शब्द का उपयोग विभिन्न तरीकों से किया गया है, ठीक वैसे ही जैसे हम आज भी करते हैं।

इब्री में, एक शब्द जिसका अनुवाद "पृथ्वी" के रूप में किया गया है, "पुरुष" या "आदम" के लिए भी उपयोग होता है (उत्पत्ति 2:7, 19)। यह शब्द उस लाल मिट्टी को सन्दर्भित करता है जिससे आदम का शरीर बनाया गया था। एक अन्य इब्री शब्द जिसका अनुवाद "पृथ्वी" या "भूमि" के रूप में किया गया है, वह एक देश को सन्दर्भित कर सकता है (उत्पत्ति 21:21)। एक शब्द जिसका अनुवाद "धूल" के रूप में किया गया है, वह बस पृथ्वी या सूखी भूमि का अर्थ हो सकता है (उत्पत्ति 3:19)। नए नियम में, एक यूनानी शब्द जिसका अनुवाद "पृथ्वी" के रूप में किया गया है, वह भूमि या देश को भी सन्दर्भित कर सकता है (मत्ती 27:45)। एक अन्य यूनानी शब्द, जिससे "विश्वव्यापी" शब्द निकला है, पूरे बसे हुए पृथ्वी को सन्दर्भित करता है (लूका 21:26) या उस समय के रोमी साम्राज्य को (लूका 2:1)।

शुरुआत में, “परमेश्वर ने सूखी भूमि को “पृथ्वी” कहा, और जल के संग्रह को उन्होंने “समुद्र” कहा। और परमेश्वर ने देखा कि यह अच्छा था। फिर परमेश्वर ने कहा, 'पृथ्वी से हरी घास उत्पन्न हो'” (उत्पत्ति 1:10–11)। कुछ अंशों में, “पृथ्वी” का उपयोग उसी प्रकार किया गया है जैसे हम आज पूरे ग्रह के बारे में सोचते हैं (अय्यूब 1:7), जो खाली स्थान में लटका हुआ है (अय्यूब 26:7)। पृथ्वी के चार कोनों का उल्लेख (यशायाह 11:12; यहेजकेल 7:2) परकार के बिन्दुओं को सन्दर्भित करता है, न कि पृथ्वी के आकार को। "पृथ्वी का चक्र" सम्भवतः क्षितिज की परिधि को सन्दर्भित करता है (यशायाह 40:22; तुलना करें अय्यूब 38:13)। पृथ्वी को कभी-कभी स्तम्भों (अय्यूब 9:6; भजन 75:3) या नींवों (भजन 104:5; नीतिवचन 8:29; यशायाह 24:18; यिर्मयाह 31:37) द्वारा समर्थित बताया गया है। इनमें से कई विवरण काव्यात्मक या भविष्यद्वाणी अंशों में पाए जाते हैं, इसलिए वे भूमण्डल के बारे में इब्रानियों की समझ के बारे में बहुत कुछ नहीं बताते हैं।

“पृथ्वी” का अर्थ उस मिट्टी या भूमि से भी हो सकता है जिस पर किसान काम करता है (देखें 2 राजा 5:17)। बाइबल के अनुसार, पृथ्वी की मूल स्थिति (उत्पत्ति 2:6) मनुष्य की पापपूर्णता के कारण लाए गए श्राप से प्रभावित हुई थी (उत्पत्ति 3:17–19)। (आधुनिक पर्यावरण विशेषज्ञ सहमत हैं कि पृथ्वी मनुष्य के लालच और अहंकार के कारण पीड़ित है।) जब हाबिल का लहू भूमि पर गिरा, तो कैन की खेती में कठिनाई उन्हें लगातार याद दिलाती रही कि उन्होंने अपने भाई की हत्या की थी (उत्पत्ति 4:8–12)।

इस्राएलियों को निर्देश दिया गया था कि वे हर सातवें वर्ष भूमि को विश्राम दें (निर्गमन 23:10–12; लैव्यव्यवस्था 25:4–5) ताकि मिट्टी फसलों द्वारा उपयोग किए गए पोषक तत्वों को पुनः प्राप्त कर सके। ऐसे सात “सब्त के वर्षों” के बाद, 50वें “जुबली का वर्ष” में, भूमि अपने मूल परिवार मालिकों को लौटाई जाएगी (लैव्यव्यवस्था 25:10–17)। इस कानून ने लोगों को याद दिलाया कि परमेश्वर अन्ततः भूमि के स्वामी हैं और इससे विशाल सम्पत्तियों के साथ शक्तिशाली जमींदारों के उदय को रोका गया।

मूसा की व्यवस्था ने इस्राएलियों को यह भी सिखाया कि भूमि की स्थिति उनके परमेश्वर के साथ सम्बन्ध का चिन्ह थी। सूखा या दरिद्र फसल की उपज एक टूटे हुए सम्बन्ध का संकेत था (लैव्यव्यवस्था 26; व्यवस्थाविवरण 28)। इस्राएल को चेतावनी दी गई थी कि उनकी दुष्टता इतनी बढ़ सकती है कि परमेश्वर उन्हें अपनी पृथ्वी से बाहर निकाल देंगे (देखें लैव्यव्यवस्था 26:37; व्यवस्थाविवरण 28:64)। लेकिन यदि ऐसा हुआ भी, तो परमेश्वर ने वादा किया कि वे अन्ततः अपने लोगों को पुनर्स्थापित करेंगे ताकि वे फिर से भूमि के साथ विवाह कर सकें (यशायाह 62:4)।

बाइबल में कई अंश एक "आने वाले युग" की ओर संकेत करते हैं जब पृथ्वी को उसके "विनाश के दासत्व" से मुक्त किया जाएगा, और पूरी सृष्टि को इस आशा में "कराहते" हुए कहा गया है (रोमियों 8:19–23)। बाइबल एक महान नवीनीकरण के समय का वर्णन करती है जब पृथ्वी की उर्वरता को पुनःस्थापित किया जाएगा (यहेजकेल 47; योएल 3:18; आमोस 9:13–15; जकर्याह 14:6–9)। हालांकि, एक दिन, “आकाश गरज के साथ गायब हो जाएगा, तत्व आग से नष्ट हो जाएंगे, और पृथ्वी और उसके कार्य उजागर हो जाएंगे” (2 पतरस 3:10)। फिर भी, प्रेरित यूहन्ना के दर्शन में, उन्होंने “एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी देखी, क्योंकि पहला स्वर्ग और पृथ्वी समाप्त हो गए थे” (प्रकाशितवाक्य 21:1)।

*यह भी देखें*नया आकाश और नई पृथ्वी।

पृथ्वी की छोर

पृथ्वी की छोर

पृथ्वी की सीमाओं और छोरों को दर्शाने वाला आलंकारिक शब्द (अय्यू 37:3; यशा 11:12; यिर्म 25:32; 31:8; यहेज 7:2; प्रका 7:1; 20:8)।

पेकह

रमल्याह का पुत्र और इस्राएल का 18वाँ राजा। उसके नाम का अर्थ "उसने [आँखें] खोल दी हैं"। यह उसके पूर्वज पकहयाह के नाम का संक्षिप्त रूप है, जिसका अर्थ है "यहोवा ने [आँखें] खोल दी हैं"। इस नाम का उल्लेख हासोर के सतह V (जिसे 734 ईसा पूर्व में तिग्लत्पिलेसेर ने नाश किया था) से मिली आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व की एक दाखमधु घड़े के टुकड़े पर हुआ है। माना जाता है कि यह पेकह और एक विशेष प्रकार का दाखमधु का सन्दर्भ हो सकता है। यह सम्भव है कि हड़पने वाला पेकह राजा के रूप में अपना पद सुनिश्चित करने के लिये इतना उत्सुक था कि उसने जान बूझकर अपने पूर्वज का नाम ले लिया। इसके अलावा, यशायाह ने उसे लगभग ठट्ठा कर "रमल्याह का पुत्र" कहकर सम्बोधित किया, यह इंगित करने के लिये कि वह राजवंश का नहीं था। लेकिन जब यशायाह उसके गैर-यहूदी सहयोगी का उल्लेख करता है, तो वह स्पष्ट रूप से "अराम के राजा रसीन" नाम का उपयोग करता है (यशा 7:4–9; 8:6)।

सिंहासन पर बैठना

पेकह, जो पकहयाह का सरदार, सारथी और योद्धा, रथ में तीसरा व्यक्ति था। वह योद्धा का ढाल और हथियार ढोनेवाला था। समय के साथ यह शब्द एक राज सहायक-अधिकारी के रूप में प्रगट होने लगा।

पेकह द्वारा पकहयाह की हत्या की घटना कुछ सीमा तक अस्पष्ट हो गई है क्योंकि अर्गोब और अर्ये शब्दों को समझने

में कठिनाई है (2 रा 15:25)। कुछ अनुवादक और टिप्पणीकारों का मानना है कि ये शब्द व्यक्तियों को सन्दर्भित करते हैं, जबकि अन्यों का मानना है कि ये स्थानों के नाम हैं। कुछ विद्वान यहाँ पर पाठ को पूरी तरह से बदलकर और इन परेशान करने वाले शब्दों को समाप्त करके यह दावा करते हैं कि ये एक लिपिक गलती या सुधार थे। एक कुंजी उगारिटिक के साथ इन शब्दों की तुलना करने से प्राप्त होती है। ये शब्द क्रमशः "उकाब" और "सिंह" का अर्थ रखते हैं। इस प्रकार, पेकह की हत्या "उकाब और सिंह के पास" की गई थी। यह सुझाव दिया जाता है कि इसका अर्थ है कि उसे महल के रक्षक स्फिंक्स (एक कल्पित पशु जिसका शरीर सिंह का सा और मुँह स्त्री का सा होता है) के पास मृत्यु दी गई। ऐसे स्फिंक्स प्राचीन पूर्वी महलें में एक सामान्य नमूने थे और इनका पुनरुत्पादन हाथी दाँत की पट्टिकाओं पर किया जाता था जिन्हें प्रवेश द्वार पर स्थापित किया जाता था। यह व्याख्या बहुत संभाव्य प्रतीत होती है, क्योंकि यह आलोचनात्मक सुधार से बचती है और पाठ में प्रमुख समस्याओं का समाधान करती है।

राजनीतिक महत्व

उज्जवल तिग्लत्पिलेसेर तृतीय, जो अश्शूर साम्राज्य को प्रमुखता तक ले गए, इस्राएल की सीमा पर प्रगट हुए। मनहेम ने यह समझा कि उनके प्रति सहायक बनना बुद्धिमानी होगी। स्पष्ट रूप से, मनहेम के उत्तराधिकारी पकहयाह, अपनी कम समय के राज्य के दौरान अश्शूरियों को शान्त नहीं कर सके। मनहेम और पकहयाह के सामंजस्यपूर्ण प्रयासों ने सम्भवतः अरामी को पेकह, सेना के सरदार, के साथ विद्रोह करने के लिये प्रेरित किया, ताकि वे सामरिया के सिंहासन पर नियंत्रण प्राप्त कर सकें और अश्शूर के आक्रमण के विरुद्ध एकजुट सैन्य मोर्चा प्रस्तुत कर सकें। एक बार सामरिया पर नियंत्रण प्राप्त करने के बाद, अरामी, जिन पर शासन रसीन कर रहे थे, पेकह द्वारा शासित इस्राएल और कई यरदन के पार राज्यों ने एक शक्तिशाली सन्धि बनाई।

समय के साथ, पेकह और रसीन ने यहूदा के राज्य पर दबाव डालना शुरू किया ताकि उसे अश्शूर के आगामी हमले के विरुद्ध अपने सन्धि में शामिल किया जा सके। योताम ने उनके निमंत्रणों का विरोध किया और यहूदा के पहाड़ी देश में गढ़ बनाया। योताम के पुत्र, आहाज, ने सामरिया-दमिश्क सन्धि के साथ असहयोग की नीति जारी रखी। पेकह और रसीन ने यहूदा पर चढ़ाई की, जिसका उद्देश्य यरूशलेम को लेने और आहाज के स्थान पर "ताबेल का पुत्र" को यहूदा का राजा बनाना था (यशा 7:1–6)। वह सम्भवतः उज्जियाह या योताम के पुत्र थे, जो ताबेल की राजकुमारी से उत्पन्न हुए थे। हालाँकि यरूशलेम को घेरना असफल रहा, पेकह और रसीन ने आहाज की सेना पर भारी क्षति पहुँचाई। एक दिन के युद्ध में उन्होंने यहूदा के 120,000 पुरुषों का घात कर डाला और स्त्रियों और बच्चों सहित 200,000 को बंदी बना लिया और पकड़कर ले गए। हालाँकि, भविष्यद्वक्ता ओदेद ने सामरिया में सेना के सामने भविष्यद्वाणी की। उन्होंने सामरिया के मुख्य पुरुषों से बन्दियों को वापस करने का आग्रह किया। मुख्य पुरुषों ने भविष्यद्वाणी के शब्द को सुना और बन्दियों को यरीहो वापस लौटा दिया (2 इति 28:8–15)।

रसीन के अश्शूर के विरुद्ध विद्रोह ने तिग्लत्पिलेसेर को शीघ्र उत्तर देने के लिये प्रेरित किया, जिसने 734 ईसा पूर्व में दमिश्क को घेर लिया। यह नगर 732 ईसा पूर्व में गिर गया। अश्शूर की सेना की एक अन्य टुकड़ी अराम और सामरिया के ऊपरी जिलों पर चढ़ाई की। 2 राजा 15:29 उन जिलों और नगरों की सूची देता है जो जीत लिए गए थे। इनमें गिलाद (यरदन के पार के क्षेत्र), नप्ताली (गलील और मेरोम की झीलों के पश्चिम में स्थित क्षेत्र) और सम्पूर्ण गलील शामिल थे, जो दक्षिण में एस्द्रेलोन के मैदान और यिज्रेल की घाटी तक फैला था। यशायाह ने इस खोए हुए गोत्र की भूमि का उल्लेख किया है (यशा 9:1–7)। इसी अश्शूर-नियंत्रित क्षेत्र से एक मसीहाई शासक उठ खड़ा होगा, जो लोग अंधियारे में चल रहे थे उन्होंने बड़ा उजियाला देखा (वचन 2)। इस प्रकार, अश्शूर के 734–732 ईसा पूर्व के अभियान ने पेकह के राज्य को उसके मूल आकार के केवल एक-तिहाई तक सीमित कर दिया। 732 ईसा पूर्व में होशे के नेतृत्व में महल में एक राजद्रोह किया गया, जिसमें पेकह का घात करने युक्ति बनाई गई। इस विद्रोह में उसे मार दिया गया, और सिंहासन पर होशे ने अधिकार कर लिया।

राजाओं की पुस्तक के लेखक ने पेकह के राज्य का इस प्रकार मूल्यांकन किया है: "उसने वह किया, जो यहोवा की दृष्टि में बुरा था, अर्थात् नबात के पुत्र यारोबाम, जिसने इस्राएल से पाप कराया था, उसके पापों के अनुसार वह करता रहा, और उनसे वह अलग न हुआ" (2 रा 15:28)। सम्भावना है कि उसने दान और बेतेल में स्थित आराधना स्थलों पर बछड़े की उपासना जारी रखी। लगातार राज्य करने वाले राजाओं के समय इस विश्वासघात का बना रहना, वही कारण था जिससे उत्तरी राज्य पर परमेश्वर का न्याय आया। पेकह वह अन्तिम इस्राएल का राजा था, जिसके राज्य के लिये ऐसा मूल्यांकन किया गया।

पेचिश

परजीवी जीवाणु, आदिजन्तु (एक सलि का जन्तु), या दूषित भोजन या पेय में कीड़े के कारण होने वाला अतिसार। पेचिश के साथ आंतों में ऐंठन और छाला होता है, विष्ठा में रक्त और मवाद दिखाई देता है। माल्टा द्वीप पर प्रेरित पौलुस ने चमत्कारिक रूप से एक व्यक्ति को पेचिश से चंगा किया था (यूनानी में डिसेंटेरिया, प्रेरि 28:8)। जैसा कि वचन संकेत देता है, तेज बुखार तीव्र पेचिश के साथ आता है, जिसकी महामारी अभी भी माल्टा को विपत्ति देती है। पुराने नियम में वर्णित एक बीमारी सम्भवतः अमीबी पेचिश थी, जिसमें आंतों के ऊतक दिन-प्रतिदिन छीलने लगते हैं (2 इति 21:14–19)। पेचिश

का एक छोटा रूप तब होता है जब शरीर ज्यादातर हानिकारक जीवाणु को सहन करने में सक्षम होता है।

*यह भी देखें*औषधि और चिकित्सा पद्धति।

पेट्रा

नबातियों की राजधानी, जो पहली बार इतिहास में 312 ईसा पूर्व में प्रकट हुई थी। नबाती अरबी मूल के थे, हालांकि उनकी वंशावली अनिश्चित है। उन्होंने प्राचीन भूमि एदोम पर कब्जा कर लिया और पेट्रा को अपनी राजधानी बनाया। पेट्रा एक प्रभावशाली तराई में स्थित थी, जो पश्चिमी एदोम के पहाड़ों के बीच लगभग 1,000 गज (914.4 मीटर) चौड़ी थी। यह अकाबा के लगभग 60 मील (96.5 किलोमीटर) उत्तर में थी। तराई तक पहुँचने का एकमात्र रास्ता एक संकीर्ण घाटी के माध्यम से है जिसे सिक कहा जाता है। सभी ओर से, लाल बलुआ पत्थर की विशाल चट्टानें उठती हैं।

आज, कई मन्दिरों, घरों, मकबरों और अन्य संरचनाओं के खण्डहर शेष हैं जो लाल बलुआ पत्थर से तराशे गए थे। एक रोमी बेसिलिका (जो बैठकों और व्यापार के लिए उपयोग की जाती थी) और रंगशाला (जहाँ लोग नाटक और अन्य प्रदर्शन देखते थे) अभी भी दिखाई देते हैं। यह स्थान रोमी समय के दौरान बसा हुआ था। बाद में यहाँ एक मसीही कलीसिया और एक बिशप सेवा दिए। पेट्रा को छोड़ दिया गया और इसके भवन मुस्लिम विजय के दिनों में सातवीं शताब्दी ईस्वी में गिरने लगे।

*यह भी देखें*नबातियन।

पेड़

देखें पौधे।

पेन्स

मत्ती 18:28, मर 14:5, लुका 7:41, 10:35, and यूह 12:5 में दीनार का रूप। *देखें*सिक्के; धन।

पेराया

*देखिए*पेराया।

पेरिया

यह शब्द नए नियम में नहीं पाया जाता है सिवाय चौथी शताब्दी के हस्तलिपि कोडेक्स सिनैटिकस और पांचवीं शताब्दी के हस्तलिपि कोडेक्स वाशिंगटोनियानुस में, जहाँ यह लूका 6:17 में प्रकट होता है और अधिकांश यूनानी नए नियम के संपादकों द्वारा इसे एक भिन्न लेख के रूप में माना जाता है। इसका इस्तेमाल पहली शताब्दी ईस्वी में जोसेफस द्वारा "यरदन पार" क्षेत्र को संदर्भित करने के लिए किया गया था (उन्होंने "पार" के लिए यूनानी शब्द से पेरिया शब्द लिया था)। इसलिए क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति को जोसेफस के *वॉरऑफ़ द ज्यूस* (3.3.3) से सबसे अच्छी तरह से समझा जा सकता है: "अब पेरिया की लंबाई मैकेरस से पेला तक है, और इसकी चौड़ाई फिलदिलफिया से यरदन तक है; इसके उत्तरी भाग पेला से घिरा हुआ हैं, जैसा कि हमने पहले कहा है, और इसका पश्चिमी भाग यरदन से; मोआब की भूमि इसकी दक्षिणी सीमा है, और इसकी पूर्वी सीमा अरब और सिल्बोनिटिस तक और इसके अलावा फिलादिल्फ़ीन और गेरासा तक पहुँचती है।" गदारा को जोसेफस द्वारा "पेरिया का महानगर" कहा जाता है क्योंकि यह "सामर्थ का स्थान" था और क्योंकि "गदारा के कई नागरिक धनी व्यक्ति थे" (युद्ध 4.7.3)। इस गदारा को दिकापुलिस के गदारा, आधुनिक उम क़ैस के साथ भ्रमित नहीं होना चाहिए, लेकिन इसे आधुनिक अम्मान, यरदन के उत्तर-पश्चिम में लगभग 15 मील (24.1 किलोमीटर) दूर तल गदुरा के साथ पहचाना जाना चाहिए।

दिकापुलिस को मत्ती 4:25 में पेरिया से अलग किया गया है, जहां इसे पलिश्तिन के विभिन्न हिस्सों में सूचीबद्ध किया गया है जहां से लोग यीशु को सुनने के लिए आए थे। पेरिया को यहां "यरदन के पार" कहा गया है, और इसे मर 3:8 में भी इसी तरह नामित किया गया है। एक जगह मत्ती ने पेरिया को "यहूदिया के प्रदेश में यरदन के पार" (मत्ती 19:1) कहा गया है। यह हैरान करने वाला है क्योंकि राजनीतिक रूप से पेरिया कभी भी यहूदिया का हिस्सा नहीं था, यह अरखिलाउस के अधिकार क्षेत्र में नहीं था बल्कि हेरोदेस अन्तिपास के अधिकार क्षेत्र में था, जिसने गलील को भी नियंत्रित किया था। समानांतर गद्यांश मर 10:1 में लिखा है, "यहूदिया के सीमा-क्षेत्र और यरदन के पार।" शायद मत्ती इस वाक्यांश का उपयोग पेरिया के उस हिस्से को संदर्भित करने के लिए कर रहे थे, जो राजनीतिक रूप से यहूदिया का हिस्सा नहीं था, लेकिन जनसंख्या में यहूदी था। अपनी *प्राकृतिक इतिहास* (ईस्वी 77) में प्लयनि ने पेरिया को एक ऐसा स्थान बताया जो “यहूदिया के अन्य भागों से यरदन नदी द्वारा अलग किया गया” (5.70), और “यहूदिया का शेष भाग” 10 स्थानीय राजकीय क्षेत्रों में विभाजित है, जैसे कि उन्होंने पेरिया को यहूदिया का हिस्सा माना। हालांकि, यह एक गलत धारणा हो सकती है, क्योंकि प्लयनि का तत्काल क्षेत्र का ज्ञान कुछ हद तक संदिग्ध है—उसी संदर्भ में उन्होंने दावा किया कि मृत सागर "100 मील से अधिक लंबा और अपने सबसे चौड़े

हिस्से में 100 मील चौड़ा" है (*प्राकृतिक इतिहास* 5.72)। परन्तु वास्तव में, यह 50 मील (80.5 किलोमीटर) से कम लंबा और केवल 11 मील (17.7 किलोमीटर) चौड़ा है।

यह क्षेत्र प्रसिद्ध था और पुराने नियम में अक्सर इसका उल्लेख "यरदन के पार" वाक्यांश से किया गया है (गिन 22:1; व्य 1:1, 5) और इसके दक्षिणी भाग पर दो इस्राएली गोत्र गाद और रूबेन का कब्ज़ा था (यहो 1:12–14)। उत्तर में करीत नामक नाले से लेकर दक्षिण में अर्नोन नदी तक फैला हुआ, पेरिया वस्तुतः पुराने नियम के गिलाद का समानार्थी था (यहो 22:9; न्या 5:17)।

ऐसा लगता है कि मसीह के जन्म से पहले के दशकों (यूनानी काल) में यह एक महत्वपूर्ण नगर था, जब यहूदी (मैकाबीन) अगुवों ने 124 ईसा पूर्व के बाद इसे नियंत्रित किया था। रोमी शासन के तहत, यह 4 ईसा पूर्व में अपनी मृत्यु तक हेरोद महान को दिया गया था, जब यह (उसकी इच्छा के अनुसार) गलील के साथ उसके बेटे हेरोदेस अन्तिपास के हाथों में चला गया। क्योंकि यह क्षेत्र सुंदर और उत्पादक था और इसके पेड़ अपने औषधि के लिए प्रसिद्ध थे (यिर्म 8:22; 46:11), यह हमेशा अच्छी तरह से आबाद था और इसमें कई प्रसिद्ध शहर थे, जैसे कि पेला, जाबेश-गिलाद, सुक्कोत, पेनुएल और गेरासा (आधुनिक जेराश)। हेरोदेस अन्तिपास के पास पेरिया के दक्षिणी छोर पर मैकेरस नाम का एक किला भी था, जहाँ उसने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को कैद किया और उन्हें मृत्यु दण्ड दिया (जोसेफस की *एंटीक्विटिस* 18.5.2 देखें)।

यह यहूदी यात्रियों के लिए प्रथा थी कि वे गलील से यहूदिया की ओर आते-जाते समय यरदन नदी को पार कर पेरिया में प्रवेश करें ताकि सामरियों के संपर्क से बचा जा सके। अपने मृत्यु से पहले, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले यरदन के पार बैतनिय्याह में बपतिस्मा दे रहे थे जब उन्होंने यीशु को परमेश्वर का मेम्ना घोषित किया (यूह 1:28–29), और यीशु अपनी सेवकाई के दौरान एक बार यहाँ लौटे थे जब उन्हें गंभीर रूप से सताया जा रहा था (10:40)।

पेरेश

माका और माकीर का पुत्र मनश्शे के गोत्र से, और मनश्शे का पोता (1 इति 7:16)।

पेरेस

पेरेस

पेरेस, तामार से यहूदा के बड़े पुत्र। *देखें* पेरेस, पेरेसियों।

पेरेस, पेरेसियों

यहूदा का पुत्र था। उसका नाम इब्रानी शब्द से लिया गया है, जिसका अर्थ है "वह जो आगे बढ़ता है।" यह इस बात को दर्शाता है कि वह अपने जुड़वा भाई जेरह से पहले, तामार के गर्भ से अप्रत्याशित रूप से जन्मा (उत 38:29)। उन्होंने दो पुत्रों, हेस्रोन और हामूल को जन्म दिया और पेरेसियों के कुल के पूर्वज बने (उत 46:12; गिन 26:20–21; 1 इति 2:4–5; 4:1)। किंग जेम्स संस्करण और अपोक्रिफा में इस नाम को फारेज़, फारेस, और फारेसी के रूप में अनुवादित किया गया है।

अपने पुत्र हेस्रोन के बच्चों के माध्यम से, वे दाऊद और यीशु मसीह के पूर्वज बने (रूत 4:18–22; मत्ती 1:3; लूका 3:33)। यह कुल यहूदा के गोत्र में सम्मानित था। वे बैतलहम के पुरुषों द्वारा आशीषित थे (रूत 4:12)। उनकी वंशावली में एक याशोबाम नामक व्यक्ति था, जो दाऊद की सेना के प्रमुखों में से प्रत्येक वर्ष के पहले महीने के लिए नेतृत्व करता था (1 इति 27:2–3)। बाबेल के बँधुआई से लौटने पर, 468 पेरेसियों को यरूशलेम में रहने के लिए चुना गया (1 इति 9:4; नहे 11:4–6)।

पेरेसियों

पेरेसियों

किंग जेम्स संस्करण में पेरेसियों का रूप, जो पेरेस के परिवार का सदस्य है, जैसा कि गिन 26:20 में वर्णित है। *देखें* पेरेस, पेरेसियों।

पेरेसुज्जा

1 इतिहास 13:11 और 2 शमूएल 6:8 में नाकोन के खलिहान से जुड़े स्थान को दिया गया एक वैकल्पिक नाम। *देखें* नाकोन।

पेला

यरदन के पूर्व में स्थित नगर दिकापुलिस क्षेत्र में है। बाइबल में इस नगर का कोई सन्दर्भ नहीं है, लेकिन अभिलेख दिखाते हैं कि यह एक महत्वपूर्ण कनानी नगर था, जो मिस्र और बाद में यूनान और रोम से प्रभावित था। यहूदियों के रोम के खिलाफ विद्रोह (ईस्वी 66–70) के दौरान, पेला कई मसीहियों के लिए एक शरणस्थल और प्रारम्भिक कलीसिया का केन्द्र बन गया।

पेलिकन

*देखिए*पक्षी।

पेलेग

एबेर का पुत्र और रऊ का पिता (उत 10:25; 11:16–19; 1 इति 1:19, 25; लूका 3:35)। उसके जीवनकाल में, पृथ्वी का विभाजन हुआ (*पेलेग* का अर्थ है "विभाजन" या "जलधारा")। यह स्पष्ट नहीं है कि यह विभाजन किस ओर संकेत करता है। सुझावों में शामिल हैं:

1. बाबेल की मीनार के बाद भाषाओं का प्रसार (उत 11:1–9)
2. नूह के वंशजों का प्रसार
3. अर्पक्षद के लोगों का योक्तानी अरबों से अलग होना (उत 10:24–29)
4. नहरों के द्वारा भूमि का विभाजन (इस शब्द का उपयोग अय्यू 29:6; 38:25; यशा 30:25; 32:2 में इस प्रकार किया गया है)

इस नाम की उत्पत्ति आमतौर पर फरात और खाबुर नदियों के संगम के उत्तर में स्थित फाल्गा नगर से मानी जाती है।

*यह भी देखें*यीशु मसीह की वंशावली।

पेलेत

1. ओन का पिता जो रूबेन के गोत्र से था (गिन 16:1)।

2. योनातान के पुत्र और यहूदा के गोत्र से एक यरहमेली (1 इति 2:33)।

पेलेत

1. यहूदा के गोत्र से याहदै का पुत्र (1 इति 2:47)।

2. बिन्यामीन के गोत्र का एक योद्धा, जिसने राजा शाऊल के विरुद्ध युद्ध में सिकलग में दाऊद का साथ दिया। पेलेत उन वीरों में से एक था जो दोनों हाथों से तीर और गोफन चलाने में निपुण था (1 इति 12:2–3)।

पेलेती

हेलेस के लिये पदनाम, जो दाऊद के शूरवीरों में से एक थे और सम्भवतः पेलेती का वंशज था (2 शमू 23:26)। वे सम्भवतः बेत्पेलेत में रहते थे। 1 इतिहास 11:27 में उन्हें "पलोनी" कहा गया है। *देखें*बेत्पेलेत।

पैट्रोक्लस

नीकानोर के पिता (2 मक्का 8:9), सीरियाई सेनापति जिनके 20,000 सैनिकों को जूडस मक्काबियस के नेतृत्व में एक संख्यात्मक रूप से कमजोर समूह द्वारा पराजित किया गया था। पैट्रोक्लस का उल्लेख केवल उनके लज्जित और अपमानित पुत्र के सन्दर्भ में किया गया है।

पैतृक अधिकार

एक इब्री परिवार में पहलौठे पुत्र का अधिकार या विशेषाधिकार। सबसे बड़ा पुत्र पिता के बाद सबसे उच्च पद पर होता था और पिता की अनुपस्थिति में उसके पास पिता का अधिकार और जिम्मेदारी होती थी, जैसा कि रूबेन के अपने छोटे भाइयों के साथ सम्बन्ध से स्पष्ट होता है (उत 37:19–22, 28–30)। हालांकि, बाद में उसने व्यभिचार किया, इसलिए रूबेन ने अपनी पैतृक संपत्ति खो दी (उत 49:1–4)। अगली पंक्ति में शिमोन, लेवी, और यहूदा थे (उत 29:31–35), लेकिन याकूब, उनके पिता ने शिमोन और लेवी को उनके चरित्र की कमी के कारण त्याग दिया (उत 49:5–7)। यद्यपि उन्होंने यहूदा की प्रशंसा की (उत 49:8–10), याकूब ने अपने प्रिय पुत्र यूसुफ को पैतृक संपत्ति दी (उत 49:22–26; 1 इति 5:1–2; पुष्टि करें उत 37:2–4)।

मेसोपोटामिया में नुज़ी से पाए गए तख्तियों से यह प्रकट होता है कि पैतृक अधिकार को एक ही परिवार के सदस्यों के बीच बदला जा सकता था (पुष्टि करें उत 25:19–34)। पैतृक अधिकार रखने वाले व्यक्ति के पास "गृहदेवता," या घरेलू मूर्तियाँ (31:19, 32, 34) होते थे, जो छोटे मिट्टी के आकृति होते थे, संभवतः उस विशेष देवता के जो स्थानीय रूप से पूजा जाता था। ये प्रतीक पहलौठा की स्थिति और अधिकार को मजबूत करते थे।

पैतृक अधिकार का अर्थ केवल परिवार के नेतृत्व का आदर नहीं था, बल्कि हर अन्य पुत्र की तुलना में दो गुना विरासत भी था। बहुपत्नी इस्राएली समाज में पैतृक अधिकार पिता के वास्तविक पहलौठा को ही मिलता था और इसे पसंदीदा पत्नी के पुत्र को उचित कारण के बिना हस्तांतरित नहीं किया जा सकता था (व्य.वि. 21:15–17)। हालांकि, यदि ज्येष्ठ पुत्र की माता एक रखैल या दासी थी, तो उसे पैतृक अधिकार नहीं

मिलता था (उत 21:9–13; न्या 11:1–2)। राजा के ज्येष्ठ पुत्र के अधिकारों में सिंहासन का उत्तराधिकार शामिल था (2 इति 21:1–3)। जब यहूदा के राजा रहबाम ने अपने पसंदीदा पुत्र अबिय्याह को अपना उत्तराधिकारी बनाकर प्रथा का उल्लंघन किया, तो उन्हें अपने अन्य पुत्रों को शांत रखने के लिए भुगतान करना पड़ा (11:18–23; 12:16)।

नए नियम में, पुराने नियम के एसाव के वर्णन का संदर्भ दिया गया है, जो कुलपिता इसहाक के पुत्र थे, जिन्होंने आवेग में आकर अपने पैतृक अधिकार को एक कटोरी दाल के लिए बेच दिया था (इब्रा 12:16–17; पुष्टि करें उत 25:19–34)। मसीहियों को चेतावनी दी जाती है कि वे एसाव की तरह अपनी आत्मिक आशीष की मीरास को परमेश्वर से न खो दें, जैसे एसाव ने अपने पैतृक अधिकार और अपने पिता की आशीष खो दिया था (उत 27)।

*यह भी देखें*मीरास; वारिस; पहलौठा।

पैतृक सम्पत्ति

पिता या पूर्वजों से एक विरासत (व्य.वि. 18:8)।

*देखें*उत्तराधिकारी; मीरास।

पैराक्लीट

एक यूनानी शब्द का लिप्यंतरण जिसका अर्थ है "वह जो किसी की सहायता के लिए बुलाया गया है" या "वह जो किसी और के लिए वकालत करता है।" इस प्रकार, यह शब्द एक वकील के लिए तकनीकी रूप से उपयोग किया जा सकता है। सामान्य रूप से, यह शब्द उस व्यक्ति को दर्शाता है जो किसी और की ओर से बिचवई, मध्यस्थ, या प्रोत्साहन देने वाले के रूप में कार्य करता है। 1 यूहन्ना 2:1 में मसीह को पैराक्लीट कहा गया है क्योंकि वह परमेश्वर के सामने लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह कार्य उनके महायाजकीय सेवकाई से मेल खाता है (देखें इब्रा 7:25–28)।

"परैक्लीट" शब्द का सबसे अधिक उपयोग युहन्ना के सुसमाचार में मिलता है, जहाँ यह पवित्र आत्मा के कार्य को दर्शाता है (यूह 14:16, 26; 15:26; 16:13)। इन आयतों में यीशु कहते हैं कि जब वह चले जाएंगे, तो पवित्र आत्मा पिता की ओर से आएगा। परैक्लीट, जिसे "सत्य का आत्मा" भी कहा जाता है, उन्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा और यीशु के संदेश को सही ढंग से स्मरण कराएगा। वह उनके लिए प्रभु के जाने के बाद का उनका विशेष प्रतिस्थापन बनेगा।

*यह भी देखें*परमेश्वर का आत्मा।

पैसे

1. दीनार का अनुवाद (मत्ती 20:2, 9–10, 13; 22:19; मर 12:15; लूका 20:24; प्रका 6:6)।

2. रोमी गौरैय का अनुवाद, जो दीनार के सोलहवें भाग के बराबर है (मत्ती 10:29; लूका 12:6)।

3. रोमी दमड़ियाँ का अनुवाद, जो गौरैय के एक-चौथाई या दीनार के एक चौसठ-चौथाई के बराबर (मत्ती 5:26; मर 12:42)।

*यह भी देखें*सिक्के; धन।

पॉलीकार्प

यीशु के प्रेरितों के बाद के समय में अपने विश्वास के लिए शहीद होने वाले एक मसीही अगुआ।

पॉलीकार्प का प्रारम्भिक जीवन और कलीसिया में उनकी भूमिका

पॉलीकार्प का जन्म एक मसीही परिवार में हुआ था। उन्होंने स्वयं को "यूहन्ना" का शिष्य कहा। यह सम्भवतः प्रेरित यूहन्ना थे। पॉलीकार्प को एशिया के उपद्वीप स्मुरना का बिशप चुना गया था।

लगभग ईस्वी 116 में, एक अन्य मसीही अगुआ इग्नेशियस ने पोलीकार्प और स्मुरना की कलीसिया को पत्र लिखे। इग्नेशियस ने ये पत्र तब लिखे जब रोमी सैनिक उन्हें उनके विश्वास के कारण मारने के लिए रोम ले जा रहे थे। अपने जीवन के अन्त के निकट, पोलीकार्प अपने क्षेत्र की कलीसियाओं के साथ ईस्टर कब मनाना है, इस पर चर्चा करने के लिए रोम गए।

गिरफ्तारी और शहादत

नागरिक अधिकारियों ने पॉलिकार्प को गिरफ्तार किया। इन अधिकारियों ने उन्हें उनके विश्वास को त्यागने के लिए मनाने की कोशिश की। जब पॉलिकार्प ने इनकार कर दिया, तो उन्होंने उन्हें दाँव पर जला दिया। स्मुरना की कलीसिया से फिलोमेलियम की कलीसिया को लिखा गया पत्र पॉलिकार्प की मृत्यु का वर्णन करता है। यह कहानी नए नियम के बाहर मसीही शहादत का सबसे पुराना लेखा है।

पॉलीकार्प का फिलिप्पियों के नाम पत्र

स्मुरना के बिशप के रूप में, पोलीकार्प ने विभिन्न कलीसियाओं को कई पत्र लिखे। केवल उनका एक पत्र ही बच सका है। उन्होंने यह पत्र फिलिप्पियों को उनके द्वारा भेजे गए एक पत्र के जवाब में लिखा। जब इग्नेशियस रोम में अपने विश्वास के लिए शहीद होने की यात्रा कर रहे थे, तो उनके पहरेदार फिलिप्पी में रुके। इग्नेशियस ने फिलिप्पी की

कलीसिया को अन्ताकिया की कलीसिया को लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने पोलीकार्प के माध्यम से एक पत्र भेजा। वे अन्ताकिया की कलीसिया को एक पत्र भेजने में सहायता भी चाहते थे।

पॉलीकार्प ने फिलिप्पी के मसीहों को एक उत्तर लिखा जिसे हम अब *लेटर टू द फिलिप्पीयन्स* कहते हैं। उन्होंने इसे लगभग ईस्वी 120 में लिखा था। यह पत्र बहुत विशेष है क्योंकि यह पॉलीकार्प की एकमात्र लेखनी है जो हमारे पास अभी भी है। इस पत्र में, पॉलीकार्प ने सोचा कि इग्नेशियस की मृत्यु हो सकती है, लेकिन वह निश्चित नहीं थे। उन्होंने फिलिप्पियों से अनुरोध किया कि वे उन्हें इग्नेशियस के बारे में कोई भी समाचार बताएँ।

इस पत्र में, पॉलीकार्प:

- ने फिलिप्पियों की कलीसिया की अन्य कलीसियाओं के बीच उनकी उत्कृष्ट प्रतिष्ठा के लिए प्रशंसा की।
- ने यह उल्लेख किया कि पौलुस ने उन्हें कई पत्र लिखे थे।
- ने रुपये-पैसे से अत्यधिक प्रेम करने के बारे में चेतावनी दी, जिसने यहूदा इस्करियोती को यीशु के साथ विश्वासघात करने के लिए प्रेरित किया।
- झूठे शिक्षकों के खिलाफ बोले जिन्होंने कहा कि यीशु वास्तव में मृतकों में से नहीं जी उठे थे।
- ने कलीसिया के अगुओं और अन्य मसीहों को यह सिखाया कि उन्हें कैसे जीवन व्यतीत करना चाहिए

कई आलोचकों ने पॉलीकार्प के पत्र को "अमौलिक" कहा है क्योंकि इसमें कोई नई धर्मशास्त्रीय विचारधारा नहीं है। हालांकि, यह हमें यह समझने में सहायता करता है कि प्रारम्भिक कलीसियाओं के पास कौन से नए नियम के लेखन उपलब्ध थे। पत्र में शामिल हैं:

- नए नियम की कई पुस्तकों से उद्धरण और संकेत: मत्ती, प्रेरितों के काम, रोमियों, 1 कुरिन्थियों, गलातियों, इफिसियों, 2 थिस्सलुनीकियों, 1 तीमुथियुस, और 1 पतरस
- अन्य मसीही अगुओं जैसे क्लेमेंट और इग्नेशियस के पत्रों का उल्लेख करना
- पुराने नियम से कोई भी उद्धरण नहीं है
- हालांकि लोग कहते हैं कि पॉलीकार्प ने प्रेरित यूहन्ना से सीखा, फिर भी यूहन्ना के सुसमाचार का कोई उल्लेख नहीं है।

फिलिप्पियों को लिखा गया पत्र अन्ताकिया को पत्र भेजने के लिए पॉलीकार्प के वादे के साथ समाप्त होता है। वह उन्हें इग्नेशियस के पत्र भेजने का भी आश्वासन देते हैं।

पोकरेत-सबायीम

सुलैमान के सेवकों के परिवार के मुखिया जो जरूब्बाबेल के साथ बँधुआई से लौटे (एज्रा 2:57; नहे 7:59)। केजेवी इसे पोचेरथ ऑफ जेबाइम के रूप में प्रस्तुत करता है, जिससे बाद का हिस्सा एक स्थान-नाम बन जाता है।

पोकरेत-सबायीम

पोकरेत-सबायीम

*देखें*पोकरेत-सबायीम।

पोतीपर

उस हाकिम ने यूसुफ को खरीदा जब वह मिस्र पहुँचा, उसके भाइयों द्वारा उसे इस्माएलियों या मिद्यानियों के हाथ बेचे जाने के बाद (उत 37:36; 39:1)। "हाकिम" के लिए अनुवादित शब्द एक **अक्कादी** शब्द से लिया गया है जो एक कचहरी हाकिम के लिए है। पहले सहस्राब्दी तक, इस शब्द के साथ "खोजा" का अर्थ जुड़ गया था; इसलिए, नब, सेप्टुआजिंट परम्परा का अनुसरण करते हुए, उत्पत्ति 37:36 में "खोजा" का उपयोग करता है। लेकिन अधिकांश अंग्रेजी संस्करण इसे "हाकिम" या "प्रधान" के रूप में सही ढंग से प्रस्तुत करते हैं। मिस्र में खोजाओं के बारे में बहुत कम, अगर कुछ भी, ज्ञात है, और निश्चित रूप से उन्होंने दूसरे सहस्राब्दी ई.पू. में फ़िरौन की कचहरी में कोई भूमिका नहीं निभाई।

पोतीपर द्वारा धारण किया गया दूसरा खिताब "अंगरक्षकों का प्रधान" था, जो मिस्री शीर्षक के लिए एक सामी अभिव्यक्ति

प्रतीत होता है, बजाय इसके कि यह मिस्री वाक्यांश का लिप्यंतरण हो। यही खिताब नबूजरदान, नबूकदनेस्सर के सेनापति को भी दिया गया है (देखें 2 रा 25:8, 11, 20; यिर्म 39:9–11)। इस खिताब का मिस्री समकक्ष यह सुझाव देता है कि यह प्रधान राजा से जुड़े सेवकों के लिए एक प्रशिक्षक था। ये खिताब संकेत देते हैं कि पोतीपर कुछ महत्व और प्रतिष्ठा के पुरुष थे। घरेलू मामलों में सेवा के लिए एक सामी दास को खरीदना 1800 ई.पू. से मिस्रियों की प्रथा के अनुरूप है।

पोतीफर नाम मिस्र के नाम का लिप्यंतरण प्रतीत होता है, जिसका अर्थ है "वह जिसे रे [सूर्य देवता] ने दिया है।" यह नाम सूत्र मिस्र में लगभग 13वीं शताब्दी ई.पू. से जाना जाता है।

जब यूसुफ पर झूठा आरोप लगाया गया कि उन्होंने पोतीपर की पत्नी को बहकाने की कोशिश की, तो उन्हें बन्दीगृह में डलवा दिया (उत 39:20)। कुछ लोग सोचते हैं कि पोतीपर, जो "अंगरक्षक का प्रधान" थे, वही बन्दीगृह के अधीक्षक होंगे। लेकिन उत्पत्ति 39:21 हमें बताता है कि "बन्दीगृह के दरोगा" यूसुफ की क्षमताओं से प्रभावित हुआ (जो पोतीपर पहले ही जान चुके थे—पुष्टि करें पद 2–6), और इसलिए उन्हें विशेष जिम्मेदारियाँ दीं। बन्दीगृह में यूसुफ की प्रतिभाओं की खोज अधीक्षक द्वारा यह सुझाव देती है कि वह एक अलग पुरुष था।

*यह भी देखें*मिस्र, मिस्री ; यूसुफ #1I

पोतीपेरा

ओन के याजक की पुत्री, आसनत, को फ़िरौन ने यूसुफ को उनकी पत्नी के रूप में दिया था (उत 41:45, 50; 46:20)। ओन (या हेलियोपोलिस) सूर्य-परमेश्वर के उपासनाविधि का केंद्र था, और पोतीपेरा संभवतः उस उपासनाविधि में एक उच्च पदस्थ याजक थे। उनका नाम, जिसका अर्थ है "वह जिसे रे [सूर्य देवता] ने दिया है," मिस्री अभिलेखों में दसवीं शताब्दी ई.पू. तक नहीं मिलता, एक तथ्य जिसे उत्पत्ति की पुस्तक के लिए देर की तिथि पसंद करने वालों द्वारा उपयोग किया जाता है। फिर भी यह नाम 15वीं शताब्दी (मूसा के समय) से जाना जाता है, और इसका पूरा रूप यूसुफ के युग (20वीं शताब्दी ई.पू.) में सामान्य नाम का एक आधुनिक रूप हो सकता है।

*यह भी देखें*मिस्र, मिस्री; यूसुफ #1I

पोदीना

खाना पकाने और औषधि में उपयोग की जाने वाली एक मीठी सुगन्धित जड़ी-बूटी (मत्ती 23:23; लूका 11:42)।

*देखिए*पौधे।

पोर (देवता)

बालपोर के कनानी देवता का, या स्वयं उस स्थान का संक्षिप्त रूप (गिन 23:28; 25:3, 5)। *देखें*बालपोर; कनानी देवता और धर्म।

पोर (स्थान)

पोर (स्थान)

1. यरदन के पूर्व और मृत सागर के उत्तर में एक पर्वत है, जहां बालाक ने बिलाम को इस्राएल पर श्राप देने के अन्तिम प्रयास किया था (गिन 23:28)। शित्तीम में इस्राएल का शिविर उस स्थान से दिखाई देता था (24:2)। वहां इस्राएलियों ने मोआबी स्त्रीओं के साथ एक यौन उत्सव शुरू किया और बाल की पूजा की (25:1–13)। पर्वत का सटीक स्थान निश्चित नहीं है, हालांकि यूसेबियस और जेरोम इसे यरीहो के विपरीत हेशबोन के रास्ते में रखते हैं। इसे अबारीम श्रृंखला में नबो पहाड़ के पास माना जाता है।

2. यहोशू 15:59 में सेप्टुआजिंट में उद्धृत स्थान है, लेकिन इब्रानी पाण्डुलिपियों में नहीं है। इसे आधुनिक खिरबेत फघुर के रूप में पहचाना जाता है, जो बैतलहम के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है।

पोराता

पोराता

यहूदियों द्वारा मारे गए हामान के दस पुत्रों में से एक (एस्त 9:8)।

पोलक्स

यह यूनानी पौराणिक कथाओं में ज़्यूस के पुत्र और कैस्टर के जुड़वां भाई थे। जुड़वां भाइयों (प्रेरि 28:11) को दियुसकूरी भी कहा जाता है। *देखें* दियुसकूरी।

पोसिडोनियस

नीकानोर के लिए राजदूत। पोसिडोनियस को थियोडोटस और मत्तित्याह के साथ नीकानोर द्वारा जूडस मकाबी के साथ युद्ध में शामिल होने के बाद और यह महसूस करने के बाद कि समझौता करना बेहतर है, एक संघर्षविराम की व्यवस्था करने के लिए भेजा गया था (2 मक्क 14:19)।

पौधे

बाइबिल के पौधों की पहचान करना हमेशा से ही कठिन काम रहा है, आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि लोग बाइबिल के एल्म, गूलर, सोसन, गुलाब, और दाखलता को आधुनिक पौधों के साथ पहचानते हैं, और इसलिए भी क्योंकि वे मानते हैं कि पवित्र देश में वर्त्तमान में उगने वाले सभी पौधे प्राचीन बाइबिल के दिनों में वहाँ थे, या बाइबिल में जिन पौधों का उल्लेख है, वे आज भी वहाँ पाए जाते हैं। दुर्भाग्यवश, पवित्र देश में अब जो कई पौधे आम हैं, वे बाइबिल के दिनों में वहाँ नहीं थे। कई पौधे जो कभी पवित्र देश में बहुतायत में उगते थे, अब विलुप्त हो चुके हैं। कुछ को परदेशी आक्रमणकारियों के द्वारा समाप्त कर दिए गए है; अन्य पौधों को भूमि की अत्यधिक खेती, जंगलों के विनाश, और जलवायु और अन्य पर्यावरणीय परिस्थितियों में परिवर्तन के कारण नष्ट कर दिया गया है या वे लगभग समाप्त कर दिए गए है। एक समय पवित्र देश खजूर के पेड़ों का देश था, जहाँ खजूर का पेड़ उतना ही प्रचुर और विशिष्ट था जितना कि मिस्र में था, लेकिन आज खजूर का पेड़ बहुत कम प्रचलित है। इसी तरह, प्राचीन काल में विशाल देवदार के पेड़, लबानोन और अन्य पर्वत श्रृंखलाओं की ढलानों को ढंकते थे। अब बचे हुए कुछ नमूनों को सावधानीपूर्वक बाड़ लगाकर सुरक्षित किया जाना चाहिए ताकि उन्हें रौंदने और बकरियों के उत्पात से बचाया जा सके।

पूर्वावलोकन

- बबूल
- अकन्थस
- अल्गुम
- बादाम
- चन्दन
- एलवा
- सेब
- खुबानी
- बांज
- एस्पेन
- बलसान
- जौ
- बडेलियम
- सेम
- कड़वे सागपात
- झड़बेरी, यूरोपीय
- चीड़ के पेड़
- ब्रेंबल
- झाऊ
- बकथॉर्न
- झाड़ी
- सोसन
- मुश्क
- गन्ना
- कैपर का पौधा
- कैरब का पेड़
- तेज
- अरंडी का पौधा
- देवदार
- चिकोरी
- दालचीनी
- नींबू का पेड़
- धनिया
- कपास
- ककड़ी
- जीरा
- सरू
- सिंहपर्णी
- डार्नेल घास
- डिल
- आबनूस
- एंडिव
- देवदार, देवदार का पेड़
- सन
- लोबान
- कुन्दरू
- लहसुन
- जंगली फल
- बाड़ा
- मेंहदी

पौधे

- जलकुम्भी
- जूफा
- जुनिपर
- लॉरेल या स्वीट बे
- गन्दने
- मसूर की दाल
- सलाद
- सोसन
- कमल की झाड़ी
- लोनिया साग
- दूदाफाल
- खरबूजा
- बाजरा
- पुदीना
- शहतूत
- राई
- गन्धरस
- तैलवृक्ष
- केसर
- जटामासी
- बिच्छू पौधे
- जायफल का फूल
- बलूत वृक्ष
- तेल का पेड़, ओलियास्टर
- ओलियंडर
- जैतून, जैतून का पेड़
- प्याज
- खजूर
- कछार की घास
- चीड़ का पेड़
- पिस्ता
- अर्मोंन का पेड़
- अनार
- चिनार
- श्रीफल
- सरकंडा
- सुदाब
- रश
- केसर
- सेज
- कठिया गेहूँ
- स्टोरैक्स का पेड़
- गूलर-अंजीर का पेड़
- झाऊ का पेड़
- छोटे बांजवृक्ष
- काँटे और ऊँटकटारे
- ट्यूलिप
- टंबलवीड
- सब्जी
- दाखलता
- अखरोट
- जल सोसन
- गेहूं
- नागदौना

बबूल (बबूल टॉर्टिलिस और ए. सियाल)

गर्म क्षेत्रों में उगने वाले मिमोसा परिवार के पौधों का कोई भी पेड़ या झाड़ी। केजेवी में "शिट्टा" (एकवचन) या "शिट्टिम" (बहुवचन) के रूप में संदर्भित पौधा निस्संदेह बबूल का पेड़ है, जो अरब रेगिस्तान में किसी भी बड़े आकार का एकमात्र लकड़ी का पेड़ है। *बबूल टॉर्टिलिस* रेगिस्तान में अब तक का सबसे बड़ा और सबसे आम पेड़ है जिसमें इस्राएली 40 वर्षों तक भटकते रहे। यह विशेष रूप से सीनै पर्वत पर विशिष्ट है और संभवतः तम्बू के सामान के लिए इस्तेमाल की जाने वाली प्रजाति थी। *ए. सायल* कम आम है, कम से कम आज के समय में। यह 25 फीट (7.6 मीटर) तक ऊंचा हो सकता है, और मुड़ी हुई शाखाओं पर पीले फूल पैदा करता है। लकड़ी घनी दानेदार, भारी और सख्त, रंग में नारंगी-भूरी होती है, और फर्नीचर के काम में बहुत मूल्यवान होती है। प्राचीन मिस्र के लोग बबूल की लकड़ी से ममी के ताबूतों को बंद करते थे।

अकन्थस (अकन्थस सिरियाकस)

अकन्थस, जिसका उल्लेख संभवतः अय्यूब 30:7 और सपन्याह 2:9 में किया गया है, बारहमासी कांटेदार जड़ी-बूटी या छोटी झाड़ी है जो लगभग तीन फीट (.9 मीटर) लंबी होती है, और सभी पूर्वी देशों में सामान्य जंगली बीज है। इसे प्राचीन काल से कला में पत्तियों या खर्रा सजावट के नमूने के रूप में इस्तेमाल किया जाता रहा है।

अल्गुम (जुनिपरस एक्सेलसा बीब)

इतिहास 2:8 में लबानोन की जिस लकड़ी का ज़िक्र किया गया है, वह संभवतः देवदार है। हालाँकि, कुछ अनुवादकों का मानना है कि अल्गुम और अल्मुग एक ही पेड़ के लिए इब्रानी भिन्नताएं हैं (देखें एनएलटी एमजी, 2 इति 2:8)।

अलमुग *भी देखें* (नीचे)।

बादाम (अमिग्डालस कम्युनिस)

बादाम आड़ू जैसा पेड़ है जिसमें आरी जैसे दाँतेदार नुकीले पत्ते और भूरे रंग की छाल होती है। यह 10 से 25 फीट (3 से 7.6 मीटर) की ऊंचाई तक बढ़ता है। यह वर्ष की शुरुआत में बहुत जल्दी खिलता है; इसका इब्रानी नाम "निगरानी रखना" से हैं। यह यहूदियों के लिए वसंत का स्वागत करने वाला अग्रदूत था (यिर्म 1:11)।

चन्दन (पेरोकार्पस सैंटालिनस)

राजा सुलैमान द्वारा आयातित कीमती लकड़ी का उपयोग मंदिर के खम्भे और वीणा और सारंगियाँ बनाने के लिए किया जाता था (1 राजा 10:11–12)। यह लकड़ी समुद्र के रास्ते ओपीर से एस्योनगेबेर, एला के पास लाई गई थी। आधुनिक विद्वानों का सुझाव है कि ओपीर या तो अरब, भारत, या पूर्वी अफ्रीका में मोज़ाम्बिक के पास था। 2 इतिहास 2:8 में "अल्मुग" का संदर्भ संभवतः इसी पेड़ के लिए है। अल्गुम *देखें* (ऊपर)।

एलवा (अगर सुकोट्रिना, अक्विलारिया अगालोचा)

मुख्य रूप से अफ्रीकी, एलवा वंश का सोसन जैसा पौधा, जिसकी कुछ प्रजातियाँ औषधि और रेशा उत्पन्न करती हैं। एलवा सुगंधित पदार्थ है जिसका उल्लेख बाइबल में बलसान, गन्धरस, और अन्य सुगंधित पौधों के साथ किया गया है (भजन 45:8; नीति 7:17; श्रे.गी. 4:14; यूह 19:39)। अधिकांश विद्वानों का मानना है कि ये अंश दो अलग-अलग पौधों का उल्लेख करते हैं। पुराने नियम का पौधा संभवतः एक्विलरिया एगैलोचा, ईगलवुड रहा होगा, जो 120 फीट (36.6 मीटर) तक लंबा बड़ा पेड़ होता है जिसका तना 12 फीट (3.7 मीटर) परिधि वाला होता है। यह उत्तरी भारत, मलाया और इंडोचाइना का मूल स्थानिय है। सड़ती हुई लकड़ी अत्यधिक सुगंधित होती है, और इस प्रकार इसे इत्र, धूप और धूमन के लिए अत्यधिक मूल्यवान माना जाता है।

यूहन्ना 19:39 का एलवा को असली एलवा *(एलवा सक्कोट्रिना)* माना जाता है, जिसका रस मिस्रवासियों द्वारा शव-संरक्षण में उपयोग किया जाता था। हालाँकि इसकी गंध बहुत सुखद नहीं होती है, और इसका स्वाद कड़वा होता है। कभी-कभी इसे पशु चिकित्सकों द्वारा घोड़ों की औषधि के रूप में उपयोग किया जाता है।

सेब (मालस सिल्वेस्ट्रिस)

इब्रानी शब्द तप्पुच (नीति 25:11; श्रे.गी. 2:3, 5; 7:8; 8:5) द्वारा पहचाने जाने वाले फल की पहचान पर बहस जारी है। अधिकांश अंग्रेजी अनुवादों में इसे "सेब" के रूप में अनुवादित किया गया है क्योंकि इसके अरबी शब्द *तुफाह* से इस शब्द का भाषा रूपी संबंध घनिष्ठ है। कई विद्वान इस वृक्ष को खुबानी के रूप में पहचानते हैं, यह सवाल करते हुए कि क्या सेब बाइबिल के वर्णन "सोने के सेब" के अनुरूप हैं और क्या सेब के पेड़ की खेती प्राचीन फिलिस्तीन में की जाती थी। हालाँकि, कादेशबर्ने में हाल ही में की खुदाई में कार्बनीकृत सेब मिले हैं, संभवतः जंगली सेब *(मालस सिल्वेस्ट्रिस)*, जो नौवीं शताब्दी ईसा पूर्व के हैं। इससे निश्चित रूप से सुलैमान के बगीचों में इस सजावटी सेब की खेती की अनुमति मिल जाएगी।`

खुबानी *भी देखें* (नीचे)।

खुबानी (प्रूनस आर्मेनियाका)

इब्रानी शब्द तप्पुच की खुबानी के साथ पहचान पर बहस जारी है। खुबानी का पेड़ पीले-नारंगी आड़ू जैसा खाने योग्य फल उत्पन्न करता है और यह पश्चिमी आसिया और अफ्रीका का मूल स्थानिय है। यह पवित्र देश में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है और संभवतः बाइबिल के प्रारंभिक समय से ही ऐसा रहा है। यह पेड़ गोल सिर और लाल छाल वाला पेड़ है जो 30 फीट (9.1 मीटर) ऊँचा होता है। इस इब्रानी शब्द को अधिकांश अनुवाद "सेब" के रूप में प्रस्तुत करते हैं, यद्यपि कई विद्वान इसे बाइबिल गढ़यांशों में इसके वर्णनों के कारण खुबानी के साथ पहचानते हैं (देखें नीति 25:11; श्रे.गी. 2:3, 5; 7:8; 8:5; योए 1:12)।

सेब *भी देखें* (ऊपर)।

बांज (अल्हागी मौरोरम, फ्रैक्सिनस ऑर्नस, टैमारिक्स मैनिफेरा)

निकट पूर्व में कई प्रकार के बांज के पेड़ पाए जाते हैं। इनमें से एक, कांटेदार अल्हागी *(अल्हागी मौरोरम)*, मटर परिवार का सदस्य है। यह छोटा, कई तनों और बहुत शाखाओं वाली झाड़ी है जो लगभग तीन फीट (.9 मीटर) ऊँचा होती है, जिसमें कुछ हद तक रोयेंदार टहनियाँ और मटर जैसे फूल

होते हैं। दिन की गर्मी के दौरान, पत्तियाँ मीठा, चिपचिपा पदार्थ छोड़ती हैं जो हवा में सख्त हो जाता है और झाड़ियों को फैलाए हुए कपड़े पर हिलाकर इकट्ठा किया जाता है।

मन्ना तामारिस्क *(तामारिक्स मैनीफेरा) बहुशाखा* झाड़ी या छोटा पेड़ है जो 9 से 15 फीट (2.7 से 4.6 मीटर) ऊँचा होता है, जिसकी कठोर शाखाओं पर छोटे गुलाबी फूल होते हैं। यह पवित्र देश से लेकर अरब और सीनै तक के रेगिस्तानों में पाया जाता है।

कुसुमित या बांज वृक्ष *(फ्रैक्सिनस ऑर्नस)* एक ऐसा पेड़ है जो 15 से 50 फीट (4.6 से 15.2 मीटर) ऊँचा होता है। इसके फल हमारी बांज की प्रजातियों द्वारा उत्पादित फलों के समान होते हैं। यशायाह 44:14 (केजेवी) की बांज को अलेप्पो देवदार माना जाता है।

एस्पेन (पोपुलस यूफ्रेटिका या पी. ट्रेमुला)

पोपुलस वंश के कई पेड़ों में से कोई भी पेड़ जिसके पत्ते चपटे पत्तों के डंठलों से जुड़े होते हैं, जिससे वे हवा में कांपते या "थरथराते" हैं।

बलसान (बलानाइट्स एजिप्टियाका, पिस्ताशिया लेंटिस्कस, कोम्मिफोरा ओपोबाल्समुम)

मुख्य रूप से उष्णकटिबंधीय पेड़ों और झाड़ियों द्वारा उत्सर्जित तैलीय सुगंधित राल और औषधीय रूप से उपयोग किया जाता है; पेड़ और झाड़ियाँ इस पदार्थ का उत्पादन करती हैं। उत्पत्ति 37:25, यिर्मयाह 8:22, 46:11, और 51:8 में संदर्भों को या तो यरीहो बलसान *(बैलानाइट्स एजिपियाका)* या लेंटिस्क या मस्टिक पेड़ *(पिस्तासिया लेंटिस्कस)* माना जाता है। यरीहो बालसम मिस्र, उत्तरी अफ्रीका, यरीहो के मैदानों और मृत सागरीय सीमा से लगे गर्म मैदानों में बहुत आम है। यह एक छोटा रेगिस्तान-प्रिये पौधा है, जिसकी ऊँचाई 9 से 15 फीट (2.7 से 4.6 मीटर) होती है, जिसमें पतली, कांटेदार शाखाएँ और हरे फूलों के छोटे गुच्छे होते हैं।

लेंटिस्क या मस्टिक पेड़ पवित्र देश का मूल स्थानिय है, और शायद उत्पत्ति 43:11 में इसी पौधे का संदर्भ है, क्योंकि इसका संकेत है कि यह पवित्र देश का मूल उत्पाद है जो उस समय मिस्र में अज्ञात था। यह पेड़ झाड़ीदार या झाड़ी जैसा पेड़ है जो 3 से 10 फीट (.9 से 3 मीटर) ऊँचा होता है और इसके पत्ते सदाबहार होते हैं। "बलसान" सुगंधित गोंद जैसा पदार्थ है, जिसे आमतौर पर अगस्त में तनों और शाखाओं में चीरा लगाकर प्राप्त किया जाता है। सर्वोत्तम श्रेणियाँ पीले-सफेद पारदर्शी आँसू या बूँदों के रूप में होती हैं; इन्हें औषधि में कसैले के रूप में उपयोग किया जाता है। निम्न श्रेणियों का उपयोग वार्निश के रूप में बड़े पैमाने पर किया जाता है। पूर्व में बच्चे इसे च्युइंग गम के रूप में उपयोग करते हैं।

1 राजा 10:10, 2 राजा 20:13, श्रेष्ठगीत 3:6, यशायाह 39:2, और यहेजकेल 27:17 में मसालों का उल्लेख गिलाद का बलसान *(कॉमिफोरा ओपोबाल्समम)* माना जाता है, जो अपने नाम के बावजूद गिलाद या पवित्र देश का मूल स्थानिय नहीं है, बल्कि अरब, विशेष रूप से यमन के पहाड़ी क्षेत्रों का मूल स्थानिय है। रोमी विजय के समय यरीहो के मैदान पर ये पेड़ तब भी मौजूद थे। रोमी विजेताओं ने यहूदियों पर अपनी विजय के प्रतीक के रूप में इसकी शाखाओं को रोम ले गए।

यह पेड़ छोटा, कठोर शाखाओं वाला सदाबहार पेड़ है जो शायद ही कभी 15 फीट (4.6 मीटर) से अधिक ऊँचा होता है और इसकी शाखाएँ बिखरी होती हैं। "बलसान" पेड़ के तने और शाखाओं में चीरा लगाकर प्राप्त किया जाता है। रस जल्द ही छोटे अनियमित गांठों में सख्त हो जाता है जिसे इकट्ठा किया जाता है। हरे और पके फलों से भी गोंद प्राप्त किया जाता है।

गंधरस *भी देखें* (नीचे)।

जौ (होर्डियम डिस्टिचोन)

अनाज वाली घास, जिसमें घने फूलों की बालियाँ और खाने योग्य बीज होते हैं। सामान्य जौ *(होर्डियम डिस्टिचोन)*, शीतकालीन जौ *(एच. हेक्सास्टिचोन)*, और वसंत जौ *(एच. वल्गेरे)* को विश्व के समशीतोष्ण क्षेत्रों में प्राचीन काल से उगाया जाता रहा है और आज भी यह प्रमुख अनाज खाद्य पदार्थों में से एक है। जौ और गेहूं मिस्र और पवित्र देश के दो मुख्य अनाज फसलें थीं। कम महंगा होने के कारण, जौ का मुख्य रूप से मवेशियों को खिलाने के लिए उपयोग किया जाता था, हालाँकि इसे अकेले या गेहूँ और अन्य बीजों के साथ मिलाकर मनुष्य के भोजन के रूप में भी उपयोग किया जाता था (यहे 4:9–12)। बाइबल में जौ का 30 से अधिक बार उल्लेख किया गया है, या तो खेतों में उगने वाले पौधे के रूप में या इससे बने उत्पादों के संदर्भ में, जैसे जौ का आटा, जौ की रोटी, जौ के केक, और जौ की रोटियाँ। गरीबों के सामान्य भोजन के रूप में, जौ को गरीबी और सस्तेपन या नाकाबिल के प्रतीक के रूप में भी माना जाता था (होश 3:2)।

बडेलियम (कॉमिफोरा अफ्रीकाना)

अफ्रीका और पश्चिमी आसिया के *कॉमिफोरा* वंश के विभिन्न पेड़ों द्वारा उत्पादित लोबान के समान सुगंधित गोंद राल। उत्पत्ति 2:12 और गिनती 11:7 में बडेलियम का संदर्भ आज अधिकांश विद्वानों द्वारा गोंद राल के रूप में माना जाता है, जो झाड़ी, *कॉमिफोरा अफ्रीकाना*, से प्राप्त होती है, जो दक्षिण अरब और उत्तरपूर्वी अफ्रीका में उगती है। राल पीले रंग की, पारदर्शी, और सुगंधित होती है, और मोती के समान दिखती है।

सेम (फाबा वल्गारिस)

2 शमूएल 17:27–28 और यहेजकेल 4:9 में उल्लेखित संदर्भों को आमतौर पर चौड़ी सेम के रूप में माना जाता है। यह प्रजाति, वार्षिक पौधा है, जिसे मूल रूप से उत्तरी फारस में उगाया जाता था, लेकिन इसे बहुत प्रारंभिक समय में पश्चिमी आसिया में खाद्य पौधे के रूप में व्यापक रूप से उगाया जाता था। मिस्र के मकबरों के ममी ताबूतों में सेम पाई गई हैं, और उन्हें यूनानियों और रोमियो द्वारा भी उगाया गया था।

कड़वे सागपात(सिचोरियम एंडिविया, टैरेक्साकम ऑफिसिनेल, लैक्टुका सैटिवा)

"कड़वे सागपात" निर्गमन 12:8 और गिनती 9:11 में कासनी *(सिचोरियम एंडिविया)*, सामान्य चिकोरी *(सिचोरियम इंटीबस)*, सलाद पत्ता *(लैक्टुका सैटिवा)*, या सामान्य सिंहपर्णी *(टैराक्सैकम ऑफ़िसिनेल)* जैसे पौधे प्रतीत होते हैं। ये सभी जंगली बीज के पौधे हैं जो आधुनिक मिस्र और पश्चिमी आसिया में आम हैं और वहाँ रहने वाले लोग अभी भी इन्हें खाते हैं। साधारण बगीचे के सलाद पत्ते के पत्ते ब्लीच करने पर अत्यधिक कड़वे हो जाते हैं। यह सामान्य सिंहपर्णी के लिए भी सही है। अन्य लोग सुझाव देते हैं कि कड़वे सागपात काँटों और झाड़ियों से प्राप्त की गई थीं।

झड़बेरी, यूरोपीय (लाइसियम यूरोपियम)

विभिन्न कांटेदार झाड़ियाँ, जिनमें से कुछ प्रजातियाँ बैंगनी रंग के फूल और चमकीले रंग के जामुन उत्पन्न करती हैं। माना जाता है कि न्यायियों 9:14–15 में यूरोपीय झड़बेरी या रेगिस्तान-कांटेदार झाड़ी का संदर्भ दिया गया है। यह कांटेदार झाड़ी है जो 6 से 12 फीट (1.8 से 3.7 मीटर) ऊँची होती है, जिसमें गुच्छेदार पत्तियाँ और छोटे बैंगनी फूल होते हैं जो अंततः छोटे गोलाकार लाल जामुन उत्पन्न करते हैं। यह पवित्र देश में मूल और सामान्य है, विशेष रूप से लबानोन से मृत सागर तक के क्षेत्र में।

चीड़ के पेड़ (बक्सस लॉन्गिफोलिया)

लंबे पत्तों वाला चीड़ का पेड़ कठोर सदाबहार पेड़ है जो पवित्र देश के उत्तरी भाग, गलील पहाड़ियों और लबानोन के पहाड़ी क्षेत्रों में पाया जाता है। यह लगभग 20 फीट (6.1 मीटर) की ऊंचाई तक बढ़ता है, जिसका पतला तना शायद ही कभी छह से आठ इंच (15.2 से 20.3 सेंटीमीटर) से अधिक व्यास का होता है। इसकी लकड़ी बहुत सख्त होती है और इसे अच्छी तरह पॉलिश करना पड़ता है। इसकी कठोर लकड़ी के लिए रोमियो द्वारा इसकी खेती की जाती थी, जिसे उन्होंने अलमारियों और गहनों के बक्सों के लिए हाथी दांत के साथ जड़ा था। पवित्रशास्त्र के संदर्भों में यशायाह 41:19 और 60:13 शामिल हैं।

ब्रेंबल(रूबस सैंक्टस, आर. उल्मिफोलियस)

फिलिस्तीनी ब्रेंबल *(रूबस सैंक्टस)* और निकट से संबंधित एल्म-पत्ते ब्रेंबल *(आर. उल्मिफोलियस)* कांटेदार सदाबहार झाड़ियाँ हैं जो जड़ों के माध्यम से फैलती हैं। तने और युवा टहनियाँ एक विशिष्ट फूल या सफेद पाउडर और छोटे बालों से ढकी होती हैं। कांटे मजबूत, सीधे और बालों वाले होते हैं। फूल सफेद, गुलाबी, गुलाब, या बैंगनी रंग के होते हैं, और फल गोल और काले होते हैं।

कंटकारी, कांटा *भी देखें*(नीचे)।

झाऊ (रेतामा रेतम)

यूरेशिया में पाई जाने वाली झाड़ी। केजेवी में अनुवादित शब्द "जुनिपर" का असली जुनिपर से कोई संबंध नहीं है, बल्कि यह झाऊ की एक प्रजाति को संदर्भित करता है, जिसे सफेद झाऊ *(रेतामा राएटम)* के नाम से जाना जाता है। इसकी शाखाएँ लंबी और लचीली होती हैं, जो 3 से 12 फीट (.9 से 3.7 मीटर) ऊँची सीधी, घनी झाऊ बनाती हैं। पत्तियाँ छोटी और विरल होती हैं, फिर भी यह रेगिस्तानी क्षेत्र में सुखद छाया प्रदान करती है। सफेद मटर जैसे फूल मीठे और बहुत सुगंधित होते हैं और टहनियों के साथ गुच्छों में उगते हैं। यह सुंदर झाऊ है जो फिलिस्तीन, सीरिया और फारस के रेगिस्तानी क्षेत्रों में उगती है। कई रेगिस्तानी क्षेत्रों में यह एकमात्र झाऊ है जो कोई छाया प्रदान करती है (1 रा 19:4–5)।

अय्यूब 30:4 में वर्णित "झाऊ की जड़ें" न तो झाऊ की जड़ें हैं और न ही सफेद झाऊ की। उत्तरार्द्ध की जड़ें बहुत ही वमनकारी होती हैं और उन्हें अय्यूब द्वारा वर्णित तरीके से नहीं खाया जा सकता था। अय्यूब की "झाऊ की जड़ें" संभवतः खाद्य परजीवी पौधा *(सिनोमोरियम कोकीनम)* थीं। यह पौधा नमक के दलदल और समुद्री रेत में उगता है। इसे अक्सर भोजन की कमी के समय खाया जाता है और एक समय में इसे पेचिश के उपचार में इसके कथित औषधीय मूल्य के लिए अत्यधिक महत्व दिया जाता था।

बकथॉर्न (रामनस पैलेस्टिना)

फिलिस्तीनी बकथॉर्न, झाड़ी या छोटा पेड़ है जो तीन से छह फीट (.9 से 1.8 मीटर) की ऊंचाई तक पहुंचता है, जिसमें मखमली, कांटेदार शाखाएं, सदाबहार पत्तियां और छोटे फूलों के गुच्छे होते हैं जो मार्च या अप्रैल में खिलते हैं। यह सीरिया और लबानोन से लेकर पवित्र देश से अरब और सीनै तक की पहाड़ियों और झाड़ियों में उगता है।

झाड़ी (बबूल निलोटिका, लोरैंथस बबूल)

निम्न, शाखाओं वाला, लकड़ी का पौधा, जो आमतौर पर पेड़ से छोटा होता है। जिस झाड़ी में प्रभु मूसा के सामने प्रकट हुए थे, उसके बारे में मतभेद हैं (निर्ग 3:2–4)। बाइबिल के

विवरण से, ऐसा लगता है कि यह घटना चमत्कारी थी। हालाँकि, कुछ लोग प्राकृतिक व्याख्या चाहते हैं और मानते हैं कि जलती हुई झाड़ी संभवतः लाल फूलों वाली मिसलटो या बबूल का पट्टा फूल *(लोरंथस अकासिए)*, हो सकती है, जो पवित्र देश और सीनै में विभिन्न बबूल की झाड़ियों, जैसे कि कांटेदार बबूल *(अकेसिया निलोटिका)* पर आंशिक परजीवी के रूप में बहुत अधिक मात्रा में उगती है। जब यह पूरी तरह खिलता है, तो मिस्टलेटो झाड़ी या पेड़ को आग लगने जैसा आभास देता है क्योंकि इसके चमकीले ज्वाला-रंग के फूल मेजबान पौधों के हरे पत्ते और पीले फूलों के खिलाफ खड़े होते हैं।

सोसन (रानुनकुलस एशियाटिकस)

फारसी सोसन मैदान के फूलों या घासों में से एक है (मत्ती 6:28–30)। यह आकर्षक पौधा है जो नीले को छोड़कर सभी चमकीले रंगों में खिलता है, जिसमें कभी-कभी दो इंच (5.1 सेंटीमीटर) के दोहरे फूल होते हैं।

मुश्क (एकोरस कैलामस, एन्ड्रोपोगोन एरोमैटिकस)

एक पौधा, या उसकी सुगंधित जड़; उष्णकटिबंधीय आसिया ताड़ की कोई भी किस्म। यह उन पौधों में से एक था जो सुलैमान के बगीचे में उगते थे (श्रे.गी. 4:14)। स्वीट फ्लैग *(अकोरस* मुश्क*)* और बियर्डग्रास *(एंड्रोपोगोन सुगंधित)* को उन पौधों के रूप में सुझाया गया है जिनसे 'मुश्क' प्राप्त होता था। स्वीट फ्लैग अत्यधिक सुगंधित होता है और यूरोप और आसिया में उगता है, लेकिन यह पवित्र देश में नहीं पाया जाता है। भारत के मूल स्थानिय, बियर्डग्रास को कुचलने पर अत्यधिक सुगंध आती है और इसे बाइबल के 'मुश्क' का स्रोत माना जाता है। इससे एक तेल प्राप्त होता है जिसे अदरक-घास तेल कहा जाता है।

गन्ना (सैकरम ऑफ़िसिनारम)

ऐसा माना जाता है कि पवित्र देश में गन्ने की दो प्रजातियाँ स्वदेशी थीं और जंगली रूप में उगती थीं। इनमें से एक, *सैकरम सारा,* केवल लबानोन से ही जानी जाती है। अन्य देशी प्रजाति *एस. बिफ़्लोरम* है, जो सीरिया और लबानोन से लेकर पवित्र देश के दक्षिण में पथरीला अरब और सीनै तक की खाइयों और नदियों के किनारे उगती है। यह जंगली गन्ना यहूदियों के लिए परिचित हो सकता है। हालाँकि, अधिकांश अधिकारी मानते हैं कि यशायाह 43:24 का "सुगन्धित नरकट" असली गन्ना था *(एस. ऑफ़िसिनारम)*। माना जाता है कि इस पौधे की उत्पत्ति पूर्वी गोलार्ध के उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में हुई है। इसे अनादिकाल से लोग उगाते आ रहे हैं और अब यह जंगली अवस्था में कहीं भी नहीं पाया जाता है। यह लम्बी, मजबूत बारहमासी घास है, जो देखने में मक्का जैसी होती है, जिसमें अनेक संयुक्त तने होते हैं तथा अंत में फूलों का बड़ा पंखनुमा गुच्छा होता है।

कैपर का पौधा (कैपारिस सिंकुला)

भूमध्यसागरीय क्षेत्र का कांटेदार, लटकती हुई झाड़ी; इस झाड़ी की पुष्प कली। सभोपदेशक 12:5 में "इच्छा" शब्द वास्तव में कैपर बेरी को संदर्भित कर सकता है। सामान्य कैपर या कैपर बैरी सीरिया, लबानोन, पवित्र देश, और सीनै की पहाड़ी घाटियों में बहुतायत से उगता है। यह पौधा कभी-कभी सीधा उग सकता है लेकिन आमतौर पर बेल की तरह ज़मीन पर कमज़ोर रूप से फैलता है, चट्टानों, खंडहरों, और पुरानी दीवारों को आइवी की तरह ढकता है। सिरके में भिगोए गए फूलों की युवा कलियों का उपयोग प्राचीन काल में मांस के लिए मसाले के रूप में किया जाता था। जामुन का उपयोग खाना पकाने में भी किया जाता था।

कैरब का पेड़ (सेराटोनिया सिलिका)

यह भूमध्यसागरीय क्षेत्र का सदाबहार पौधा है जिसकी फलियाँ खाने योग्य होती हैं। विद्वान आम तौर पर इस बात पर सहमत हैं कि कैरब या टिड्डी वृक्ष की फलियाँ यीशु द्वारा उड़ाऊ पुत्र के दृष्टांत के "भूसे" थे (लूका 15:16)। कैरब आकर्षक सदाबहार फलीदार पेड़ है जो पवित्र देश, सीरिया और मिस्र में बहुत आम है। अप्रैल और मई में इसकी फलियाँ सबसे अधिक प्रचुर मात्रा में होती हैं और इनमें कई मटर जैसे बीज होते हैं जो स्वादिष्ट मिठासयुक्त गूदे में समाहित होते हैं। फलियों का उपयोग अब भी बहुतायत में किया जाता है क्योंकि प्राचीन काल में इनका उपयोग मवेशियों, घोड़ों और सूअरों को खिलाने के लिए किया जाता था। अभाव के समय में इनका उपयोग मानव भोजन के रूप में किया जाता है, तथा शायद अत्यंत गरीब लोग भी नियमित रूप से इनका उपयोग करते हैं। तलमुद में कैरब का अक्सर उल्लेख घरेलू पशुओं के लिए अच्छे भोजन के स्रोत के रूप में किया गया है। कैरब के बीज पूर्व में वजन के मानक के रूप में उपयोग किए जाते थे और यह "कैरेट" शब्द का स्रोत है। कुछ टिप्पणीकारों का सुझाव है कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के द्वारा खाए गए "टिड्डे" (मत्ती 3:4) कीड़े नहीं थे बल्कि कैरब के पेड़ के फल थे।

तेज (सिनामोमम तेज, सॉसरिया लप्पा)

उष्णकटिबंधीय आसिया का पेड़ जिसकी छाल दालचीनी के समान होती है लेकिन उससे निम्न होती है। निर्गमन 30:24 और यहेजकेल 27:19 का "तेज" तेज छाल का पेड़ है, सिनामोमम तेज। भजन संहिता 45:8 में इसका संदर्भ भारतीय ओरिस, *सौसुरिया लप्पा* से प्रतीत होता है।

अरंडी का पौधा (रिकिनस कम्युनिस)

बड़ा पौधा जो उष्णकटिबंधीय अफ्रीका और आसिया का मूल स्थानिय है, जिसकी खेती सजावटी कारणों से तथा इसके बीजों से तेल निकालने के लिए की जाती है। योना 4:6–7 का रेंड़ का पेड़ संभवतः साधारण अरंडी का बीज था। अरंडी की

फली कोमल झाड़ी है, जो 3 से 12 या अधिक फीट (.9 से 3.7 मीटर) लंबी होती है, जिसमें विशाल पत्तियाँ होती हैं जो फैले हुए मानव हाथ के समान होती हैं। अरंडी का पौधा लबानोन और पवित्र देश दोनों में बंजर स्थानों, विशेषकर पानी के पास पाया जाता है और अक्सर इसकी खेती की जाती है। गर्म जलवायु में यह, पेड़ जैसा हो जाता है और इसकी विशाल, छतरीनुमा जैसी पत्तियों की प्रचुरता से घनी छाया प्रदान करता है। यह पूर्वी क्षेत्र में अपनी तीव्र वृद्धि के लिए जाना जाता है। अरंडी के बीजों से निकाले गए तेल का उपयोग यहूदियों द्वारा धार्मिक अनुष्ठानों में किया जाता था और इसका उल्लेख उन पाँच प्रकार के तेलों में किया गया है जिन्हें रब्बी परंपरा के उपयोग के लिए स्वीकृत किया गया था। इसके बीज खाने पर स्वयं जहरीले होते हैं।

देवदार (सेड्रस लिबानी)

पुरानी दुनिया के मूल स्थानिय इस वंश के कई शंकुधारी सदाबहार पेड़ों में से कोई। कुछ अपवादों को छोड़कर, "देवदार" के संदर्भ लबानोन के प्रसिद्ध देवदार से है। यह एक महान पेड़ है, सबसे ऊँचा और सबसे विशाल जिससे इस्राएली परिचित थे। यह काफी तेजी से बढ़ता है और 120 फीट (36.6 मीटर) तक की ऊंचाई प्राप्त करता है और इसके तने का व्यास 8 फीट (2.4 मीटर) तक हो सकता है। सुलैमान के समय में ये पेड़ स्पष्ट रूप से लबानोन के पहाड़ों पर प्रचुर मात्रा में थे, लेकिन अब, अत्यधिक लकड़ी काटने के कारण, वे बहुत दुर्लभ हैं। लबानोन के देवदार को न केवल उसकी शक्ति, सुंदरता और आयु के लिए बल्कि लकड़ी की सुगंध और उल्लेखनीय स्थायी गुणों के लिए भी उच्च सम्मान में रखा गया था। यह भव्यता, शक्ति, महिमा, गरिमा, ऊँचे कद और व्यापक विस्तार का प्रतीक है। यहेजकेल 17:3, 22–24 और 31:3–18 में दिए गए संदर्भ खूबसूरती से दर्शाते हैं कि कैसे जंगल के ये महान राजा सांसारिक शक्ति, सामर्थ्य और महिमा का प्रतीक और उदाहरण हैं।

चिकोरी (सिकोरियम इंटिबस)

कड़वे सागपात *देखें*(ऊपर)।

दालचीनी (सिनामोमम ज़ेलेनिकम)

इस प्रजाति के दो प्रकार के पेड़, जो उष्णकटिबंधीय आसिया के मूल स्थानिय हैं, जिनकी सुगंधित छाल को पीसकर मसाले के रूप में उपयोग किया जाता है। निर्गमन 30:23, नीतिवचन 7:17, श्रेष्ठगीत 4:14, और प्रकाशितवाक्य 18:13 में उल्लिखित दालचीनी निस्संदेह *सिनामोमम ज़ेलेनिकम* है। यह पेड़ काफी कम उगता है, यह कभी भी 30 फीट (9.1 मीटर) से अधिक ऊँचा नहीं होता, इसमें चिकनी, राख के रंग की छाल और फैली हुई शाखाएँ और सफ़ेद फूल होते हैं। इसकी चमकदार, सुंदर नसों वाली सदाबहार पत्तियाँ लगभग नौ इंच (22.9 सेंटीमीटर) लंबी और दो इंच (5.1 सेंटीमीटर) चौड़ी होती हैं।

यहूदी हमेशा दालचीनी को स्वादिष्ट सुगंध वाला पदार्थ मानते थे और इसे मसाले और इत्र के रूप में बहुत महत्व देते थे। यह बहुमूल्य मलहमों, या "पवित्र तेल" के निर्माण में इस्तेमाल की जाने वाली प्रमुख सामग्रियों में से एक थी, जिसे मूसा को पवित्र पात्रों का अभिषेक करने और याजकों की सेवा करने के लिए निवासस्थान में इस्तेमाल करने की आज्ञा दी गई थी। यह निस्संदेह बहुत महंगा और कीमती था।

नीबू का पेड़ (टेट्राक्लिनिस आर्टिकुलाटा)

आसिया का देशी पेड़ जो मोटे, सुगंधित छिलके वाले नींबू जैसे फल देता है। यह शायद ही कभी 30 फीट (9.1 मीटर) की ऊंचाई से अधिक होता है और इसमें कठोर, गहरे रंग की, टिकाऊ, सुगंधित लकड़ी होती है जो अच्छी तरह से पॉलिश होती है। प्राचीन काल में यह लकड़ी सबसे अधिक मूल्यवान लकड़ियों में से एक थी, जिसका व्यापक रूप से फर्नीचर बनाने में उपयोग किया जाता था। इसे आमतौर पर सोने के वजन के बराबर मूल्यवान कहा जाता था। इसकी लकड़ी अपने रालयुक्त गुणों के कारण धीरे-धीरे सड़ती है और कीड़ों द्वारा लगभग अप्रभावित रहती है।

धनिया (कोरिएंड्रम सैटिवम)

निर्गमन 16:31 और गिनती 11:7 में संदर्भ स्पष्ट रूप से सामान्य धनिया पौधे के लिए हैं। धनिया पवित्र देश में खेती वाले खेतों में अनाज के साथ आमतौर पर उगता हुआ पाया जाता था। यह मिस्र में जंगली रूप में उगता है और प्राचीन काल में इसे मसाले और औषधि दोनों के रूप में उपयोग किया जाता था। इसके पत्ते बहुत सुगंधित होते हैं और इन्हें सूप, हलवा, करी और दाखमधु में स्वाद के लिए उपयोग किया जाता है। आज भी अरबियों द्वारा धनिया को मसाले के रूप में उपयोग किया जाता है। पवित्रशास्त्र में इसका उल्लेख केवल मन्ना के संदर्भ में किया गया है, जिसके बारे में कहा गया था कि यह आकार, आकृति और रंग में धनिया के बीज जैसा दिखता था।

कपास (गॉसिपियम हर्बेशियम)

इस प्रजाती के विभिन्न पौधे या झाड़ियाँ जो गर्म जलवायु में उनके बीजों से जुड़े नरम सफेद रेशे और इन बीजों से तेल के लिए उगाई जाती हैं। एस्तेर 1:6 में केजेवी का "हरा" निस्संदेह लेवेंट कपास *(गॉसिपियम हर्बेसियम)* का संदर्भ है जिसे सुदूर पूर्व में प्राचीन काल से उगाया जाता था। सिकंदर महान इसे भारत से वापस लाए थे। यह संभव है कि यहूदी लोग राजा क्षयर्ष के अधीन अपने फारसी बंदीगृह के दौरान कपास से परिचित हुए थे।

ककड़ी (कुकुमिस चेटे, सी. सटिवस)

ककड़ी वार्षिक चढ़ने वाली या लता वाली दाखलता है, जिसका मूल अज्ञात है। प्रागैतिहासिक काल से ही पुराने संसार के सभी गर्म देशों में इसकी खेती की जाती रही है। ककड़ी आमतौर पर कच्चे खाए जाते हैं; ककड़ी और जौ की रोटी या किसी अन्य प्रकार की रोटी को अक्सर भोजन के रूप में खाया जाता है। "ककड़ी के खेत में के मचान" (यश 1:8) का संदर्भ अक्सर फिलिस्तीनी ककड़ी के खेतों और अंगूर के बागों में स्थापित किए गए कच्चे बने छोटे घर या मचान को संदर्भित करता है।

जीरा (क्यूमिनम साइमिनम)

यशायाह 28:25–27 और मत्ती 23:23 में स्पष्ट रूप से जीरे का उल्लेख है—जो गाजर परिवार का एक सामान्य, वार्षिक पौधा है, जिसके बारे में कहा जाता है कि यह मिस्र और पूर्वी भूमध्य सागर के क्षेत्र का मूल स्थानिय है। इसकी खेती लंबे समय से इसके शक्तिशाली सुगंधित और तीखे बीजों के लिए की जाती रही है, जो कि अजवाइन के बीजों के समान होते हैं, लेकिन आकार में बड़े होते हैं। इनका स्वाद जीरे के बीजों जितना अच्छा नहीं होता है, लेकिन फिर भी इन्हें व्यापक रूप से स्वाद या मसाले के रूप में उपयोग किया जाता था और कभी-कभी रोटी बनाने में आटे के साथ भी मिलाया जाता था। जीरे का उपयोग औषधीय रूप में तथा मछली और मांस के साथ मसाले के रूप में भी किया जाता था।

सरू (क्यूप्रेसस सेम्परविरेंस हॉरिजॉन्टलिस)

सरू विशाल, लंबा-चौड़ा सदाबहार पेड़ है जिसके पत्ते तराजू जैसे होते हैं और यह पवित्र देश के पहाड़ी क्षेत्रों में व्यापक रूप से वितरित किया जाता है। लबानोन पर्वत और हेर्मोन पर्वत पर यह देवदार और बांज पेड़ के साथ उगता है। इसकी सामान्य ऊँचाई 50 से 60 फीट (15.2 से 18.3 मीटर) होती है, लेकिन यह 80 फीट (24.2 मीटर) तक ऊँचा हो सकता है। ऐसा कहा जाता है कि इसका उपयोग फिनिकेवासी, क्रेतवासी और यूनानियों द्वारा जहाज निर्माण में बड़े पैमाने पर किया गया था। इस बात पर आम सहमति है कि उत्पत्ति 6:14 में वर्णित "गोपेर की लकड़ी" सरू की लकड़ी है, क्योंकि यह लकड़ी बहुत टिकाऊ होती है।

सिंहपर्णी *(टारैक्सेकम ऑफिसिनेल)*

कड़वे सागपात *देखें*(ऊपर)।

डार्नेल घास (लोलियम टेमुलेन्टम)

यह आमतौर पर माना जाता है कि केजेवी (मत्ती 13:24–30) के "जंगली पौधे" वार्षिक या घनी डार्नेल घास हैं। यह मजबूत घास है जो दिखने में गेहूँ या राई के समान होती है। इसके बीज गेहूँ या राई के बीजों से बहुत छोटे होते हैं, लेकिन इसे शुरुआती चरणों में गेहूँ या राई से अलग करना बेहद मुश्किल होता है। यदि इसे जल्दी नहीं हटाया जाता है और फसल के समय तक छोड़ दिया जाता है, तो इसे गेहूँ के साथ काटा जाता है और बाद में दोनों को अलग करना बहुत मुश्किल हो जाता है। इसके बीज जहरीले होते हैं, या तो स्वाभाविक रूप से मौजूद कुछ रसायनों के कारण या बीजों के अंदर उगने वाले कवक के कारण ऐसा होता है।

डिल (एनेथम ग्रेवोलेंस)

डिल वार्षिक खरपतवार पौधा है जो अजमोद और सौंफ जैसा दिखता है, 12 से 20 इंच (30.5 से 50.8 सेंटीमीटर) ऊँचा होता है और इसमें पीले फूल होते हैं। मत्ती 23:23 (केजेवी) में सौंफ का संदर्भ संभवतः डिल का संदर्भ है। इस पौधे की खेती व्यापक रूप से सुगंधित और वातहर बीजों के लिए की जाती है।

आबनूस (डायोस्पायरोस एबेनेस्टर, डी. एबेनम, डी. मेलानॉक्सीलॉन)

मुख्य रूप से दक्षिण आसिया का उष्णकटिबंधीय पेड़, जिसकी हार्टवुड कठोर और गहरे रंग की होती है। आबनूस भारत के खजूर बेर या खजूर के पेड़ *(डायोस्पायरोस एबेनेस्टर* और *डी. मेलानॉक्सिलॉन)* से आता है और यह खजूर के पेड़ से काफी अलग है। इसे फिनिकेवासियों के जहाजों द्वारा अरब सागर और लाल सागर के पार सोर के बाजार तक लाया जाता था, जहाँ से इसे ऊँटों के काफिलों द्वारा स्थल मार्ग से ले जाया जाता था। इन पेड़ों की बाहरी लकड़ी सफेद और मुलायम होती है, लेकिन पुराने होने पर आंतरिक लकड़ी कठोर, काली, भारी और टिकाऊ हो जाती है और आज भी महंगी आबनूस लकड़ी व्यापार का मुख्य स्रोत है। आबनूस की लकड़ी पर बहुत अच्छी पॉलिश की जाती है और इसे फर्नीचर, खरादी, फैंसी सजावटी वस्तुओं और उपकरणों के निर्माण और अन्य लकड़ियों के लिए आवरण के रूप में अत्यधिक मूल्यवान माना जाता है।

यहेजकेल हाथी दाँत और आबनूस का साथ उल्लेख करते हैं (यहे 27:15)। आबनूस को पहले भी और आज भी अक्सर हाथी दांत के साथ जड़ा जाता है, जिसके साथ इसका रंग इतना आश्चर्यजनक रूप से विपरीत है।

एंडिव (चिकोरियम एंडिविया)

कड़वे सागपात *देखें*(ऊपर)।

अंजीर, अंजीर का पेड़ (फिकस कैरिका)

इस प्रजाति के कई पेड़ या झाड़ियाँ, जो भूमध्यसागरीय क्षेत्र के मूल स्थानिय हैं; इसका खाने योग्य फल है। बाइबल में लगभग 60 बार उल्लेखित आम अंजीर, बाइबल के सबसे महत्वपूर्ण पौधों में से एक है। सबसे पहले इसके पत्तों का उल्लेख उत्पत्ति 3:7 में किया गया है। अंजीर को आमतौर पर दक्षिण-पश्चिम आसिया और सीरिया का मूल स्थानिय माना

जाता है, लेकिन पहले के समय में इसे मिस्र और पवित्र देश में भी बड़े पैमाने पर उगाया जाता था, जहाँ यह मुख्य खाद्य पदार्थों में से एक था। पहला शमूएल 25:18 में लिखा है कि अबीगैल द्वारा दाऊद को भेजी गयी भेंट में 200 अंजीर की टिकियाँ भी शामिल थीं।

अंजीर के पेड़ का बहुत ही अजीब प्रकार का फल होता है जिसे साइकॉनियम कहा जाता है, जो वास्तव में बहुत बड़ा और मांस भरा होता है। इसका परागण ततैया द्वारा होता है, जिसके बिना यह फल प्राप्त नहीं कर सकता; इसका पता तब चला जब इसे पहली बार कैलिफोर्निया में रोपा गया।

अंजीर अपने पत्तों से पहले अपने शुरुआती फल की कलियाँ निकालता है, पहले फरवरी में और बाद में अप्रैल या मई में। जब पत्ते निकल आते हैं, तो फल पक जाना चाहिए (मत्ती 21:19)।

जब भी पुराने समय के भविष्यवक्ता लोगों को उनकी दुष्टता के लिए फटकारते थे, तो वे अक्सर धमकी देते थे कि अंगूर की दाखलता और अंजीर की फसलें नष्ट हो जाएँगी। और जब वे महान पुरस्कारों का वादा करते थे, तो वे कहते थे कि अंगूर की दाखलता और अंजीर की फसलें बहाल हो जाएँगी (यिर्म 8:13; होशे 2:12; यो 1:7, 12; मी 4:4; जक 3:10)।

देवदार का पेड़ (अबिस सिलिसिका)

यह विभिन्न सदाबहार पेड़ों के लिए सामान्य शब्द है जिनकी सुइयाँ चपटी होती हैं और शंकु सीधे होते हैं। पूरी संभावना है कि पवित्रशास्त्र में सरो के अधिकांश संदर्भ चीड़, सरो, या देवदार के संदर्भ हैं। पवित्र देश में एकमात्र असली सरो लबानोन के ऊँचे हिस्सों और उत्तर की ओर पहाड़ों में उगता है। इसकी ऊंचाई 30 से 75 फीट (9.1 से 22.9 मीटर) होती है और इसकी खेती व्यापक रूप से की जाती है।

सन (लिनम यूसिटाटिसिमम)

इस प्रजाति के कई पौधों में से एक, विशेष रूप से इसके बीजों से मिलने वाले अलसी के तेल और इसके तनों से मिलने वाले महीन वस्त्र रेशों के लिए व्यापक रूप से उगाया जाता है। सन सबसे पुराना वस्त्र रेशा है। बाइबल में केवल एक बार कपास का उल्लेख किया गया है (एस्त 1:6)। मिस्र या पवित्र देश में बाइबल के दिनों में किसी अन्य रेशा पौधे की खेती का कोई उल्लेख नहीं है, और इस कारण से यह माना जाता है कि ऊनी कपड़ों के अलावा अन्य कपड़े सनी के कपड़े से बनाए जाते थे। सन के कपड़े का उपयोग घरेलू उद्देश्यों के लिए भी किया जाता था जैसे तौलिया (यूह 13:4–5), नैपकिन (11:44), कमरबंद और अंतर्वस्त्र (यशा 3:23; मर 14:51), जाल (यशा 19:8–9), और मापने की रेखाएँ (यहे 40:3)। मंदिर में सेवा करने वाले याजकों को केवल सन के कपड़े के अलावा कुछ भी नहीं पहनने थे; ऊन और सन के मिश्रित कपड़े को यहूदियों के लिए सख्ती से मना किया गया था (लैव्य 19:19; व्य.वि. 22:11)।

बाइबिल के समय में कम से कम तीन प्रकार के सन के कपड़े का उपयोग किया जाता था, और प्रतीत होता है कि प्रत्येक प्रकार के लिए विशेष उपयोग थे। सबसे मोटे बनावट वाले साधारण सन के वस्त्र का उल्लेख लैव्यव्यवस्था 6:10, यहेजकेल 9:2, दानिय्येल 10:5, और प्रकाशितवाक्य 15:6 में किया गया है। उच्च गुणवत्ता वाले दूसरे प्रकार के सन के कपड़े का उल्लेख निर्गमन 26:1 और 39:27 में किया गया है। सबसे उत्तम बनावट और उच्च लागत वाले तीसरे प्रकार के सन के कपड़े का उल्लेख 1 इतिहास 15:27, एस्तेर 8:15, और प्रकाशितवाक्य 19:8 में किया गया है।

साधारण सन का पौधा एक से चार फीट (.3 से 1.2 मीटर) ऊँचा होता है जिसमें एक साधारण, पतला, तार जैसा तना और कई छोटे, हल्के, भाले जैसे हरे पत्ते होते हैं। सन की फसल की विफलता को परमेश्वर के दंड में से एक के रूप में सूचीबद्ध किया गया है (होश 2:9)। यहूदी महिलाओं का घरेलू उद्योग सन के रेशों से सन के कपडो का निर्माण करना था (नीति 31:13, 19), जिसमें साधारण कपड़ों से लेकर याजक और मंदिर के सेवकों द्वारा पहने जाने वाले वस्त्र और एप्रन शामिल थे। सन के कपड़े का उपयोग दीपकों में बत्तियों के लिए भी किया जाता था (यशा 42:3)।

लोबान (बोसवेलिया)

सुगंधित प्रजाति का राल मुख्य रूप से धूप के रूप में उपयोग किया जाता है। लोबान एक ही प्रजाति के तीन पौधों से प्राप्त होता है जो दक्षिणी अरब, इथियोपिया, सोमालिलैंड, भारत और पूर्वी इंडीज में उगते हैं। ये पेड़ आकार में बड़े होते हैं, जो तारपीन या तारपीन का पेड़ और उन पेड़ों से संबंधित होते हैं जो बालसम और गन्धरस उत्पन्न करते हैं। गोंद का स्वाद कड़वा होता है तथा गर्म करने या जलाने पर इसमें से वाष्पशील तेल के रूप में तीव्र गंध निकलती है। इसे जीवित पेड़ों के तने और शाखाओं की छाल में लगातार चीरे लगाकर प्राप्त किया जाता है। ऐसा माना जाता है कि इब्रानियों ने अपना सारा लोबान अरब से आयात किया, विशेष रूप से शेबा के क्षेत्र से।

बाइबिल में लोबान का 21 बार उल्लेख किया गया है (जैसे, निर्ग 30:34; 1 इति 9:29; नहे 13:9; श्रे.गी. 3:6; 4:6, 14; मत्ती 2:11; प्रका 18:13) और संभवतः सुलैमान के समय तक इसे लगभग विशेष रूप से तंबू और मंदिर की बलिदान सेवाओं में ही उपयोग किया जाता था। यह हमेशा से संसार में सबसे महत्वपूर्ण धूप राल रहा है।

कुन्दरू (फेरुला गैलबैनिफ्लुआ)

कुन्दरू दुर्गंधयुक्त पीले या भूरे रंग का गोंद राल है जिसमें रासायनिक पदार्थ अंबेलिफेरोन होता है, जो सौंफ से संबंधित

कई पौधों की प्रजातियों से प्राप्त होता है, जो सीरिया और फारस का मूल स्थानिय हैं। गोंद तने का स्वाभाविक स्राव है या इसे जमीन से कुछ इंच ऊपर युवा तने में अनुप्रस्थ चीरा लगाकर प्राप्त किया जाता है। दूधिया रस जल्दी ही कठोर हो जाता है और व्यावसायिक कुन्दरू के प्रकारों में से एक बनता है। इसकी गंध बहुत ही बलसामी, तीखी और जलने पर अप्रिय होती है। कुन्दरू उन सामग्रियों में से एक था जिनका उपयोग "पवित्र धूप" बनाने के लिए किया जाता था (निर्ग 30:34)।

लहसुन (एलियम सैटिवम)

प्याज देखें (नीचे)।

जंगली फल (सिट्रुलस कोलोसिंथिस)

"जंगली फल" (2 रा 4:39) या "पित्त" (व्य.वि. 29:18; 32:32; भज 69:21; यिर्म 8:14; 9:15; 23:15; विला 3:5, 19; आमो 6:12; मत्ती 27:34; प्रेरि 8:23) के अनुवादित शब्दों के अर्थ के बारे में काफी मतभेद रहे हैं। आज अधिकांश विद्वान मानते हैं कि जिस पौधे का उल्लेख किया गया है वह कोलोकिंथ था, एक ककड़ी जैसी दाखलता जो जमीन पर फैलती है या झाड़ियों और बाड़ों पर चढ़ता है। इसका फल में नरम स्पंजी गूदा होता है, जो अत्यधिक कड़वा, तीव्र रेचक और कभी-कभी जहरीला होता है।

बाड़ा (रहम्नुस पलेस्टिना, बालानाइट्स एजिप्टियाका, लाइसियम यूरोपियम)

पास-पास लगाई गई झाड़ियों या छोटे पेड़ों की पंक्ति जो बाड़ या सीमा बनाती है। बाइबल के समय में बाड़ा प्रदान करने के लिए कई पौधों का उपयोग किया गया था। इनमें से एक था फिलिस्तीन बकथॉर्न, *रैरामनस पैलेस्टिना*। यह पौधा झाड़ी या छोटा पेड़ है जो तीन से छह फीट (.9 से 1.8 मीटर) ऊँचा होता है, इसकी शाखाएँ मखमली और कांटेदार और पत्तियाँ सदाबहार होती हैं, और इसमें मार्च और अप्रैल के महीनों में छोटे फूलों के गुच्छे खिलते हैं। यह झाड़ियों और पहाड़ियों पर सीरिया से पवित्र देश तक, अरब और सीनै तक उगता है। यरीहो बालसम *(बैलेनिट्स एजिपियाका)* और यूरोपीय बॉक्सथॉर्न *(लाइसियम यूरोपियम)* भी कांटेदार झाड़ियाँ हैं जिनका पवित्र देश में व्यापक रूप से बाड़े के रूप में उपयोग किया जाता है और संभवतः वे पौधे हैं जिनका उल्लेख नीतिवचन 15:19 और होशे 2:6 में किया गया है।

मेहंदी (लॉसोनिया इनर्मिस)

आसिया और उत्तरी अफ्रीका का पेड़ या झाड़ी जिसमें सुगंधित लाल या सफेद फूल और पत्ते होते हैं जिनसे लाल रंग बनाया जाता है। श्रेष्ठगीत 1:14 और 4:13 में संदर्भित और "कपूर" (केजेवी) के रूप में अनुवादित पौधे को आज विद्वानों द्वारा मेंहदी के पौधे के रूप में माना जाता है। यह उत्तरी भारत का मूल स्थानिय है और सूडान, मिस्र, अरब, सीरिया, लबानोन और पवित्र देश में जंगली रूप में उगता है। यह 4 से 12 फीट (1.2 से 3.7 मीटर) ऊँचा होता है, और इसकी सुगंध गुलाब की तरह होती है।

मेहंदी की पत्तियों को सुखाकर, पीसकर पाउडर बनाया जाता है, जिसे पानी के साथ मिलाकर पेस्ट बनाया जाता है जिसे प्राचीन काल से सौंदर्य प्रसाधन के रूप में उपयोग किया जाता रहा है। मेंहदी से सजी हुई अनेक मम्मियां पाई गई हैं। मेहंदी का उपयोग युवा लड़कियों के नाखूनों, उंगलियों के सिरों, हाथों की हथेलियों और पैरों के तलवों को चमकीला पीला, नारंगी या लाल रंग देने के लिए किया जाता था। पुरुष भी अपनी दाढ़ी और घोड़ों की अयाल और पूंछ को रंगने के लिए इसका उपयोग करते थे। मिस्र में सौंदर्य प्रसाधन के रूप में मेंहदी का यह उपयोग उस समय आम था जब इस्राएल के बच्चे गुलाम के रूप में वहाँ थे; वे निस्संदेह इससे परिचित थे।

जलकुम्भी (हायसिंथस ओरिएंटलिस)

श्रेष्ठगीत 2:1–2, 16; 4:5; और 6:2–4 में उल्लिखित कुमुद शायद बगीचे का जलकुम्भी हो सकता है। यह पवित्र देश, लबानोन और उत्तर की ओर के खेतों और चट्टानी स्थानों का मूल स्थानिय है और वहां बहुत आम है। जंगली रूप में इसके फूल हमेशा गहरे नीले और बहुत सुगंधित होते हैं।

सोसन *भी देखें (नीचे)*।

जूफा (ओरिगेनम मारु)

आसिया में पाया जाने वाला यह लकड़ी जैसा पौधा, जिसमें छोटे नीले फूल और सुगंधित पत्तियां होती हैं, इसका उपयोग मसाले और इत्र बनाने में किया जाता है। बाइबिल में वर्णित "जूफा" की सटीक पहचान के बारे में वनस्पतिशास्त्रियों के बीच बहुत कम सहमति है। कुछ लोगों ने *हिसोपस ऑफिसिनेलिस* का सुझाव दिया है, जो कि एक प्रसिद्ध उद्यान जड़ी बूटी है जिसे अब जूफा कहा जाता है। हालाँकि, यह पौधा न तो पवित्र देश और न ही मिस्र का मूल स्थानिय है, यह केवल दक्षिणी यूरोप में पाया जाता है। इसके अलावा, यह बाइबिल में बताए गए पौधे की आवश्यकताओं को पूरा नहीं करता है।

पुराने नियम का "जूफा" संभवतः सीरियाई या मिस्री मरजोरम *(ओरिगेनम मारु)* है। इसका उल्लेख निर्गमन 12:22; लैव्यव्यवस्था 14:4–6, 52; गिनती 19:6, 18; 1 राजा 4:33; भजन संहिता 51:7; और इब्रानियों 9:19 में किया गया है। मरजोरम पुदीने के पौधे हैं जो (अनुकूल परिस्थितियों में) लगभग दो या तीन फीट (0.6 से 0.9 मीटर) ऊंचे उगते हैं, लेकिन अक्सर चट्टानों की दरारों और दीवारों में उगने पर अक्सर बौने हो जाते हैं (पुष्टी करें 1 रा 4:33)। कुचले और सूखे पत्तों से सुगंधित पदार्थ प्राप्त होता है। यदि पत्तियों और फूलों के साथ एक गुच्छे में इकट्ठा किया जाए, तो मरजोरम के बालों वाले तने तरल पदार्थ को बहुत अच्छी तरह से पकड़ेंगे और उत्कृष्ट छिड़कावक बनेंएंगे।

नये नियम (यूहन्ना 19:29) में क्रूस पर चढ़ाए जाने के वर्णन में जूफा संभवतः सोरगम है, जो मुख्य रूप से भोजन के लिए उगाया जाने वाला लंबा अनाज का पौधा है, लेकिन ब्रश और पोछे के लिए भी उपयोग किया जाता है।

जुनिपर (जुनिपेरस)

सदाबहार पेड़ या झाड़ी की विविधता। यिर्मयाह 17:6 और 48:6 में संदर्भित पौधा और केजेवी में अनुवादित "हीथ" शायद सविन या फिनीकी जुनिपर है। फिनीकी जुनिपर, *जुनिपरस फोनीशिया,* अरब के पहाड़ियों और चट्टानी स्थानों में पाया जाता है। सविन जुनिपर, *जे. सबीना,* सीरिया और फिलिस्तीन के रेगिस्तानों, मैदानों और चट्टानी क्षेत्रों में सामान्य है। ये संदर्भ भूरे-फलों वाले देवदार या तीखे देवदार के लिए हैं।

लॉरेल या स्वीट बे (लॉरस नोबिलिस)

भूमध्यसागरीय क्षेत्र का मूल स्थानिय झाड़ी या पेड़ है। जबकि भजन संहिता 37:35 में लबानोन के देवदार का संदर्भ हो सकता है, अधिकांश विद्वान इसको "हरा बे पेड़" (केजेवी) जो भजनकार के मीठे बे से उल्लेख करते हैं, जो पवित्र देश का मूल स्थानिय है, जो तट से लेकर मध्य पर्वतीय क्षेत्र तक झाड़ियों और जंगलों में स्थानिय है। यह एक सदाबहार पेड़ है जो 40 से 60 फीट (12.2 से 18.3 मीटर) की ऊँचाई तक पहुंचता है।

हालाँकि कार्मेल पर्वत और हेब्रोन के आसपास यह पेड़ प्रचुर मात्रा में है, यह आमतौर पर पवित्र देश में सामान्य नहीं है। इसकी पत्तियों का अभी भी मसाले के रूप में उपयोग किया जाता है, और इसके फल, पत्तियाँ और छाल लंबे समय से औषधि में उपयोग की जाती रही हैं।

गन्दने (एलियम पोरम)

प्याज *देखें (नीचे)*।

मसूर की दाल (लेंस एस्कुलेंटा)

जिस मसूर के पौधे का उल्लेख उत्पत्ति 25:29–34, 2 शमूएल 17:27–29, 23:11, और यहेजकेल 4:9 में किया गया है, वह छोटा, सीधा, वार्षिक, वेच जैसा पौधा है जिसमें पतले तने और लता धारण करने वाले पत्ते होते हैं। यह छोटे, सफेद, बैंगनी-धारीदार फूल तथा चपटी, मटर जैसी फलियाँ पैदा करता है, जिनमें मसूर की दालें उगती हैं।

सलाद (लैक्टुका सैटिवा)

कड़वे सागपात *देखें*(ऊपर)।

सोसन (लिलियम)

लिलियम वंश के विभिन्न पौधे जिनमें बड़े, विभिन्न रंग के, तुरही के आकार के फूल होते हैं; और संबंधित पौधे। बाइबिल में वर्णित सभी पौधों में सोसन सबसे प्रसिद्ध है, लेकिन यह एक ऐसा पौधा है जिसके बारे में काफी मतभेद रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि कई प्रकार के पौधे, शायद पाँच या छह, को केजेवी में सोसन कहा गया है। अधिकांश विशेषज्ञ फिलिस्तीन एनीमोन या पवन फूल, *एनीमोन कोरोनारिया,* को "सोसन का मैदान" (मत्ती 6:28, केजेवी) मानते हैं, जो सुलैमान की सारी महिमा से भी बढ़कर है। ये फूल पवित्र देश के हर हिस्से में प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं; इनके सबसे सामान्य रूप लाल या पीले होते हैं, लेकिन फिलिस्तीन एनीमोन का रंग नीला, बैंगनी, गुलाबी या सफेद भी हो सकता है। यह फूल दो और तीन-चौथाई इंच (7 सेंटीमीटर) के व्यास तक पहुंचता है।

फिलिस्तीनी कैमोमाइल, *एंथेमिस पैलेस्टिना* एक वैकल्पिक सुझाव है, जो सामान्य, सफेद, गुलबहार जैसा पौधा। कैमोमाइल को सूखी घास की तरह इकट्ठा किया जाता है और जब यह सूख जाता है तो भट्टी में फेंक दिया जाता है।

अन्य प्रस्तावित पौधा *लिलियम चाल्सेडोनिकम,* है, जो स्कार्लेट या मार्टागन लिली है। श्रे.गी. 5:13 में दिया गया कथन—"उसके होंठ सोसन फूल के समान हैं"—इस पौधे के लिए फिलिस्तीन एनीमोन से बेहतर होगा। यह संदर्भ स्पष्ट रूप से असाधारण सुंदरता के दुर्लभ पौधे का है। पवित्र देश में स्कार्लेट सोसन दुर्लभ है; वास्तव में, कुछ वनस्पतिशास्त्रियों को संदेह है कि यह वहां पर मिलती है।

1 राजा 7:19, 22, 26 और 2 इतिहास 4:5 में संदर्भ संभवतः जल सोसन, *निम्फिया अल्बा* के लिए हैं, जो नमूने के रूप में काम करती थी। जल सोसन यूरोप में और पवित्र देश और उत्तरी अफ्रीका में भी काफी आम है।

कमल की झाड़ी (ज़िज़िफस कमल)

अय्यूब 40:21–22 (केजेवी; पुष्टि करें एनएलटी "कमल के पौधे") के "छायादार पेड़" मध्य पूर्व के कमल की झाड़ी, *ज़िज़िफ़स कमल,* एक झाड़ी या छोटा पेड़ हो सकता है जो चिकनी, टेढ़ी-मेढ़ी, सफ़ेद शाखाओं के साथ लगभग पाँच फ़ीट (1.5 मीटर) की ऊँचाई तक बढ़ता है।

अन्य टिप्पणीकारों का मानना है कि अय्यूब के छायादार पेड़ बड़े पत्तों वाले पेड़ हैं जैसे कि सादा पेड़, *प्लैटनस ओरिएंटलिस,* या ओलियंडर, *नेरियम ओलियंडर*। यह सुझाव इस धारणा पर आधारित है कि अय्यूब 40 में वर्णित पशु दरियाई घोड़ा है, और यह असंभव लगता है कि दरियाई घोड़ा कमल की झाड़ी के नीचे रहता होगा या उन स्थानों में पाया जाता होगा जहाँ यह झाड़ी उगती है। ये व्यक्ति सादे पेड़ या ओलियेंडर को अधिक संभावित मानते हैं।

लोनिया साग (एट्रिप्लेक्स)

अय्यूब 30:4 में उपयोग किया गया इब्रानी शब्द नमकीनपन को दर्शाता है, जिसका अर्थ खारापन होता है, और इस कारण वनस्पतिशास्त्री मानते हैं कि यह नमक की प्रजाति या ओराच का संदर्भ देता है। पवित्र देश में नमक की इक्कीस प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जिनमें से लगभग सभी सामान्य हैं और पाठ की आवश्यकताओं को पूरा कर सकती हैं। *एट्रिप्लेक्स हैलिमस* वह प्रजाति है जिसे आमतौर पर सुझाव दिया जाता है, यह पालक से संबंधित मजबूत बढ़ने वाली झाड़ी है।

दूदाफल (मैनड्रगोरा ऑफिसिनारम)

दूदाफल या प्रेम सेब बिना तने वाला शाकाहारी बारहमासी पौधा है जो नाइटशेड (पौधे का एक प्रजाति), आलू, और टमाटर से संबंधित है। इसमें बड़ी, चुकंदर जैसी, अक्सर काँटेदार मूल जड़ होती है जिसके ऊपर से कई गहरे रंग की पत्तियाँ निकलती हैं जो लगभग एक फुट (30.5 सेंटीमीटर) लंबे और चार इंच (10.2 सेंटीमीटर) लंबी और चार इंच (10.2 सेंटीमीटर) चौड़ी होती हैं। यह पौधा थोड़ा जहरीला होता है और इसकी मोटी मूल जड़ों का आकार मानव शरीर के निचले हिस्सों से कुछ मिलता जुलता होता है। इस कारण से इसे कुछ कामोद्दीपक गुणों के लिए जिम्मेदार ठहराया गया था (पुष्टि करें उत 30:14–16)।

प्रेम का सेब पवित्र देश के निर्जन क्षेत्रों में एक सामान्य पौधा था। यह पूरे भूमध्यसागरीय क्षेत्र, दक्षिणी यूरोप और आसिया माइनर का जन्मज है। दूदाफल का उल्लेख श्रेष्ठगीत 7:13 में किया गया है, हालाँकि कुछ विद्वानों का मानना है कि लेखक वास्तव में नींबू या सामान्य खाद्य खेत मशरूम, *एगारिकस कैंपेस्ट्रिस* का उल्लेख कर रहे होंगे।

खरबूजा (कुकुमिस मेलो, सिट्रूलस वल्गारिस)

इन दो संबंधित दाखलता की कई किस्मों में से किसी में भी कठोर छिलका और रसीला गूदा होता है। गिनती 11:5 में वर्णित खरबूजे या तो खरबूजे (*कुकुमिस मेलो*) या तरबूज (*सिट्रूलस वल्गेरिस*) हो सकते हैं। यह हो सकता है कि दोनों फलों का उल्लेख किया गया हो।

बाजरा (पैनिकम मिलियासीम)

यूरेशिया में अपने खाद्य बीज के लिए उगाई जाने वाली एक घास। बाजरे के बीज सभी खाद्य घास के बीजों में सबसे छोटे होते हैं लेकिन बहुतायत में उत्पन्न होते हैं। बाजरा वार्षिक घास है जो शायद ही कभी दो फीट (.6 मीटर) से अधिक लंबी होती है। बाजरे के छोटे बीज केक में उपयोग किए जाते हैं और भूमि के गरीबों द्वारा बिना पकाए खाए जाते हैं।

पुदीना (मेंथा)

इस परिवार के विभिन्न पौधों में से कोई भी पौधा जिसकी सुगंधित पत्तियाँ स्वाद के लिए संसाधित की जाती हैं। पवित्र देश में कई पुदीने आम हैं, लेकिन घोड़ा पुदीना (*मेंथा लॉन्गिफोलिया*) शायद वही है जिसका उल्लेख मत्ती 23:23 और लूका 11:42 में किया गया है। पुदीने का उपयोग प्राचीन इब्रानी, यूनानियों और रोमियो द्वारा स्वाद के लिए, औषधि में वातहर के रूप में और खाना पकाने में मसाले के रूप में किया जाता था।

शहतूत (मोरस निग्रा)

इस परिवार का कोई भी पेड़, कुछ गहरे बैंगनी फल देते हैं और एक सफेद फल देता है, जिसके पत्ते रेशम के कीड़ों के भोजन के रूप में उपयोग किए जाते हैं। लूका 17:6 (केजेवी) का गूलर का पेड़ स्पष्ट रूप से काला शहतूत, *मोरस निग्रा* है। यह कम ऊँचाई वाला, मोटे मुकुट वाला, कठोर शाखाओं वाला पेड़ है जिसकी ऊँचाई 24 से 35 फीट (7.3 से 10.7 मीटर) होती है, हालाँकि शायद ही कभी 30 फीट (9.1 मीटर) से अधिक ऊँचा होता है। मूल रूप से उत्तरी फारस का मूल स्थानिय, अब इसे इसके फल के लिए पूरे मध्य पूर्व में उगाया जाता है। चीनी या भारतीय प्रजाति, *एम. अल्बा*, हाल ही में सीरिया और पवित्र देश में व्यापक रूप से उगाई जाती थी लेकिन यह स्वदेशी नहीं है।

राई (ब्रैसिका निग्रा, बी. एर्वेंसिस)

इस प्रजाति के विभिन्न पौधे यूरेशिया के मूल स्थानिय हैं, जिनमें से कुछ को उनके खाने योग्य बीजों के लिए उगाया जाता है। जबकि मत्ती 13:31–32, 17:20, मरकुस 4:31, लूका 13:19, और 17:6 में "राई" की पहचान के बारे में असहमति है, आमतौर पर इसे साधारण काली राई, *ब्रैसिका निग्रा* माना जाता है।

जिस राई का उल्लेख यीशु ने किया वह संभवतः चारलॉक या जंगली राई हो सकती है, *बी. आर्वेन्सिस*, जो सामान्यतः एक से तीन फीट (.3 से .9 मीटर) ऊँची होती है। कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि यह वास्तव में *साल्वाडोरा पर्सिका* थी, जो मृत सागर के आसपास की झाड़ियों में पाई जाती है। इस पौधे का स्वाद सरसों के समान सुखद सुगंध वाला होता है, और यदि इसे पर्याप्त मात्रा में लिया जाए, तो यह नाक और आंखों में सरसों के समान जलन पैदा करता है। हालाँकि, यह पौधा गलील के उत्तर में नहीं उगता है, और इसके फल काफी बड़े और पथरीले होते हैं, इसलिए यह दृष्टांत के वर्णन के अनुरूप नहीं हैं।

हालाँकि राई के बीज सबसे छोटे ज्ञात बीज नहीं हैं, लेकिन वे शायद गलील में यीशु के श्रोताओं में शामिल आम लोगों के लिए सबसे छोटे बीज थे।

गन्धरस (कॉमिफोरा मिर्रा, सी. काटाफ़)

झाड़ी या पेड़ जो सुगंधित गोंद राल का उत्सर्जन करता है जिसका उपयोग इत्र और धूप में किया जाता है। पवित्र शास्त्र में गन्धरस के अधिकांश संदर्भ *कॉमिफोरा मिर्रा* से संबंधित हैं, हालाँकि *सी. काटाफ़* भी शामिल हो सकता है क्योंकि यह उसी क्षेत्र में उगता है और बहुत मिलता जुलता है। ये दोनों पेड़ अरब, इथियोपिया और पूर्वी अफ्रीका के सोमाली तट के जन्मज हैं। वे गोंद जैसा पदार्थ निकालते हैं जो गन्धरस के व्यापार का अधिकांश हिस्सा बनाता है। दोनों प्रजातियाँ छोटी, झाड़ीदार, मोटी और कठोर शाखाओं वाली कांटेदार झाड़ियाँ या छोटे पेड़ हैं जो चट्टानी स्थानों में उगते हैं, विशेष रूप से चूना पत्थर की पहाड़ियों पर। पूर्व में इसे सुगंधित पदार्थ, इत्र और औषधि के रूप में अत्यधिक महत्व दिया जाता है। प्राचीन मिस्रवासी इसे अपने मंदिरों में जलाते थे और अपने मृतकों को इसके साथ संरक्षित करते थे; यहूदी भी इसे संरक्षित करने के लिए उपयोग करते थे (यूह 19:39)। इब्रानियों ने इसे इत्र के रूप में बहुत महत्व दिया है (भज 45:8)।

तैलवृक्ष (मर्टस कम्यूनिस)

तैलवृक्ष पवित्र देश में आम है, विशेष रूप से बैतलहम, लबानोन, हेब्रोन, और कर्मेल और ताबोर पर्वत की ढलानों के आसपास है। यह पश्चिमी आसिया का मूल जन्मज है और अच्छे वातावरण में 20 से 30 फीट (6.2 से 9.1 मीटर) ऊँचा छोटा सदाबहार पेड़ बन जाता है। हालाँकि, अधिकतर यह 1½ से 4 फीट (.5 से 1.2 मीटर) ऊँची बिखरी हुई झाड़ी होता है।

बाइबल में, तैलवृक्ष का उल्लेख मुख्य रूप से परमेश्वर की उदारता के प्रतीक के रूप में किया गया है। नहेमायाह ने झोपड़ियों के पर्व के लिए जिन शाखाओं को इकट्ठा करने का आदेश दिया था उनमें तैलवृक्ष की शाखाएँ भी शामिल थीं (नहे 8:15)। तैलवृक्ष न केवल शांति का प्रतीक था बल्कि न्याय का भी प्रतीक था।

केसर (नरकिस्सुस टैज़ेटा)

इस परिवार का व्यापक रूप से उगाया जाने वाला पौधा जिसमें संकीर्ण पत्तियाँ और आमतौर पर सफ़ेद या पीले फूल होते हैं जिनमें कप-मुकुट या तुरही के आकार का मुकुट होता है। पॉलीएन्थस नरकिस्सुस *(नरकिस्सुस टैज़ेटा)* वह पौधा प्रतीत होता है जिसका उल्लेख यशायाह 35:1 में किया गया है। यह केसर शारोन के मैदानों और फिलिस्तीन के अन्य स्थानों पर प्रचुर मात्रा में उगता है। मीठी सुगंध होने के कारण, यह बहुत पसंदीदा है।

जटामासी (नार्डोस्टैचिस जटामांसी)

जटामासी बारहमासी जड़ी-बूटी है जिसकी जड़ें मजबूत और सुगंधित होती हैं। यह हिमालय के उच्च ऊंचाई वाले क्षेत्रों में पाई जाती है, और इसकी सीमा वहाँ से पश्चिमी आसिया तक फैली हुई है। पत्तियों के खुलने से पहले जड़ों और ऊनी युवा तनों को सुखाया जाता है और इत्र बनाने के लिए उपयोग किया जाता है। इसे भारत में अभी भी बालों के इत्र के रूप में उपयोग किया जाता है, और यह मानने का हर कारण है कि पवित्रशास्त्र में वर्णित जटामासी (श्रे.गी. 1:12; 4:13–14; मर 14:3; यूह 12:3) मूल रूप से भारत से आया था।

बिच्छू पौधे (अर्टिका)

इस प्रजाति का पौधा जिसमें दाँतेदार पत्तियाँ होती हैं जो बालों से ढकी होती हैं और चुभने वाली लालिमा छोड़ती हैं। पवित्र देश में बिच्छू पौधे की चार प्रजातियाँ पाई जाती हैं: सामान्य या बड़े बिच्छू पौधे, *यूर्टिका डायोइका*; रोमी बिच्छू पौधे, *यू. पिलुलिफेरा*; छोटे बिच्छू पौधे, *यू. यूरेन्स*; और *यू. कॉडेटा*, जो छोटे बिच्छू पौधे के समान है। कुछ बिच्छू पौधे पाँच से छह फीट (1.5 से 1.8 मीटर) की ऊँचाई तक पहुँच जाते हैं। वे बंजर स्थानों और खेतों के सामान्य कीट हैं। उन्हें अक्सर ऐसी ज़मीन पर कब्जा करते देखा जाता है जिस पर कभी खेती की जाती थी लेकिन अब वह उपेक्षित हो गई है (यश 34:13; होश 9:6)।

जायफल का फूल (निगेला सतीवा)

"फिचेस" यशायाह 28:25–27 (केजेवी) में शायद जायफल का फूल है, जो सोसन परिवार का वार्षिक पौधा है। यह पौधा दक्षिणी यूरोप, सीरिया, मिस्र, उत्तर अफ्रीका और अन्य भूमध्यसागरीय क्षेत्रों में जंगली रूप में उगता है, जहाँ इसे इसकी तीव्र सुगंधित, काली मिर्च जैसी बीजों के लिए व्यापक रूप से उगाया जाता है। इन बीजों को पूर्व में कुछ प्रकार की रोटी और केक पर छिड़का जाता है और पवित्र देश और मिस्र में करी और अन्य व्यंजनों को स्वादिष्ट बनाने के लिए उपयोग किया जाता है। जीरा और जायफल के फूल अभी भी पवित्र देश में उसी तरह से एकत्र किए जाते हैं जैसा यशायाह ने वर्णन किया है।

बलूत (क्वेरकस)

फिलिस्तीन में कम से कम पांच प्रकार के बलूत वृक्ष पाए जाते हैं। इनमें से एक है कर्मेस बलूत वृक्ष *(क्वेरकस कोकिफेरा)*, जो *कोकस इलिसिस* नामक कीट का मेज़बान है, जो सनी के कपड़े और ऊन को रंगने के लिए उपयोग किए जाने वाले लाल रंग का उत्पादन करता है (उत 38:28–30; निर्ग 25:4; 26:1; 28:33; 35:23; 39:24; लैव्य 14:4–6, 51–52; गिन 19:6; 2 इति 2:7, 14; 3:14; यशा 1:18; इब्रा 9:19; प्रका 18:12)। कर्मेस बलूत वृक्ष 6 से 35 फीट (1.8 से 10.7 मीटर) ऊंचा होता है और सीरिया, लबानोन और पवित्र देश के पहाड़ी क्षेत्रों में पाया जाता है। जब यह अकेला बढ़ता है, तो कर्मेस बलूत वृक्ष अक्सर बड़ा पेड़ बन जाता है। इसे पूर्व में नियमित रूप से कब्रों के पास लगाया जाता था। बाइबिल के

समय में बलूत वृक्ष को हमेशा उसके बड़े आकार और ताकत के लिए सम्मानित और यहां तक कि पूजनीय माना जाता था, और महान पुरुषों को आमतौर पर इसकी छाया में दफनाया जाता था। हेब्रोन में अब्राहम का बलूत वृक्ष इसका उदाहरण है।

दूसरा बलूत वृक्ष वैलोनिया बलूत वृक्ष *(क्यू. एजिलॉप्स)* है, जो शायद यशायाह 2:13 और 44:14 का बलूत वृक्ष है। यह मध्य पर्वतीय क्षेत्रों में आम है और शायद बाशान के आसपास के क्षेत्र में प्रचुर मात्रा में था। उत्पत्ति 35:4, 8 का बलूत वृक्ष होल्म बलूत वृक्ष *(क्यू. इलेक्स)* माना जाता है, जो सदाबहार बलूत वृक्ष है जो 60 फीट (18.3 मीटर) की ऊँचाई तक बढ़ता है। एक और बलूत वृक्ष *क्यू. लुसिटानिका* है, साइप्रस बलूत वृक्ष, छोटा पर्णपाती पेड़ जो शायद ही कभी 20 फीट (6.1 मीटर) से अधिक ऊँचा होता है। इस पेड़ के बहुत बड़े फल कभी-कभी खाए जाते थे।

उत्पत्ति 12:6, 13:18, 14:13, और 18:1 में अनुवादित "मैदान" (केजेवी) शब्द का अनुवाद संभवतः "बलूत वृक्ष" होना चाहिए।

पुराने नियम में "उपवनों" का कई बार उल्लेख किया गया है, जो आमतौर पर बाल या अन्य मूर्तिपूजक देवताओं की पूजा के संदर्भ में होता है (निर्ग 34:13; व्यव 16:21; न्यायि 3:7; 1 रा 14:23; 18:19; 2 रा 17:16—सभी केजेवी), ये संभवतः पवित्र बलूत के पेड़ों के उपवन थे।

तेल का पेड़, ओलियास्टर (एलेग्नस एंगुस्टिफोलिया)

छोटा यूरेशियाई पेड़ जिसमें लंबी चांदी जैसी पत्तियाँ, हरे रंग के फूल और जैतून जैसे फल होते हैं। यह प्रश्न है कि जब 1 राजा 6:23, 31–33 और 1 इतिहास 27:28 में "जैतून के पेड़ों" का उल्लेख किया गया है, तो किस पेड़ को संबोधित किया गया है। वही शब्द यशायाह 41:19 और मीका 6:7 में भी आता है। संदर्भित पौधा शायद संकीर्ण-पत्तियों वाला ओलियास्टर *(एलेग्नस एंगुस्टिफोलिया)* है, जो छोटा कठोर-शाखाओं वाला पेड़ या सुंदर झाड़ी है जो 15 से 20 फीट (4.6 से 6.1 मीटर) ऊँचा होता है, जो पवित्र देश के सभी हिस्सों में आम है सिवाय यरदन तराई के। एक समय में यह विशेष रूप से ताबोर पर्वत और हेब्रोन और सामरिया में आम था। इसकी लकड़ी कठोर और महीन-दानेदार होती है और इसलिए छवियों और आकृतियों की नक्काशी के लिए अच्छी तरह से उपयुक्त होती है। इसका तेल निम्न प्रकार का होता है जिसका उपयोग औषधि में किया जाता है लेकिन भोजन के लिए नहीं; मीका 6:7 में यही तेल हो सकता है।

ओलियंडर (नेरियम ओलियंडर)

इस प्रजाति का कोई भी विषैला सदाबहार झाड़ी जो गर्म जलवायु में उगता है। विभिन्न अनुवादों में "गुलाब" के रूप में पहचाने गए पौधों के लिए एक सुझाव (एक्क्लुस 24:14, केजेवी) ओलियंडर है। यह पौधा, जो मूल रूप से पूर्वी इंडीज का मूल स्थानिय है, सदियों से दुनिया के गर्म क्षेत्रों में उगाया गया है। यह आज पवित्र देश में फलता-फूलता है और यरदन तराई के कुछ हिस्सों में घने झाड़ियाँ बनाता है। यह आमतौर पर 3 से 12 फीट (.9 से 3.7 मीटर) ऊँची झाड़ी होती है। पौधे का हर हिस्सा खतरनाक रूप से विषैला होता है।

जैतून, जैतून का पेड़ (ओलेआ यूरोपिया)

पुरानी दुनिया का अर्ध-उष्णकटिबंधीय सदाबहार पेड़ जिसमें खाने योग्य फल होते हैं। जैतून, *ओलिया यूरोपिया,* यहूदियों के लिए निस्संदेह सबसे मूल्यवान पेड़ों में से एक था। पवित्रशास्त्र में इसके साथ-साथ जैतून के तेल का भी अनगिनत संदर्भ मिलता है, जिसका उपयोग अभिषेक के लिए किया जाता था। यह पेड़ पवित्र देश में बहुत आम है, और कई स्थानों पर यह एकमात्र बड़ा पेड़ है। जंगली जैतून की शाखाएँ काफी कठोर और कांटेदार होती हैं, और सामान्यतः खेती किया गया पेड़ बहु-शाखित सदाबहार पेड़ होता है, जो 20 या अधिक फीट (6.1 मीटर) ऊँचा होता है, जिसमें एक नुकीला तना और चिकनी, राख के रंग की छाल होती है। पत्तियाँ चमड़े जैसी होती हैं और फूल छोटे, पीले या सफेद होते हैं। फल बड़े, काले या बैंगनी होते हैं, जो सितंबर में पकते हैं, और यह फल का बाहरी मांसल भाग है जो व्यापार के रूप से मूल्यवान जैतून का तेल देता है। पके हुए फल का इकतीस प्रतिशत तेल होता है। पके फल को कच्चा खाया जाता है, जैसे कि हरा, कच्चा फल। तने और शाखाओं की लकड़ी कठोर, गहरे पीले या अंबर रंग की और बारीक दाने वाली, अक्सर सुंदर रूप से रंगबिरंगी होती है। आज भी इसका उपयोग सबसे बेहतरीन फर्नीचर और टर्नरी के लिए किया जाता है। यह पेड़ बहुत धीरे-धीरे बढ़ता है, लेकिन यह बहुत उम्र तक जीवित रहता है। जैतून के पेड़ को काटकर मारना मुश्किल है, क्योंकि जड़ से और पुराने ठूंठ के चारों ओर नए अंकुर निकलते हैं, अक्सर एक ही जड़ से दो से पाँच तनों का एक समूह बनता है, जो मूल रूप से केवल एक पेड़ की ही सहायता करता था।

प्याज (एलियम)

गिनती 11:5 में उल्लिखित प्याज निस्संदेह *एलियम सेपा,* मिस्री प्याज है, जो एक सघन लेपित बल्ब से बना होता है, जो एक दूसरे पर बारीकी से चढ़ी हुई पत्तियों के चौड़े मांसल आधारों से बनी परतों से बना होता है। पत्तियाँ पतली और खोखली होती हैं। पूरे पौधे का स्वाद और गंध विशिष्ट रूप से तीखा होता है।

प्याज लहसुन के निकट संबंधी है, *ए. सैटिवम*। साधारण लहसुन कठोर, बल्बनुमा बारहमासी पौधा है जिसे यूरोप, पश्चिमी आसिया और मिस्र में उगाया जाता है। इसकी पत्तियाँ संकरी, सपाट और रिबन जैसी होती हैं। यह भूमध्यसागरीय क्षेत्र के लोगों के बीच अत्यंत लोकप्रिय है।

प्याजों में से एक और प्याज लीक, *ए. पोरम* है। लीक का बल्ब प्याज और लहसुन से भिन्न होता है क्योंकि यह पतला, बेलनाकार और छह इंच (15.2 सेंटीमीटर) से अधिक लंबा होता है। इसका स्वाद प्याज जैसा होता है लेकिन अधिक तीखा होता है। पत्तियों को स्वाद के रूप में खाया जाता है या सूप में पकाया जाता है। बल्बों को छोटे टुकड़ों में काटकर मांस के मसाले के रूप में उपयोग किया जाता है।

खजूर (फीनिक्स डेक्टीलिफेरा)

बाइबल का खजूर का पेड़ निस्संदेह खजूर का पेड़ है। इसकी विशेषता यह है कि इसका शाखाहीन, पतला तना 80 फीट (24.2 मीटर) या उससे अधिक ऊंचा होता है तथा पंखदार पत्तियों का एक बड़ा अंतिम समूह होता है, जिनमें से प्रत्येक छह से नौ फीट (1.8 से 2.7 मीटर) या उससे अधिक लंबा होता है। इसकी ऊँचाई और असामान्य संरचना के कारण, यह स्वाभाविक था कि इसे पूर्वी वास्तुकला में अलंकरण के रूप में इस्तेमाल किया जाना चाहिए। तना और पत्ते वास्तुशिल्प अलंकरण के पसंदीदा विषय थे। बाइबल में जिन विशाल, शाखाओं जैसे पत्तों को शाखाओं के रूप में संदर्भित किया गया है, वे विजय के प्रतीक थे और महान हर्ष के अवसरों पर उपयोग किए जाते थे (यूह 12:13; प्रका 7:9)। बड़े पत्तों का उपयोग अभी भी घरों की छतों और किनारों को ढकने और सरकंडे की बाड़ को मजबूती देने के लिए किया जाता है। इनसे चटाई, टोकरियाँ और यहाँ तक कि बर्तन भी बनाए जाते हैं। छोटे पत्तों का उपयोग झाड़ू के रूप में किया जाता है, और तने की लकड़ी का उपयोग लकड़ी के लिए किया जाता है। मुकुट (पौधे के ऊतक का हिस्सा) में जाल जैसे आवरण से रस्सी बनाई जाती है। फल, जो विशाल लटकते हुए गुच्छे में उत्पन्न होता है, जिसका वजन 30 से 50 पाउंड (13.6 से 22.7 किलोग्राम) हो सकता है, अरब और उत्तरी अफ्रीका के कई निवासियों का मुख्य भोजन है। अकेला पेड़ एक वर्ष में 200 पाउंड (90.7 किलोग्राम) तक खजूर दे सकता है। उन्हें भविष्य के उपयोग के लिए सुखाया जा सकता है।

कछार की घास (साइपेरस पपीरस)

मिस्री सरकण्डा या कछार की घास (निर्ग 2:3–5; अय्यू 8:11; यशा 18:2; 19:6–7; 35:7; 58:5) में चिकने तीन-तरफा तने होते हैं जो सामान्यतः 8 से 10 फीट (2.4 से 3 मीटर) की ऊँचाई तक पहुँचते हैं, लेकिन कभी-कभी 16 फीट (4.9 मीटर) तक भी पहुँच जाते हैं, और आधार पर दो से तीन इंच (5.1 से 7.6 सेंटीमीटर) की मोटाई होती है, जिसके अंत में फूलों का बड़ा गुच्छा होता है। कछार की घास पहले नील नदी के किनारों पर बहुतायत में उगती थी, जो लगभग घने जंगल का रूप ले लेता था। आज यह निचले मिस्र में व्यावहारिक रूप से विलुप्त हो चुका है, हालाँकि यह अभी भी श्वेत नील और सूडान के साथ पाया जाता है। कछार की घास अभी भी पवित्र देश के कुछ हिस्सों में उगता है, विशेष रूप से गलील के मैदान के उत्तर छोर और हुलेह दलदल के आसपास।

पानी में तैरने वाले छोटे बर्तन बनाने (निर्ग 2:3), चटाई बनाने और अन्य विभिन्न घरेलू प्रयोजनों के लिए उपयोग किए जाने के अलावा, इसे प्राचीन कागज के स्रोत के रूप में भी जाना जाता है। कछार की घास से कागज बनाने में, सबसे पहले पौधे के तने को छील लिया जाता था और फिर उसके टुकड़े को लम्बाई में पतले टुकड़ों में काट दिया जाता था, जिन्हें एक दूसरे के बगल में रख दिया जाता था। फिर इन पर पानी छिड़का जाता था और पूरे को एक टुकड़े में जोड़ने के लिए दबाया जाता था। फिर पन्ने को सुखाकर आवश्यक आकार के टुकड़ों में काटा जाता था। कछार की घास के कागज की बेहतर श्रेणियों में, तने की कई परतों को एक-दूसरे के ऊपर आड़े रखा जाता था।

तनों के शिखर पर पीले, भूरे रंग के, लटकन जैसे पुष्पक्रमों का उपयोग मिस्र के मंदिरों को सजाने और देवताओं की मूर्तियों को ताज पहनाने के लिए किया जाता था। इन्हें प्रसिद्ध पुरुषों और राष्ट्रीय नायकों द्वारा भी मुकुट के रूप में पहना जाता था।

चीड़ का पेड़ (पिनस ब्रुटिया, पी. हेलेपेन्सिस)

इस परिवार के विभिन्न सदाबहार पेड़ हैं, जिनकी सुई के आकार की पत्तियाँ गुच्छों में होती हैं और बीज धारण करने वाले शंकु होते हैं। जबकि बाइबल के शंकुधारी पेड़ों के बारे में काफी भ्रम है, यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि चीड़ का उल्लेख लैव्यव्यवस्था 23:40; नहेम्याह 8:15; यशायाह 41:19; और 60:13 में किया गया है। पवित्र देश के चीड़ में से एक है ब्रूटियन चीड़ *(पिनस ब्रूटिया),* जो फिलिस्तीन के उत्तरी क्षेत्रों की पहाड़ी प्रजाति है। यह 10 से 35 फीट (3 से 10.7 मीटर) की ऊँचाई तक पहुँचता है, जिसमें एकाफी फैली हुई वृद्धि और शाखाएँ घेरों में होती हैं।

अन्य प्रकार का चीड़ का पेड़ एलेप्पो चीड़, *पिनस हेलेपेन्सिस* है। केजेवी में "सनोवर" या "सनोवर का पेड़" की घटना के अधिकांश उदाहरण संभवतः अलेप्पो चीड़ को संदर्भित करते हैं (2 शमू 6:5; 1 रा 5:8, 10; 6:34; 2 रा 19:23; 2 इति 2:8; भज 104:17; श्रे.गी. 1:17; यश 14:8; 37:24; 55:13; 60:13; यहे 27:5; 31:8; होश 14:8; नह 2:3; जक 11:2)। यह 9 से 60 फीट (2.7 से 18.3 मीटर) ऊँचा होता है जिसमें फैली हुई आरोही शाखाएँ और पीले या भूरे रंग की शाखाएँ होती हैं।

पिस्ता (पिस्तासिया टेरेबिन्थस, पी. वेरा)

फिलिस्तीन का टेरिबिंथ या तारपीन का पेड़ बड़ा पर्णपाती पेड़ है जिसकी शाखाएँ फैली हुई होती हैं। सर्दियों में, बिना पत्तियों के, यह बहुत हद तक बांज वृक्ष जैसा दिखता है। यह 12 से 25 फीट (3.7 से 7.6 मीटर) ऊँचा होता है। पेड़ के हर

हिस्से में सुगंधित, रालयुक्त रस होता है। यह पूरे सीरिया, लबानोन, फिलिस्तीन और अरब के पहाड़ियों की निचली ढलानों पर आम है, आमतौर पर अकेले पेड़ के रूप में उगता है और ज्यादातर उन स्थानों में पाया जाता है जो बांज वृक्ष के लिए बहुत गर्म या बहुत शुष्क होते हैं जिसे यह आमतौर पर प्रतिस्थापित करता है। चूँकि यह गिलाद का मूल स्थानिय है, इसलिए यह काफी संभव है कि इसका रालयुक्त रस उस मसाले का हिस्सा बना हो जिसे इस्राएली गिलाद से मिस्र ले गए थे (उत 37:25)।

उत्पत्ति 43:11 के मेवे स्पष्ट रूप से पिस्ता के पेड़, *पिस्तासिया वेरा,* से पिस्ता के अखरोट हैं, जो तारपीन से निकटता से संबंधित हैं। यह 10 से 30 फीट (3 से 9.1 मीटर) की ऊँचाई तक पहुँचता है और इसका शीर्ष फैलता है। यह लबानोन और पवित्र देश के कई पथरीले हिस्सों में जंगली रूप में पाया जाता है। इस मेवे का छिलका हल्के रंग का होता है और गिरी का स्वाद मीठा और नाजुक होता है, जो जहां भी उगता है वहां बहुत पसंद किया जाता है।

अर्मोन का पेड़ (प्लैटेनस ओरिएंटालिस)

इस परिवार के कई पेड़ों में घंटी के आकार के फल के गुच्छे होते हैं और आमतौर पर बाहरी छाल जो पैच या पट्टियों में छिल जाती है। उत्पत्ति 30:37 और यहेजकेल 31:8 में संदर्भ स्पष्ट रूप से शाहबलूत के पेड़ के लिए नहीं हैं, जो फिलिस्तीन देश का नहीं है, बल्कि पूर्वी चिनार का पेड़, *प्लेटानस ओरिएंटालिस* के लिए हैं।

अर्मोन का पेड़ विशाल पेड़ है जो 60 फीट (18.3 मीटर) या उससे अधिक ऊँचा होता है और इसका तना अक्सर विशाल परिधि का होता है, कभी-कभी 40 फीट (12.2 मीटर) तक भी ऊँचा होता है। बाहरी छाल परत या शल्क में छिल जाती है, जिससे चिकनी सफेद या पीली आंतरिक छाल दिखाई देती है। यह पेड़ पूरे लबानोन, सीरिया और पवित्र देश में आम है, जो उप-आल्पाइन क्षेत्रों में भी उगता है। हालाँकि, यह मुख्य रूप से मैदानों और निचले इलाकों का पेड़ है, जो नदियों और झीलों के किनारों और दलदली स्थानों में उगता है।

अनार (पुनिका ग्रैनेटम)

अनार आमतौर पर छोटा, झाड़ी जैसा पेड़ होता है लेकिन कभी-कभी बड़ा, शाखाओं वाली झाड़ी या छोटा पेड़ बन सकता है जो 20 से 30 फीट (6.1 से 9.1 मीटर) की ऊंचाई तक पहुंचता है। शाखाएं अक्सर कांटेदार होती हैं। दिखावटी घंटी जैसे फूल आमतौर पर लाल रंग के होते हैं, हालाँकि कभी-कभी पीले या सफेद होते हैं। गोलाकार फल संतरे या मध्यम आकार के सेब जितना बड़ा होता है। इसका छिलका पकने होने पर चमकीला लाल या पीले रंग का होता है और इसके ऊपर सूखे बाह्यदलपुंज होते हैं जो मुकुट जैसा दिखते हैं। फल खुद लाल रंग का रसदार गूदा होता है जिसमें कई लाल बीज लगे होते हैं। अनार के फूल निस्संदेह निर्गमन 28:33–34 और 39:24–26 में उल्लिखित सुनहरी घंटियों और 1 राजा 6:32 के खुले फूलों के लिए नमूने के रूप में काम करते थे। फल पर खड़कलियाँ राजाओं के मुकुटों के लिए एक प्रतिरूप में काम करती थीं।

अनार आसिया का मूल स्थानिय है, लेकिन इसकी खेती प्रागैतिहासिक काल से की जाती रही है और अब यह पवित्र देश, मिस्र और भूमध्य सागर के तटों पर काफी आम है। इसे मिस्र के सुखद फलों में से एक के रूप में सूचीबद्ध किया गया है (गिन 20:5) और पवित्र देश के वादे किए गए आशीर्वादों में से एक के रूप में है (व्य.वि. 8:8)।

चिनार (पॉपुलस यूफ्रेटिका, पी. अल्बा)

ऐस्पन और कपास की लकड़ी के समान प्रजाती का तेजी से बढ़ने वाला पर्णपाती पेड़। 2 शमूएल 5:23–24 और 1 इतिहास 14:14–15 में शहतूत के पेड़ों के लिए केजेवी संदर्भ संभवतः फरात का चिनार का पेड़ या ऐस्पन, *पॉपुलस यूफ्रेटिका* के लिए है। यह पेड़ फैली हुई शाखाओं के साथ 30 से 45 फीट (9.1 से 13.7 मीटर) की ऊंचाई तक बढ़ता है। फरात ऐस्पन सीरिया से लेकर पवित्र देश से पथरीले अरब तक पूरे क्षेत्र में केवल नदियों और जलधाराओं के किनारों पर पाया जाता है। यह विशेष रूप से यरदन तराई में आम है।

सफेद चिनार का पेड़ *(पोपुलस अल्बा)* सीरिया, लबानोन, पवित्र देश, और सीनै में गीली जगहों में आम है। यह फैली हुई शाखाओं के साथ 30 से 60 फीट (9.1 से 18.3 मीटर) की ऊंचाई प्राप्त करता है। कुछ लोगों का सुझाव है कि विभिन्न बुतपरस्त धर्मों की वेदियाँ आमतौर पर एक पहाड़ी की चोटी पर और चिनार के पेड़ों की छाया में बनाई जाती थीं।

श्रीफल (साइडोनिया ओब्लांगा)

पश्चिमी आसिया का मूल स्थानिय पेड़, जिसके फूल सफ़ेद होते हैं और सेब जैसा फल होता है जो पकने पर खाने योग्य होता है। कुछ लोगों का मानना है कि पुराने नियम के "सेब" श्रीफल, *साइडोनिया ऑब्लॉन्गा* थे। पवित्र देश में श्रीफल का पेड़ काफी आम है, हालाँकि मुख्य रूप से इसकी खेती की जाती है। यह सीरिया के उत्तरी हिस्सों में जंगली रूप में भी पाया जा सकता है। यह उत्तरी फारस और एशिया का उपद्वीप का मूल स्थानिय है। फल पीले रंग का और अत्यधिक सुगंधित होता है, तथा इसकी सुगंध के कारण ही प्राचीन लोग इसे बहुत महत्व देते थे।

सरकण्डा (जंकस, स्किर्पस, टाइफा अंगुस्टाटा, अरुंडो डोनैक्स)

पवित्र देश में रश और सरकण्डे की अनेक प्रजातियाँ उगती हैं। रश की कम से कम 21 किस्में हैं। सामान्य नरम रश या दलदल रश *(जंकस इफ्यूसस)* गीले स्थानों में पाया जाता है, यहाँ तक कि सीनै और अन्य रेगिस्तानों में भी। समुद्री या

कठोर रश *(जे. मैरिटिमस)* पवित्र देश के विभिन्न नम स्थानों में और यहाँ तक कि सीनै में भी पाया जाता है।

पवित्र देश में कम से कम 15 प्रकार के सरकण्डे *(स्किर्पस)* पाए जाते हैं। गुच्छे-प्रधान क्लब रश *(स्किर्पस होलोस्कोइनस)* पवित्र देश से लेकर सीनै तक के नम स्थानों में आम है। झील क्लब रश या लंबा सरकण्डा *(एस. लैकस्ट्रिस)* उत्तरी अफ्रीका से लेकर मृत सागर तक दलदलों और खाइयों में पाया जाता है। समुद्री क्लब रश या नमक दलदल क्लब रश *(एस. मैरिटिमस)* पवित्र देश के कई स्थानों में खाइयों और दलदलों में पाया जाता है। इनमें से कोई भी प्रजाति अय्यूब 8:11; यशायाह 9:14; 19:6, 15 में संदर्भित हो सकती है।

उत्पत्ति 41:2 में घास के मैदान में मवेशियों को चराने का संदर्भ संभवतः लंबे सरकण्डे *(अरुंडो डोनैक्स)* की ओर है, जो 18 फीट (5.5 मीटर) या उससे अधिक ऊंचाई तक बढ़ता है। इस पौधे को फारसी सरकण्डे के रूप में भी जाना जाता है और यह पवित्र देश, सीरिया और सीनै प्रायद्वीप में आम है। यह विशाल घास है जिसके आधार पर तने का व्यास दो या तीन इंच (5.1 से 7.6 सेंटीमीटर) हो सकता है और गन्ने या पम्पास घास के समान सफेद फूलों के गुच्छे से समाप्त होता है। इस पौधे का उपयोग प्राचीन लोगों द्वारा कई उद्देश्यों के लिए किया जाता था: चलने की छड़ी, मछली पकड़ने की छड़ी, मापने की छड़ी और संगीतमय पाइप के लिए। इसलिए, यह काफी संभव है कि मत्ती 27:48 और मरकुस 15:36 में उल्लेखित "सरकण्डा" बढ़ई का सरकण्डा या मापने की छड़ी थी।

कछार की घास *भी देखें*।

सुदाब (रूटा चालेपेन्सिस, आर. ग्रेवोलेंस)

सुगंधित यूरेशियन पौधा जिसमें सदाबहार पत्तियाँ होती हैं जो तीखा, वाष्पशील तेल उत्पन्न करती हैं जिसे कभी औषधि में उपयोग किया जाता था। लूका 11:42 में "सुदाब" के अनुवाद की शुद्धता के बारे में थोड़ा सवाल है, लेकिन सटीक प्रजातियों के बारे में कुछ संदेह है। अधिकांश लेखकों का मानना है कि यह सामान्य सुदाब *(रुए ग्रेवोलेंस)* था, जो बारहमासी झाड़ीदार पौधा था, जिसके तने दो से तीन फीट (0.6 से 0.9 मीटर) ऊंचे तथा पत्तियां गहरी कटी हुई होती थीं। यह प्रजाति भूमध्यसागरीय क्षेत्र की मूल स्थानिय है और पवित्र देश में जंगली रूप से उगती है, विशेष रूप से ताबोर पर्वत पर।

प्राचीन काल में सुदाब को औषधीय गुणों के लिए अत्यधिक महत्व दिया जाता था, तथा माना जाता था कि यह चक्कर आना, गूंगापन, मिर्गी, आंखों की सूजन, पागलपन और "बुरी नजर" से बचाता है। सुदाब का उपयोग व्यंजनों को मसालेदार बनाने के लिए भी किया जाता था।

रश (बुटोमस अम्बेलाटस)

विभिन्न घास जैसे दलदली पौधों के लिए सामान्य शब्द जिनके तने लचीले, खोखले, या गूदेदार होते हैं। उत्पत्ति 41:2 में संदर्भित पौधे की पहचान के बारे में काफी अनिश्चितता है जिसका अनुवाद केजेवी में "घास का मैदान" और अय्यूब 8:11 में "ध्वज" के रूप में किया गया है। चूँकि इसका उल्लेख अय्यूब के अंश में पपीरस के साथ किया गया है, इसलिए ऐसा लगता है कि यह घास के मैदान में पौधों के समूह के बजाय एक विशिष्ट प्रकार के पौधे को संदर्भित करता है। उत्पत्ति में वर्णन के अनुसार यह ऐसा पौधा है जिस पर फिरौन के मवेशी नील नदी के किनारे चरते थे और फिर भी यह कछार की घास नहीं, यह फूलों वाले रश या जल ग्लेडिओला *(ब्यूटोमस अम्बेलैटस)* को संदर्भित कर सकता है, जो मिस्र और पवित्र देश दोनों में कछार की घास के साथ पनपता है।

सरकण्डा *भी देखें*।

केसर (क्रोकस सैटिवस)

केसर, जिसका उल्लेख श्रेष्ठगीत 4:14 में किया गया है, क्रोकस की कई प्रजातियों का उत्पाद है, विशेष रूप से नीले फूल वाले केसर क्रोकस (*सी. सैटिवस*), जो ग्रीस और एशिया का उपद्वीप का मूल स्थानिय है। वाणिज्यिक उत्पाद में वर्तिकाग्र और वर्तिका के ऊपरी भाग, फूल के अंडाशय के शीर्ष भाग शामिल होते हैं, जिन्हें फूल खिलने के तुरंत बाद एकत्र किया जाता है। थोडा सा केसर बनाने के लिए कम से कम 4,000 वर्तिकाग्र की आवश्यकता होती है। एकत्र किए जाने के बाद, स्टिग्मा को धूप में सुखाया जाता है, पीसा जाता है, और छोटे केक में बनाया जाता है। केसर का उपयोग मुख्य रूप से पीले रंग के रूप में और फलों के रंग के लिए करी और स्ट्यू में किया जाता है।

अन्य, पूरी तरह से अलग प्रकार का रंग उत्पादक पौधा *(कार्थमिस टिंक्टरियस)* जिसे कार्थामाइन, नकली केसर, या कुसुम कहा जाता है, थिसल परिवार का सदस्य है। इसके लाल फूलों से रंग प्राप्त होता है जिसका उपयोग रेशम को रंगने, खाना पकाने, और असली केसर में मिलावट करने के लिए व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। यह तीन से साढ़े चार फीट (1.4 मीटर) लंबा एक वार्षिक काँटेदार पौधा है, जो सीरिया और मिस्र का मूल स्थानिय है। मिस्र में ममियों के कब्र के कपड़ों को इसी सामग्री से रंगा जाता था, और यह बहुत संभव है कि यह पौधा बाइबल का केसर भी रहा हो।

सेज (सल्विया जुडाइका)

यहूदी सेज फिलिस्तीन के पहाड़ों और पहाड़ियों में तीन फीट (.9 मीटर) ऊँचा बढ़ता है। इसके तने चार कोणीय, कठोर और खुरदरे होते हैं। यह पौधा सीरिया से दक्षिण में नासरत, हेब्रोन, तिबिरियुस, सामरिया और यहूदिया तक बढ़ता है।

यह पौधा निर्गमन 37:17–18 के सात-शाखाओं वाले दीवट के आकृति का मूल है, जिसे मेनोराह के नाम से जाना जाता है, जो पारंपरिक यहूदी प्रतीक है। पौधे का पुष्पक्रम, जब सपाट दबाया जाता है, तो इसका आकार और रूप लगभग सात-शाखाओं वाले दीपस्तंभ के समान होता है, जिसमें इसकी केंद्रीय शिखर और तीन जोड़ी बगल की शाखाएँ होती हैं, जो प्रत्येक ऊपर और अंदर की ओर एक सममित तरीके से मुड़ती हैं। पौधे के पुष्पक्रम की प्रत्येक शाखा पर घुमाव या कलियाँ होती हैं जो शायद बाइबिल के स्वर्ण दीपस्तंभों पर "गोलाकार" (केजेवी) या "गांठों" का विचार देती हैं।

कठिया गेहूँ (ट्रिटिकम एस्टिवम)

गेहूँ परिवार का कठोर सदस्य। निर्गमन 9:32 और यशायाह 28:25 में राई, साथ ही यहेजकेल 4:9 (सभी केजेवी) में फ़िच को कठिया गेहूँ माना जाता है। यह गेहूँ की कठोर दाने वाली प्रजाति है, जिसके दाने ढीले और त्रिकोणीय आकार के होते हैं, और प्राचीन काल में यह गेहूँ का सबसे आम रूप था। इसका तना गेहूँ की तुलना में अधिक मोटा होता है तथा दाने मजबूत होते हैं। इसके आटे से बनी रोटी गेहूँ से बनी रोटी की तुलना में बहुत हीन होती है, लेकिन कठिया गेहूँ लगभग किसी भी प्रकार की मिट्टी में पनप सकता है और ऐसी भूमि पर फसल दे सकता है और गेहूँ के लिए अनुपयुक्त भूमि पर भी फसल पैदा कर सकता है। प्राचीन लोग इसे रोटी के लिए जौ से अधिक पसंद करते थे।

स्टोरैक्स पेड़ (स्टाइरैक्स ऑफिसिनालिस)

इस प्रजाति के विभिन्न पेड़ सुगंधित राल देते हैं। आज यह माना जाता है कि निर्गमन 30:34 का नखी स्टोरैक्स पेड़ से प्राप्त किया गया था। यह अनियमित रूप से कठोर-शाखाओं वाला झाड़ी या छोटा पेड़ है जो 9 से 20 फीट (2.7 से 6.1 मीटर) ऊँचा होता है। यह पेड़ लबानोन से लेकर पवित्र भूमि तक के निचली पहाड़ियों और चट्टानी स्थानों पर प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इसकी गोंद तनों और शाखाओं में चीरा लगाकर प्राप्त की जाती है। यह अत्यधिक सुगंधित होती है और आज भी इत्र के रूप में मूल्यवान मानी जाती है।

गूलर-अंजीर के पेड़ (फिकस स्यकोमोरस)

उत्तर-पूर्वी अफ़्रीका और आस-पास के आसिया का पेड़, जो अंजीर से संबंधित है। 1 राजा 10:27; 1 इतिहास 27:28; 2 इतिहास 1:15; 9:27; भजन संहिता 78:47; यशायाह 9:10; आमोस 7:14; और लूका 19:4 में "गूलर" शब्द का अनुवाद निस्संदेह प्रसिद्ध गूलर-अंजीर को संदर्भित करता है, जिसे शहतूत-अंजीर या अंजीर-शहतूत के रूप में भी जाना जाता है। इसे उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप के सामान्य गूलर के साथ भ्रमित नहीं करना चाहिए, जो वास्तव में अर्मोन का पेड़ है। बाइबल का गूलर-अंजीर का पेड़ मजबूत, तेजी से बढ़ने वाला, और चौड़ा फैलने वाला पेड़ है जो 30 से 40 फीट (9.1 से 12.2 मीटर) ऊँचा होता है और कभी-कभी इसका तना 20 फीट (6.1 मीटर) या उससे अधिक की परिधि प्राप्त कर लेता है और इसका मुकुट 120 फीट (36.6 मीटर) व्यास का होता है। यह एक ऐसा पेड़ है जिस पर आसानी से चढ़ा जा सकता है और इसे अक्सर सड़कों के किनारे लगाया जाता है, जो लूका 19:4 में संदर्भ का कारण है। इस पेड़ के सभी हिस्सों पर, युवा और पुराने शाखाओं पर और यहाँ तक कि तने पर भी गुच्छों में प्रचुर मात्रा में फल उत्पन्न होते है। यह आम अंजीर से बहुत मिलता-जुलता है, केवल आकार में छोटा और गुणवत्ता में बहुत हीन है। दाऊद के समय में यह इतना मूल्यवान था कि उसने गूलर के पेड़ों के लिए विशेष निरीक्षक नियुक्त किया था (1 इति 27:28)। ऐसा माना जाता है कि आमोस गूलर के फल एकत्र करने वाले नहीं था बल्कि गूलर के पेड़ों की देखभाल करने वाला था।

झाऊ का पेड़ (तामारिक्स)

उत्पत्ति 21:33 और 1 शमूएल 22:6 और 31:13 में झाऊ का उल्लेख प्रतीत होता है। ये पेड़ या झाड़ियाँ छोटी और तेजी से बढ़ने वाली होती हैं जिनकी लकड़ी मजबूत होती है। ये रेगिस्तानों, टीलों और नमक के दलदलों में प्रचुर मात्रा में पाई जाती हैं। *तामारिक्स एफिला* पत्ते रहित होती है और इसमें छोटे सफेद फूल होते हैं। ये पेड़ या झाड़ियाँ अक्सर यात्री को हरे पत्तों की सुखद स्पर्श और ठंडी छाया का वादा देती हैं। झाऊ के पेड़ इसलिए जीवित रह पाते हैं क्योंकि या तो उनमें छोटी, शल्कनुमा पत्तियां होती हैं, जो वाष्पोत्सर्जन द्वारा बहुत कम नमी खोती हैं, या फिर उनमें कोई पत्तियां ही नहीं होतीं। झाऊ के बड़े पेड़ उनकी लकड़ी के लिए मूल्यवान होते हैं, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहां लकड़ी दुर्लभ होती है। लकड़ी का उपयोग निर्माण के लिए और उत्कृष्ट प्रकार के कोयले के स्रोत के रूप में भी किया जाता था।

छोटे बांजवृक्ष (पिस्तासिया टेरेबिंथस)

*देखें*पिस्ता (ऊपर)।

काँटे और ऊँटकटारे (लाइसियम युरोपेयम, सोलनम इंकैनम, सेंटोरिया, सिलिबम मैरिएनम, रस्कस एक्यूलेटस, एग्रोस्टेम्मा गिथागो, पैलियुरस स्पाइना-क्रिस्टी, ज़िज़िफ़स स्पाइना-क्रिस्टी)

पवित्रशास्त्र में काँटेदार या कंटीली झाड़ियों या खरपतवारों को संदर्भित करने के लिए 22 विभिन्न इब्रानी और यूनानी शब्दों का उपयोग किया गया है, और इन्हें "झड़बेरी," "कँटीली झाड़ी," "कॉकल," "काँटे," और "ऊँटकटारे" के रूप में अनुवादित किया गया है। वर्तमान में, पवित्र देश में लगभग 125 प्रकार के काँटे और ऊँटकटारे उगते हैं।

न्यायियों 9:14–15 के रूपक में झड़बेरी को यूरोपीय बॉक्सथॉर्न या रेगिस्तानी काँटेदार पौधे, *लिसियम यूरोपियम* को संदर्भित करने वाला माना जाता है।

सामान्य सहमति यह है कि यशायाह 10:17, 55:13, मीका 7:4, और इब्रानियों 6:8 के "झाड़ - झँखाड़" फिलिस्तीन नाइटशेड *(सोलानम इन्कैनम)*, या "यरीहो के आलू" हैं।

उत्पत्ति 3:17–18, 2 राजा 14:9, 2 इतिहास 25:18, होशे 10:8, और मत्ती 7:16 के काँटे, साथ ही मत्ती 13:7 और इब्रानियों 6:8 के काँटों को ऊँटकटारे की विशेष प्रजाति, *सेंटॉरिया* में से एक माना जाता हैं। पवित्र भूमि में अधिक सामान्य काँटों में वास्तविक स्टार-काँटा *(सेंटॉरेया कैल्सिट्रापा)*, बौना सेंटॉरी *(सी. वेरुटम)*, इबेरियन सेंटॉरी *(सी. इबेरिका)*, और स्त्री का काँटा *(सिलिबम मेरियनम)* शामिल हैं। कुछ काँटे और ऊँटकटारे पाँच से छह फीट (0.9 से 1.8 मीटर) की ऊँचाई प्राप्त करते हैं। काँटे और ऊँटकटारे ऐसे क्षेत्र की विशेषता है जो असिंचित और उपेक्षित है। कई में सुंदर फूल होते हैं, लेकिन सभी तेज कांटों से ढके होते हैं।

यहेजकेल 2:6 में "काँटे और ऊँटकटारे" और यहेजकेल 28:24 में "चुभनेवाला काँटा" का संदर्भ शायद काँटेदार बुत्चेर्स-ब्रूम या नी-होल्ली, *रुस्कस एक्यूलेटस* की ओर हो सकता है। यह पौधा पवित्र देश के उत्तरी क्षेत्रों के चट्टानी जंगलों में आम तौर पर पाया जाता है, विशेष रूप से ताबोर पर्वत और कर्मेल पर्वत के आसपास।

अय्यूब 31:40 (एनएलटी "जंगली बीज") का जंगली घास शायद मक्का जंगली घास, *अग्रोस्टेमा गिथागो* को संदर्भित करता है। यह पौधा पवित्र देश के अनाज के खेतों में आम है। यह अनाज के खेतों में मजबूत बढ़ने वाली और परेशान करने वाली जंगली घास है, जो एक से तीन फीट (.3 से .9 मीटर) ऊँची होती है।

कई टिप्पणीकारों का मानना हैं कि जिन "काँटों" से काँटों का मुकुट (मत्ती 27:29; यूह 19:2) बनाया गया था, वे मसीह-काँटा *(पालीयुरस स्पाइना-क्रिस्टी)* से था। इस विश्वास के कारण इसका विशिष्ट नाम पड़ा; मसीह-काँटा एक कांटेदार पौधा है जो सामान्यतः तीन से नौ फीट (.9 से 2.7 मीटर) ऊँची झाड़ी के रूप में बढ़ता है। लचीली शाखाओं के प्रत्येक पत्ते के आधार पर असमान, कठोर, नुकीले काँटे की जोड़ी से सुसज्जित होती हैं। युवा शाखाओं की असामान्य लचीली बनावट इसे मुकुट जैसी माला में गूंथने के लिए विशेष रूप से आसान बनाती है।

न्यायियों 8:7, यशायाह 7:19, 9:18, 55:13, और मत्ती 7:16 के काँटे शायद सीरियाई मसीह-काँटे *(ज़िज़िफ़स स्पाइना-क्रिस्टी)* का उल्लेख करते हैं, जो 9 से 15 फीट (2.7 से 4.6 मीटर) ऊँची एक झाड़ी या छोटा पेड़ है, जो कभी-कभी 40-फ़ीट (12.2-मीटर) के पेड़ में विकसित हो जाता है, जिसकी चिकनी सफ़ेद शाखाएँ होती हैं और प्रत्येक पत्ती के पीछे एक जोड़ी मोटे, असमान, मुड़े हुए काँटे होते हैं।

बबूल; बकथॉर्न *भी देखें* (ऊपर)।

ट्यूलिप (ट्यूलिपा मोंटाना, टी. शेरोनेंसिस)

इस परिवार के कई बल्बनुमा पौधे आसिया के मूल स्थानिय हैं। श्रेष्ठगीत 2:1 में शारोन का गुलाब शायद पहाड़ी ट्यूलिप, *ट्यूलिपा मोंटाना* या शेरोन ट्यूलिप, *टी. शेरोनेंसिस* से बहुत निकट का हो सकता है। पहला आकर्षक पौधा है जो बल्ब से उगता है और इसकी पत्तियाँ अक्सर लहरदार किनारों वाली होती हैं। यह प्रजाति सीरिया, लबानोन और विरोधी-लबानोन के पहाड़ी क्षेत्रों में आम है। यह मुख्य रूप से पहाड़ी प्रजाति है। शेरोन ट्यूलिप *(टी. शेरोनेंसिस)* शारोन के तटीय मैदानों पर रेतीले स्थानों में पाया जाता है।

टंबलवीड (गुंडेलिया टूरनेफोर्टी, एनास्टेटिका हिरोचंटिका)

भजन संहिता 83:13 में "भूसा" और यशायाह 17:13 में "उड़ाए जाएँगे" या "घुमाकर उड़ाई जाने वाली चीज़" (एनआईवी "टंबलवीड") का संदर्भ शायद फिलिस्तीनी टंबलवीड *(गुंडेलिया टूरनेफोर्टी)* की ओर है, जो कि काँटे और ऊँटकटारे परिवार का सदस्य है। यह दूधिया रस वाली एक काँटेदार जड़ी-बूटी है। यह भूमि पर लुढ़कती है और खोखलों में विशाल ढेरों में इकट्ठा हो जाती है।

सब्ज़ी

सब्ज़ियों के लिए पवित्रशास्त्र में उल्लेख संभवतः, ज़्यादातर मामलों में, फलियों और दालों के सूखे फलीदार बीजों से लिया गया है।

दाखलता (विटिस विनिफेरा)

कोई भी पौधा जिसका तना लचीला होता है जो किसी सतह या सहारे के साथ चढ़ता, लिपटता, या रेंगता है। सामान्य अंगूर की दाखलता *(विटिस विनिफेरा)* का उल्लेख पूरे बाइबल में किया गया है। फलदार दाखलता (यहे 17:5–10) और मिस्र से लाई गई दाखलता (भज 80:8) यहूदी लोगों का प्रतीक थीं। यीशु स्वयं को सच्ची दाखलता से तुलना करते हैं, जिसकी शाखाएँ उनके शिष्य थे (यूह 15:1–6)।

पुरानी दुनिया की अंगूर की दाखलता कभी-कभी पेड़ की विशेषताओं को ग्रहण कर लेती है, जिसमें तने डेढ़ फुट (45.7 सेंटीमीटर) व्यास तक होते हैं, फिर शाखाओं को जाली पर प्रशिक्षित किया जाता है और 10 से 12 पाउंड (4.5 से 5.4 किलोग्राम) वजन के अंगूर के गुच्छे होते हैं, जिनमें प्रत्येक अंगूर छोटे बेर के आकार के होते हैं। 26 पाउंड (11.8 किलोग्राम) तक वजन वाले गुच्छे भी उत्पन्न हुए हैं। पवित्र देश की दाखलता हमेशा अपनी वृद्धि की समृद्धि और उनके द्वारा उत्पन्न विशाल अंगूर के गुच्छों के लिए प्रसिद्ध थीं। इस प्रकार यह असंभव नहीं लगता कि प्रतिज्ञात देश में भेजे गए जासूसों ने कुछ गुच्छों को घर ले जाने के लिए डंडे का उपयोग किया हो (गिन 13:23–24)।

जंगली अंगूर *(विटिस ओरिएंटलिस)* का उल्लेख यशायाह 5:2–4, यिर्मयाह 2:21, और यहेजकेल 15:2–6 में किया गया है। इसे देशी जंगली लोमड़ी अंगूर के रूप में जाना जाता है और इसमें छोटे, काले, खट्टे जामुन होते हैं जो कि किशमिश के आकार के होते हैं और इनमें थोड़ा रस होता है।

अखरोट (जुग्लान्स रेजिया)

इस प्रजाति के कई पेड़ों में से कोई भी, जिसमें खाने योग्य काष्ठफल के साथ गोल, चिपचिपा फल होता है। यह माना जाता है कि श्रेष्ठगीत 6:11 में "अखरोट" का संदर्भ फ़ारसी या सामान्य अखरोट, *जुग्लान्स रेजिया* से लिया गया है। यह पेड़ उत्तरी फारस का मूल स्थानिय माना जाता है, लेकिन वास्तव में यह उत्तरी भारत के कई हिस्सों में, चीन के पूर्व तक और पश्चिम में फारस तक जंगली पाया जाता है। सुलैमान के समय में, इसके फल की खेती पूरे पूर्व में व्यापक रूप से की जाती थी। शायद सुलैमान का अखरोट का बगीचा यरूशलेम से छह मील (9.7 किलोमीटर) दूर एताम में उसके विशाल बगीचों का एक हिस्सा था।

जल सोसन (निम्फिया)

इस प्रजाति के कई जलीय पौधों में से कोई भी जिसमें तैरती हुई पत्तियाँ और आकर्षक फूल होते हैं। 1 राजा 7:19–26 और 2 इतिहास 4:5 की नक्काशीदार सोसन अलंकरण शायद जल सोसन के फूलों के अनुरूप बनाया गया था। कुछ फूल मिस्र के कमल या जल सोसन *(निम्फिया* कमल*)* की सुंदरता की बराबरी कर सकते हैं। यह बहुत हद तक बड़े सफेद गुलाब जैसा दिखता है और एक समय में नील नदी के जल पर प्रचुर मात्रा में तैरता था।

सामान्य यूरोपीय सफेद जल सोसन *(एन. अल्बा)* भी इस्राएल के बच्चों के लिए परिचित थी। यह न केवल यूरोप में बल्कि पवित्र देश और उत्तरी अफ्रीका में भी उगता है। हालाँकि, यह मिस्र में सफेद कमल जितना सामान्य नहीं है।

अन्य जल सोसन जिससे इस्राएली शायद परिचित थे, वह है नीला कमल,एन. कैरुलिया *है*/ इसके पत्ते 12 से 16 इंच (30.5 से 40.6 सेंटीमीटर) चौड़े होते हैं और इसके हल्के नीले रंग के फूल होते हैं जो तीन से छह इंच (7.6 से 15.2 सेंटीमीटर) व्यास में होते हैं।

गेहूँ (ट्रिटिकम एस्टिवम, टी. कॉम्पोसिटम)

इस परिवार के विभिन्न अनाज घासें अपने खाने योग्य अनाज के लिए व्यापक रूप से उगाई जाती हैं। पाँच प्रकार के गेहूँ पवित्र भूमि के मूल स्थानिय हैं—और अभी भी जंगली हैं—और कम से कम आठ अन्य आज वहाँ उगाए जाते हैं; संभवतः अधिकांश, यदि सभी नहीं, तो बाइबल के समय में जाने जाते थे। जंगली किस्में शायद तब अधिक प्रचुर मात्रा में थीं जितनी कि वे आज हैं। इनमें से एक हैं आइंकोर्न *(टी. मोनोकोकम)*, थाउदार *(टी. थाउदार)* और जंगली एम्मर *(टी. डाइकोकोइड्स)* शामिल हैं। मिश्रित गेहूँ *(टी. कम्पोजिटम)*, जिसमें शाखित कांटें होती हैं, जिनमें प्रायः प्रत्येक डंठल पर सात बालें होती हैं, उसका उल्लेख स्पष्ट रूप से उत्पत्ति 41:5–57 में संदर्भित किया गया है। इसे मिस्र के कई स्मारकों और शिलालेखों पर दर्शाया गया है और यह अभी भी नील के डेल्टा में आम तौर पर देखा जाता है, जहाँ इसे "माता गेहूँ" के नाम से जाना जाता है। इसकी खेती पवित्र देश में भी की जाती है।

बाइबल में सबसे अधिक बार उल्लेखित गेहूँ निस्संदेह सामान्यतः उगाया जाने वाला ग्रीष्मकालीन और शीतकालीन गेहूँ, *ट्रिटिकम एस्टिवम* है। यह एक प्रचुर मात्रा में पाई जाने वाली वार्षिक घास है जिसकी खेती प्राचीन काल से ही मिस्र और अन्य पूर्वी देशों में की जाती रही है। इसकी उत्पत्ति का सटीक स्थान अज्ञात है। गेहूँ के दाने सबसे प्राचीन मिस्र के मकबरों और स्विट्जरलैंड में प्रागैतिहासिक झील के आवासों के अवशेषों में पाए गए हैं। यह निश्चित रूप से याकूब के समय में मेसोपोटामिया का मुख्य अनाज था (उत 30:14)।

बाइबिल के दिनों में मक्का में अक्सर मटर, सेम, मसूर, जीरा, जौ, बाजरा, और कठिया गेहूँ का मिश्रण शामिल होता था, लेकिन गेहूँ हमेशा इसका मुख्य घटक था। मिस्र महान अनाज उत्पादक देश था, और अब्राम (उत 12:10) और यूसुफ के भाई (अध्याय 42) स्वाभाविक रूप से गेहूँ के लिए मिस्र की ओर मुड़े थे जब कनान में अकाल पड़ा था।

बाइबल में उल्लेखित चक्कियाँ, चक्की के पत्थर, अनाज के भंडार और खलिहान सभी उस उपकरण को संदर्भित करते हैं जो आटा बनाने के लिए अनाज को संसाधित करने में प्रयुक्त होते हैं। जिस बढ़िया आटे से भेंट की रोटियाँ बनाई गई थीं (लैव्य 24:5) वह निस्संदेह गेहूँ का आटा था। घरेलू उपभोग के लिए रखा गया गेहूँ अक्सर घर के केंद्रीय भाग में संग्रहीत किया जाता था; यह 2 शमूएल 4:6 में बताई गई कहानी को समझाता है। इसे कभी-कभी सूखे कुओं में भी संग्रहीत किया जाता था (2 शमू 17:19)।

नागदौना (आर्टेमिसिया जुडाइका, ए. हर्बा-अल्बा)

नागदौना सामान्य नाम है जो लकड़ी के पौधों के समूह को दिया जाता है जिनमें मजबूत सुगंधित गंध होती है। नागदौना पौधों का स्वाद तीखा और कड़वा होता है, और उनकी युवा टहनियाँ और शाखाएँ के सिरे वाणिज्य के "नागदौना" को प्रस्तुत करती हैं। इसका कड़वा स्वाद इसे पित्त के साथ बोला जाने का कारण बनता है—जो कि कड़वी विपत्ति और दुःख का प्रतीक है (नीति 5:4; यिर्म 9:15; 23:15; विला 3:15,19)। *आर्टेमिसिया हर्बा-अल्बा* आज पवित्र देश में नागदौना की सामान्य प्रजाति है। यह बहुत सुगंधित और कपूर की तरह महकती है, और कड़वी होती है। *ए. जुडाइका* केवल सीनै में पाई जाती है।

एब्सिन्थे इस समूह की प्रजातियों से बनाया जाता है। यह पहले अधिक गतिविधि और सुखद अनुभूतियों की ओर ले जाता है

और मन को भव्य विचारों से भर देता है (विला 3:15)। हालाँकि, इसका नियमित उपयोग सुस्ती और बौद्धिक क्षमताओं में धीरे-धीरे कमी लाता है, जो उन्माद और यहां तक कि मृत्यु का कारण भी बन सकती है। संभवतः आमोस 6:12 में वर्णित कड़वे फल नागदौना थे।